CRPF SAMACHAR

CRPF Newsletter & Magazine

2000

CRPF SAMACHAR

CRPF Newsletter & Magazine

2000

Contents

29 February 2000 Vol. 14 No. 1

31 March 2000 Vol. 14 No. 2

31 May 2000 Vol. 14 No. 3

30 June 2000 Vol. 14 No. 4

31 August 2000 Vol. 14 No. 5

30 September 2000 Vol. 14 No. 6

30 November 2000 Vol. 14 No. 7

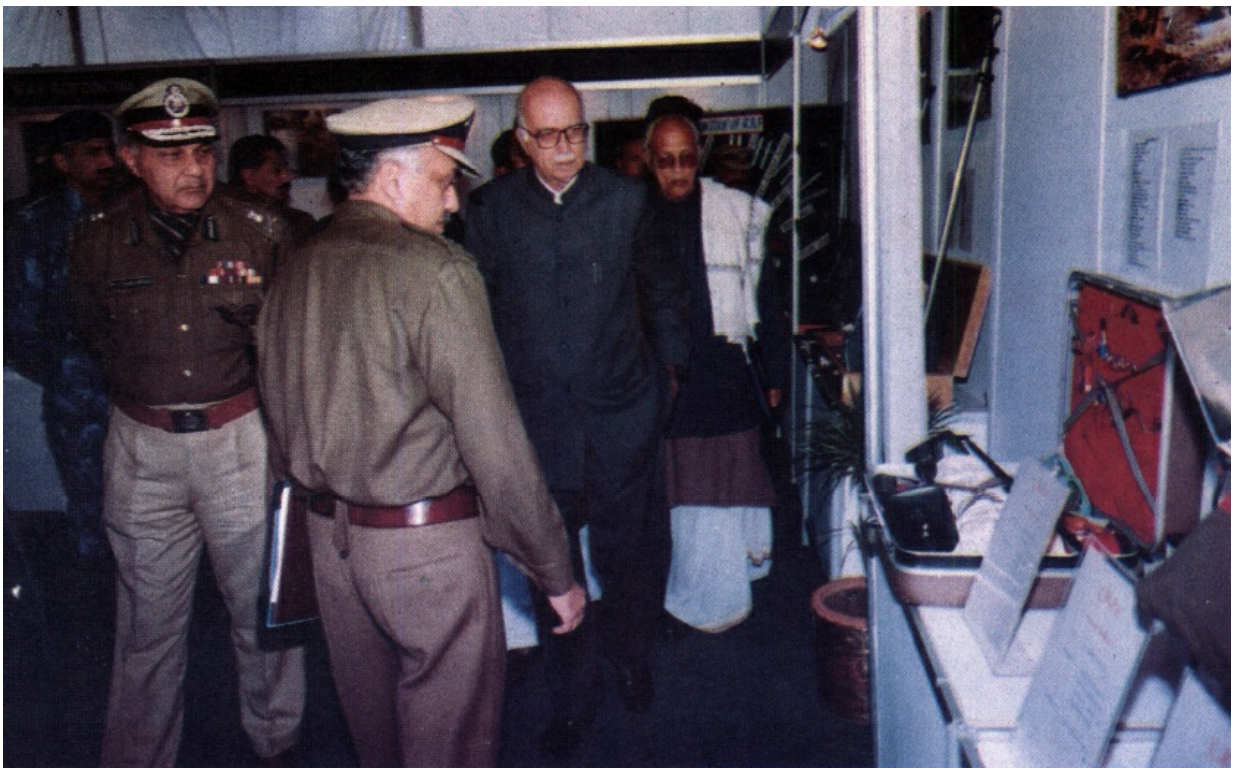
31 December 2000 Vol. 14 No. 8

सी.आर.पी.एफ. समाचार

29 फरवरी, 2000



बल की हीरक जयंती के अवसर पर प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी को स्मृति चिह्न भेंट करते बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल



भारत तिब्बत सीमा पुलिस परिसर दिल्ली में गृह मंत्री अन्य सांसदों के साथ रैपिड एक्शन फोर्स के दंगा विरोधी उपकरण देखते हुए



आंध्र प्रदेश के गृह मंत्री श्री टी देवेंद्र गौड बेस अस्पताल हैदराबाद द्वारा आयोजित रक्तदान शिविर में



सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड-14 अंक-1
29 फरवरी, 2000
10 फाल्गुन, शक 1921

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं युनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल
ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से डी.जी. महापात्र

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ. प्रेस झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-72



इस अंक में

देश की आंतरिक सुरक्षा बनाए रखने में के.रि.पु. बल का योगदान उल्लेखनीय है- प्रधानमंत्री

गणतंत्र दिवस परेड में बल की टुकड़ियाँ

के.रि.पु. बल अंतर सेक्टर एथलेटिक्स मीट

उड़ीसा के तुफान पीड़ितों को सहायता सामग्री

33 बल के कार्मिकों को विशिष्ट एव सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक

शहीदों को आश्रिता को अनुदान

ग्रुप केंद्र पल्लिपुरम को सर्वश्रेष्ठ ग्रुप केंद्र ट्राफी

आश्रितों को अनुदान

43वीं अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी प्रतियोगिता में सी.आर.पी.एफ. विजेता

आरएएफ ने इंटर सेक्टर टेबेल टेनेस प्रतियोगिता जीती

हींग लगे न फिटकरी रंग भी चोखा आए

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

-संपादक

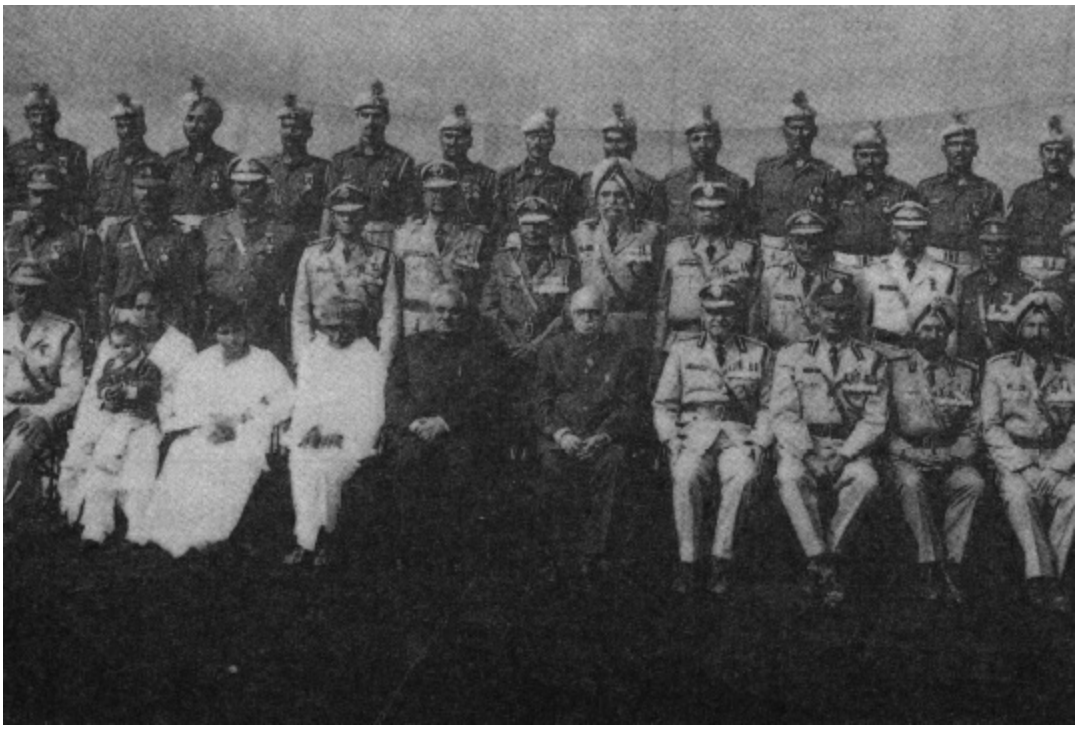
के.रि.पु. बल हीरक जयंती

“देश की आंतरिक सुरक्षा बनाए रखने में के.रि.पु. बल का योगदान उल्लेखनीय है”

- श्री अटल बिहारी वाजपेयी



परेड का निरीक्षण करते प्रधान मंत्री



पदक विजेताओं के साथ प्रधानमंत्री

प्रधानमंत्री ने के.रि.पु. बल कल्याण कोष में दो करोड़ दिये

26 दिसम्बर 1999 को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की हीरक जयंती परेड के अवसर पर आयोजित एक भव्य समारोह में बोलते हुए प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा कि देश की आंतरिक सुरक्षा बनाए रखने में के.रि.पु. बल का योगदान उल्लेखनीय है। उन्होंने के.रि.पु. बल कल्याण कोष में दो करोड़ रुपए देने की भी घोषणा की।

प्रधान मंत्री बल के ग्रुप केन्द्र झड़ौदा कलां, नई दिल्ली में आयोजित एक भव्य परेड का निरीक्षण करने व सलामी लेने के बाद बल के अधिकारियों और जवानों को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि के.रि.पु. बल देश का पुराना और विश्वस्त बल है। इसने देश की हर संकट की घड़ी में अपने त्याग और बलिदान से संकट का सामना किया। प्रधान मंत्री ने 1959 में हाट स्प्रिंग्ज लद्दाख में चीनी सैनिकों के साथ लड़ते हुए शहीद हुए सैनिकों को याद करते हुए कहा कि बलिदान की यह परम्परा बहुत पुरानी है।

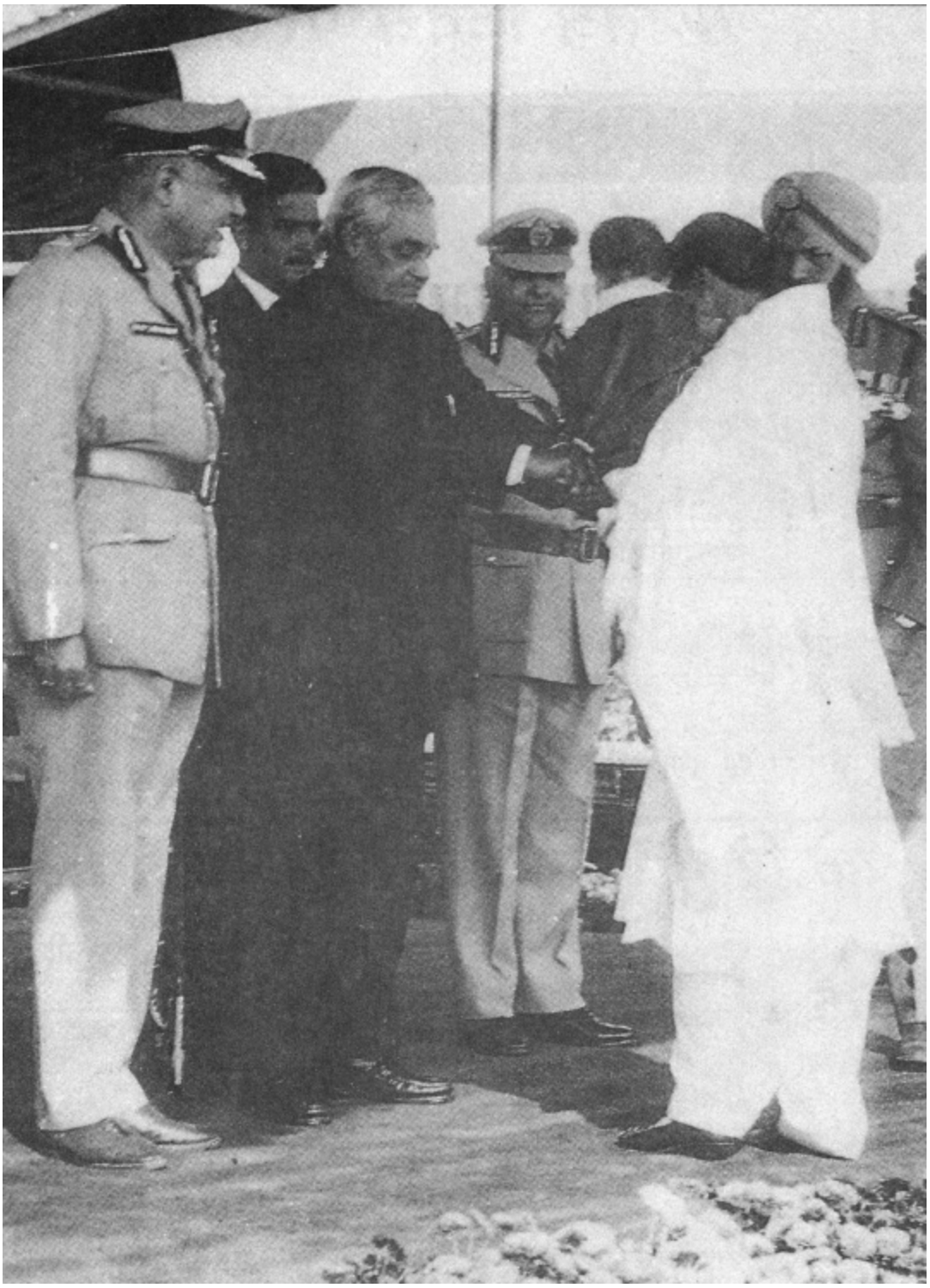
उन्होंने कहा कि सरकार कर्तव्य क्षेत्र में तैनात बल के कार्मिकों की समस्याओं से अवगत है तथा उन समस्याओं को दूर करने का हर संभव प्रयास कर रही है। उन्होंने कहा कि जवानों के कर्तव्य पालन की राह में आने वाली हर बाधा को दूर किया जाएगा।

इस से पूर्व प्रधान मंत्री ने 28 जवानों को शौर्य वीरता के पदक प्रदान किये। इन में

से तीन जवानों को यह पदक मरणोपरांत दिये गये। इन के अतिरिक्त प्रधान मंत्री ने पांच अधिकारियों और जवानों को विशिष्ट सेवाओं के पदक भी प्रदान किये।

उत्तर, पूर्व में स्थित सर्वश्रेष्ठ बटालियन की ट्राफी 66 बटालियन, जम्मू कश्मीर स्थित सर्वश्रेष्ठ बटालियन की ट्राफी 28 बटा. तथा सर्वश्रेष्ठ वित्तीय अनुशासन की ट्राफी 136 बटालियन को प्रदान की गयी। सर्वश्रेष्ठ बटालियन की ट्राफी 116 बटालियन तथा सर्वश्रेष्ठ ग्रुप केन्द्र की ट्राफी ग्रुप केन्द्र पल्लिपुरम को दी गयी।

इससे पूर्व प्रधान मंत्री का स्वागत करते हुए बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने प्रधानमंत्री को बल के इतिहास और गौरवशाली परंपराओं का परिचय देते हुए, बल की तात्कालिक आवश्यकताओं और समस्याओं की और भी प्रधान मंत्री का ध्यान आकृष्ट किया। साथ ही देश की हर संकट की घड़ी में अपनी परंपरा के अनुरूप सदैव कटिबद्ध रहने की प्रतिबद्धता को दोहराया।



कां.ड्रा.आर.एम. पांडेय के मरणोपरांत शौर्य पदक प्रदान करते प्रधान मंत्री ; पदक कां. पांडेय की विधवा ने ग्रहण किया

इस मौके पर गृह मंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी सहित, केन्द्रीय पुलिस संगठनों के कई प्रमुख भी उपस्थित थे।

परेड का नेतत्व कमांडेट सुशील कुमार ने किया। परेड में एक महिला टुकड़ी सहित बल के विभिन्न सेक्टरों की 10 टुकड़ियां शामिल थी। इसके अतिरिक्त कुछ आकर्षक झांकियां, 1939 के बल के पुराने कार्मिक, अर्जुन पदक विजेता तथा शौर्यपदक विजेता भी परेड में शामिल थे।

गणतंत्र दिवस परेड में बल की टुकड़ियां



गणतंत्र दिवस परेड में बल की महिला टुकड़ी

देश के शांति प्रहरी- केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने इस वर्ष की गणतंत्र दिवस परेड में अपने दो दस्ते भेजे। इनमें एक दस्ता आर.ए.एफ. महिलाओं का तथा एक दस्ता बैंड वादकों था।

के.रि.पु. बल के पहले दस्ते में सहायक कमांडेंट इन्द्राणी यादव दो सब इंस्पेक्टरों 144 महिलाओं की टुकड़ी का नेतृत्व कर रही थी। बल की इस टुकड़ी के सदस्य नीली छापे वाली डांगरी में थे। उनकी बांयी बाजू पर आर.ए.एफ. का प्रतीक चिह्न तथा कमर पर काली पेटी थीं। बल की ये महिला जवान गले में सफेद स्कार्फ तथा सफेद कलगी वाली नीली टोपी पहने थीं। इस टुकड़ी के लिए इन महिलाओं का औसत कद साढ़े पांच फुट था।

के.रि.पु. बल की इस टुकड़ी के पीछे 97 सदस्यों वाला के.रि.पु. बल ब्रास बैंड था, जिसका नेतृत्व इंस्पेक्टर गंधर्व सिंह कर रहे थे। के.रि.पु. बल ब्रास बैंड का गठन 1961 में किया गया।

बल की टुकड़ियां राजपथ से के.रि.पु. बल के कथानक गीत "सेवा भक्ति का यह प्रतीक के.रि.पु. बल कहलाता है" की धुन पर मार्च करती हुयी गुजरीं मार्चिंग दस्ते की महिला जवानों के हाथों में एल.एल.आर. थीं, जबकि उनके कमांडरों के हाथों में तलवारें।

के.रि.पु. बल अंतर सेक्टर एथलेटिक्स मीट *2000*

दक्षिण सेक्टर ने ट्राफी जीती

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की चार दिवसीय 7वीं अंतर सेक्टर एथलेटिक्स प्रतियोगिता की ट्राफी दक्षिण सेक्टर ने जीती। 14 जनवरी, 2000 को सम्पन्न हुयी यह प्रतियोगिता बल के नई दिल्ली ग्रुप केंद्र में खेली जा रही थी। प्रतियोगिता ने पुरूष वर्ग की चैंपियनशिप ट्राफी दक्षिण सेक्टर को, तथा दूसरे व तीसरे स्थान की ट्राफियां क्रमशः उत्तर पश्चिम जोन व उत्तरी सेक्टर को मिली।

महिला वर्ग की चैंपियनशिप ट्राफी उत्तरी सेक्टर ने जीती, जबकि रैपिड एक्शन फोर्स तथा पश्चिमी सेक्टर क्रमशः दूसरे व तीसरे स्थान पर रहे।

बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने विजेताओं को पुरस्कार भी दिये। इससे पहले 11 जनवरी, 2000 को भारत तिब्बत सीमा पुलिस के महानिदेशक श्री गौतम कौल ने प्रतियोगिता का उद्घाटन किया।



प्रतियोगिता के विजेता महानिदेशक के साथ

इस मौके पर महानिदेशक महोदय ने अंतर सेक्टर शूटिंग चैंपियनशिप, अंतर सेक्टर एन्डयूरेंस प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत करने के साथ साथ हीरक जयंती परेड में सर्वश्रेष्ठ मार्चिंग के लिए रैपिड एक्शन फोर्स, कैंप के अच्छे रखरखाव के लिए पूर्वी सेक्टर के कैंप को भी पुरस्कृत किया। अंतर सेक्टर बैंड प्रतियोगिता के

लिए ब्रास बैंड प्रतियोगिता कर ट्राफी उत्तरी सेक्टर को मिली। दक्षिण सेक्टर दूसरे स्थान पर रहा। पाइप बैंड प्रतियोगिता में प्रथम पश्चिम सेक्टर तथा द्वितीय उत्तरी सेक्टर रहा।

के.रि.पु. बल द्वारा उड़ीसा के तुफान पीड़ितों को सहायता सामग्री



उड़ीसा के प्रींसिपल रेजीडेंट कमीशनर को राहत सामग्री सौंपते बल के अधिकारी

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने 15 दिसंबर '99 को उड़ीसा सरकार के प्रतिनिधि को तुफान पीड़ितों को वितरित करने के लिए 32 कपड़ों के बंडल सौंपे। उड़ीसा सरकार के दिल्ली स्थित प्रींसिपल रेंजीडेंट कमीशनर ने इस सामग्री को ग्रहण किया तथा के.रि.पु. बल के जवानों के इस प्रयास की सराहना की। तूफान पीड़ितों के लिए यह कपड़े बल के चण्डीगढ़ स्थित अधिकारियों और जवानों ने इकट्ठे किये थे।

ज्ञातव्य है कि अक्टूबर '99 में उड़ीसा के तटीय इलाकों में आए विनाशकारी तुफान के तत्काल बाद रेपिड एक्शन फोर्स की 6 कम्पनियों को पांच सर्वाधिक प्रभावित जिलों में बचाव, राहत और पुनर्वास कार्यों के लिए तैनात किया गया था। बल की 10 मैडिकल टीमों ने रात दिन कार्य कर 20,000 से ज्यादा पीड़ितों का उपचार किया। यहां कानून व्यवस्था को बनाए रखने के अतिरिक्त बल के कार्मिकों ने राहत सामग्री बांटने तथा लगभग 300 लावारिस लाशों का अंतिम संस्कार करने का कार्य भी किया।

आश्रिता को अनुदान

के.रि.पु. बल ग्रुप केन्द्र नागपुर में 17 जनवरी, 2000 को आयोजित एक सादे समारोह में पुलिस उप महानिरीक्षक गांधी नगर व नागपुर श्री शाहिद अहमद ने 86 बटा. के कांस्टेबल साहेबराव चौहान की विधवा श्रीमती मंदा साहेब राव चौहान को 7,50,000 रुपये की अनुग्रह राशि का चैक भेंट किया। सिपाही साहेबराव चौहान 17 जून, 1999 को आसाम के उमरागांव इलाके में एनएससीएन के उग्रवादियों द्वारा लगाई गई घात में वीरगति को प्राप्त हुए थे।

के.रि.पु. बल ने *1999* में *5039* आतंकवादी पकड़े

वर्ष 1999 में पूरे देश में आतंकवाद विरोधी मुहिम में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वर्ष 1999 में के.रि.पु. बल ने देश भर में 5039 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया तथा इस दौरान हुए विभिन्न आपरेशनों में 199 आतंकवादी मारे गये। बल के कार्मिकों ने इस दौरान 746 घातक हथियार तथा 17931 गोली बारूद भी बरामद किया। इस दौरान हुयी 288 मुठभेड़ों में बल के 280 जवान गंभीर रूप से घायल हुए तथा 91 वीर गति को प्राप्त हुए।

इस अवधि में जम्मू कशमीर में 123 आतंकवादी मारे गये तथा 181 को के.रि.पु. बल ने गिरफ्तार किया। जबकि उत्तर पूर्वी राज्यों में 47 आतंकवादी मारे गये तथा 3930 को गिरफ्तार किया गया।

इस अवधि में बल की अधिकांश कम्पनियां जम्मू कशमीर (237 कम्पनियां) तथा उत्तर पूर्वी राज्यों (332 कम्पनियां) में आतंकवाद विरोधी मुहिम में तैनात रही। नक्सलवादी गतिविधियों से निबटने के लिए के.रि.पु. बल की 24 कम्पनियां आंध्र प्रदेश में तथा 30 कम्पनियां बिहार में तैनात हैं।

संसदीय चुनावों के दौरान भी चुनावों को शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न कराने के लिए बल की 103 कम्पनियों को तैनात किया गया।

33 के.रि.पु. बल कार्मिकों को विशिष्ट एवं सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के 33 अधिकारियों और जवानों को गणतंत्र दिवस 2000 के अवसर पर राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रपति के विशिष्ट तथा सराहनीय सेवाओं के पदकों से सम्मानित किया गया है।

चार कार्मिकों को राष्ट्रपति के विशिष्ट सेवाओं के पुलिस पदक तथा 29 को सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक प्रदान किये गये हैं।

राष्ट्रपति के विशिष्ट सेवाओं के पुलिस पदक



उप महानिरीक्षक *(*प्रशासन*)* ए.के. सिंह *(*महानिदेशालय*)*



अपर उप महानिरीक्षक एस.एस.रावत *(*ग्रुप केन्द्र पिंजौर*)*



कमांडेंट एम.एम. डबराल *(9* बटा.*)*



कांस्टेबल असगर अली *(10* बटा.*)*

सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक



उप महानिरीक्षक *(*कार्मिक*)* वी.आर.पन्त *(*महानिदेशालय*)*



अपर उप महानिरीक्षक *(*प्रशिक्षण*)* एच.सी. सूद *(*महानिदेशालय*)*



कमांडेंट जे.एन. शर्मा *(*उत्तर पश्चिम जोन*)*,



कमांडेंट एम. मुस्तफा *(*उप महानिरीक्षक कार्यालय इलाहाबाद*)*



कमांडेंट एम.एस. बरियाना *(20* बटालियन*)*



कमांडेंट हेमराज *(112* बटालियन*)*



कमांडेंट के.के. तलवार *(126* बटालियन*),*



मुख्य चिकित्सा अधिकारी पी.सी. महापात्रा *(*ग्रुप केन्द्र गुड़गांव*)*



द्वितीय कमान अधिकारी के.एस. चीमा *(8* बटा.*)*



डिप्टी कमांडेंट सी.आर. महापात्रा *(*ग्रुप केन्द्र नागपुर*)*



डिप्टी कमांडेंट के सुधाकरण*(73* बटा.*)*



डिप्टी कमांडेंट डी क्लेमेंट *(77* बटा.*)*



सहायक कमांडेंट चेत राम एस.डी.जी.



इंस्पेक्टर तरसेम सिंह *(112* बटा.*)*



इंस्पेक्टर सुरेंद्र पाल *(128* बटा.*)*



सब इंस्पेक्टर एस.एन. सिंह *(*ग्रुप केन्द्र बंगलौर*)*



सब इंस्पेक्टर बी.एल. यादव *(78* बटा.*)*



सब इंस्पेक्टर मोहम्मद सनिफ *(105* आर.ए.एफ.*)*



सब इंस्पेक्टर पी.एम. कोशी *(*महानिदेशालय*)*



हैड कांस्टेबल कपिल देव *(74* बटा.*)*



हैड कांस्टेबल प्रयाग दत्त *(134* बटा.*)*



हैड कांस्टेबल नारायण सिंह *(21* बटा.*)*



हैड कांस्टेबल जे.आर. सिंह *(16* बटा.*)*



हैड कांस्टेबल पी.ए. जोश *(28* बटा.*)*



हैड कांस्टेबल एन.एम. बालन *(58* बटा.*)*



हैड कांस्टेबल हरी नारायण *(*महानिदेशालय*)*



लांस नायक एम.एस. मेहता *(*आंतरिक सुरक्षा अकादमी*)*



कांस्टेबल बुद्धि सिंह *(*ग्रुप केन्द्र*–2* अजमेर*)*



कांस्टेबल जे. इक्का *(*सिगनल ग्रुप केन्द्र रांची*)*

शहीद की आश्रिता को अनुदान



श्रीमती इत्ता बेन को अनुग्रह राशि का चैक भेंट करते पश्चिमी सैक्टर के महानिरीक्षक श्री नारायण मिश्रा

5फरवरी, 2000 को ग्रुप केन्द्र गांधी नगर में आयोजित सादे समारोह में पश्चिमी सेक्टर के महानिरीक्षक श्री नारायण मिश्रा ने 109 बटालियन के लांस नायक भोप रायज भाई की विधवा श्रीमति इत्ता बेन को 8,75,000 रुपए की अनुदान राशि का चैक भेंट किया।

लांस नायक भोप रायज भाई अपनी टुकड़ी के साथ त्रिपुरा में संसदीय चुनाव–99 के दौरान तैनात थे। 30 अक्तूबर '99 को जब उनकी पार्टी अपनी ड्यूटी के बाद वापस लौट रही थी, तो आतंकवादियों ने घात लगा कर उन पर हमला किया। इंस्पेक्टर त्रिवेणी प्रसाद और लांस नायक भोप रायज भाई गोलियां लगने से घाटनास्थल पर ही वीरगति को प्राप्त हो गये।

ग्रुप केन्द्र पल्लिपुरम को सर्वश्रेष्ठ ग्रुप केन्द्र ट्राफी

बल के ग्रुप केन्द्र पल्लिपुरम को इस वर्ष के सर्वश्रेष्ठ ग्रुप केंद्र की ट्राफी प्रदान की गयी है। ग्रुप केन्द्र पल्लिपुरम की स्थापना 21 सितम्बर, 1974 को हुयी। यह केरल के राष्ट्रीय राजमार्ग 47 पर तिरूअनंतपुरम से 22 कि.मी. की दूसरी पर स्थित है। इस ग्रुप केन्द्र में इस के साथ संबद्ध चार बटालियनों के मुख्यालय, रंगरूट प्रशिक्षण केंद्र–3 तथा 105 आर.ए.एफ. बटालियन स्थित है।

इस ग्रुप केंद्र का परिसर 141 एकड़ क्षेत्र में फैला है। यहां 699 आवासीय खंड उपलब्ध है। यहां एक गैस एजेंसी, एक कोओपरेटिव स्टोर, एक युनिट कैंटिन, एस. टी.डी. बूथ तथा केबल टी.वी. नेटवर्क कार्य कर रहा है।

कैंप में एक परिवार कल्याण केन्द्र, एक केन्द्रीय विद्यालय, एक मोंटेसरी स्कूल

तथा एक कम्प्यूटर केंन्द्र भी कार्य कर रहा है।

इस ग्रुप केन्द्र द्वारा समय समय पर वन महोत्सव पल्स पोलियो अभियान तथा रक्तदान जैसे समाजोपयोगी कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जाता है।

इस ग्रुप केन्द्र द्वारा प्रति वर्ष परिवार कल्याण वर्ष का भी आयोजन किया जाता है।



पल्स पोलियो अभियान के दौरान बच्चों को पोलिया ड्राप देने के लिए पल्लिपुरम में लगाया गया कैंप

इस केन्द्र द्वारा खेल गतिवधियों को भी बढ़ावा दिया जाता है। दक्षिण सेक्टर की एथलेटिक्स टीम यहीं स्थित है। इस टीम ने 1998 तथा 1999 की अंतर सेक्टर प्रतियोगिता जीती है।

कैंप का स्थानीय जनता के साथ अच्छा तालमेल है। एन.सी.सी. द्वारा ग्रुप केन्द्र परिसर में एनसीसी कैंपों का भी आयोजन किया जाता है। यह कैंप स्थानीय पुलिस कर्मियों को भी प्रशिक्षण देने का कार्य करता है।

आश्रितों को अनुदान



10 बटा. के लां.ना. बी.सी. मंडल की पत्नी को अनुग्रह राशि का चैक भेंट करते पूर्वी सैक्टर के महानिरीक्षक श्री आर.पी.सिंह

30 दिसम्बर, 1999 को के.रि.पु. बल परिसर, साल्ट लेक कलकत्ता में आयोजित एक समारोह में बल के पूर्वी सेक्टर के महानिरीक्षक श्री आर.पी. सिंह ने बल के शहीद हुए दो कार्मिकों के आश्रितों को अनुग्रह राशि के चैक भेंट किये।

10 बटालियन के ला.ना. बी.सी. मंडल की पत्नी श्रीमती बिजली मण्डल एवम् उनकी पहली स्वर्गवासी पत्नी की पुत्री कुमारी राखी मण्डल को 3,75,000 रूपये की दर से कुल 7,50,000 रूपये के चैक दिये गये। इसी प्रकार 67 बटा. के सिपाही बी.एन. मुरम् की पत्नी को 7,50,000 रूपये अनुग्रह राशि का चैक प्रदान किया गया। 10 बटा० के लां० ना० बी०सी० मण्डल 27 अगस्त 1997 क असम के डिब्रुगढ़ के इलाके में उल्फ उग्रवादियों द्वारा लगाई घात में वीर गति को प्राप्त हुए थे।

67 बटालियन के सिपाही बी.एन मुरम् की गाड़ी बिहार राज्य के नक्सलवाद से प्रभावित इलाके भगवानगंज क्षेत्र में 2 जून, 1999 को नक्सलवादियों द्वार बिछाई गई सुरंग की लपेट में आ जाने से हुए विस्फोट के कारण उड़ गई। इस विस्फोट में गाड़ी में सवार 8 जवानों के साथ–साथ सिपाही बी.एन. मुरम् भ घटना स्थल पर शहीद हो गये।

माह दिसम्बर, 1999 तथा जनवरी 2000 में बल के मृत कार्मिक

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिक माह दिसंबर, 1999 तथा जनवरी, 2000 में

मृत्यु को प्राप्त हुए । सी.आर.पी.एफ. समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है ।

कुक पंखाराम (99 आर.ए.एफ.), कां. पी. कृष्णाराव (133 बटा.), कां. फिटर राजेंद्र सिंह (104 बटा.), सब इंस्पेक्टर हरी सिंह (100 बटा.), हैड कां. फिटर भागवत प्रसाद (100 बटा.), सफाई कर्मचारी रामुलु (12 बटा.), कुक पी. थिरूगनम् (109 बटा.), कुक अरूण कुमार दास (27 बटा.), स.उ.नि. (तकनीकी) आर.एस. मौर्या (3 सिगनल), इंस्पेक्टर दयाल सिंह (10 बटा.), हैड कां.राजकुमार शर्मा (94 बटा.), हैड कां. एस.एन. झा (106 बटा.) कां. समीर कुमार दास (28 बटा.), कां. अशोक कुमार (28 बटा.), इंस्पेक्टर टी.एस. रावत (128 बटा.), लांस नायक मोहिशचंद (4 बटा.), सब इंस्पेक्टर (एम.टी.) हरी शंकर पांडे (4 सिग), लांस नायक भूप सिंह (26 बटा), हैड कां. हरबंस सिंह (ग्रुप केंद्र इम्फाल), हैड कां. ए.बी. लश्कर (100 बटा.), कां. उपेंद्र राम (87 बटा.), हैड कां. कौशल किशोर (87 बटा.), हैड कां. मान सिंह (87 बटा.), कां. के.एस. बोर्डे (87 बटा), कां. सुखदेव राज (96 बटा.), हैड कां. चैन सिंह (133 बटा.), कां. लोपस मैथ्यू (121 बटा.), कां. के. विश्वनाथन (88 बटा.), हैड कां. जोगिन्दर सिंह (5 बटा.), लांस नायक बलदेव सिंह (91 बटा.), कां. सोम नाथ साहू (52 बटा.), कां एम.पी. इलुमलाई (18 बटा.), हैड कां.एस.पी. शिंदे (ग्रुप केन्द्र लखनऊ), लांस नायक पी. सैकिया (ग्रुप केन्द्र मुजफ्फरपुर), हैड कां. राम चंदर (45 बटा.), हैड कां. बुदुआ ओदेन (51 बटा.), सब इंस्पेक्टर क्रिष्टो सतेंद्र सिंह (1 सिग), हैड कां सुरेन्द्र कुमार (26 बटा.) तथा कां. राज कुमार (86 बटा)

इनके अतिरिक्त देर से प्राप्त समाचार के अनुसार माह अप्रैल, 1999 में 134 बटा. के हैड कां. जगत्तर सिंह, अक्तूर '99 में 67 बटा. के कां. अजय कुमार तथा नवंबर '99 में 14 बटा.के कां. जगदीश प्रसाद, 93 बटा. के कां. एस. मोहन राव, 136 बटा. के हैड कां. हनुमान प्रसाद तथा 80 बटा.के का. गुरमद मंडल भी मृत्यु को प्राप्त हुए ।

*43*वीं अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी प्रतियोगिता में सी.आर.पी.एफ. विजेता



उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री राम प्रकाश गुप्ता से ट्राफी प्राप्त करते उप कमांडेट एम.आर.आलम

43वीं अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी प्रतियोगिता–1999 का आयोजन 25 नवम्बर से 30 नवम्बर 1999 तक लखनऊ में उत्तर प्रदेश द्वारा किया गया। समारोह का उद्घाटन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने किया। के.रि.पु. बल सहित 26 टीमों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया। के.रि.पु. बल की कम्प्यूटर टीम का गठन ब्रिगेडियर श्री जे.एस. साहनी, डी.आई.जी. संचार के निर्देशन में हुआ।

उप कमाण्डेन्ट एम.आर. अलम, ई. डी.पी. के नेतृत्व में के.रि.पु. बल ने प्रथम स्थान प्राप्त कर, कम्प्यूटर की चैम्पियनशिप ट्राफी जीती। टीम के सदस्य उप निरीक्षक के. वेंकटेश–ई.डी.पी. सेल, महानिदेशालय तथा उप निरीक्षक (मा) जे बाला चन्द्रन, स्थापना सेल, महानिदेशालय को क्रमशः प्रोग्राममिंग तथा डाटा एन्ट्री व वर्ड स्टार में प्रथम स्थान प्राप्त हुए। के.रि.पु. बल की टीम ने प्रतियोगिता के कुल 4 स्वर्ण पदकों में से 3 स्वर्ण पदक जीत कर चैम्पियनशिप ट्राफी जीती।

के.रि.पु. बल की कम्प्यूटर टीम ने तीसरी बार प्रथम स्थान प्राप्त किया है। पहली बार 1994 में तथा दूसरी बार 1998 में चैम्पियनशिप ट्राफी जीती थी।

प्रतियोगिता के समापन समारोह में उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री राम प्रकाश गुप्ता ने ट्राफी प्रदान की।

टीम के वापस आने पर महानिदेशक महोदय श्री एम.एन. सभरवाल ने भी टीम के सदस्यों की प्रशंसा की तथा विभिन्न अवसरों पर इस तरह का जौहर दिखाने पर बल दिया।

100 आर.ए.एफ. बटा. द्वारा मैडिकल कैम्प



100 बटालियन द्वारा लगाए गये मेडिकल कैंप में दवाइयां प्राप्त करते नागरिक

अहमदाबाद वस्त्राल स्थित 100 आर.ए.एफ. बटा. ने अपने पांचवे स्थापना दिवस के अवसर पर 5 दिसम्बर, 1999 को गांव रामोल में एक मुफ्त चिकित्सा शिविर का आयोजन किया है। ज्ञातव्य है कि गांव रामोल को 100 बटा. ने समग्र विकास के लिए अंगीकृत किया है। इस चिकित्सा कैंप में यूनिट के चिकित्सा अधिकारी तथा अन्य स्टाफ के अतिरिक्त स्थानीय डाक्टरों की भी सेवा ली गई। शिविर में 800 लोगों का उपचार किया गया तथा उन्हें दवाई उपलब्ध कराई गई।

सी.आर.पी. की *5* सिगनल बटालियन का स्थापना दिवस

मौहाली स्थित केन्द्रीय आरक्षी बल की 5 सिगनल बटालियन ने 8 जनवरी 2000 को अपना 11वां स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर विभिन्न प्रतिस्पर्धाएं, खेल तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये। इन गतिविधियों में जवानों तथा उनके परिवारों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया।

युनिट मुख्यालय पर परिवार कल्याण पर एक सेमीनार आयोजित किया गया तथा बाद में बड़ा खाना आयोजित किया गया। यह बटालियन सीमा, विशेषकर जम्मू एवं कश्मीर क्षेत्र में तैनात सैनिकों को संचार सुविधा उपलब्ध कराने के महत्वपूर्ण कार्य में संलग्न है।

आर.ए.एफ. ने इंटर सेक्टर टेबिल टेनिस प्रतियोगिता जीती



107 आर.ए.एफ. को विजेता पुरस्कार प्रदान करते पश्चिमी सेक्टर के महानिरीक्षक श्री नारायण मिश्रा

7से 9 फरवरी, 2000 तक ग्रुप केन्द्र गांधी नगर में हुयी अंतर सेक्टर टेबिल टेनिस प्रतियोगिता की सिंगलस तथा डबल प्रतियोगिता रेपिड एक्शन फोर्स ने जीत ली।

प्रतियोगिता का उद्घाटन पश्चिमी सेक्टर के महानिरीक्षक श्री नारायण मिश्रा ने 7 फरवरी, 2000 को किया। 9 फरवरी को समापन समारोह के अवसर पर उन्होंने विजेताओं को पुरस्कार भी प्रदान किये।

प्रतियोगिता में बल के 12 सेक्टरों की टीमों ने भाग लिया।

सिगनल ग्रुप केन्द्र द्वारा गरीबों को वस्त्रदान



उप महानिरीक्षक (संचार) ब्रिगेडियर जे.एस. साहनी संस्कृति विहार के अजीत सिन्हा को वस्त्र सौंपते हुए

14 जनवरी 2000 को सिगनल ग्रुप केन्द्र, रांची में आयोजित एक समारोह में पुलिस उप महानिरीक्षक (संचार) बिग्रेडियर जे.एस. साहनी, ने संस्कृति विहार संस्था को गरीबों में वितरण के लिए 1288 वस्त्र सौंपे। संस्कृति विहार एक समाज सेवी संस्था हैं जो दक्षिण बिहार के छोटा नागपुर क्षेत्र में गरीब लोगों को कपड़े, बर्तन आदि का वितरण करने तथा उनका जीवन स्तर ऊंचा उठाने के लिए सक्रिय हैं। यह वस्त्र सिगनल ग्रुप केन्द्र में कार्यरत कार्मिकों तथा उनके परिवारों ने दिये थे।

बेस अस्पताल हैदराबाद में रक्तदान शिविर

28 दिसम्बर, 1999 को बल की हीरक जयंती के उपलक्ष्य में बेस अस्पताल हैदराबाद में एक रक्त दान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्घाटन आन्ध्र प्रदेश के गृह मंत्री श्री टी.देवेन्द्र गौड़ ने किया। रक्तदान शिविर में उप महानिरीक्षक हैदराबाद श्री टी.पी. दास सहित 135 अधिकारियों कार्मिकों एवम् उनके परिजनों ने रक्तदान दिया। हैदराबाद के इंस्टीट्यूट आफ प्रीवेंटिव मेडिसिन ने तकनीकी सहयोग प्रदान किया।

ग्रुप केन्द्र जालंधर को हिन्दी राजभाषा शील्ड

गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग के क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (उत्तर) ने वर्ष 1998-99 के लिए सरकारी काम काज में हिन्दी के प्रयोग के लिए ग्रुप केन्द्र, जालंधर को "ख" क्षेत्र का तृतीय पुरस्कार प्रदान किया है। 11 और 12 जनवरी, 2000 को लखनऊ में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में ग्रुप केंद्र जालंधर को राजभाषा शील्ड तथा निरीक्षक (अनुवादक) बाल कृष्ण टंडन को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

हींग लगे न फिटकरी रंग भी चोखा आए

(देसी दवाओं के नुस्खे)

- जे.एल. कपूर, अपर उप महानिरीक्षक (आर.ए.एफ.)

पेट दर्द

पेट दर्द होने पर नाभि के अन्दर रूई में लपेटकर हींग की छोटी सी टुकड़ी रख लें और गुनगुने पानी में थोड़ा सा नमक मिलाकर पी ले।

गले, छाती, सीने में ठंड बैठ जाने पर

एक चम्मच खाने का नमक कपड़-छान करके एक चम्मच देसी घी मिला कर साथ में खाने का 1/2 चम्मच चूना मिला कर लेप बनाएं और गले, सीने और पीठ की तरफ पसलियों के आस पास हल्के हाथ से मल लें। दिन में तीन चार बार ऐसा करने से अन्दर की ठंड साफ हो जाएगी।

होंठ फटने पर

(क) गर्मी सर्दी बारह महीने रात या सुबह नहाने के बाद तर्जनी अंगुली से सरसों या ब्रह्मी आवंला एक या आधी बूंद नाभि में लगाएं। कितनी भी सर्दी पड़ने पर होंठ नहीं फटेंगे।

(ख) फूली हुई चपाती पर घी लगाने के बाद एक टुकड़ा तोड़ें और उससे अपने होंठों पर जहां खून निकलता हो या होंठ सूख गए हों वहां पर सिंकाई करें। एक या दो दिन दोहराएं, आराम मिलने पर (क) पर लिखी कार्रवाई दोहराएं।

गले में दर्द होने पर

पानी पीते हुए कभी यह पता नहीं चलता कि पानी के साथ कोई बाल या अन्य तत्व अन्दर चला गया है जो कि पानी में मौजूद था। इससे गले में दर्द शुरू हो जाता है। ऐसा होने पर पीने के पानी को एक गिलास में लें और उसे चाकू या छुरी से सात बार काट कर पानी पी लें। दिन में दो या तीन बार ऐसा करने से दर्द बिल्कुल गायब हो जाएगा।

गले में दर्द या जुकाम

कछ व्यक्तियों को बारह महीने यह तंग करता है। इसके लिए आधा कप पानी, सात काली मिर्च, सात तुलसी के पत्ते और इच्छानुसार मिश्री मिलाकर उबालें। जब पानी आधा रह जाएं तो सुबह चाय पीने से पहले इसका सेवन करें। ऐसा करने से यह बिमारी यकीनन जड़ से चली जाएगी, परन्तु सेवन बराबर करते रहें जो कि न ही महंगा है न नुक्सानदायक।

लहसुन का उपयोग गैस इत्यादि होने पर

लहसुन की एक फांक छील कर सुबह गुनगुने पानी के साथ साबुत दवा की गोली की तरह सटक लें। ऐसा करने से पेट का रोग व गैस की तकलीफ कभी तंग नहीं करेगी और लम्बे समय तक इसका सेवन करने से यह रोग सदा के लिए खत्म हो जाएगा।

चोट लगने पर

यदि चोट ज्यादा गहरी नहीं है तो फिटकरी को पीस लें और रूई को गीला करके

उस पर फिटकरी डाल कर जख्म पर बांध लें। बीच बीच में 15-20 मिन्ट तक कुछेक बूंदें पानी की डालें। इससे खून बंद हो जाएगा और चोट का निशान हल्का हो जाएगा, हो सकता है कि दिखाई भी न दें।

गले में टाउंसिल

फिटकरी को कपड़-छान करके झाड़ के तीले का फाया बनाएं और गीला करके फिटकरी लगाकर किसी दूसरे आदमी से गले में टाउंसिल के ऊपर लगवाएं। सात दिन तक ऐसा करने पर टाउंसिल के कारण गले में होने वाला दर्द खत्म हो जाएगा और कभी दोबारा तकलीफ नहीं होगी।

हाथ या पैर में मोच आना

सरसों के तेल में थोड़ी सी हींग और दो तीन फांक लहसुन की डाल कर गर्म कर लें। दिन में तीन चार बार मोच की जगह लगाएं इससे सूजन चली जाएगी। यदि अन्दर मांस वगैरह फट गया हो तो वो यथास्थान आ जाएगा।

दांतों को पायरिया से बचाना

तुलसी की पत्ती को सीधा सटक लें। कभी न चबाएं। तुलसी में गुण ही गुण है परन्तु एक अवगुण है कि चबाने से इसकी तासीर बदल जाती है।

काली खांसी या अन्य कोई खांसी जो ठीक न हो रही हो

200 मिली ग्राम शहद और लगभग 20-25 तुलसी की पत्तियां 20-25 काली मिर्च के दानों के साथ पीस कर शहद में मिलाकर आग पर पकाएं। जब लेई सी बन जाएं उसे खुले मुँह की शीशी में रखें। दिन में तीन चार बार तर्जनी अंगुली से चाट लें। खांसी हमेशा के लिए चली जाएगी।

नींबू का उपयोग

यदि वजन बढ़ाना हो तो रोज सुबह एक चम्मच शहद में एक नींबू का रस गुनगुने पानी में घोल कर खाली पेट में पिएं और वजन घटाने के लिए ठंडे पानी में नींबू और शहद इच्छानुसार घोल कर खाली पेट इसका सेवन करें।

लम्बे समय तक बालों का काला रहना

सरसों के तेल का रोज़ाना इस्तेमाल करने से बाल लंबे समय तक काले रहते हैं। बालों में चमक व कालापन बरकरार रखने के लिए रीठे से बाल अवश्य धोएं।



67 बटा. के सिपाही बी.एन. मुरमू की पत्नी श्रीमति मुरमू को *7.50* लाख रूपये की अनुग्रह राशि का चैक भेंट करते पूर्वी सेक्टर के महानिरीक्षक श्री आर.पी. सिंह



बेस अस्पताल हैदराबाद द्वारा अक्तूबर *'99* में आयोजित पल्स पोलियों अभियान के दौरान भारी मात्रा में आए बच्चों को पोलियों की खुराक दी गई।

रजि. नं. 4767/87



गणतंत्र दिवस परेड में बल की टुकड़ी

सी.आर.पी.एफ. समाचार

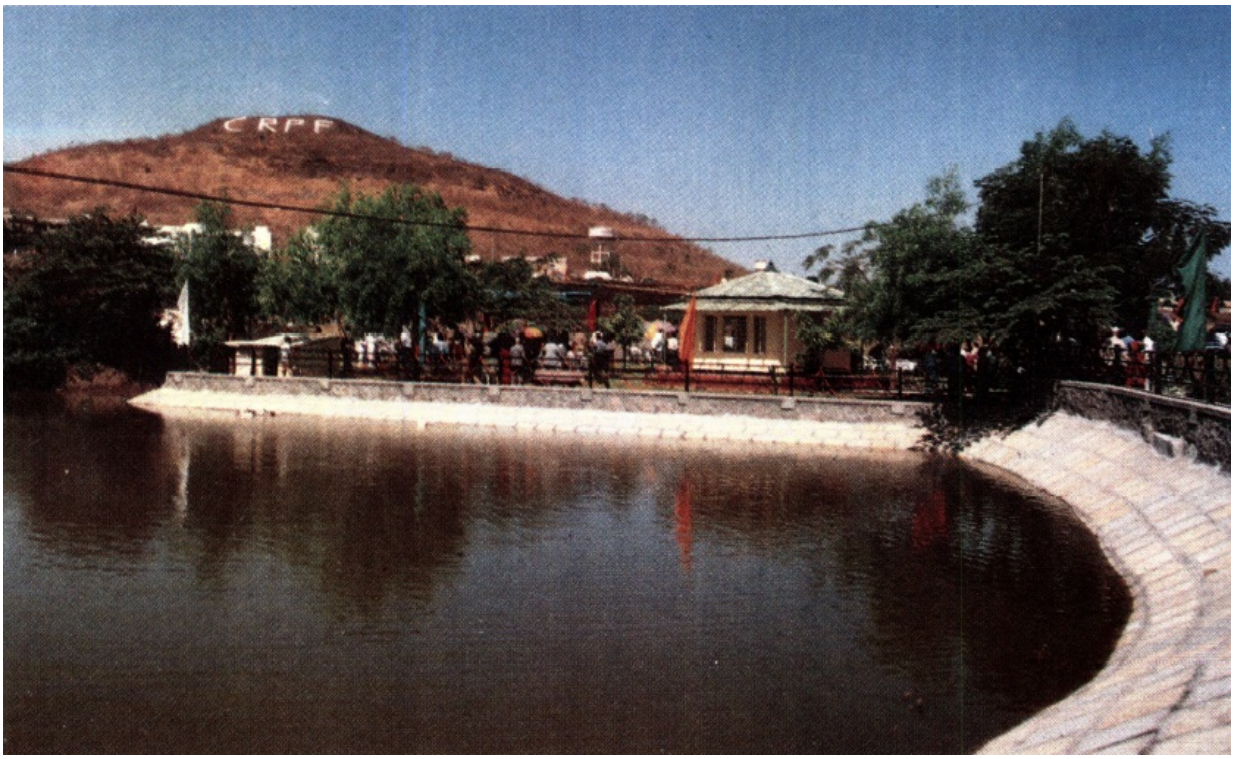
31 मार्च, 2000



राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के तत्वाधान में सीमा सुरक्षा बल द्वारा मानवाधिकारों पर आयोजित वाद विवाद प्रतियोगिता की सर्वश्रेष्ठ टीम की ट्राफी केरिपु बल को प्रदान करते राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री जे.एस. वर्मा



बल के प्रथम महानिदेशक श्री वी.जी. कानेटकर पूणे में लेक पार्क का उद्घाटन करते हुए



ग्रुप केंद्र पूणे में बनाया गया लेक पार्क



सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड-14 अंक-2
31 मार्च, 2000
11 चैत्र, शक 1922

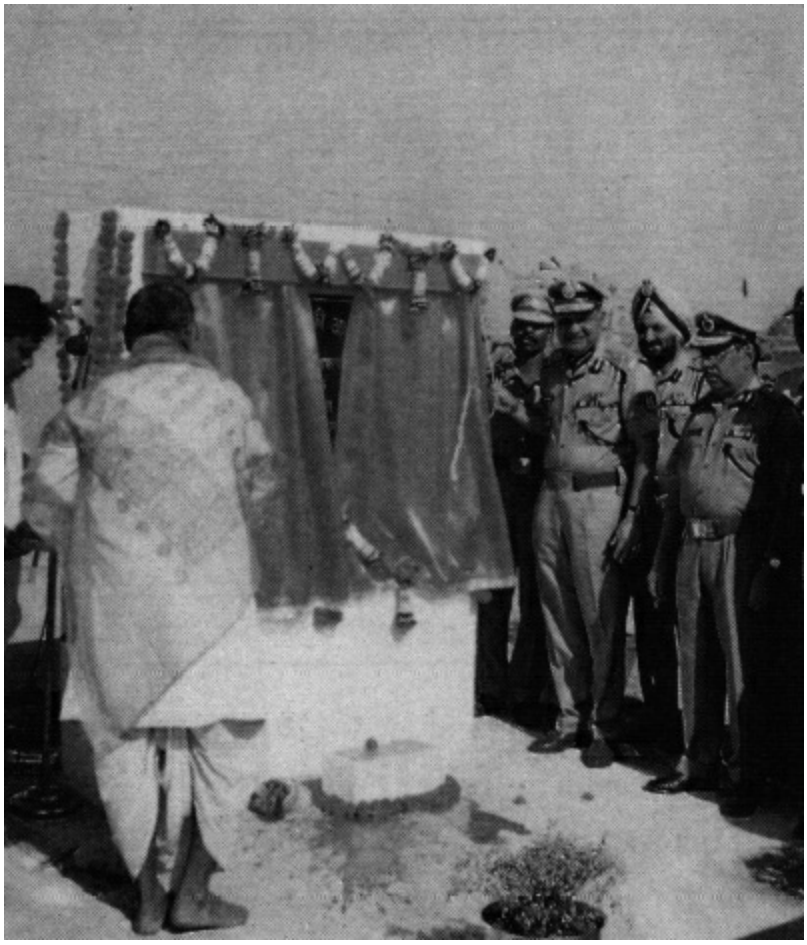
मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं युनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से डी.जी. महापात्र

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ. प्रेस झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-72



इस अंक में

महानिदेशक का पूणे दौरा

महानिदेशक का 81 बटा. का दौरा

10 वें बैच के अधिकारियों का पुनर्मिलन

मानवाधिकारों पर प्रशिक्षण

पल्लिपुरम ग्रुप केंद्र राजभाषा प्रयोग में अग्रणी

45 बटा. द्वारा विकास कार्य

हिंदी बोलने पर गर्व महसूस करें

कांवेताएं

जीवन को सफल बनाने के गुण

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

–संपादक

महानिदेशक का पूणे और मुम्बई दौरा



मुम्बई में *102* आर.ए.एफ. द्वारा बनाई जाने वाली बैरकों का शिलान्यास करते महानिदेशक

के.रि.पु. बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने 7-8 मार्च, 2000 को बल के पूणे तथा मुम्बई स्थित केन्द्रों का दौरा किया। पूणे ग्रुप केन्द्र में उन्होंने 120 व्यक्तियों की क्षमता वाली कृष्णा बैरक का उद्घाटन किया तथ अधिकारी मैस काम्पलेक्स की नींव रखी। इस मौके पर बल के प्रथम महानिदेशक श्री वी.जी. कानेटकर भी उपस्थित थे। तेलेगांव स्थित इस ग्रुप केन्द्र के मुख्य मार्ग का नाम भी श्री कानेटकर के नाम पर रखा गया। इस अवसर पर आयोजित एक भव्य समारोह में कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। बाद में श्री कानेटकर ने ग्रुप केन्द्र कैम्पस में स्थित एक लेक पार्क का भी उद्घाटन किया, जिसे बल के कार्मिकों के मनोरंजन के लिए एक पिकनिक स्पोट के रूप में विकसित किया गया है।

मुम्बई में श्री सभरवाल ने तलोजा नवी मुम्बई में 102 आर.ए.एफ. बटालियन द्वारा बनाई जाने वाली 9 बैरकों की आधारशिला भी रखी।

हिन्दी बोलने पर गर्व महसूस करें

"भारत दूसरे देश की कार्बन कॉपी बनने की इच्छा रखता है, तो उसकी कोई पहचान नहीं रहेगी और यदि हमारे वजूद को बनाए रखना है, तो हमारी भाषा एवं संस्कृति को ही हमारी पहचान बनाना होगी। हिन्दी भाषा के कमजोर एवं गरीब लोगों की भाषा होने की हीन भावना को निकाल कर हिन्दी भाषा बोलने एवं उसे उपयोग में लाने पर गर्व महसूस किया जाना चाहिए।"

ग्रुप केन्द्र केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल हैदराबाद में 3 दिसंबर, 1999 को राजभाषा स्वर्ण जयंती वर्ष 1999-2000 संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए के.रि.पु. बल दक्षिण क्षेत्र के महानिरीक्षक डॉ.डी.एन. गौतम ने उक्त विचार व्यक्त किये। उन्होंने केरिपु बल में हिन्दी भाषा के उपयोग एवं प्रगति के प्रति संतोष व्यक्त किया तथा हिन्दी को कार्यालय स्तर पर बढ़ावा देने के लिए कुछ क्षेत्रों में अंग्रेजी भाषा को वर्जित कर हिन्दी भाषा को अनिवार्य करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया।

श्री गौतम ने कहा कि भाषा संस्कृति को तथा संस्कृति भाषा को समृद्ध करती है, इसलिए दोनों को साथ लेकर चलना चाहिए। उन्होंने उदारीकरण की नीति को उधारीकरण की नीति बताते हुए हिन्दुस्तान को दूसरे देश की कॉपी बनने से रोकने की आवश्यकता पर भी जोर दिया। उन्होंने वैज्ञानिक प्रगति के लिए अंग्रेजी भाषा को ही श्रेष्ठ बताए जाने को भी बेतुकी बात बताया तथा लोगों पर इस प्रकार की गलत भ्रान्ति को अपने दिमाग से निकालने की आवश्यकता पर जोर दिया।

इससे पूर्व रेल निलयन के वरिष्ठ हिन्दी भाषा अधिकारी श्री संसार चंद ने संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए दक्षिण भारत में हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार के कार्यों की सराहना की। उन्होंने अपने सम्बोधन में आजादी के पश्चात से हिन्दी के राजभाषा एवं कार्यालयीन भाषा की स्थिति तक पहुंचने का वृतान्त सुनाया।

इस संगोष्ठी में केरिपु बल हैदराबाद के अतिरक्ति डी.आई.जी. एवं जी.सी.जी.एफ. डिसोजा, एमएचए. हिन्दी टीचिंग स्कीम के सहायक निदेशक आर.एन. सरोज, केरिपु बल निदेशालय के हिन्दी अधिकारी एस.एन. सिंह, वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक मणि भूषण प्रसाद, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सहायक निदेशक राम नरायण सरोज ने भाग लेते हुए अपने विचार रखे।

महानिदेशक का *81* बटा. का दौरा

के.रि.पु. बल के महानिदेशक श्री महेन्द्र नाथ सभरवाल ने अपने मणिपुर प्रवास के दौरान 20 जनवरी, 2000 को 81 वाहिनी के मुख्यालय का दौरा किया। उन्होंने अपने इस दौरे के दौरान वाहिनी के विभिन्न क्रियाकलापों में रूचि दिखायी व वाहिनी के क्वार्टर गार्ड, मैगजीन, अधिनस्थ अधिकारी मेस, कैंटीन, मुख्य कार्यालय, सिगनल सेंटर, मनोरंजन कक्ष व वाहिनी भंडार का निरीक्षण किया। महानिदेशक को वाहिनी के परिचालन कक्ष में मणिपुर की वर्तमान स्थिति, बल के पदस्थापन व इस वाहिनी की परिचालन उपलब्धियों के बारे में जानकारी दी गयी। महानिदेशक ने वाहिनी से संलग्न फायरिंग रेंज में इस वाहिनी द्वारा बनाये गये "स्नैप शूटिंग" कक्ष को देखा और उसकी सराहना की। इस मौके पर बल महानिदेशक को "स्नैप शूटिंग" का प्रदर्शन भी दिखाया गया । महानिदेशक के साथ पुलिस महानिरीक्षक मणिपुर एवं नागालैंड श्री मोहन राज, पुलिस उप महानिरीक्षक, इम्फाल श्री सी.एस. बरार व पुलिस उप

महानिरीक्षक परिचालन श्री डी. संपत मौजूद थे। महानिदेशक ने इस वाहिनी के क्रियाकलापों व परिचालन उपलब्धियों की भूरि–भूरि प्रशंसा की।



युनिट कैंटीन में मणिपुर हैंडलूम का सामान देखते महानिदेशक

पोलियो करेक्टिव सर्जरी शिविर में नीमच का सहयोग

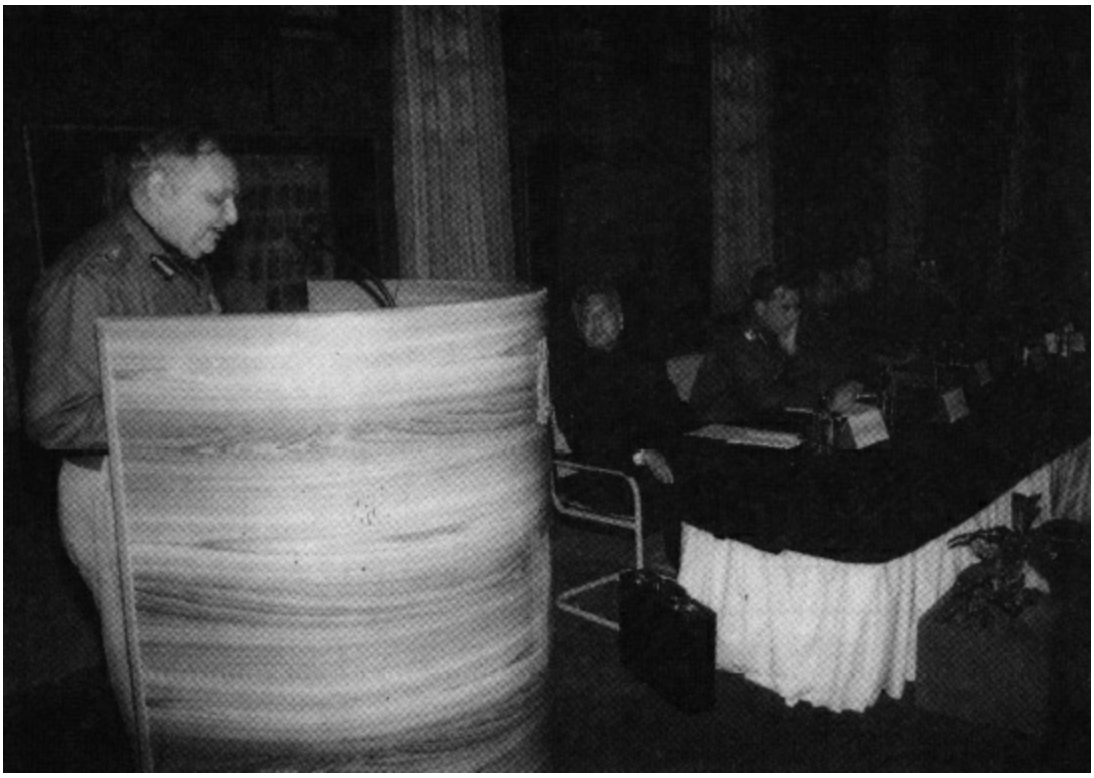
दिनांक 27 फरवरी से 4 मार्च 2000 तक स्वयं सेवी संस्थाओं एव दान दाताओं के सहयोग से जिला चिकित्सालय, नीमच में पोलियो करेटिक्टव शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में सी.टी.सी. प्रथम ने मानवीय आधार पर बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया एवं उपरोक्त कार्य को सफल बनाने में यथासम्भव आवश्यक संसाधन एवं सर्जरी के दौरान मदद हेतु कार्मिकों की सेवाएं भी उपलब्ध करायी। उक्त शिविर में कुल 659 विकलांगों का पंजीयन हुआ जिनमें से 219 को सर्जरी के लिए चयनित किया गया।



सर्जरी के बाद रोगियों को ले जाते बल के कार्मिक

*10*वें बैच के अधिकारियों का पुनर्मिलन

– देवेन्द्र कुमार



समारोह का उद्घाटन करते महानिदेशक

1–2 मार्च, दो दिन, दसवें बैच के अधिकारियों (टेंथ डी.ए.जी. ओज) के लिए अविस्मरणीय दिन बन गये हैं। क्यों न हों, किसको आशा थी कि इस तीस साल से भी कुछ अधिक समय की आपाधापी, दौड़–धूप के बाद अब नौकरी की इस संध्या में यह पुनर्मिलन, गर्मी की तपती दोपहर में ठण्डी बहार के झोकों की तरह ताजगी देकर गुदगुदा जायेगा। ज़िन्दगी में बहुत सी बातें यूहीं अचानक हो जाती हैं, यह पुनर्मिलन भी कुछ ऐसी ही घटना थी; अचानक हुई तथा अपनी छाप हमेशा के लिये छोड़ गयी। दसवां बैच इसके लिये महानिदेशक महोदय तथा अन्य अधिकारियों का ऋणी रहेगा।

1 मार्च को महानिदेशक श्री महेन्द्र सभरवाल ने ग्रुप केन्द्र झड़ौदा कलां में इस समारोह का उद्घाटन किया तथा उन्हीं की अध्यक्षता में सेमिनार का पहला पेपर इसी कोर्स के अधिकारी सुरेन्द्र सिंह रावत ने प्रस्तुत किया। बहुत से अतिथि अधिकारियों व कोर्स के अधिकारियों ने खुल कर अपने विचार प्रस्तुत किये तथा बढ़ चढ़ कर भाग लिया।

2 मार्च को इस समारोह के मुख्य अतिथि महानिरीक्षक उत्तरी क्षेत्र श्री दुर्गेश प्रसाद सिन्हा थे तथा इस दिन के सेमिनार में दूसरा पेपर दीप नारायण सिंह बिष्ट द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस दिन भी बहुत से ट्रेनिंग संबंधी मुद्दों पर उच्च स्तर का विचार विमर्श हुआ। ग्रुप केन्द्र के अपर महानिरीक्षक एम.पी. चिटनिस ने दोनों दिनों के कार्यक्रम का प्रबंध अत्यन्त सुघड़ ढंग से किया। उनका इस कोर्स के साथ बहुत ही भावात्मक

संबंध जो था, वे कोस को बोसेक ट्रेनेंग से जुड़े थे, वे 1969 में सीटीसी के सहायक प्रिंसिपल थे। गुरू–चेलों में अच्छी बनी। दिन के समारोह के बाद पुराने दिनों की यादों की बारात, खट्टे मीठे अनुभवों की बातें ही बातें – न खत्म होने वाली बातों का सिलसिला जारी रहा। 19 में से 18 अधिकारी आये थे, 2 अन्य अधिकारी जिन्होंने सर्विस छोड़ दी थी वे भी दूर दराज से अपना काम छोड़ कर शामिल हुए।

भूली बिसरी यादें

दिसम्बर 1969, कड़ाके की सर्दी, मध्य प्रदेश के नीमच कस्बे में भारत की चारों दिशाओं से 28 नवयुवक, आंखों में भविष्य के सपने लिये इकट्ठे हुये। ज्यादातर अपने आप को तुर्रमखां से कम नहीं समझते थे – किसी ने कुछ तीर मारा था किसी ने कुछ – एक साथी भारत की बास्केट बाल में थे तो एक तिकड़ी कूद में भारत भर में प्रथम थे कोई अपने प्रान्त, कोई यूनिवर्सिटी का नेतृत्व करते रहे थे। इसी प्रकार पढ़ने में भी कई मेधावी छात्र थे। अपने आप मियां मिटूठ होने वाली बात नहीं हैं, 10वां बैच बेहद उत्कृष्ट बैच था – उत्कृष्ट है, परन्तु कुछ नज़र लग गई है। चौबे जी छब्बे बनने की जगह दुबे ही रह गये हैं। कोर्स पर कुछ ग्रहण सा लग गया है। पर इस पुनर्मिलन के समय पर इस पर टिप्पणी न करना ही अच्छा होगा।

28 में से 3 को बेसिक ट्रेनिंग में ही जाना पड़ा था, दो ने बाद में नौकरी छोड़ी तथा सबसे दुःख का विषय है कि चार साथी हमेशा के लिये छोड़ कर स्वर्गवासी हुये। उन सबकी याद रह रह कर आती रही।

30 साल का समय, थोड़ा ही लगता है। पर यात्रा बहुत लम्बी है। कुछ मित्र तो कुछ महीने बाद ही रिटायर हो जायेगें – भला हो 2 साल नौकरी बढ़ने का वरना अब तक 4–5 चले गये होते। के.रि.पु बल भी इन 30 सालों में खूब फला बना। अफसरों की भी 'नई उम्र की नई फसल' तैयार हो गई है। के.रि.पु. बल में नौकरी का अन्दाज बदल गया है, एक जमाना बदल गया है। के.रि.पु. बल की जिम्मेदारी बढ़ गई है, उसके काम बहुत मुश्किल हो गये हैं। हम लोग तो अपना सफर पूरा करने वाले हैं। आगे वालों को सिर्फ याद दिला दें कि उनके कन्धों पर देश की जिम्मेदारियों का कितना बोझ है – उन्हें क्या–क्या करना। इकबाल का शेर उन्हें ही नज़र हैं :–

वतन की फिक्र कर नादान,
मुसीबत आने वाली है,
तेरी बरबादियों के मशवरें हैं
आसमानो में।
ना समझोगे तो मिट जाओगे ऐ
हिन्दोस्तां वालों
तुम्हारी दासतां भी ना होगी
दास्तानों में।।

उपरोक्त शेर हर तरह की मुश्केल ड्यूटियों की तरफ संकेत कर रहा है। आने वाले समय में के.रि.पु. बल को कैसी–कैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा, इसका विवेचन महानिदेशक महोदय ने भी अपने उद्घाटन भाषण में दिया था।



*10*वें बैच के अधिकारी उत्तरी सेक्टर के महानिरीक्षक श्री डी.पी. सिन्हा व अन्य अधिकारियों के साथ

30 वर्ष के नौकरी काल में 1971 के भारत पाकिस्तान युद्ध, बंगाल के नक्सल आन्दोलन, उत्तर–पूर्व प्रान्तो की विद्रोहात्मक स्थिति, पंजाब व कश्मीर के खून खराबे व हिंसा के नंगे नाच, साम्प्रदायिक दंगों, चुनाव गत हिंसा तथा अन्य आन्तरिक सुरक्षा के मामलों से जूझते–जूझते भारत के हर कोने में ड्यूटी करके, एक–एक करके विदा लेते इस बैच के लोग के.रि.पु. बल की नई पीढ़ी को इस 'रिले रेस' की बेटन सौंपते जाएंगे। यही संसार का नियम है। अकबर ईलाहाबादी की पंक्तियों को कुछ तोड़ मरोड़ दें तो शायद असंगत नहीं होगा –

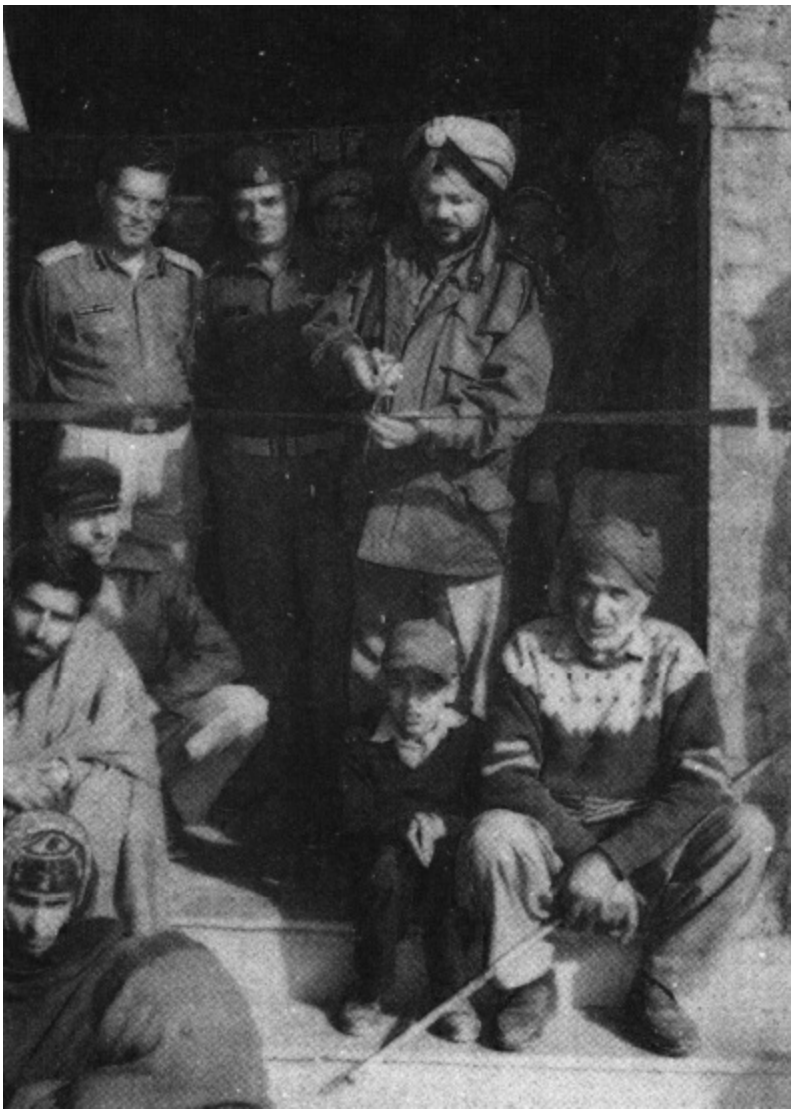
प्यारे, के.रि.पु. बल में क्या काम ऐ नुमाया कर गये।

ट्रेनिंग की, चलते रहे, पेंशन ली और मर गये।।

*10*वें बैच के अधिकारी

1. श्री एम.वी. सिंह
2. श्री परमजीत सिंह

3. श्री वी.डी. टोकस
4. श्री पूरन सिंह
5. श्री एस.बी. मेहरा
6. श्री एस.एस. रावत
7. श्री हुकम सिंह नेगी
8. श्री उमराव सिंह
9. श्री बलराम सिंह नेगी
10. श्री सुमेर सिंह यादव
11. श्री बी.एस. नारंग
12. श्री देवेन्द्र कुमार
13. श्री ए.एस. मलिक
14. श्री पुष्कर सिंह
15. श्री गुरचरण सिंह
16. श्री पी.एन. शर्मा
17. श्री पी.वी. बेलगांवकर
18. श्री डी.एन.एस. बिष्ट
19. श्री ए.के. छिब्बर



83 बटालियन के कमांडेंट सी.जी.एस. हीरा जम्मू में एक चिकित्सा शिविर का उद्घाटन करते हुए



8 बटा. द्वारा भद्रवाह में आयोजित पल्स पोलियो अभियान में बच्चों को दवा देते अधिकारी



सी.टी.सी. दो कोयम्बतूर द्वारा आयोजित पल्स पोलियो अभियान में बच्चों को पालियो खुराक दी गयी



28 बटा. द्वारा श्रीनगर में आयोजित पल्स पोलियो अभियान में बच्चो को पोलिया खुराक देते अधिकारी

आर.ए.एफ. मुख्यालय में मानवाधिकारों का प्रशिक्षण



शिविर का उद्घाटन करते अपर महानिदेशक श्री वाई.एन. श्रीवास्तव

मानवाधिकारों के सम्मान, इनकी सुरक्षा और इनके निवेहन के मामले में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का रिकार्ड बहुत अच्छा रहा है। इतना बड़ा अर्द्ध सैनिक बल होने तथा भारी रूप से परिचालनिक कर्तव्यों पर तैनात रहने के बावजूद यह एक बहुत बड़ी उपलिब्ध है। अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार कानून तथा मानवाधिकार विषय पर आयोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन करते हुए 27 मार्च, 2000 को केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के अपर महानिदेशक श्री वाई.एन. श्रीवास्तव ने कहा कि के.रि.पु. बल ने कानून व्यवस्था, आतंकवाद विरोधी तथा अन्य भिन्न भिन्न प्रकार के कर्तव्यों का कठिन परिस्थितियों में भी निर्वाह करने के बावजूद यह सिद्ध कर दिया है कि वह मानवाधिकारों का कितना बड़ा चैंपियन है।

अंतर्राष्ट्रीय रेड क्रास समिति के सलाहकार श्री डी.के. आर्य ने इस मौके पर बोलते हुए कहा कि मानवाधिकारों से संबंधित यह विश्व संगठन सभी क्षेत्रों में मानवाधिकारों से संबंधित जागृति पैदा करने का प्रयास कर रहा है। अपने स्वागत भाषण में बोलते हुए रेपिड एक्शन फोर्स के महानिरीक्षक श्री ताशी दावा ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय रेड क्रास संगठन 1996 से के.रि.पु. बल के अधिकारियों के लिए इस तरह के छः शिविरों का आयोजन कर चुका है। प्रतियोगिता के दूसरे दिन प्रशिक्षण शिविर में भाग ले रहे अधिकारियों को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के महानिदेशक श्री डी.आर. कार्तिकेयन ने कहा कि "लोकतंत्र का आधार विधि सम्मत शासन हैं। और विधि सम्मत शासन की पहचान इस बात से होती है कि इस शासन में जनता के मानवाधिकारों का कितना सम्मान होता है और उन्हें कितनी सुरक्षा प्रदान की जाती है। इसमें कानून के समक्ष समानता, सभी मूल अधिकारों तथा मानवगरिमा और स्वतंत्रता से जुड़े सभी अधिकारों का सम्मान एवं सुरक्षा शामिल है। श्री डी.आर. कार्तिकेयन ने कहा कि भारतीय संविधान के प्रति पूरी तरह प्रतिबद्ध होने तथा देश के कानून के पालन के लिए शपथ बद्ध होने के कारण प्रत्येक सरकारी कर्मचारी का यह कर्तव्य है कि वह न केवल मानवाधिकारों का पालन करे, अपितु अन्य लोगों के मानवाधिकारों का सम्मान करते हुए उनकी भी रक्षा करे। विशेषकर वर्दीधारी बलों के सदस्यों पर यह जिम्मेदारी और भी अधिक है। इस क्षेत्र में के.रि.पु. बल की भूमिका की प्रशंसा करते हुए श्री कार्तिकेयन ने कहा कि अर्द्धसैनिक बलों को मानवाधिकारों का सम्मान और रक्षा करनी चाहिए।

इस शिविर में बल के 40 अधिकारियों ने भाग लिया।

पल्लिपुरम ग्रुप केंद्र राजभाषा प्रयोग में अग्रणी

वर्ष 1999 के दौरान राजभाषा की प्रगति की ओर अपर पुलिस उप-महानिरीक्षक,

ग्रुप केन्द्र, के.रि.पु. बल, पाल्लिपुरम द्वारा कइ महत्वपूर्ण कदम उठाये गये जिससे राजभाषा की प्रगति में काफी वृद्धि हुई और उसके प्रचार प्रसार में तेजी भी आई।

वर्ष के दौरान दो कार्यशालाएं आयोजित की गई जिनमें 67 कार्मिकों ने अपने हिन्दी ज्ञान को समृद्ध किया और हिन्दी में काम करने की झिझक से मुक्ति पायी।

हिन्दी की प्रगति को ध्यान में रखकर अपर पुलिस उप महानिरीक्षक श्री पी. दामोदरन के मार्गदर्शन में हिन्दी अनुवादक ने कार्यालय के मुख्य द्वार पर "आज का हिन्दी शब्द", लिखने के लिए एक बोर्ड लगवाया और साथ ही साथ कार्यालय में "आज का वाक्य" लिखने के लिए भी एक बोर्ड लगवाया। इन बोर्डों पर हिन्दी अनुवादक द्वारा रोजाना नये शब्द/वाक्य लिखे जाते हैं। महान व्यक्तियों की वाणियों को द्विभाषी रूप से बोर्ड पर लिखकर परिसर में स्थित मुख्य कार्यालयों/स्थानों पर लगाया गया है।

वर्ष के दौरान तीन अधिकारियों व आठ कार्मिकों को भाषा प्रशिक्षण तथा तीन कार्मिकों को टंकण प्रशिक्षण दिलाया गया। वर्तमान में दो अधिकारी और दस कार्मिक प्रशिक्षणरत हैं। प्रशिक्षण के लिए शेष सभी अधिकारी/कार्मिकों को समयबद्ध कार्यक्रम से दिसम्बर, 2000 तक प्रशिक्षित कराने हेतु नामांकित भी किया जा चुका है, जिससे वर्ष 2000 में ही सभी को प्रशिक्षित कराने का गौरव हासिल किया जा सके। हिन्दी भाषा/टंकण/आशुलिपि प्रशिक्षण पर ज्यादा जोर देते हुए अपर पुलिस उप-महानिरीक्षक महोदय ने सभी सहायक उप निरीक्षक (मं) कार्मिकों को इलेक्ट्रॉनिक टाइपराइटर पर प्रशिक्षित कराने का बीड़ा भी उठाया है। अब तक लगभग 20 कार्मिकों को इलेक्ट्रॉनिक मशीन पर प्रशिक्षित भी कराया जा चुका है।

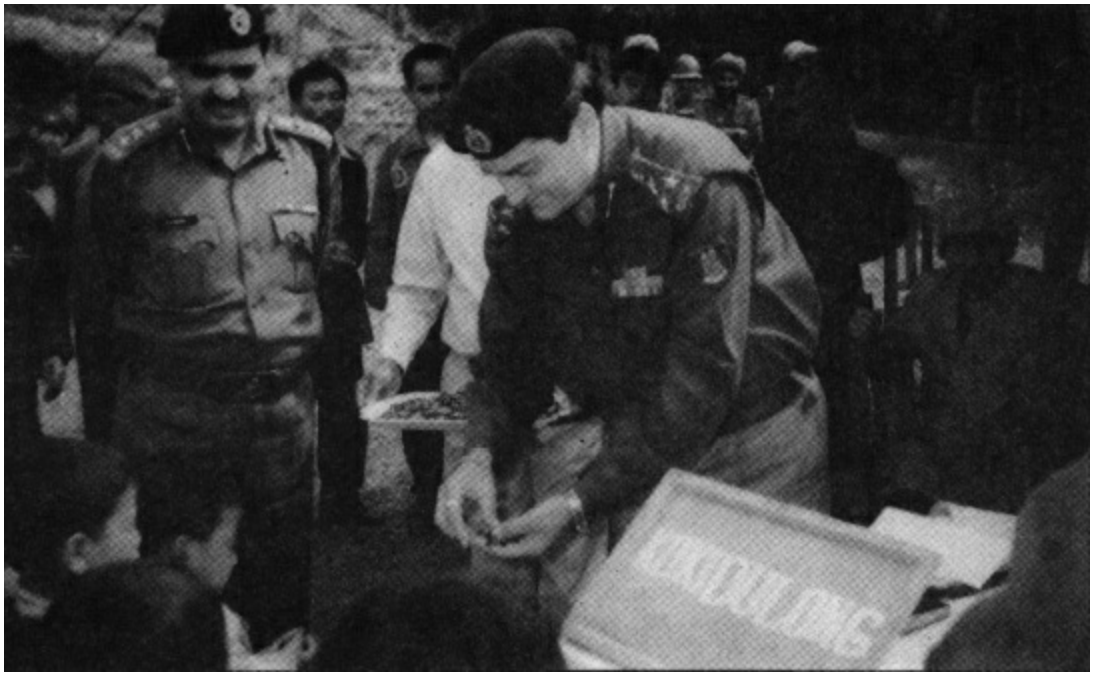


केरल के अपर मुख्य सचिव डी. बाबू पाल से हिंदी ट्राफी ग्रहण करते उप कमांडेंट एस. नेल्सन

हिन्दी पखवाड़ा/दिवस के अवसर पर केरिपु बल, महानिदेशालय, दिल्ली द्वारा जारी निर्देशों को ध्यान में रखते हुए विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई तथा पुरस्कृत कार्मिकों को सम्मानित भी किया। वर्ष के दौरान नराकास, तिरूवनन्तपुरम तथा केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं में ग्रुप केन्द्र के कार्मिकों द्वारा सराहनीय प्रदर्शन किया गया व उनके द्वारा अनेक पुरस्कार भी जीते गये । नराका समिति, तिरूवनन्तपुरम द्वारा हिन्दी पखवाड़े के उपलक्ष्य में दिसम्बर माह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में अपने उत्कृष्ट योगदान से ग्रुप केन्द्र, पल्लिपुरम के कार्मिकों ने समस्त बल को गौरवान्वित करते हुए चल वैजयंति ट्रॉफी प्राप्त की। चल वैजयंति ट्रॉफी, केरल के अपर मुख्य सचिव श्री डी. बाबू पॉल के कर कमलों से, ग्रुप केन्द्र में उपस्थित वरिष्ठतम् अधिकारी की हैसियत से श्री एस. नेल्सन, उप-कमांडेंट ने प्राप्त की।

अपर पुलिस उप-महानिरीक्षक, श्री पी. दामोदरन के. सारथी जैसे नेतृत्व और राजभाषा अधिकारी, उप-कमांडेंट श्री के. पी. उण्णिकृषन के मार्गदर्शन से ग्रुप केन्द्र, पल्लिपुरम राजभाषा प्रगति की सीढ़ियां एक के बाद एक चढ़ता जा रहा है। "ग" क्षेत्र में होते हुए भी ग्रुप केन्द्र, पल्लिपुरम, राजभाषा की अश्वमेघ यात्रा, बेलगाम नई शताब्दी की ओर अपने बुलन्द हौसलों के साथ तीव्र गति से अग्रसर है।

45 बटालियन द्वारा विकास कार्यक्रम



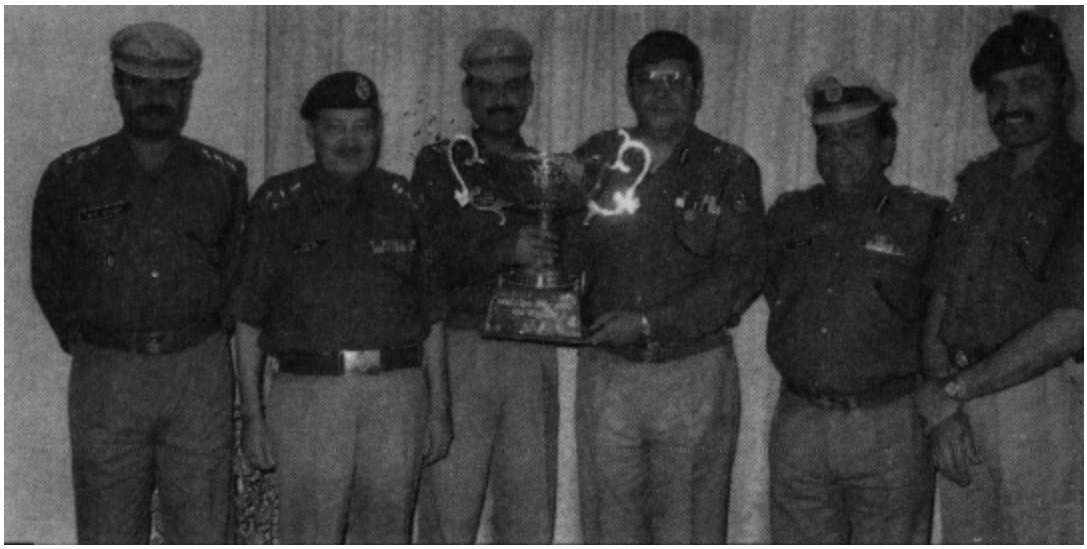
उप महानिरीक्षक (परिचालन) दीमापुर श्री आर.के. शर्मा बच्चों को मिठाई वितरित करते हुए

दीमापुर नागालैण्ड स्थित 45 बटालियन ने 1 मार्च से 9 मार्च, 2000 तक अपने सिविक एक्शन कार्यक्रम के तहत अनेक विकास एवं कल्याण कार्यक्रमों का ओयाजन किया।

1 मार्च, 2000 को कुकी डुलांग एक स्थानीय स्कूल के 53 छात्रों को महानिरीक्षक (परिचालन) दीमापुर श्री आर.के. शर्मा ने मुफ्त पुस्तकें वितरित की। 9 मार्च, 2000 को स्थानीय टीमों के बीच खेल प्रतियोगिता आयोजित की गई तथा स्कूल का मरम्मत कार्य किया गया।

2 मार्च, 2000 को मडजीफिमा में 45 बटा. के कमांडेन्ट श्री एच.आर. बंगा ने एक स्थानीय स्कूल के 76 छात्रों को मुफ्त पुस्तकें प्रदान की। 11 मार्च, 2000 को यहां की स्थानीय टीमों के बीच खेल प्रतियोगिता आयोजित की गई। स्कूल की मरम्मत की गई तथा गांव में एक शौचालय का निर्माण किया गया। 6 मार्च, 2000 को थीलुक्सु के एक स्थानीय स्कूल के 46 छात्रों को 45 बटा. के कमांडेन्ट ने पुस्तकें वितरित की । 8 मार्च व 9 मार्च, 2000 को पीडुछा, सोझुकु, दिपुपार तथा पदम पोखरी के स्कूलों के छात्रों को भी मुफ्त पुस्तकें वितरित की गई।

केरिपु बल की टुकड़ी प्रथम



गणतंत्र दिवस ट्रॉफी के साथ केन्द्रीय सेक्टर ने महानिरीक्षक श्री तिलक काक एवं अन्य अधिकारी

लखनऊ में 26 जनवरी, 2000 को आयोजित गणतन्त्र दिवस परेड में केन्द्रीय सेक्टर की एक महिला व पुरुष टुकड़ी ने ब्रास बैंड टुकड़ी के साथ भाग लिया। परेड में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की टुकड़ी सर्वश्रेष्ठ पायी गयी और उन्हें सरकार द्वारा प्रथम स्थान की ट्राफी प्रदान की गयी।

माह जनवरी/फरवरी, *2000* में मृत्यु को प्राप्त हुए कार्मिक

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिक माह जनवरी, फरवरी 2000 में मृत्यु को प्राप्त हुए। केरिपु बल समाचार परिवार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

उ.नि. (एम), डी.के. सिन्हा (आई.ए. पी.–2), कां. कुलदीप राज (2 बटा.), कां. रामधन (2 बटा.), कां. मूलदेव शर्मा (2 बटा.), ल.ना. अमालुदीन शेख (2 बटा.), इंस्पेक्टर सुरजीत सिंह (ग्रुप केन्द्र शिव पुरी), कां. अशोक कुमार (54 बटा.), इंस्पेक्टर बी.एन.पी. सिंह (95 बटा.), हैड कां. सुहाकर दुबे (117 बटा.), कां के. श्रवण कुमार (130 बटा.), हैड कां के. सुन्दर सिंह (104 आर.ए.एफ.), इंस्पेक्टर/एम विजय कुमार (महानिदेशालय), कां धुरेझुती मंहता (01 बटा.), हैड कां. प्रभु दयाल (40 बटा.), कां. आर.मुरंग (ग्रुप केन्द्र–दो अजमेर), हैड कां. कां. राजेन्द्र सिंह (132 बटा.), हैड कां. राम किशन (34 बटा.), हैड कां. राम बहादुर (ग्रुप केन्द्र मोकामा), हैड. कां. धर्म चन्द (118 बटा.), लां. नां राम स्वरूप (ग्रुप केन्द्र शिव पुरी), हैड कां. अजीत कुमार सिंह (ग्रुप केन्द्र शिव पुरी), कां. हरी लाल (ग्रुप केन्द्र शिव पुरी), हैड कां. सरनाम सिंह (ग्रुप केन्द्र शिवपुरी), हैड कां. तुलसी सिंह (ग्रुप केन्द्र शिव पुरी), कां. सतजीत सिंह (64 बटा.), डब्ल्यू/एम.ए. मुरलीधरन (8 बटा.), हैड कां. के. प्रधान (11

बटा.), कां. मंगल सिंह (50 बटा.), हैड कां. ए. त्रिपाठी (90 बटा.), कां. जग देव राज (ग्रुप केंद्र शिव पुरी), हैड कां पी.एन.शर्मा (84 बटा.), कां एल.बी. सुन्दरेशा (69 बटा.), कां जी. धनंजय (69 बटा.), कां. एम. भाष्कर रेड्डी (69 बटा.), तथा कां डी.डी. पटेल (69 बटा.), इसके अतिरिक्त देर से प्राप्त सूचना के अनुसार माह अगस्त 1999 में 19 बटा. के कांस्टेबल भूषण प्रसाद भी मृत्यु को प्राप्त हुए।



ग्रुप केन्द्र नई दिल्ली के कर्मचारियों द्वारा *14* जनवरी, *2000* को आयोजित अयप्पा पूजा का एक दृश्य

केरिपु बल अधिकारी को पदक



राष्ट्रीय सुरक्षा गारद में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस दल से प्रतिनियुक्ति पर गये कमांडेंट श्री एम.पी. नथैनियल को इस वर्ष गणतंत्र दिवस के अवसर पर सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक से सम्मानित किया गया है। इस से पूर्व श्री नथैनियल को शौर्यवीरता के पुलिस एवं फायर सर्विस पदक से सम्मानित किया जा चुका है। श्री नथैनियल के.रि.पु. बल में कुछ समय के लिए जन सम्पर्क अधिकारी भी रह चुके हैं।

श्री नथैनियल एक लेखक भी हैं तथा देश के प्रतिष्ठित अखबारों में अक्सर उनके लेख प्रकाशित होते रहते हैं।

जोखिम निधि लाभ

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल जोखिम निधि से माह जनवरी, 2000 में मृत्यु के 85 मामलों में कुल 50,73,000 रुपये देने स्वीकृत किये गये। इसी प्रकार अक्षमता के 6 मामलों में 2,00,000 रुपये देने स्वीकृत किये गये।

इसी प्राकर जोखिम निधि 'बी' से माह जनवरी 2000 में इसके 9 सदस्यों को मृत्यु के मामले में 2,60,000 रुपये तथा फरवरी, 2000 में 14 सदस्यों की मृत्यु के मामले में कुल 5,60,000 रुपये देने स्वीकृत किये गये।

साहब मेरी रायफल पास करो

साहब जी मेरी रायफल पास करो
त्यागी जी है नाम तिहारौ कुछ तो तरस करो
एक शीशा थैला में राखत, इक है नयन चढ़ो
रायफल पर स्टार लगे, कटे सो की नोट करयौ
ये तो हुई गरीब मार मेरी कोई तो धीर धरौ
दोहा : - दिन और रात सोते जगते मैं रखूं यही ख्याल /
रायफल जो टुक गयी मेरी तो क्या होगा मेरा हाल/
इच्छापुर फक्ट्री से बनकर सन् अस्सी में सर्विस में आयी
जे.एंड.के. सेक्टर में आये तो इन हाथों में दई थमाई/
नहीं कोई च्वाईस हुक्म सरकारी, जैसी थी वैसी स्वीकारी/
क्या रिमार्क है कैसी हालत, इसकी नहीं कोई जानकारी/
हिस्ट्री सीट पर किये दस्तखत, तब से ये हो गई हमारी/
अब तो इससे हमारा नाता, जिन जोरू तेउ बढ़ौ
साहब जी मेरी राईफल पास करौ
जब से मिली खबर आवन की धरती खिसक रही पावन की
राईफल पास हो इस चक्कर में, भूला घर छुट्टी जावन की
गर्म पानी और सौ-सौ पुल थू बोल्ट चैम्बर साफ करूं
लकड़ी पर अलसी के तेल से घंटों तक मालिस भी करूं
फिर भी चमक नहीं आयी अब हे ईश्वर क्या जतन करूं
पुलथू खींचूं बेरल झांकू लगे कुछ तो फर्क परयो/

पन्द्रह दिन तक चला यही क्रम, ए.आई.टीम का हुआ आगमन
यूनिट आरमोरर भी तनाव में, पर खातिर हो रही बड़े चाव में
हथियार ले आउट, रिकार्ड तैयार, ए.आई.ए. जब आये बाहर
नजर पारखी जब है घुमाई, चारो और शान्ति छाई
इन्सपैक्सन की सभी तैयारी, आई मेरी राईफल की बारी
सांसे रुकने लगी हमारी, अब मेरी मत रखे गिरधारी
हाथ में राईफल को नचाया, बैरल झांकी बोल्ट चलाया,
ठोंक बजाकर गैज डालकर, हाथ पर नजरों में जंचाया
जब धीरे से बोले-
बैरल-"एस", राईफल-"गुड मेन्टेन्ड" मेरी जान में जान परी।
"साहब ने मेरी राईफल पास करी"।

– धर्मपाल त्यागी, उप कमान्डेंट
*(*ए.आई.ए.*)* ए. डब्ल्यू. एस-*4* बनतलाब, जम्मू

कारगिल की घाटी

कारगिल की घाटी की कितनी पवित्र हो गई है माटी।
जिसमें वीरों ने शोणित बीज बोए हैं,
न मालूम कितने रक्त बीज सोए हैं,
हर बीज से जी उठेंगे न जाने कितने वीर,
हर दिन, हर पल, हर प्रहर, हर गूंज गरज-गरज कर कहेगी कहानी,
जहां जब्त हो गई न जाने कितनी जवानी।
उन कहानियों का सुनहरा इतिहास,
गौरवशाली अनुभूतियों का आभास।
आंखों में आंसू आह्लाद का अविरेक लाएंगे।
हे वीर।तुम्हें नमन्, शत्-शत् नमन्,
तुमसे तरंगित हुए हैं सभी के मन।
अनुप्राणित हुए हैं प्राण,
तुम शिरोमणि हो, हो युग के मान।
तुम वक्त की पुकार हो,
दुश्मन के लिए प्रहार हो।

तुम्हारा त्याग कहीं नहीं खोया है,
इसी माटी में सोया है।
इसी माटी में सोया है।

- स.उ.नि. एम. मन मोहन सिंह
ग्रुप केंद्र, रामपुर

के.रि.पु. बल लगे प्यारा

केरिपु बल लगे सबको प्यारा, सब का, ये है दुलारा
हिन्दु, मुस्लिम, सिख और ईसाई
और सभी का ये है सहारा .....
लाखों तुफान आये, चाहे जान भी चली जाये
देश वासियों के खातिर, मरना मिटना भी हमको है प्यारा
केरिपु बल लगे सब को प्यारा, कश्मीर हो या कन्या कुमारी
आसाम हो या त्रिपुरा की घाटी
देश द्रोहियों का है दुश्मन, और शांति का यह है किनारा
के.रि.पु. बल लगे सबको प्यारा अरमान इसके दिल में,
बस सिर्फ एक है, सब शांति से रहें
यह मार्ग नेक है, इस तिरंगे की शान को
और ऊंचा उठाना है यारा, केरिपु बल लगे सबको प्यारा
जब याद उनकी आती, जो शहीद हो गये हैं
स्वतंत्रता की डोर जो, हमे दे गये हैं
उनके अरमानों पर कभी भी, न आये आंच दुबारा
केरिपु बल सबको प्यारा

- उ.नि. एम वीरेन्द्र कुमार,
महानिदेशालय

जीवन को सफल बनाने वाले गुण

आकर्षण : मानव को चेहरे के आकर्षण से पढ़ा जा सकता है ।

बुद्धिमता : मनुष्य की प्रथम वाणी से ही उसकी बुद्धि का परिचय होता है।

योग्यता : मानव की योग्यता उसके व्यवहार व कार्यशैली से ज्ञात होती है।

इच्छा : इच्छा ही मानव की प्रगति का प्रथम दर्जा है।

बाधा : इच्छाओं को पूरा करने के लिए बाधा सामने आती है।

संघर्ष : संघर्ष करके ही इच्छाओं की पूर्ति होती है।

सफल : इच्छाओं की पूर्ति को सफल करने के लिए एकता की आवश्यकता है।

एकता : एकता में ताकत है, जिससे व्यक्ति का चरित्र बनता है।

चरित्र : चरित्र ही इंसान को साहसी बनाता है।

साहसी : साहस बढ़ने पर ही क्षमता का मार्गदर्शन होता है।

क्षमता : क्षमता बढ़ने पर ही त्याग की भावना बढ़ती है।

त्याग : त्याग से ही मानव की छवि बनती है।

शुभचिंतन : शुभचिंतन से व्यक्ति में आत्म-विश्वास पैदा होता है।

आज्ञाकारी : आज्ञाकारी ही समाज व राष्ट्र का निर्माण करता है।

विश्वास : विश्वास से ही मानव में प्रेम बढ़ता है।

वफादार : वफादार ही अपनों को संकट में मदद करते हैं।

सत्यनिष्ठा : सत्यनिष्ठा ही मनुष्य की राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना जागृत करती है।

निडर : निडरता से ही राष्ट्र व मानव जीवन का कल्याण होता है।

प्रोत्साहन : मानव अपने निडर भाव से ही अपनों का प्रोत्साहन करता है।

आशावाद : मानव को सदैव आशावादी होना चाहिए ताकि अपने आपको भविष्य के लिए केन्द्रित कर सके।

प्रशिक्षक : मानव को प्रशिक्षक का काम करते रहना चाहिए ताकि

ईमानदारी : ईमानदारी से कर्मठता व कर्तव्य परायणता से

लगाव : लगाव रखा जा सके और इंसान के मध्य

इन्सानियत : इंसानियत पैदा करके व अपनत्व भावना पैदा करके –

छूआछूत : छूआछूत के अंध विश्वास से मानव जाति को निकालकर ज्योति प्रदान की जा सके। मानव को मानव से छुआछूत नहीं करनी होगी इससे

नैतिकता : नैतिकता को बल मिलता है और मान का

आचरण : आचरण सकारात्मक होता है और जीवन में

अहिंसा : अहिंसा के मार्ग पर चलते हुए अपने

व्यवहार : व्यवहार से अपने आपको प्रभावशाली

प्रभावशीलता : महसूस करते हुए, मनुष्य के (मानव) प्रति

निष्पक्षता : निष्पक्षता का व्यवहार करते हुए,

स्वाभाविक : स्वाभाविक रूप से अपना मानव

सेवा : सेवा में लगकर समाज व राष्ट्र का

राष्ट्रीयता : राष्ट्रीयता की भावना मानव के बीच भरकर राष्ट्र की उन्नति में बाधाओं को

सहनशक्ति : सहनशक्ति के साथ, मानव के प्रति अपना

आदर-सत्कार : आदर-सत्कार करके

सुधार : सुधार की प्रक्रिया से,

सहानुभूति : सहानुभूति के बीज बोकर, मानव के समक्ष

परिपक्वता : परिपक्वता का उदाहरण पेश करके,

खुला दिल : खुले दिल से समाज को एक,

पक्का इरादा : पक्के इरादे की,

पहचान : पहचान करवाता है, जिससे मानव आनंदत्व की ममता से

शिक्षित : शिक्षित होकर भविष्य में बढ़ने वाली

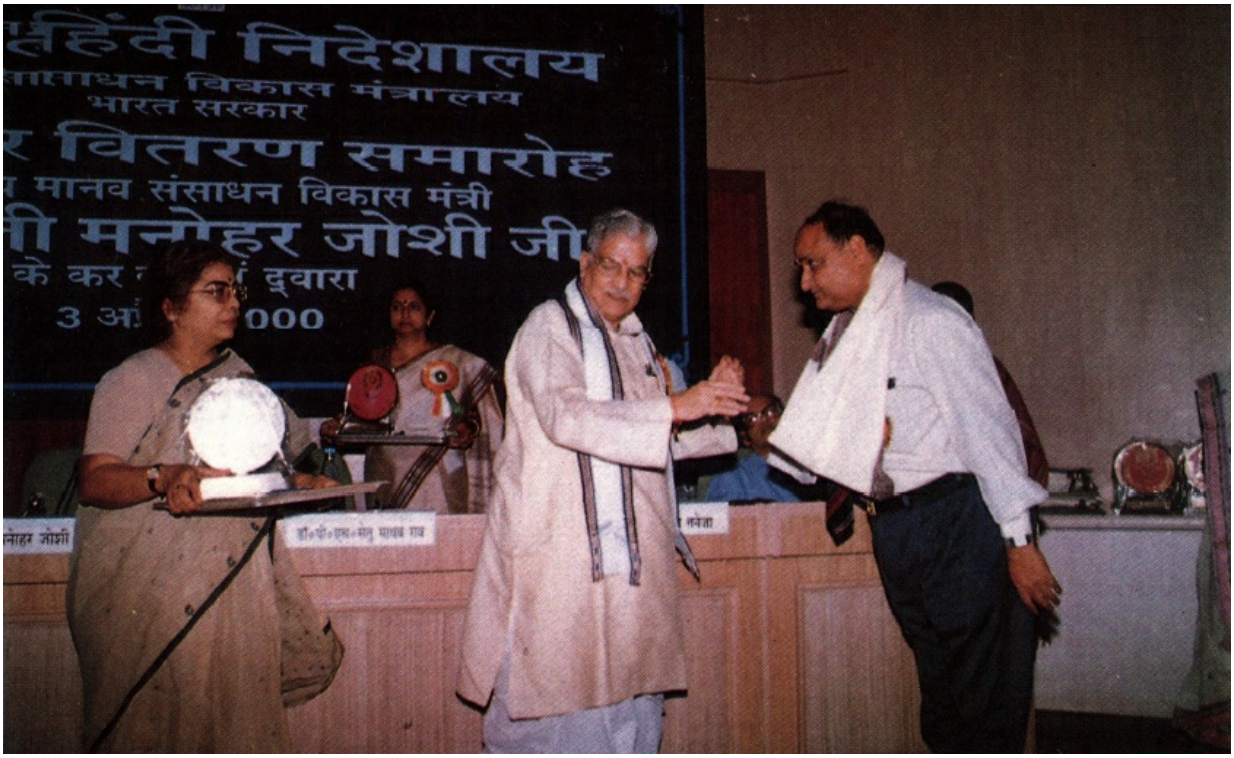
आवश्यकता : आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए

कार्य : कार्य शुरू करता है और अपने आप पर

नियंत्रण : नियंत्रण रखकर

परीक्षक : परीक्षक रूपी सर्वशक्तिमान सहृदय भगवान से मानव कल्याण, सुखी समृद्ध एवं गौरवशाली राष्ट्र की कामना करते हुए अपने आपको पंचतत्व में समर्पित कर देता है।

–आर.एस. यादव
द्वितीय कमान अधिकारी
ग्रुप केन्द्र जमेशद पुर



बेस अस्पताल गुवाहाटी के डा. जी.सी. सत्पथी को हिंदी में लिखी उनकी पुस्तक भारतीय पुलिस बलों में स्वास्थ्य सेवा के लिए पुरस्कृत करते केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री श्री मुरली मनोहर जोशी



39 बटालियन द्वारा आयोजित सिविक एक्शन कार्यक्रम में छात्रों को सम्मानित करते पूर्वी सेक्टर के महानिरीक्षक श्री आर.पी.सिंह

रजि. न. 4767/87



अखिल भारतीय पुलिस बैंड प्रतियोगिता के विजेता केरिपु बल बैंड के कमांडर महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल एवं उप महानिरीक्षक प्रशिक्षण ब्रिगेडियर गोविंद जी मिश्रा के साथ

अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी मीट प्रतियोगिता की विजेता टीम महानिदेशक श्री एम एन सभरवाल को उत्तर प्रदेश पुलिस द्वारा दिया गया स्मृति चिह्न भेंट करते हुए



सी.आर.पी.एफ. समाचार

31 मई, 2000



संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन के तहत कोसोवो जाने वाले केरिपु बल दल के मुखिया कमांडेंट जे.एस. गिल को संयुक्त राष्ट्र तथा भारत का ध्वज' प्रदान करते केरिपु बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल



के.रि.पु. बल हीरक जयंती पर्वतारोहण अभियान दल के सदस्यों का गृह सचिव श्री कमल पांडे से परिचय कराते अभियान दल के नेता श्री सुनन्द कुमार



सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड–14 अंक–3
31 मई, 2000
10 ज्येष्ठ, शक 1922

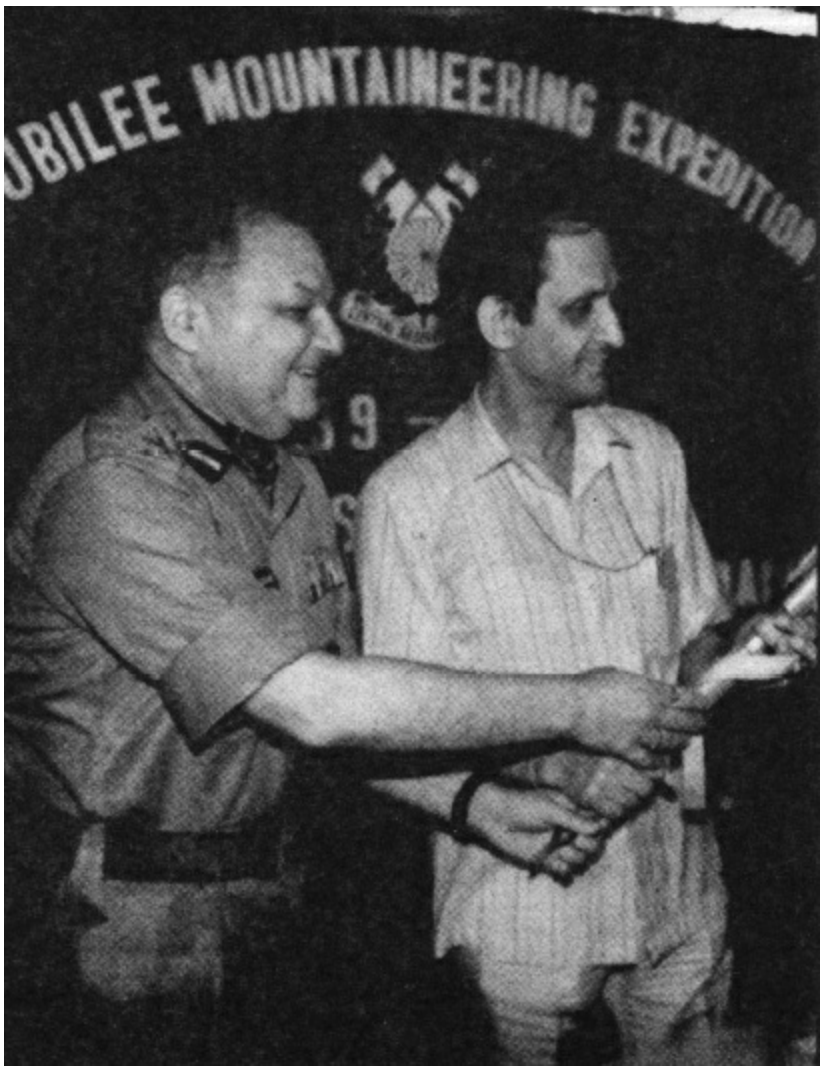
मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं युनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल
ब्लाक–1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली–110003 की ओर से डी.जी. महापात्र

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ. प्रेस
झड़ौदा कलां, नई दिल्ली–72



इस अंक में

बल की टुकड़ियां कोसोवो शांति मिशन पर रवाना
बल के पर्वतारोहियों ने कैलाश पर्वत पर ध्वज फहराया
31वें बैच के अधिकारियों की दीक्षांत परेड
के.रि.पु बल खिलाड़ियों का एशियायी प्रतिस्पर्धाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन
136 बटालियन की उपलब्धियां
रांची में चिकित्सा अधिकारियों का सम्मेलन

राष्ट्रीय एकता में हिंदी

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

–संपादक

आर.ए.एफ. की टुकड़ी कोसोवो शांति मिशन पर रवाना



मिशन के सदस्यों को विदाई देते महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल

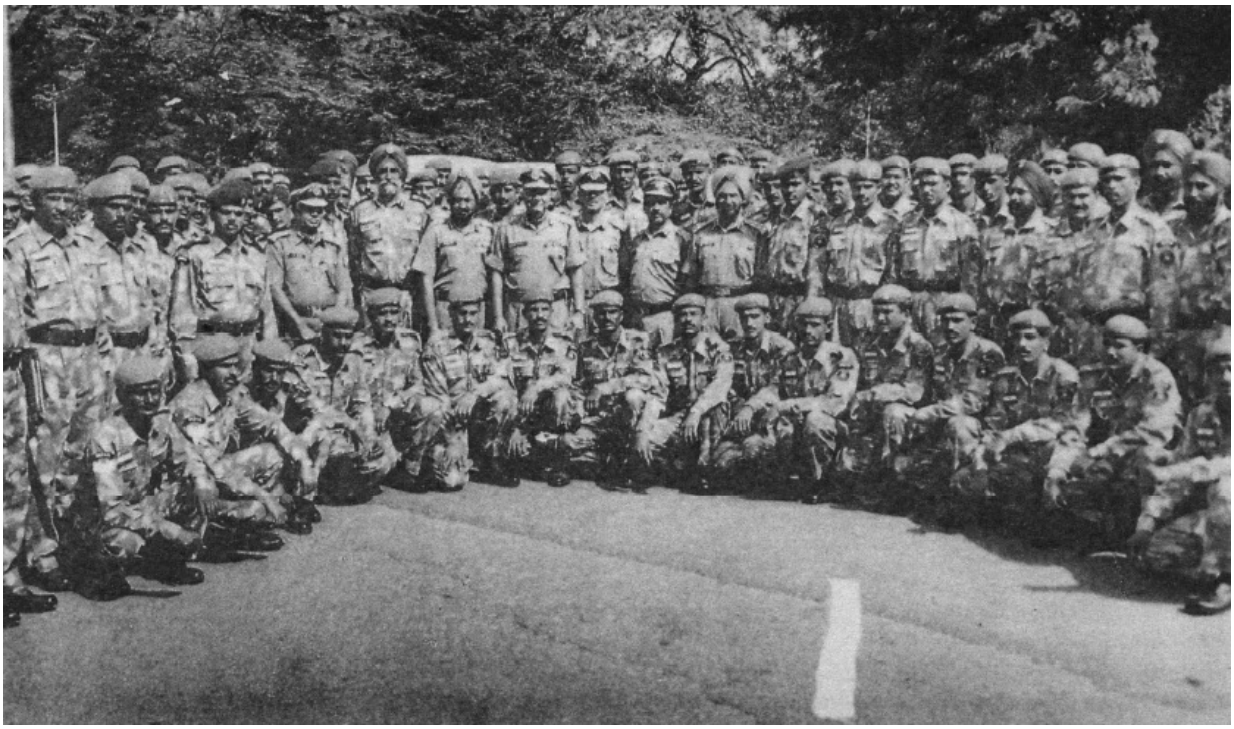
रैपिड एक्शन फोर्स की दो कम्पनियां संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन के तहत कोसोवो के लिए 8–9 मई, 2000 को रवाना हो गयी। इन कंम्पनियों में रैपिड एक्शन के विशेष रूप से चुने गये, प्रशिक्षित आधुनिक उपकरणों से सज्जित 240 कार्मिक हैं। जिनमें 14 अधिकारी शामिल हैं। इस टुकड़ी का नेतृत्व 108 बटालियन के कमांडेंट श्री जे.एस. गिल कर रहे हैं। 6 मई, 2000 को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल मुख्यालय में टुकड़ी को विदाई दी गयी।

इस मौके पर टुकड़ी के सदस्यों को संबोधित करते हुए बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने कहा कि पिछले लगभग 12 सालों में बल के कार्मिक कई बार शांति मिशनों के तहत देश की सीमाओं से बाहर तैनात किये गये हैं। उन्होंने टुकड़ी के सदस्यों का आह्वान किया कि वे पिछले शांति मिशनों की तरह पूरे समर्पण एवं कर्तव्य परायणता के साथ अपने कर्तव्यों को अंजाम देते हुए देश की गरिमा को बढ़ाएगें।

इस मौके पर रैपिड एक्शन फोर्स के महानिरीक्षक की ताशी दावा, उप महानिरीक्षक श्री एम.एन. शर्मा तथा अपर उप महानिरीक्षक श्री एस.एस. संधू ने भी

टुकड़ी के सदस्यों को संबोधित किया।

कोसावो में इस विशेष पुलिस टुकड़ी का कार्य भीड नियंत्रण, संयुक्त राष्ट्र की अंतर्राष्ट्रीय पुलिस को सुरक्षा एवं परिचालनिक कार्यों में सहयोग, कानून व्यवस्था के खतरों से निबटाना तथा मानवतावादी कार्यों में लगी संस्थाओं को मदद देना है।



शांति मिशन के सदस्यों के साथ महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल

पिछले 13 वर्षों में बल को कई बार शांति का संदेश लेकर सरहदों से बाहर जाना पड़ा है। 1987 में पहली बार, के.रि.पु. बल की 2 बटालियनें तथा महिला बटा. की एक कंपनी आई.पी.के.एफ. के एक भाग के रूप में श्री लंका में भेजी गई थी। लिट्टे उग्रवादियों के साथ मुठभेड़ में प्रदर्शित अदम्य साहस के लिए स्व. सिपाही टी. मोहनन को मरणोपरान्त "वीर चक्र" से सम्मानित किया गया था। 44 हमवतनों की जीवन–रक्षा के लिए निरीक्षक शर्मा को "सेना पदक" दिया गया। महिला टुकड़ी की सिपाही बिमला देवी देश की पहली पुलिस महिला हैं जिन्हें सेना पदक से सम्मानित किया गया। के.रि.पु बल के करीब 100 जवानों की टुकड़ी जनवरी 1992 से सितम्बर 1993 तक यू.एन. ट्रेनजिशनल एसिस्टेंस ग्रुप के सदस्य के रूप में कम्बोडिया में रही। उन्होंने अंततः वहां एक चुनी हुई सरकार प्रतिष्ठित कराने में अहम भूमिका निभाई।

1995 में द्रुत कार्य बल के 123 जवानों की टुकड़ी हैतियन चुनावी प्रक्रिया में मदद देने के लिए यू.एन. मिशन के एक भाग के रूप में हैती भेजी गई थीं। सभी वर्ग के लोगों ने द्रुकाब टुकड़ी की व्यवसायिकता तथा दृढ़–निश्चय के साथ कर्तव्य निभाने की प्रशंसा की।

1989–90 के दौरान यू.एन. पुलिस मॉनिटर के रूप में 5 अधीनस्थ अधिकारियों

को नामीबेया भेजा गया था। 1994 में कॉमन–बैल्थ ऑब्जबर मिशन के सदस्य के रूप में दो अधिकारियों को दक्षिण अफ्रीका भेजा गया था, जिन्होंने वहां नव–सर्जित दक्षिण अफ्रीका की नेशनल पीस कीपिंग फोर्स के प्रशिक्षण की निगरानी की। इसी प्रकार मार्च 1995 में पांच अधिकारियों को यू.एन. पुलिस ऑब्जर्वर के रूप में अंगोला भेजा गया था। यू.एन. इंटरनेशनल पुलिस टास्क फोर्स के सदस्य के रूप में भी अधिकारियों को अलग–अलग बैच में बोसनिया भेजा गया था।

बल के पर्वतारोहियों ने माउंट श्री कैलाश पर्वत पर ध्वज फहराया



अभियान दल की विदाई से पूर्व उन्हें दिये जाने वाले ध्वजों का निरीक्षण करते केन्द्रीय गृह सचिव श्री कमल पांडे

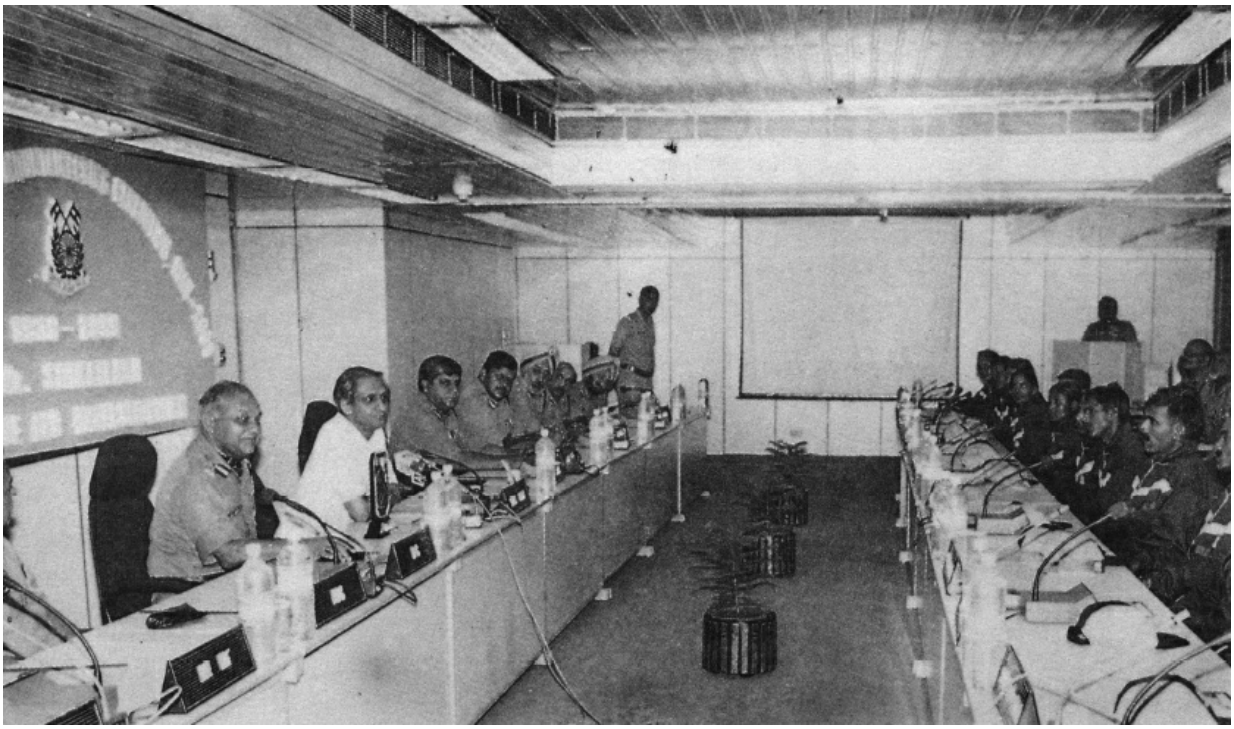
20 और 21 मई 2000 को माउंट श्री कैलाश (22,736 फुट) की चोटी पर झंडा फहराने वाले केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल हीरक जयंती पर्वतारोहरण अभियान दल के सदस्यों को के.रि.पु. बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने बधाई दी है। उन्होंने अभियान दल के नेता को भेजे एक संदेश में कहा कि आप देश और के.रि.पु. बल के गौरव हैं।

माउंट कैलाश पर के.रि.पु. बल अभियान दल ने दो बार तिरंगा और के.रि.पु. बल ध्वज फहराया। 20 मई, 2000 की "प्रातः लगभग 9.45 बजे अभियान दल की सात

सदस्यों को एडवांस पार्टी ने डिप्टी कमांडेट सुनंद कुमार के नेतृत्व में माउंट कैलाश पर ध्वज फहराया। जबकि सात सदस्यों वाली दूसरी पार्टी डिप्टी कमांडेन्ट बी.सी. शर्मा के नेतृत्व में 21 मई, 2000 को 12.50 बजे चोटी पर पहुंची। यह अपने आप में एक अद्वितीय उपलब्धि थी, क्योंकि इस से पूर्व इतनी अधिक संख्या में पर्वतारोही माउंट श्री कैलाश पर नहीं पहुंचे थे।

इस अभियान के दौरान अभियान दल के सदस्यों को ऊंचाई से संबंधित कई समस्याओं का सामना करना पड़ा, जिन में हिमपात और भारी वर्षा भी शामिल थी। अभियान के दौरान शून्य से 6 डिग्री नीचे के तापमान और आक्सीजन की कमी का भी अभियान दल के सदस्यों को सामना करना पड़ा।

अभियान दल को 24 अप्रैल, 2000 को केंद्रीय गृह सचिव श्री कमल पांडे ने दिल्ली से झंडा प्रदान कर कर विदा किया था। अभियान दल के 16 पर्वतारोहियों में 2 महिला अधिकारी तथा 2 महिला सिपाही इस टीम का हिस्सा थे तथा 5 सदस्यों की एक टीम द्वारा सहायता की जा रही थी।



अभियान दल के सदस्यों को संबोधित करते गृह सचिव श्री कमल पांडे

बल के मुख्यालय में अभियान दल के सदस्यों को सम्बोधित करते हुए केन्द्रीय गृह सचिव श्री कमल पाण्डेय ने कहा कि एक दशक से भी ज्यादा समय से केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, जम्मू व कशमीर तथा पूर्वोत्तर में बहुत ही कठोर क्षेत्रों तथा असहनीय जलवायु में उग्रवादियों, आतंकवादियों तथा राष्ट्र विरोधी तत्वों से सक्रिय रूप से जूझ रहा है। अतः यह उचित है कि बल की हीरक जयंती समारोहों की सफल पराकाष्ठा के रूप में बल कार्मिकों ने पर्वतारोहण अभियान का बीड़ा उठाया। उन्होंने टीम के

नेता उप कमांडेण्ट श्री सुनन्द कुमार को राष्ट्रीय एवं अभियान ध्वज भी प्रदान किया।

श्री एम.एन. सभरवाल, महानिदेशक केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि सी.आर.पी.एफ. एक बहु-आयामी बल होने के कारण खतरों से बचने के लिए इसको बहुत ही उच्च श्रेणी के शारीरिक व मानसिक साहस तथा क्षमता की आवश्यकता होती है। यह भावना पैदा करने के लिए ही 1994 से बल में साहसिक खेलों की शुरूआत की गई है। प्रारम्भ में, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में साहसिक खेलों के इतिहास का उल्लेख करते हुए ब्रिगेडियर (सेवानिवृत्त) श्री गोविन्दजी मिश्रा, पुलिस उप महा. (प्रशिक्षण) ने कहा कि 18 मई, 1995 को 10 सदस्यों की टीम ने माउंट जोगिन 1 (6456 मीटर) तथा जोगिन-3 (6116 मीटर) पर विजय प्राप्त की। श्री ए.आर. पवार, पुलिस महानिरीक्षक - सी.आर.पी.एफ. ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा।

श्री कैलाश पर्वत शिखर (22736 फुट) की बनावट एक विचित्र पिरामिड की तरह है जो इस क्षेत्र की अन्य पहाड़ियों से बिल्कुल ही भिन्न है। यह चोटी गढ़वाल क्षेत्र के उत्तरकाशी जिले में स्थित है। इस चोटी पर चढ़ने का प्रथम प्रयास 16 अक्तूबर, 1938 में आस्ट्रिया के पर्वतारोही के.ई.इलमाउथलर, डब्ल्यू. फाउनवर्जर, आर. जोनास तथा आर. सबवारजावर ने किया था। इस चोटी के लिए प्रथम भारतीय अभियान का नेतृत्व 1963 में डी. पांडिया ने किया था। कुमारी हुना जेडपेलसका प्रेजियूर ऐसी पहली महिला थी जिसने 2 सितम्बर 1981 को शिखर पर चढ़ने में सफलता पाई।

*31*वें बैच के अधिकारियों की दीक्षांत परेड



परेड का निरीक्षण करते महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवा

देश की आंतरिक सुरक्षा को विभिन्न प्रकार की चुनौतियों और धमकियों का सामना करना पड़ रहा है। हमने इन संवेदनशील परिस्थितियों से उचित तरीके से निपटने के लिए अपने आप को तैयार किया है। 6 अप्रैल, 2000 को आंतरिक सुरक्षा अकादमी में सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों की भव्य दीक्षांत परेड को संबोधित करते हुए बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने कहा कि हमें इन चुनौतियों का कानून के अन्तर्गत सुरक्षा एवं दृढ़ निश्चय से सामना करना है।

केरिपु बल की भूमिका की सराहना करते हुए श्री सभरवाल ने कहा कि पिछले कुछ सालों से इसकी भूमिका में कई नये आयाम जुड़ गए हैं। आज केरिपु बल बहुमुखी फोर्स के रूप में जानी जाती है। उन्होंने कहा कि इसे सौंपे गए सभी कार्यों में बल ने ख्याति प्राप्त की है। पूर्वोत्तर क्षेत्र में घुसपैठ, जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद, आन्ध्रप्रदेश और बिहार में उग्रवाद से निपटने में इस बल ने सबसे विश्वसनीय नाम कमाया है।

युवा अधिकारियों को बधाई देते हुये श्री सभरवाल ने कहा कि बल के गठन को "छोटा भारत" कह सकते हैं जिसमें सभी प्रांतों जाति व धर्म के लोगों का समावेश है। उन्होंने युवा अधिकारियों को सलाह दी कि वे प्रबंधक के रूप में बल की उच्च परंपरा और आदर्शों को बनाये रखें और उन्हें हिम्मत के साथ सही रास्ते पर आगे बढ़ने दें।

श्रीमती मंजरी जारूहार, निदेशक आंतरिक सुरक्षा अकादमी ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि वर्तमान सामाजिक-राजनैतिक परिप्रेक्ष्य में अधिकारियों के प्रशिक्षण को इस तरह बनाया गया है कि उनमें आत्म विश्वास पैदा हो।

सबसे पहले श्री सभरवाल ने सलामी ली और परेड का निरीक्षण किया। 2 महिला अधिकारियों सहित परेड में कुल 56 सहायक कमांडेन्ट शामिल हुए। श्री सभरवाल ने प्रशिक्षण में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले अधिकारियों को शील्ड व ट्राफिया प्रदान की। श्री दीपक ढोंडियाल ने सोर्ड ऑफ ऑनर हासिल किया जबकि श्री हरध्यान सिंह गुर्जर को सर्वश्रेष्ठ इन्डोर ट्रेनी व वेपन ट्रेनी की ट्राफी प्रदान की गई। श्री विजय सिंह खटाना को सर्वश्रेष्ठ आउट डोर ट्राफी तथा डायरेक्टर वेटन प्रदान की गई। श्री रतुलदास को सर्वश्रेष्ठ शारीरिक प्रशिक्षण व यू.ए.सी. की ट्राफी प्रदान की गई जबकि सर्वश्रेष्ठ ड्रिल की ट्राफी श्री देवेन्द्र सिंह को दी गई। श्री जसवीर सिंह ने सर्वश्रेष्ठ शॉट की ट्रार्फी प्राप्त की। हवलदार मुख्तियार सिंह को सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षक घोषित किया गया।



अधिकारियों को रैंक लगाते महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल

6 कार्मिकों को शौर्यवीरता के पुलिस पदक

भारत के राष्ट्रपति ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के छः अधीनस्थ अधिकारियों एवं जवानों को जम्मू कशमीर में आतंकवाद के विरूद्ध उनकी शौर्यवीरता, साहस एवं कर्तव्य परायणता के लिए शौर्य वीरता के पुलिस पदकों से सम्मानित किया है। इनमें से तीन कार्मिकों को यह पदक मरणोपरांत प्रदान किये गये हैं। बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने यह सम्मान प्राप्त करने वाले कार्मिकों एवं शहीद कार्मिकों के परिवारों को बधाई दी है ।

पदक प्राप्त करने वाले कार्मिक हैं :–

28 बटा. के कांस्टेबल के. दास (मरणोपरांत), कांस्टेबल एस. सहदेवन (मरणोपरांत) तथा कांस्टेबल/ड्राईवर पवन कुमार (मरणोपरांत) । 20 बटा. के इंस्पेक्टर सुखदेव सिंह चीमा, सब इंस्पेक्टर पवन कुमार सिंह तथा हैड कांस्टेबल पिताम्बर दास ।

के.रि.पु. बल खिलाड़ियों का एशियायी प्रतिस्पर्धाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन



एशियायी प्रतियोगिताओं में विशेष उपलब्धियां हासिल करने वाले खिलाड़ी महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल के साथ

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने एशियायी खेल प्रतियोगिताओं में शानदार प्रदर्शन के लिए बल के खिलाड़ियों को बधाई दी । 9 मई, 2000 को बल के मुख्यालय में इन खिलाड़ियों के सम्मान के लिए आयोजित समारोह में बोलते हुए श्री सभरवाल ने कहा कि "आप देश और के.रि.पु. बल के गौरव हैं ।"

ओसाका जापान में 2–6 मई, 2000 तक हुयी 13वीं वरिष्ठ एशियायी महिला भारोतोलन प्रतियोगिता में इंस्पेक्टर सोनामाचा चानू ने 53 कि.ग्रा. श्रेणी में तीन स्वर्ण पदक जीते, जबकि सहायक कमांडेंट कुंजारानी देवी ने 48 कि.ग्रा. श्रेणी में एक स्वर्ण तथा दो रजत पदक जीते । इंस्पेक्टर प्रतिमा कुमार, इंस्पेक्टर उज्जवला माने तथा हैड

कांस्टेबल गीता रानी अपनी अपनी भार श्रेणी में क्रमशः चौथे, पांचवें तथा छठे स्थान पर रही।

28–30 अप्रैल, 2000 तक कोलंबो में हुयी तीसरी एशियायी कबड्डी चैंपयिनशिप में के.रि.पु. बल के हैड कांस्टेबल ए.जय कुमार ने भारत का प्रतिनिधित्व कर स्वर्ण पदक जीता।

ढाका में हुई दूसरी दक्षिण एशियायी सहयोग हैंडबाल चैंपियनशिप में के.रि.पु. बल के सब इंस्पेक्टर हमीद खान, अजय मनी त्रिपाठी, जसवंत सिंह तथा हैड कांस्टेबल शिव प्रसाद के.जी. ने भारत का प्रतिनिधित्व कर स्वर्ण पदक जीता।

केन्द्रीय कबड्डी टीम की उपलब्धियां

केन्द्रीय कबड्डी टीम ने अमर सिंह सहायक कमांडेन्ट और निरीक्षक महेन्द्र सिहं की देखरेख में हाल ही में निम्नलिखित प्रतियोगिताएं जीती।

1. मेल आल इंडिया ए ग्रेड कबड्डी प्रतियोगिता भोपाल (मध्य प्रदेश में) – प्रथम स्थान
   हवलदार अगंद सिंह बेस्ट कैचर और हवलदार जितेन्द्र कुमार सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित किए गए।
2. आल इण्डिया ए ग्रेड कबड्डी मुंबई (महाराष्ट्र) में द्वितीय स्थान हवलदार अंगद सिंह बेस्ट कैचर घोषित किये गये।
3. आल इण्डिया शिवाजी चषक कबड्डी टुर्नामैन्ट अलीबाग रायगढ़ (महाराष्ट्र) में तृतीय स्थान
   सिपाही सुन्दर सिंह बेस्ट रैडर घोषित किया गया।
4. आल इण्डिया अश्वरी कुमार भयोर कप कबड्डी टुर्नामेन्ट नासिक (महाराष्ट्र) में – प्रथम स्थान
   हवलदार अंगत सिंह बेस्ट कैचर घोषित किया गया।
5. आर.पी. दीक्षित मैमोरियल आल इण्डिया कबड्डी टुर्नामेन्ट एन.सी. एल. काकरी सोनभद्र (यू.पी.) में– प्रथम स्थान हवलदार जितेन्द्र कुमार बेस्ट रेडर घोषित किया गया।

136 बटा. की उपलब्धियां



महानिरीक्षक *(*परि.*)* जम्मू श्री पद्मन सिंह से दौड़ कूद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान की ट्राफी प्राप्त करते *136* बटा. के कमांडेंट एवं अन्य लोग

136 बटालियन वर्ष 1997 में खड़ी हुई थी जिसमें नव आरक्षी भर्ती करके इस यूनिट को प्रदान किये गये थे। खेल के क्षेत्र में इस बटा. ने जम्मू (परिचालन) क्षेत्र में 13 अन्तर बटालियन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया। 13 खेलों में से इस बटालियन द्वारा विशिष्ट प्रदर्शन कर क्रास कन्ट्री, जिम्नास्टिक, हैंड बाल, वेट लिफ्टिंग, बास्केट बाल तथा एथलेटिक प्रतियोगिता (कुल 6 खेलों में) प्रथम स्थान एवं कुश्ती, फुटबाल, (दो खेलों में) द्वितीय स्थान तथा शूटिंग, कबड्डी एवं बालीबाल प्रतियोगिता (तीन खेलों में) तृतीय स्थान लेकर पूरे क्षेत्र में धाक जमा दी।

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, द्वारा इस बटालियन को "ग" क्षेत्र में वर्ष 1998–99 के लिए राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने की दिशा में सर्वोत्कृष्ट कार्य करने के लिए द्वितीय स्थान प्रदान किया गया। इस उपलब्धि के लिए क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह जो दिनांक 11, 12 जनवरी, को लखनऊ में आयोजित किया गया था। उसमें इस यूनिट को एक शील्ड तथा स.उ.नि. (मं.) बी.सी. पाठक को एक प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

सर्वोत्तम व्यय कुशलता व वित्तीय अनुशासन के लिए सर्वोत्कृष्ट कार्य करने पर के.रि.पु. बल की सभी बटालियनों/संस्थानों में से वर्ष 1998 के लिए महानिदेशक, के.रि.पु. बल द्वारा उच्च कार्यों के लिए इस बटालियन को चयनित कर गौरवान्वित किया। जिसके लिए के.रि.पु. बल की 60वीं वर्षगांठ के अवसर पर एक शील्ड प्रदान की गयी।

श्री इजविन्दर सिंह, उप कमान्डेन्ट (अभी सेवा निवृत्त) को वर्ष 1998 के दौरान 12वीं लोक सभा चुनाव पर जम्मू कश्मीर क्षेत्र में चुनाव के दौरान अति विशिष्ट सेवाएं अर्पित करने हेतु 15 अगस्त, 1998 को अति विशिष्ट पुलिस सेवा पदक से सम्मानित

किया गया।

श्री पदमनसिंह, पुलिस महानिरीक्षक (परि.), के.रि.पु. बल, जम्मू द्वारा 3 अप्रैल, 2000 को इस बटालियन के हवलदार नारायण सिंह को डी.जी. डिस्क एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

यूनिट के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने समय–समय पर कई आयोजन किये। जिसमें से मुख्य रूप में "आल इंडिया मोटर बाईकिंग अभियान की फैलगिंग आफ सरमोनी, अमरनाथ यात्रा में तैनाती। (बालटाल टूर), लोक सभा चुनाव–2000 पर सक्रिय तैनाती एवं सिविक एक्शन प्रोग्राम जैसे कल्याणकारी तथा पल्स पोलियों प्रोग्राम में बड़े ही उत्साह पूर्वक भाग लेकर यूनिट के लिए सराहनीय कार्य किये।

आतंकवाद–विरोधी दिवस

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (के.रि.पु. बल) मुख्यालय में 19 मई, 2000 को आतंकवाद–विरोधी दिवस मनाया गया। श्री एम.एन. सभरवाल, महानिदेशक, के.रि.पु. बल, ने महानिदेशालय में सभी अधिकारियों व स्टाफ को आतंकवाद विरोधी शपथ दिलाई।

जोखिम निधि लाभ

माह मार्च, 2000 में केन्द्रीय जोखिम निधि से मृत्यु के 76 मामलों में 50,45,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये। इसी प्रकार अक्षमता के एक मामले में 25,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये।

अप्रैल, 2000 में जोखिम निधि में कोई मामला स्वीकृती के लिए नहीं आया। इसी प्रकार मार्च, एवं अप्रैल, 2000 में जोखिम निधि 'बी'' में भी इसके किसी सदस्य का कोई मामला विचार के लिए नहीं आया।

मृत्यु को प्राप्त हुए कार्मिक

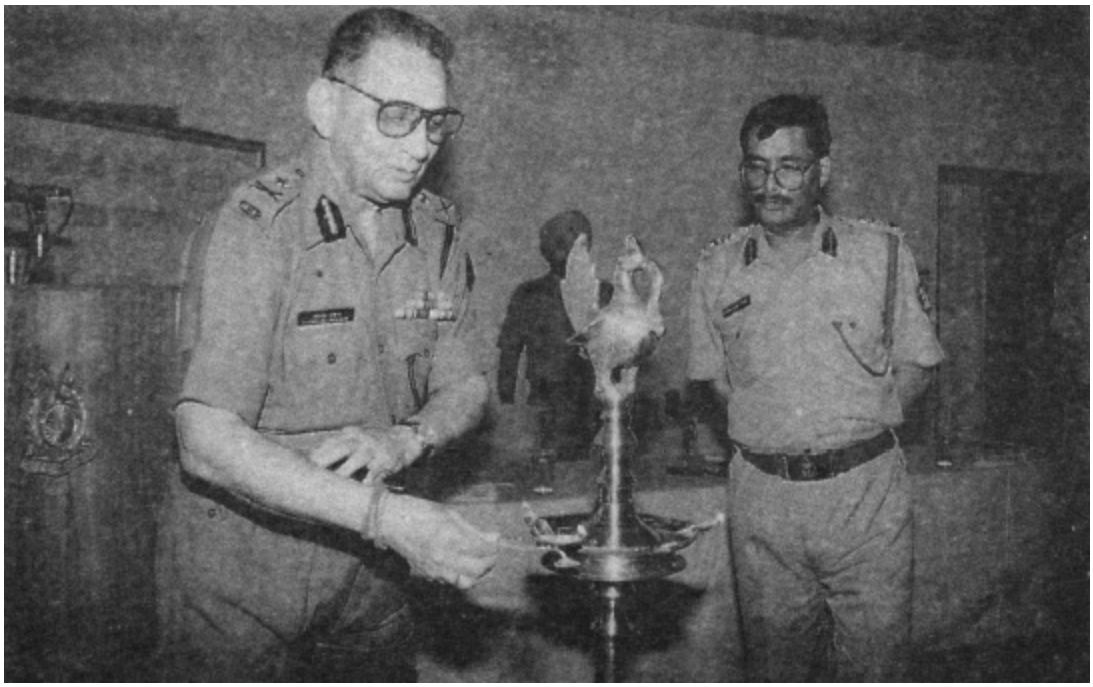
माह अप्रैल, 2000 में देर से प्राप्त समाचार के अनुसार माह फरवरी व मार्च, 2000 में निम्न कार्मिक मृत्यु को प्राप्त हुए। के.रि.पु. बल समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवदेना व्यक्त करता है।

माह फरवरी, 2000 में 22 बटालियन के इंस्पेक्टर आर.एस. शर्मा तथा ग्रुप केंद्र हैदराबाद के हैड कांस्टेबल (बैंड) टी. लालेह मृत्यु को प्राप्त हुए।

माह मार्च, 2000 में 70 बटा. के बारबार नरसिंह शर्मा, 2 बटा. के वाई वी. कुट्टी, ग्रुप केन्द्र अवाडी के हैड कांस्टेबल पी.एन. शशीधरन, 64 बटा. के कांस्टेबल राम

किशोर शर्मा तथा 35 बटालियन के कांस्टेबल बी.एस. गणेश भी मृत्यु को प्राप्त हुए।

रांची में चिकित्सा अधिकारियों का सम्मेलन



महानिरीक्षक बिहार सेक्टर श्री महेंद्र प्रसाद सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए

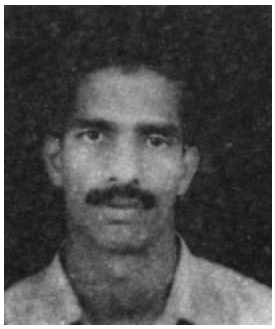
सिगनल ग्रुप केन्द्र, के.रि.पु बल, रांची में 8 से 10 अप्रैल, 2000 तक बिहार एवं पूर्वी सैक्टर, के.रि.पु. बल के चिकित्सा अधिकारियों के व्यवसायिक सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन का उद्घाटन श्री महेन्द्र प्रसाद, पुलिस महानिरीक्षक, बिहार सैक्टर ने दीप प्रज्ज्वलित कर दिया। इस अवसर पर श्री महेन्द्र प्रसाद, पुलिस महानिरीक्षक ने कहा कि दुर्गम स्थानों में बल की तैनाती के दौरान जवानों को उचित चिकित्सा सुविधाएं प्रदान करने से उनकी कार्यशैली तथा मनोबल पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। इस क्षेत्र में बल के चिकित्सा अधिकारियों का योगदान सराहनीय रहा है। उन्होंने इस प्रकार के सम्मेलन को नियमित रूप से आयोजित करने की आवश्यकता पर बल दिया तथा यह आशा व्यक्त की कि इस सम्मेलन के दौरान चिकित्सा क्षेत्र में हो रहे अनुसंधानों तथा नई जानकारियों के बारे में विचारों का आदान–प्रदान होगा। इस अवसर पर चिकित्सा अधिकारियों द्वारा 05 विषयों पर पेपर प्रस्तुत किये गये तथा अन्य प्रशासनिक मुद्दों पर गहन विचार–विमर्श किया गया। सम्मेलन के दौरान स्थानीय एच.ई.सी. अस्पताल के चिकित्सा अधिकारियों एवं विशेषज्ञों ने विभिन्न व्यवसायिक विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किये। अपने धन्यवाद भाषण में डा. पी. के. नायक, मुख्य चिकित्सा अधिकारी, 66 बटा. ने इस व्यवसायिक

सम्मेलन के आयोजन के लिये पुलिस महानिरीक्षक महोदय तथा कार्यकारी अपर पुलिस उपमहानिरीक्षक, सिगनल ग्रुप केन्द्र को धन्यवाद किया।

आश्रिता को अनुदान राशि का चैक भेंट

21 फरवरी, 2000 की ग्रुप केंद्र पूणे में पश्चिमी सेक्टर के महानिरीक्षक श्री नारायण मिश्रा ने 52 बटालियन के कांस्टेबल बी.आर. सबले की विधवा श्रीमती हेमलता को 7,50,000 रूपये की अनुग्रह राशि का चैक भेंट किया।

एशियायी कबड्डी में बल का खिलाड़ी



114 बटा. के है. कां. ए. जयकुमार का चयन तीसरी एशियायी कबड्डी प्रतियोगिता में भाग लेने वाली भारतीय टीम में किया गया। 28–30 अप्रैल, 2000 तक कोलंबो में हुयी इस प्रतियोगिता में है. कां. ए. जयकुमार ने भारतीय टीम के एक सदस्य के रूप में भाग लिया।

जो लोग राह से भटक जाते हैं, वे कभी भी अपनी मंजिल पर नहीं पहुंच सकते।

* * *

जो दूसरों पर आश्रित रहते हैं स्वयं को कमजोर और असहाय बनाते हैं।

* * *

खुद की आंख की बुराई कोई नहीं देखता।

राष्ट्रीय एकता में हिन्दी का योगदान

धमेंद्र सिंह विसेन, सहा. कमां, 92 बटा.

प्रस्तुत निबंध केंद्रीय सेक्टर द्वारा सेक्टर स्तर पर आयोजित हिंदी निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर रहा।

मनुष्य निसर्गत एक सामाजिक प्राणी है। समाज का निर्माण मनुष्य के पारस्परिक सम्मिलन और सहयोग की आकांक्षा से होता है। यही आकांक्षा भाव-विचार रूप में अंकुरित होकर भाषा के रूप में प्रज्ज्वलित होती है। अतः एवं हम कह सकते हैं कि सामाजिक संगठन के मूल में वैचारिक आदान-प्रदान प्रमुख कारक है। अतः भाषा की परिभाषा यह है कि - "भाषा विचार-विनिमय एवं आत्म प्रकाशन का महत्वपूर्ण साधन है। इतना ही नहीं यह सामाजिक संगठन का मूलाधार भी है"। अतः स्पष्ट है कि भाषा आत्मप्रकाशन भाव प्रकाशन तथा सम्पर्क स्थापन के मूल में है।

सम्पर्क भाषा हिन्दी

भाषा ऐक्य राष्ट्र की एकता, अखण्डता एवं विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस सम्बन्ध में "बाइबल" में एक कथा उल्लेखित है कि - "आदम के बेटों ने आसमान तक पहुंचने के लिए बहुत ऊँची मीनार बनानी चाही, उन सबकी भाषा एक थी और वे सब मिलजुल कर काम करते हुए ऊपर चढ़ते चले जा रहे थे। ईश्वर ने सोचा कि ये लोग तो स्वर्ग तक पहुँच कर मेरी बराबरी करने लगेंगे। तब ईश्वर ने उन्हें भिन्न-भिन्न भाषाएँ देकर छिन्न-भिन्न कर दिया। फलतः वे एक दूसरे से लड़ने झगड़ने लगे क्योंकि वे आपसी विचार विनिमय करने में असमर्थ हो गये और मीनार टूट गयी।" कहना न होगा कि अंग्रेज विद्वानों ने हमारे देश पर उक्त प्रयोग किया और सफल रहे।

उपर्युक्त बाईबल के उदाहरण से स्पष्ट है कि एक सशक्त, सर्वसमर्थ राष्ट्र के लिए एक सम्पूर्ण राष्ट्र में एक ही भाषा की व्याप्ति होनी चाहिए। अर्थात एक ही भाषा-सूत्र में सम्पूर्ण राष्ट्र को आबद्ध होना चाहिए। इससे भावैकता, विचारैकता के साथ ही सांस्कृतिक एवं धार्मिक एकता को भी बल मिलता है, पोषण मिलता है। यह स्वतन्त्र एवं समृद्ध राष्ट्र के लिए अपरिहार्य है। इसीलिए प्रत्येक समुन्नत एवं स्वाभिमानी देश की अपनी एक प्रमुख भाषा अवश्य होती है जिसे राष्ट्रभाषा का पद-गौरव प्राप्त होता है। उदाहरणस्वरूप रूस, अमेरिका, चीन, जापान, फ्रांस, इंग्लैण्ड आदि को लिया जा सकता है।

भारतीय संविधान और हिन्दी

भारतीय संविधान के अनुसूची 343 (1) के अनुसार संघ की राजभाषा हिन्दी एवं लिपि देवनागरी होगी। अनुसूची 343(2) में संविधान के क्रियाशील होने से 15 वर्ष तक के लिए अंग्रेजी के प्रयोग को प्राधिकृत किया गया था। अनुसूची 343(3) में संसद को उक्त अवधि के बाद भी अंग्रेजी के प्रयोग को प्राधिकृत करने हेतु विधि निर्माण का अधिकार दिया गया है। फलतः राजभाषा अधिनियम द्वारा यह उपबन्ध किया गया कि सभी राजकीय कार्यों में अंग्रेजी का उपयोग 26 जनवरी 1971 तक होता रहेगा। पुनः

राजभाषा अधिनियम 1967 द्वारा अंग्रेजी के प्रयोग को अनिश्चित समय तक जारी रखने का उपबन्ध किया गया है। संविधान में यह जोड़ दिया गया कि जब तक एक भी राज्य चाहेगा तब तक अंग्रेजी केन्द्रीय सरकार की सम्पर्क भाषा बनी रहेगी।

सरकारी तन्त्र और हिन्दी

हिन्दी का दुर्भाग्य है कि राष्ट्र भाषा पद पाकर यह प्रान्त भाषा एवं अंग्रेजी की अनुगामिनी बन कर रह गयी है। इसका कारण राजनीतिक दलदल, एवं उच्चपदासीन अंग्रेजीदा लोग है जो अंग्रेजी को अपने अस्तित्व के साथ जोड़ कर देखते हैं। इसके अतिरिक्त अन्य कोई कारण दृष्टिगत नहीं होता कि आज आजादी को पचास वर्ष से अधिक हो गये हैं, फिर भी हिन्दी को यह सम्मान पूर्ण स्थान नहीं मिल सका जो उसे मिलना चाहिए था। वास्तव में यह एक स्वतन्त्रचेता एवं स्वाभिमानी राष्ट्र के गौरव के प्रतिकूल है। डा. एम.पी. उपाध्याय के शब्दों में "यह कितनी बेशर्मी और मूढ़ता की बात है कि भारत की सबसे बड़ी भाषा में कामकाज करने की बात होने पर कुछ महानुभाव हिन्दी थोपे जाने की आशंका व्यक्त करते हैं और अंग्रेजी से यूं चिपके रहना चाहते हैं जैसे वह उनके बाप दादों की चीज हो"। इन लोगों को यह भी ध्यान नहीं रहता कि विदेशों में अंग्रेजी का प्रयोग करने पर हमारे कई नेताओं को अपमानित होना पड़ा है। तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन में एक रूसी विद्वान से स्पष्ट कहा था कि" एक विदेशी भाषा का प्रयोग करने वाले भारतीय अपने को स्वतन्त्र नागरिक कहने का साहस क्यों करतें हैं ?"

वस्तुतः हिन्दी को यथोचित स्थान न मिल सकने के पीछे राजनेताओं को पूर्व-पश्चिम, उत्तर एवं दक्षिण में विभाजित दृष्टिकोण है। वे सम्पूर्ण राष्ट्र को एकीभाव से देखने में असमर्थ हैं। अन्यथा हिन्दी को अंग्रेजी के स्थान पर प्रतिस्थापित कर सकने पर कोई "भूचाल लाने या पहाड़ टूटने" जैसी स्थिति उत्पन्न नहीं होगी। आवश्यकता है तो बस सरकार की राष्ट्रीय भावना, राष्ट्रीय संचेतना एवं दृढ़ इच्छा शक्ति की क्योंकि विश्व पटल पर यह बात स्वयं सिद्ध हो चुकी है - इजराइल के प्रथम शासनाध्यक्ष ने एक रात में ही अपने देश की राष्ट्रभाषा "हिब्रू की घोषणा की थी, इसी प्रकार तुर्की के कमाल पाशा ने तुर्की भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिस्थापित किया।

राष्ट्रीय एकता के सन्दर्भ में हिन्दी

राष्ट्रीयता को बढ़ावा देने के लिए उपयुक्त भाषा हिन्दी ही है। हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जो हर एक व्यक्ति के व्यक्तित्व को भारतीय बनाने में सक्षम है। इस तथ्य का अनुभव गांधी जी को अपने दक्षिण अफ्रीका के प्रवास के दौरान हुआ जब उन्होंने देखा कि भारत के विभिन्न भागों में आये अंग्रेजी न जानने वाले हिन्दुस्तानियों की आपसी बोलचाल की भाषा हिन्दी ही है। इसलिए इन्होंने पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में जोड़ने के लिए हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रचारित करने के लिए अपने पुत्र देवदास गांधी को सन् 1918 में मद्रास भेजा और अपने पुत्र को पत्र लिखा - "तुम अपने निश्चय में दृढ़ रहो, जिससे मद्रास प्रेसीडेन्सी में हिन्दी की धुन गूंजे, जिससे उत्तर

दक्षिण के बीच की खाई मिट जाये और इन दो भागों में रहने वाले एक हो जायें (सन्दर्भ क्लेक्टेड वर्क ऑफ महात्मा गांधी पार्ट-15, पेज 28)।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात देश के सभी मुख्यमंत्रियों के सम्मेलन में तत्कालीन राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद ने प्रस्ताव भेजा कि जिस तरह यूरोप के सभी देशों की अलग-अलग भाषाएं केवल एक लिपि रोमन का प्रयोग करती है उसी प्रकार यदि भारत की सभी भाषाएं देवनागरी लिपि अपना ले तो यह राष्ट्रीय एकता की दिशा में एक महत्वपूर्ण चरण होगा।

भारत 1947 में स्वतन्त्र तो हो गया है और एक सुदृढ़ संघ शासन की स्थापना भी हो गयी है। किन्तु यह देश वैचारिक एवं भावनात्मक एकता की दृष्टि से अभी तक स्वतन्त्र नहीं हो सका है। यही कारण है कि सीमान्त देशों में अलगाववादी शक्तियां और प्रदेशों में क्षेत्रीय भावना दिन प्रतिदिन बलवती होती जा रही है। यह देश की एकता एवं अखण्डता के लिए बहुत बड़ी चुनौती है। ऐसी स्थिति में एक राष्ट्रभाषा और एक राष्ट्रलिपि की आवश्यकता बढ़ जाती है। प्रत्येक देश अपनी संस्कृति को अक्षुण्ण रखना चाहता है तथा अपनी भाषा एवं लिपि को सर्वाधिक महत्व देता है। समूचे विश्व के महत्वपूर्ण देशों की राष्ट्रीय सांस्कृतिक महत्ता तथा उन्नति के मूल में भी एक ही लिपि ने कार्य किया है। हर स्वाभिमानी देश सर्वप्रथम अपनी लिपि की समस्या पर ही विचार करता है क्योंकि एक लिपि के माध्यम से ही देश की संस्कृति को अजर अमर बनाया जा सकता है।

इस देश की स्वतन्त्रता के उपरान्त इस बात को लेकर काफी मतभेद थे कि इस राष्ट्र की भाषा की प्रतिस्पर्धा किसी अन्य भारतीय भाषा से नहीं थी किन्तु समय व्यतीत होने के बाद इसे विवाद का स्वरूप दे दिया गया जिसका विषय हिन्दी बनाम अन्य भारतीय भाषाएं ही था। इस विवाद के पीछे यह तर्क दिया गया कि भारत की एकता को बनाए रखने का एक मात्र तरीका इस विवाद को समाप्त करने का एकमात्र विकल्प अंग्रेजी भाषा है। और अंगेजी भाषा को निष्पक्ष अनिवार्यता के रूप में पूरे देश पर थोप दिया गया। आज स्थिति यह है कि इसी देश की बहुतायत जनसंख्या यदि हिन्दी को राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने की मांग करे तथा अल्प संख्या यदि विरोध करे तो अल्प संख्यकों की बात ही प्रमुखता से स्वीकार की जायेगी जबकि राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रारम्भ से ही विद्वानों को बहुलांश देवनागरी लिपि के उपयोग को स्वीकार करते हुए उसे ही समूचे देश की राष्ट्रीय लिपि बनाने पर बल देता आया है। कलकत्ता हाईकोर्ट के माननीय न्यायमूर्ति को लिपि एकता आन्दोलन का जनक माना जाता है। उनके मतानुसार देवनागरी ही ऐसी भारतीय लिपि है जिसका समस्त भारत में प्रचलन किया जा सकता है।

यशस्वी बंगला उपन्यासकार बंकिम बाबू ने अपने एक लेख के माध्यम से अपना अभिमत व्यक्त किया था कि भारतवर्ष में केवल एक ही लिपि होनी चाहिए और वह देवनागरी ही हो सकती है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि श्यामाचरण मिश्र, बंकिम चन्द्र चटर्जी, रामानन्द

चटर्जी जैसे उद्भट बंगला विद्वानों ने देवनागरी लिपि को राष्ट्रीय लिपि बनाने की अभिलाषा की थी क्योंकि यही एक लिपि है जो पूर्ण व्यापकता, वैज्ञानिकता एवं सम्पन्नता आदि गुणों से परिपूर्ण है।

वस्तुतः भाषाई समन्वय का सम्बन्ध निश्चय ही "वसुधैव कुटुम्बकम" की मानवता वादी एवं सांस्कृतिक भावना से जुड़ा हुआ है। वस्तुतः भारतवर्ष की जातीय, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय एकता तभी अक्षुष्ण रखी जा सकती है जब एक भाषा तथा एक लिपि का सशक्त सूत्र कार्यान्वित किया जाये। महात्मा गांधी ने भी इस तथ्य का महत्व स्वीकार करते हुए लिखा था - हिन्दुस्तान में सर्वमान्य हो सकने वाली अगर कोई लिपि है तो वह देवनागरी ही है, मुझे विश्वास है कि देवनागरी के द्वारा दक्षिणी भाषाएं भी आसानी से सीखी जा सकती है। आचार्य विनोबा भावे भी नागरी के प्रचार को जोड़ने वाले की संज्ञा देते थे और इसे देवी कार्य मानते थे।

इस देश में अंग्रेजी के बढ़ते वर्चस्व को कम करने और अंग्रेजी साम्राज्यवाद का मुकाबला करने के लिए आज नागरी लिपि को अपनाना अनिवार्य है। देवनागरी भारतवासियों को हृदय के स्तर पर जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

हिन्दी की व्यापकता

किसी भी देश की राष्ट्रभाषा उसे ही बनाया जाता है जो उस देश में सर्वाधिक व्यापक होती है। इस दृष्टि से हमारे देश की राष्ट्रभाषा तथा सम्पर्क भाषा निःसन्देह हिन्दी ही हो सकती है। वैसे तो हिन्दी सदियों से उत्तर दक्षिण के भेद से परे चतुर्दिक व्यवहृत होती चली आ रही है। यथा दक्षिण के प्रमुख सन्तों - बल्लभाचार्य विट्ठल, रामानुज रामानन्द आदि। महाराष्ट्र के नामदेव तथा ज्ञानेश्वर, गुजरात के नरसी मेहता, राजस्थान के दादू, रज्जब, मीरा, पंजाब के सिख गुरूनानक, असम के शंकर देव, बंगाल के चैतन्य महाप्रभु तथा अन्यान्य सूफी सन्तों एवं महात्माओं ने अपने धर्म और संस्कृति के प्रचार प्रसार का एकमात्र सशक्त माध्यम हिन्दी को माना। इसके अतिरिक्त हिन्दी ही एक ऐसी सम्पर्क भाषा है जो राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संग्राम की प्रमुख संवाहिका रही। राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने वाले नेता चाहे किसी भी प्रदेश के रहे हों उन सभी ने हिन्दी का प्रयोग अनिवार्य समझा और हिन्दी को राष्ट्रीय भाषा बनाने का संकल्प लिया था। राष्ट्रनायक महात्मा गांधी के लिए तो हिन्दी प्रतिष्ठा की बात थी। डॉ. हरदेव बाहरी के अनुसार - गांधी अगर तानाशाह होते तो अंग्रेजी समाप्त हो जाती।

अनेक देशों में विश्वविद्यालीय स्तर तक हिन्दी के अध्ययन अध्यापन की व्यवस्था है तथा अनेक विदेशी विद्वान भारत में रहकर शोध कार्य कर रहे हैं। अंग्रेजी में उच्चारणों की अनियमितता एवं अनिश्चितता से सभी परिचित हैं। देवनागरी लिपि विश्व की सभी लिपियों से अधिक पूर्ण एवं वैज्ञानिक सिद्ध हो चुकी है।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं भारत की विविधता में एकता के सम्पर्क सूत्र के रूप में हिन्दी ही सर्वोचित है। वह दिन अवश्य आयेगा जब कि राजभाषा के रूप में

हिन्दी प्रतिष्ठित होगी। हम मानसिक दासता से मुक्त होगें और गर्व से अपनी राष्ट्रीय एकता को पिरोने वाली हिन्दी भाषा के प्रति विनयावनत होगें। अंततः नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की निम्न पंक्ति - "प्रान्तीय ईष्या द्वेष दूर करने में जितनी सहायता हिन्दी प्रचार से मिलेगी उतनी दूसरी चीज से नहीं"



कोसोवो जाने वाली के.रि.पु. बल की टीम के सदस्यों को विदाई देते महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल

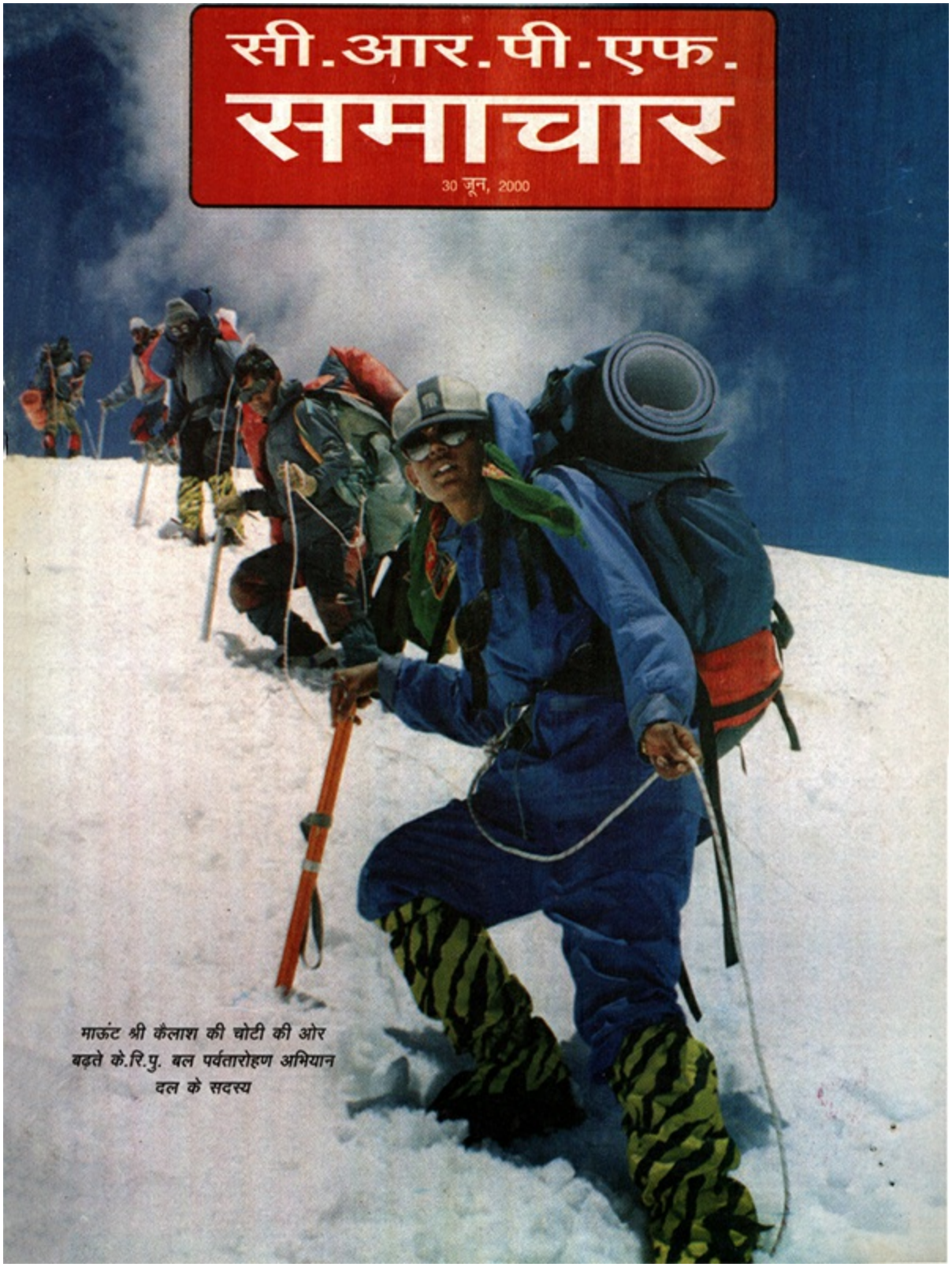
रजि. न. 4767/87



आंतरिक सुरक्षा अकादमी में 31वें बैच के अधिकारी अपनी दीक्षांत परेड के दौरान शपथ लेते हुए

सी.आर.पी.एफ. समाचार

30 जून, 2000



माऊंट श्री कैलाश की चोटी की ओर बढ़ते के.रि.पु. बल पर्वतारोहण अभियान दल के सदस्य



के.रि.पु. बल हीरक जयंती पर्वतारोहण अभियान दल के सदस्यों से ध्वज ग्रहण करते गृह मंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी



हीरक जयंती पर्वतारोहण अभियान का स्मृति चिहन गृह मंत्री को भेंट करते महानिदेशक



सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड-14 अंक-4
30 जून, 2000
9 आषाढ़, शक 1922

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं युनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल
ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से डी.जी. महापात्र

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ. प्रेस
झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-72



इस अंक में

माऊंट श्री कैलाश पर्वतारोहण अभियान

गृह मंत्री ने बल के जवानों की सराहना की

लखनऊ में आवासीय परिसर का उद्घाटन

नवदीक्षित जवानों की दीक्षांत परेड

मुदखेड का प्रशिक्षण महाविद्यालय आदर्श होगा

अंतर बटालियन कुश्ती प्रतियोगिता

85 बटालियन का स्थापना दिवस

कविता

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

–संपादक

के.रि.पु. बल हीरक जयंती :

माऊंट श्री कैलाश पर्वतारोहण अभियान

–डी. जी. महापात्र, ज.सं. अधिकारी

पहाड़ और विशेष तौर पर बर्फ से ढंकी ऊची पहाड़ी चोटियां मुझे हमेशा से आकर्षित करती रही हैं। हिमालय से तो मुझे विशेष रूप से लगाव है, क्योंकि मैंने उन्हें काफी हद तक देखा है, क्योंकि वे भारत की गाथा और उसके महत्व के साथ पूरी तरह गुथे हुए हैं .....

–जवाहर लाल नेहरू

"लोग पर्वतारोहण क्यों करते हैं ? क्योंकि वे वहां हैं।" सवाल का यह जवाब जार्ज लेह मैलोरी ने दिया था, जो ऐंड्रयू इरविन के साथ 1942 में माउंट एवरेस्ट पर गुम हो गये थे। पहाड़ सभी के समक्ष एक चुनौती पेश करते हैं, लेकिन कोई मजबूत हृदय वाला ही पर्वतारोहण की इस चुनौती को स्वीकार कर सकता है। मगर पर्वतारोहण, आज एक मनमोहक खेल बन चुका है। अनेक बहादुर युवक युवतियां रोमांच की खोज में रोज नई-नई चोटियों को फतह कर रहे हैं।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के पुरूष और महिला कर्मी भी इस क्षेत्र में पीछे नहीं हैं। पहाड़ों के प्रति मानव का आकर्षण संभवत उतना ही पुराना है जितने कि स्वयं पहाड़। हालांकि केरिपु बल के जवान विभिन्न प्रकार के साहसिक खेलों में भाग लेते रहे हैं, मगर पर्वतारोहण के क्षेत्र में पहला प्रयास 1995 में तब हुआ जब बल के बहादुर कार्मिकों ने सफलतापूर्वक गढ़वाल हिमालय की जोगिन-I (21,211 फुट)तथा जोगिन-III (20,066 फुट) चोटियों को फतह किया ।

तभी से हिमालय की और अधिक ऊंची चोटियों की जीतने का उत्साह बल के सदस्यों को उद्वेलित करता रहा है। रोमांच, मानव प्रकृति का एक स्वाभाविक गुण है और इसकी खोज में मानव कई कठिन और महत्वाकांक्षी लक्ष्यों को प्राप्त करता रहा है। बल परिचालन सम्बंधी अपनी बेहद व्यस्तताओं के बावजूद अपने अधिकारियों और जवानों को कई रोमांचक गतिविधियों में भाग लेने का मौका देता रहा है। हीरक जयंती (1939-99) के अवसर पर एक ऐसा ही मौका बल ने अपने कार्मिकों को माऊंट कैलाश (22,736 फुट) की चोटी फतह करने को दिया। माऊंट कैलाश गढ़वाल हिमालय के उत्तर काशी जिले में पड़ता है। अभियान मई, 2000 में आयोजित किया गया।

गढ़वाल हिमालय श्रृंखला की दूसरी सबसे ऊंची चोटी माऊंट कैलाश शुरू से ही पर्वतारोहियों को अपनी ओर आकर्षित करती रही है। इस चोटी का आकार एक विशेष पिरामिड जैसा है तथा पौराणिक कथाओं के आधार पर शिव के साथ जुड़े इसके नाम के कारण इस का महत्व और भी बढ़ जाता है। हालांकि यह क्षेत्र की दूसरी सबसे ऊंची चोटी है, लेकिन अपने कोणीय आकार के कारण हमेशा यह एक चुनौती रही है। लम्बे तथा कठिन मार्ग, विशाल ग्लेशियर मार्ग, तथा चौड़ी खाइयों और प्रायः खराब रहने वाले मौसम के कारण पर्वतारोहियों के समक्ष यह हमेशा एक चुनौती प्रस्तुत करती रही है।



माऊंट श्री कैलाश पर झंडा फहराते अभियान दल के नेता

बल के इस 16 सदस्यीय अभियान दल में चार महिलाएं भी शामिल थीं। दल की

सहायता के लिए एक चिकित्सा अधिकारी, एक नर्सिंग सहायक, दो रेडियो आपरेटर तथा एक रसोइया भी साथ था। अभियान दल का नेतृत्व डिप्टी कमांडेंट सुनन्द कुमार ने किया।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल हीरक जयंती पर्वतारोहण अभियान दल को 24 अप्रैल, 2000 को केन्द्रीय गृह सचिव श्री कमल पांडे ने नई दिल्ली स्थित बल के मुख्यालय से झंडा सौंप कर विदा किया। इससे पूर्व पर्वतारोहियों को बर्फीले क्षेत्रों तथा कम दबाव के उच्च क्षेत्रों के माकूल जानकारी तथा उन परिस्थितियों में रहने की जानकारी प्रदान की गई। इस क्षेत्र में थोड़ी सी लापरवाही गंभीर दुर्घटना और मौत का भी कारण बन सकती है। अतः बल के इन पर्वतारोहियों को पर्वतारोहण विशेषज्ञों द्वारा प्रशिक्षण दिया गया।

अभियान दल के सदस्यों ने 1 मई, 2000 से गंगोत्री से अपने अभियान की शुरूआत की। इससे पूर्व उत्तर काशी में अभियान दल के सदस्यों को एवरेस्ट चोटी पर चढ़ने वाली पहली भारतीय महिला बिचेंद्री पाल ने संबोधित किया। बिचेंद्री पाल के साथ मुलाकात ने अभियान दल के सदस्यों में अपूर्व उत्साह और जोश का संचार किया।



माऊंट श्री कैलाश की चोटी पर अभियान दल के सदस्य

अभियान दल 2, मई 2000 को भोवासा तथा गोमुख से होता हुआ रक्तवन पहुंचा तथा वहां 14,000 फुट की ऊंचाई पर अपना आधार कैंप स्थापित किया। पहले ही दिन एडवांस कैंप के लिए रैक्की की गयी। लेकिन अगले दो दिन तक मौसम खराब रहा। मौसम की खराबी से अभियान दल के सदस्य बहुत चिंतित थे। मार्ग तथा भू

स्थितियों को दृष्टि में रखते हुए, दल को दो भागों में विभक्त कर दिया गया। एडवांस ग्रुप और रियर ग्रुप। एडवांस ग्रुप का मुख्य कार्य मार्ग की रैक्की करने, मार्ग को खोलने तथा कैम्प की स्थापना का था। एडवांस पार्टी के पीछे आ रही रियर पार्टी को एडवांस पार्टी की मदद का काम सौंपा गया। इस प्रकार अभियान के दौरान एडवांस पार्टी आगे रही तथा रियर पार्टी पीछे से सहायोग देती रही। आधार कैम्प से अभियान दल ने आगे बढ़ कर 7 मई, 2000 को 16,000 फुट की ऊंचाई पर एडवांस बेस कैम्प की स्थापना की। अगले दिन फिर चढ़ाई शुरू कर दल ने 10 मई, 2000 को 17,000 फुट की ऊंचाई पर कैम्प-2 स्थापित किया। बिना आराम किये दल के सदस्य आगे बढ़ते रहे और तीन दिन की दुर्गम ट्रैकिंग के बाद 13 मई, 2000 को 18,000 फुट की ऊंचाई पर उन्होंने कैम्प-2 स्थापित किया। अगले की स्थापना 17 मई, 2000 को 19,500 फुट की ऊंचाई पर की गई। जैसे-जैसे समय गुजरता जा रहा था, दल के सदस्यों का माऊंट कैलाश की चोटी पर पहुंचने का उत्साह बढ़ता जा रहा था। दल के सदस्य जल्द से जल्द अपने लक्ष्य पर पहुंच जाना चाहते थे। अतः उन के पास आराम के लिए समय नहीं था। दल ने आगे की चढ़ाई शुरू की और 21,000 फुट की ऊंचाई पर 18 मई, 2000 को अपना शिखर कैम्प स्थापित किया।



शिखर की ओर बढ़ते दल के सदस्य

शिखर कैम्प की स्थापना के अगले ही दिन एडवांस पार्टी के सदस्यों ने माऊंट कैलाश की चोटी पर चढ़ने का निर्णय लिया। लेकिन रात में मौसम काफी खराब हो गया तथा भारी हिमपात होने लगा। जब अभियान दल के नेता सुबह 3 बजे उठे तो उन्होंने देखा कि हिमपात उस वक्त भी हो रहा था। अतः उस सुबह चोटी पर चढ़ाई का इरादा छोड़ दिया गया। लेकिन सुबह 5 बजे तक मौसम साफ हो गया तथा दल के

सदस्यों में चोटी पर चढ़ने का 1 उत्साह हिलोरे मारने लगा। वह काफी सर्द सुबह थी। उस सुबह कितनी सर्दी थी इसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि बर्फ से दो बोतल पानी बनाने के लिए ढाई घण्टे लगे। एडवांस पार्टी ने सुबह 8.30 बजे चढ़ाई शुरू की। लगभग डेढ़ घण्टे की चढ़ाई के बाद मौसम फिर खराब हो गया तथा चोड़ी खाइयों को पार करना मुश्किल हो गया। दल के नेता के पास आधे रास्ते से वापस लौट आने के अलावा और कोई विकल्प नहीं था। वे लोग शिखर कैम्प में लौट आए। कैम्प में राशन और ईंधन की कमी थी, अतः उसे कैम्प–3 से लाया गया।



वापसी पर ग्रुप केंद्र रामपुर में अभियान दल का स्वागत करते महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल

20 मई, 2000 को मौसम साफ और सुहावना था अतः दल के सदस्य दृढ़ निश्चय के साथ सुबह 6.30 बजे कैम्प से निकल पड़े। अभियान दल के नेता सात सदस्यों के साथ 9:45 बजे माऊंट कैलाश की चोटी पर पहुंच गये। यह एक महान क्षण था, तथा दल के हर सदस्य की आंखों में खुशी के आंसू छलक रहे थे। अभियान दल ने चोटी पर राष्ट्रीय तथा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के ध्वज फहराए।

जब रियर पार्टी के पास एडवांस पार्टी द्वारा माऊंट कैलाश की चोटी को फतह कर लेने की खबर पहुंची, तो उनकी भी खुशी का ठिकाना नहीं रहा और वे भी जल्द से जल्द चोटी पर पहुंचने के उत्साह से आगे निकल पड़े। 21 मई, 2000 को रियर पार्टी के सात सदस्यों ने डिप्टी कमांडेण्ट बी.सी. शर्मा के नेतृत्व में चढ़ाई प्रारंभ की। और वे लोग दोपहर 12:50 बजे चोटी पर पहुंच कर राष्ट्रीय और बल के ध्वज फहराने में कामयाब हो गये। चोटी पर लगभग एक घंटा गुजारने के बाद वे लोग शिखर कैम्प की तरफ लौट आए।

अभियान दल ने 5 जून, 2000 को नई दिल्ली में गृह मंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी को ध्वज वापस सौंपा, जिसे श्री आडवाणी ने बल के महानिदेशक श्री एम. एन. सभरवाल को एक धरोहर के रूप में सौंप दिया। श्री आडवाणी ने अभियान दल के सदस्यों को बधाई देते हुए आह्वान किया कि वे भविष्य में भी इसी तरह के साहसिक और रोमांचक अभियानों में भाग लेते रहें।

माऊंट कैलाश पर पहली बार 16 अक्टूबर, 1938 को आस्ट्रियाई पर्वतारोही चढ़े थे। पहला भारतीय दल इस चोटी पर 1963 में चढ़ा, उसके बाद कई पर्वतारोही इस चोटी पर चढ़ते रहे। मगर 20–21 मई, 2000 को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल पर्वतारोहियों का इस चोटी पर इस सहस्त्राब्दी का पहला अभियान था, साथ ही इस चोटी पर किसी पुलिस दल का भी यह पहला अभियान था।

गृह मंत्री ने बल के जवानों की सराहना की



गृह मंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी *2* बटालियन मुख्यालय में

अपने त्रिपुरा दौरे के दौरान केंद्रीय गृह मंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी ने त्रिपुरा के धलाई जिले के गंडा चारा इलाके में स्थित 2 बटा. के टेक्टिकल मुख्यालय का 27 मार्च, 2000 को दौरा किया। गृह मंत्री राज्य की कानून व्यवस्था का जायजा लेने के लिए आए थे।

गृह मंत्री ने उस वक्त मुख्यालय में उपस्थित जवानों को संबोधित भी किया।

उन्होंने इस संवेदनशील क्षेत्र में कानून व्यवस्था बनाए रखने में बल के जवानों द्वारा दिये जा रहे सहयोग के लिए उन्हें धन्यवाद दिया। उन्होंने जवानों को आतंकवाद विरोधी अभियानों में सफलता के लिए बधाई भी दी। बटालियन के कमांडेंट श्री एन. भारद्वाज ने गृह मंत्री को स्थानीय कानून व्यवस्था तथा बटालियन के कार्यों की जानकारी दी। गृह मंत्री देश के विभिन्न भागों से आए जवानों को एकजुट होकर कार्य करते देख विशेष रूप से प्रभावित हुए।

गृह मंत्री के साथ त्रिपुरा के मुख्य मंत्री श्री माणिक सरकार, त्रिपुरा के गृह सचिव श्री बी. तुलसीदास, बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल तथा सीमा सुरक्षा बल के महानिदेशक श्री ई. एन. राममोहन सहित कई अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी थे।

बोर्ड परीक्षाओं में सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल का शानदार प्रदर्शन

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की परीक्षाओं में शानदान प्रदर्शन के लिए सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों और शिक्षकों को बधाई दी है।

कक्षा 10 की परीक्षाओं में शामिल हुए 118 विद्यार्थियों में से 95 प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए तथा 23 द्वितीय रहे। 44 छात्रों ने पांचों विषयों में 75 प्रतिशत से अधिक अंक लेकर विशिष्टता हासिल की। स्कूल टापर अभिनव अग्रवाल ने 94.8 प्रतिशत अंक प्राप्त किये।

इसी प्रकार कक्षा 12 की परीक्षा शामिल हुए 87 छात्रों में से 74 प्रथम श्रेणी में पास हुए तथा 13 को द्वितीय श्रेणी मिली। 11 छात्रों ने 85 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किये और इतने ही छात्रों ने 75 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किये। स्कूल के प्रधानाचार्य श्री सूरज प्रकाश से मिली सूचना के अनुसार स्कूल टापर कुमारी गरिमा गुप्ता ने 91.3 प्रतिशत अंक प्राप्त किये।

अखिल भारतीय पुलिस खेलों में के.रि.पु. बल खिलाड़ियों की उपलब्धि

धर्मशाला (हि.प्र.) में हुए 49वें अखिल भारतीय पुलिस खेलों में उल्लेखनीय प्रदर्शन के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के खिलाड़ियों को बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने बधाई दी है। इन खेलों की हैंडबाल चैंपियनशिप के.रि.पु. बल ने जीती।

इसके अतिरिक्त इन प्रतियोगिताओं में के.रि.पु. बल टीम बास्केटबाल प्रतियोगिता में दूसरे स्थान पर तथा कबड्डी प्रतियोगिता में तीसरे स्थान पर रही।

लखनऊ में आवासीय परिसर का उद्घाटन



आवासीय परिसर का उद्घाटन करते महानिदेशक श्री सभरवाल

14 अप्रैल, 2000 को श्री एम.एन. सभरवाल, महानिदेशक, के.रि.पु. बल के कर कमलों द्वारा ग्रुप केन्द्र, के.रि.पु. बल के आवासीय परिसर का प्रथम चरण का उद्घाटन किया गया, इस अवसर पर श्री तिलक काक, पुलिस महानिरीक्षक मध्य सेक्टर, उप–महानिरीक्षक, इलाहाबाद एवं रामपुर परिक्षेत्र ग्रुप केन्द्र लखनऊ एवं उत्तर प्रदेश स्थित कार्यालयों, बटालियनों के अधिकारीगण एवं बड़ी मात्रा में अधीनस्थ अधिकारी एवं अन्य सैनिक उपस्थित थे, केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग के मुख्य अभियन्ता, लखनऊ में तैनात अभियन्ताओं के साथ समारोह में सम्मलित हुए।

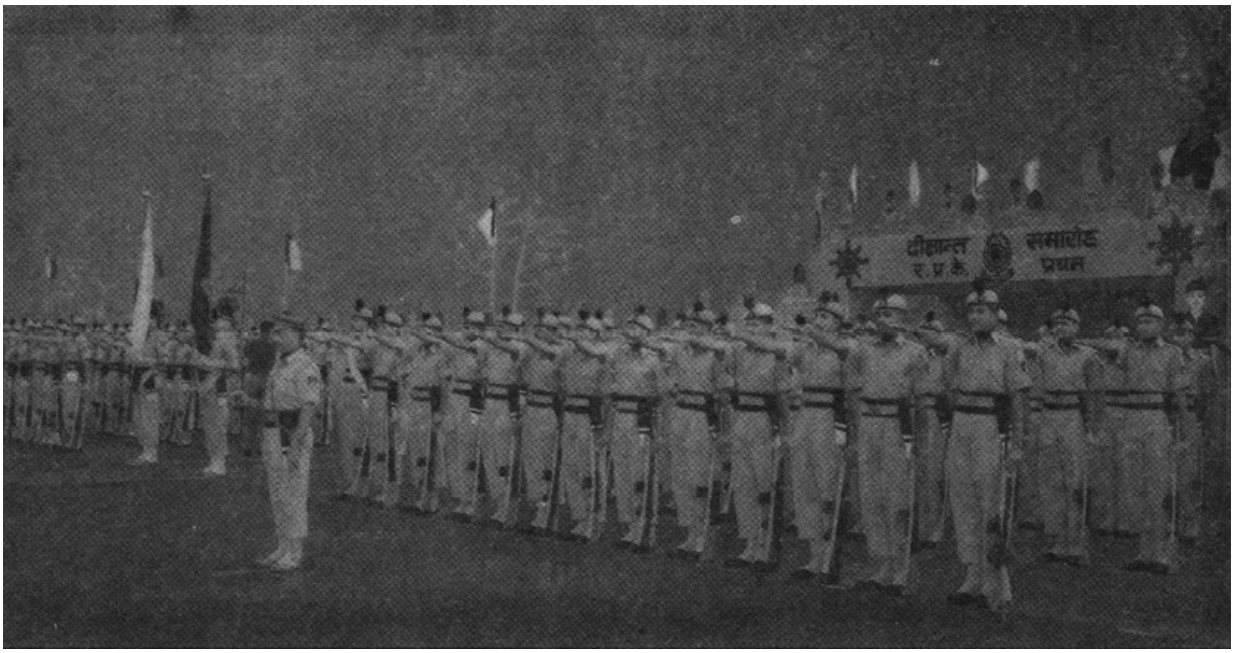
श्री तिलक काक, महानिरीक्षक मध्य सेक्टर ने महानिदेशक एवं अन्य अधिकारियों व अतिथियों का स्वागत किया तथा ग्रुप केन्द्र लखनऊ की उपलब्धियों व निर्माण कार्य में की गई प्रगति एवं भविष्य की योजनाओं पर प्रकाश डाला, तथा महानिदेशक महोदय से आवासीय परिसर के उद्घाटन का अनुरोध किया।

श्री एम.एन. सभरवाल, महानिदेशक महोदय ने निर्माण कार्य की प्रगति पर संतोष

व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि बल के 84 प्रतिशत कार्मिक उपद्रव ग्रस्त क्षेत्रों में तैनात रहते है जहां पर वे परिवार नहीं रख सकते तथा उनके गावों में शिक्षा, चिकित्सा आदि सुविधाएं उपलब्ध नहीं होती, मजबूरन उन्हें अपने परिवार शहरों में मंहगी दर पर किराये के मकानों में रखने पड़ते हैं। लखनऊ जैसे स्थान पर जहां यह सब सुविधाएं उपलब्ध हैं। कार्मिकों को आवास उपलब्ध होने पर वे अपने बच्चों की शिक्षा एवं परिवार जनों की चिकित्सा आदि सुविधाजनक तरीके से करवा सकते हैं। उन्होंने बताया कि जिन आवासों का निर्माण कार्य अधूरा है या जो योजनाए निर्माण हेतु स्वीकृत की गई हैं उनके निर्माण में शीघ्रता की जाए ताकि कार्मिकों को अधिक से अधिक आवासीय सुविधायें उपलब्ध की जाए ताकि कार्मिकों को अधिक से अधिक आवासीय सुविधायें उपलब्ध हो सके। उन्होंने आश्वासन दिया कि निर्माण कार्य हेतु जितने भी धन की आवश्यकता होगी उसको समय पर उपलब्ध करवाया जायेगा।

श्री महेन्द्र सिंह, अपर पुलिस उप महानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र लखनऊ ने महानिदेशक महोदय का धन्यवाद किया।

नवदीक्षित जवानों की दीक्षांत परेड



कर्त्तव्य के प्रति निष्ठा और समर्पण की शपथ लेते नवदीक्षित जवान

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस फोर्स नीमच रेंज के अंतर्गत संचालित रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र पर प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले 684 सिपाहियों ने प्रशिक्षण पूर्ण होने के उपरांत 12

मई, 2000 को आयोजित एक गरिमापूर्ण समारोह में के.रि.पु. फोर्स की गौरवशाली परंपरानुसार राष्ट्र सेवा की शपथ ग्रहण की और दीक्षांत परेड में भाग लिया।

उल्लेखनीय है कि रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र प्रथम की स्थापना एक अगस्त 1962 को बड़वाह में हुई थी जिसे 1984 में के.रि.पु. की जन्म स्थली नीमच में स्थानांतरित कर दिया गया। स्थापना से लेकर अभी तक इस केन्द्र से 35 हजार से भी अधिक सिपाहियों को प्रशिक्षण दिया जा चुका है। अर्द्धसैनिक बलों में सिपाहियों को आधारभूत प्रशिक्षण देने वाला यह देश का पहला संस्थान है।

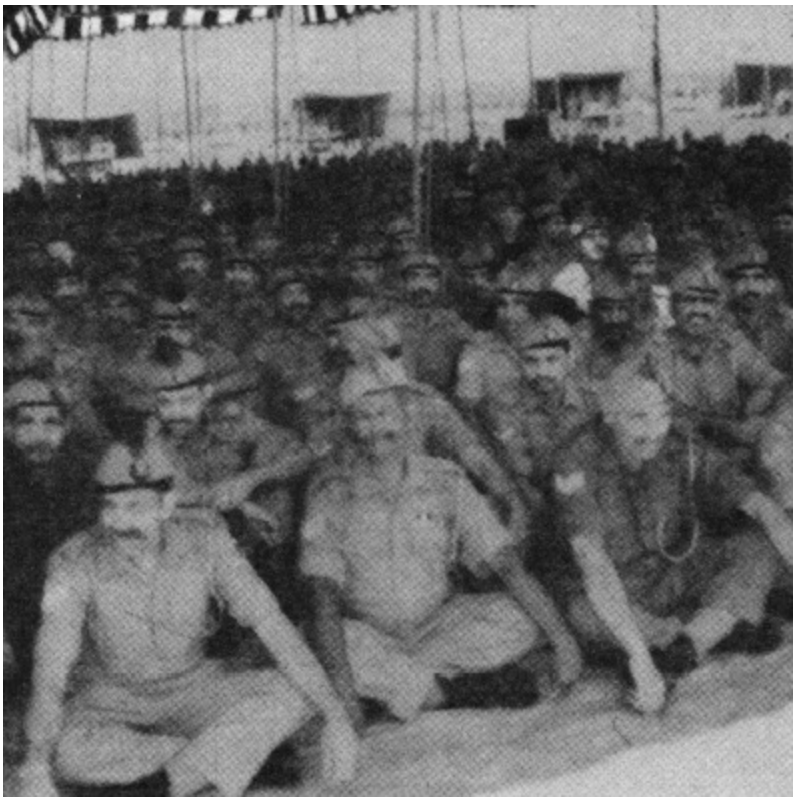
इसी तारतम्य में इस संस्थान में प्रशिक्षणग्रस्त 684 सिपाहियों को कठोर प्रशिक्षण हाल ही में पूर्ण हुआ है। परंपरानुसार प्रशिक्षण के पूर्ण होने की प्रतीक दीक्षांत परेड और राष्ट्र सेवा हेतु समर्थन की शपथ लेने हेतु के.रि.पु. परिक्षेत्र में भव्य एवं गरिमापूर्ण कार्यक्रम आयोजित किया गया। महानिरीक्षक पूर्वी क्षेत्र आर.पी. सिंह ने दीक्षांत परेड की सलामी ली जबकि उप कमांडेंट पी.एस. जून ने इस विशिष्ट परेड को कमांड किया।

प्रशिक्षण काल के दौरान श्रेष्ठ प्रदर्शन के आधार पर संजय कुमार चंद्र को बेस्ट इंडोर, अनिल नोडयाल को बेस्ट फायटर, मनिन्दर को बेस्ट परफामेंस से कप प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस समारोह में एम.एस. सिद्धू अपर पुलिस महानिरीक्षक प्राचार्य आर.टी.सी. प्रथम ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का ब्यौरा दिया। नव दीक्षित सिपाहियों को शुभ कामनाएं दी।

इस अवसर पर पूर्वी क्षेत्र महानिरीक्षक आर.पी. सिंह ने नव दीक्षित सिपाहियों का आह्वान किया कि वे के.रि.पु. बल की साहस, समर्पण और राष्ट्र भक्ति की महान परंपरा को आगे बढ़ाए तथा देश की एकता व अखंडता को बरकरार रखने के लिए सर्वस्व त्याग करने हेतु तत्पर रहें। समारोह में के.रि.पु. बल के अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण तथा गणमान्य नागरिक भी उपस्थित थे।

मुदखेड का प्रशिक्षण महाविद्यालय आदर्श होगा





मुदखेड में जवानों को संबोधित करते महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के देश भर में फैले बड़े परिवार में से मुदखेड के प्रशिक्षण महाविद्यालय को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है तथा इस महाविद्यालय को एक आदर्श प्रशिक्षण केन्द्र का दर्जा प्रदान करने के दृष्टिकोण से सभी प्रकार के प्रयत्न किए जाएंगे। बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने मुदखेड में द्वितीय चरण के निर्माण कार्यों का शिलान्यास करते हुए कहा।

बल के महानिरीक्षक (सम्भरण) श्री डी.के. सुरी, अपर पुलिस उप–महानिरीक्षक (समन्वय) श्री के.डी.एस. दुल्लत, कमाण्डेन्ट (वर्क्स) रमेश चन्द्र, पुलिस अधीक्षक श्री वी.वी. लक्ष्मीनारायण, सी.पी.डब्ल्यू.डी. पश्चिमी क्षेत्र के मुख्य अभियन्ता श्री सी.बी. लाल व अधीक्षक अभियन्ता श्री जी.एस. मित्तर भी अतिथि के रूप में इस मौके पर उपस्थित थे।

इस मौके पर बोलते हुए श्री सभरवाल ने कहा कि द्वितीय चरण का निर्माण कार्य लगभग इस वर्ष तक पूरा किया जाएगा और नवीनतम सुविधायुक्त इस केन्द्र द्वारा विविध राज्यों में तैनात पुलिस कार्मियों को भी उनकी आवश्यकतानुसार आवश्यक प्रशिक्षण देने हेतु सहकार्य किया जाएगा और दहशतवाद के विरूद्ध लड़ाई का प्रशिक्षण देने वाली विशेष रूप प्रशिक्षण संस्था के रूप से इस संस्था का विकास किया जाएगा।

इससे पूर्व केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य श्री सी.वी. मैथ्यू ने मुख्य अतिथि श्री सभरवाल का स्वागत किया। उसके बाद दल के महानिदेशक एम.एन. सभरवाल ने द्वितीय चरण के निमार्ण कार्य के आधार स्तंभ का अनावरण एवं शिलान्यास किया।

इस महाविद्यालय परिसर में द्वितीय चरण के निर्माण कार्य के अन्तर्गत प्रशासनिक इमारत भण्डार, अस्पताल, मैस तथा विविध प्रकार के कुल 76 सरकारी परिवार आवास का भी कार्य शामिल है। इसके लिए 7 करोड़ 77 लाख रूपये की राशि मंजूर की गयी है।

अंतर बटालियन परिचालन सेक्टर की कुश्ती प्रतियोगिता–*2000*



विजेताओं के साथ महानिरीक्षक (परिचालन) श्रीनगर श्री पी.सी. जोशी

22 से 25 मई, 2000 तक 71 बटा. के.रि.पु. बल के प्रांगण में (श्रीनगर परिचालन सैक्टर की) अन्तर बटालियन कुश्ती ग्रीक रोमन एवं फ्री स्टाईल प्रतियोगिता 2000 का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में कुल 25 टीमों ने भाग लिया तथा प्रतियोगिता के दौरान 82 बटालियन ने उत्कृष्ट खेल का प्रदर्शन करते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया और 71 बटालियन को दूसरा एवं 130 बटालियन को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ।

कुश्ती प्रतियोगिता के अन्तिम दिन 26 मई, 2000 को श्री पी.सी. जोशी, पुलिस महानिरीक्षक, परिचालन, श्रीनगर द्वारा प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली टीमों को पुरूस्कार व ट्राफी प्रदान की गयी।

प्रतियोगिता में 82 बटालियन कुल 12 अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान पर रही, जिसे प्रतियोगिता का विजेता चुना गया। 71 बटालियन कुल 09 अंक प्राप्त कर द्वितीय स्थान पर रही जो उपविजेता रही। 130 बटालियन कुल 8 अंक प्राप्त कर तृतीय स्थान पर रही।

मणिपुर-नागालैंण्ड सेक्टर ने फुटबाल प्रतियोगिता जीती

ग्रुप केन्द्र, दुर्गापुर में इसे 10 अप्रैल, 2000 तक आयोजित दसवीं अंतर सेक्टर

फुटबाल प्रतियोगिता मणिपुर नागालैंड सेक्टर ने आर.ए.एफ. सेक्टर को हरा कर जीत ली। उत्तर पश्चिम जोन तीसरे स्थान पर रहा। प्रतियोगिता में बल के 12 सेक्टरों की टीमों ने भाग लिया।

2 बटा. द्वारा मैडिकल कैम्प

त्रिपुरा स्थित 2 बटा. ने 29 से 31 मार्च, 2000 के दौरान दलाई जिले के कई दूरदराज इलाकों में मुफ्त चिकित्सा कैम्पों का आयोजन किया। इन कैम्पों में एक हजार से ज्यादा नागरिकों का उपचार किया गया।

78 बटा. ने कबड्डी प्रतियोगिता जीती

कश्मीर स्थित बल की परिचालनिक युनिट्स के बीच 24 से 30 अप्रैल, 2000 तक चौथी अंतर सेक्टर कबड्डी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में कुल 24 टीमों ने भाग लिया।

प्रतियोगिता का उद्घाटन 24 अप्रैल, 2000 को महानिरीक्षक (परिचालन) श्रीनगर श्री पी.सी. जोशी ने किया। जबकि समापन समारोह में उत्तर पश्चिम जोन के अपर महानिदेशक श्री जे.पी. वर्मा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। 78 बटालियन प्रतियोगिता की विजेता रही। श्री वर्मा ने समापन समारोह में विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करने के अतिरिक्त खिलाड़ियों द्वारा प्रस्तुत मार्च की सलामी भी ली।

*85*वीं बटालियन ने स्थापना दिवस मनाया



स्थापना दिवस के अवसर आयोजित मेले में भाग लेने के लिए आते हुए ग्रुप केंद्र खटखटी के पु.अ.उ. महानिरीक्षक

श्री एम.एस. रावत व 85 बटा. के कमांडेंट श्री एच.आर. सिंह

असम-नागालैंड सीमा क्षेत्र में तैनात केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 85 बटालियन ने 1 जून, 2000 को बड़े ही धूमधाम के साथ अपना 16वां स्थापना दिवस मुख्यालय बोकाजान तथा कंपनी लोकेशन में मनाया। समारोहों की शुरूआत युनिट मंदिर में संपन्न पूजा से की गयी। इसके बाद सभी कंपनियों द्वारा बौद्धिक खेल व खाने-पीने के विशेष व्यंजनों से युक्त स्टालों के भव्य मेले का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य आकर्षण फैंसी ड्रेस, हैल्थी बेबी शो, तीरंदाजी व निशानेबाजी व नंबर गेम था। इस अवसर पर 31 मई को बटालियन मुख्यालय के समीप फुटबाल ग्राउंड में स्थानीय पिशुखू स्पोर्ट्स क्लब दीमापुर तथा बटालियन की टीम के बीच एक दिलचस्प फुटबाल मैच खेला गया। इसके उपरांत केरिपु बल के परिचालन पुलिस उप-महानिरीक्षक अमरजीत सिंह चाहाल की धर्मपत्नी श्रीमती चाहाल के द्वारा विजेता व उपविजेता टीम के खिलाड़ियों को पुरस्कार वितरण किया गया।

1 जून को समारोहों की शुरूआत बटालियन क्वार्टर गार्ड से हुई जहां पर बटालियन कमांडेंट एच.आर. सिंह द्वारा सलामी लेने के बाद एक सैनिक सम्मेलन में बूटोलियन कर्मियों को इस अवसर पर शुभकामनाएं दी गयी तथा उन्हें श्रेष्ठ ड्यूटी प्रदर्शन व मधुर व्यवहार करने का आह्वान किया। इस अवसर पर 30 बटालियन कर्मियों को भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य प्रदर्शन के लिए प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

1 जून की शाम बटालियन व स्थानीय युवा व बाल कलाकारों के द्वारा एक बहुत ही आकर्षक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। यह बटालियन 16 वर्ष पहले 1 जून 1985 को राजस्थान के अजमेर जिले में खड़ी की गयी थी तथा विभिन्न राज्यों में ड्यूटी करने के उपरांत यह पिछले एक वर्ष से असम-नागालैंड के विवादग्रस्त सीमावर्ती इलाके में यथास्थिति व शांति व्यवस्था कायम रखने के लिए तैनात है। इस बटालियन का हर क्षेत्र में कार्य बहुत ही सराहनीय रहा है तथा बटालियन का बहुत ही गौरवमयी इतिहास रहा है। इसके 13 जवानों ने ड्यूटी की बलिवेदी पर अपने प्राण गंवाये हैं तथा बटालियन को एक राष्ट्रपति पुलिस पदक तथा एक वीरता पुलिस पदक के साथ 17 कर्मियों को पुलिस महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क प्राप्त होने का सम्मान प्राप्त है।

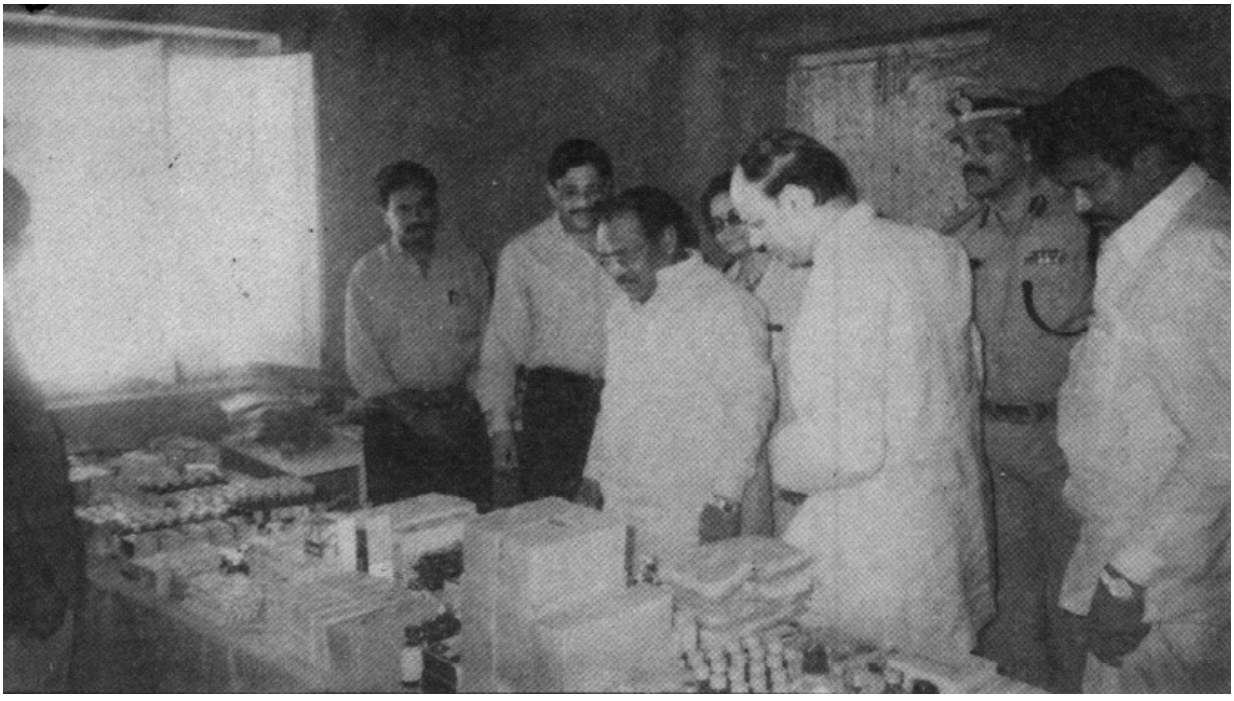
पिछले एक वर्ष में बटालियन के 243 कर्मियों को केरिपु बल तथा सिविल प्राधिकारों के द्वारा रु. 43,850/- की राशि के नगद पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं। बटालियन ने इससे पहले भी सिविल एक्शन कार्यक्रम का बहुत सफल व प्रभावपूर्ण आयोजन करके स्थानीय जनता में अपनी अलग पहचान बनायी है तथा 1,35,000/- की राशि से गरीब व जरूरतमंद जनता की शिक्षा, चिकित्सा व खेल-कूद के क्षेत्र में मदद की।

दक्षिण क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन

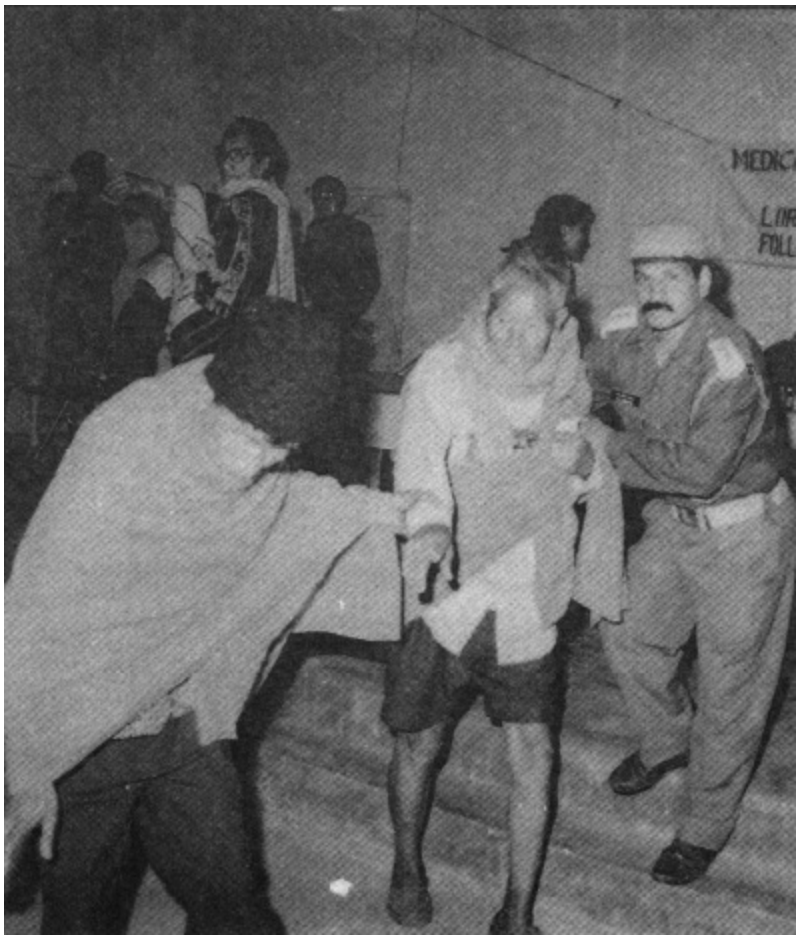
क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, कोचिन एवं बैंगलूर के संयुक्त तत्वाधान में दक्षिण क्षेत्रीय राजभाषा का सम्मेलन तिरूवनंतपुरम में बल के पल्लिपुरम ग्रुप केन्द्र के मनोरंजन कक्ष में 10-11 मार्च, 2000 को आयोजित किया गया। 10 मार्च, 2000 को श्री जयप्रकाश नारायण, उप-निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने स्वागत भाषण के साथ समारोह का शुभारंभ किया। प्रोफेसर डा. डी.एन. बाबू, कुलपति, केरल विश्व-विद्यालय, एवं मुख्य अतिथि ने परम्परागत द्वीप प्रज्ज्वलित करके समारोह का विधिवत उद्घाटन किया। उस समारोह के विशेष अतिथि इस ग्रुप केन्द्र के अपर पुलिस उप-महानिरीक्षक श्री पी. दामोदरन थे। समारोह में दक्षिण क्षेत्र के विभिन्न कार्यालयों, संगठनों, बैंकों के कार्यालयाध्यक्ष उपस्थित हुए।

98 बटा. को हिन्दी सम्मान

वर्ष 1999-2000 के दौरान सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने व राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, निजामाबाद (आन्ध्र प्रदेश) ने 98 बटालियन, केरिपु बल को "राजभाषा चल वैजयन्ती रोलिंग शील्ड" व "प्रशस्ति पत्र" प्रदान किया है। 27 अप्रैल, 2000 को निजामाबाद में आयोजित नराकास सम्मेलन में 98 बटा. के श्री कुलदीप धर, द्वितीय कमान अधिकारी ने शील्ड व प्रशस्ति पत्र प्राप्त किया।



30 अप्रैल, *2000* को *99* बटा. द्वारा बेस अस्पताल-*2* के सहयोग से लगाए गये चिकित्सा शिविर का दौरा करते संसद सदस्य श्री एम. राजैय्या



64 बटा. द्वारा मोकाक चुंग, नागालैंड में लगाए गये चिकित्सा शिविर में एक रोगी की मदद करते बल के कार्मिक



चौथी अंतर सेक्टर कबड्डी प्रतियोगिता के विजेताओं को ट्राफी प्रदान करते उत्तर पश्चिम जोन के अपर महानिदेशक श्री जे.पी. वर्मा

माह अप्रैल, मई, 2000 में मृत कार्मिक

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिक माह अप्रैल-मई, 2000 में मृत्यु को प्राप्त हुए। सी.आर.पी.एफ. समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

है.कां. एस. खेलन सिंह (31 बटा), कां. रमन कुमार (128 बटा.), कां. तुलसी भाई (81 बटा.), इंस्पेक्टर मोहन सिंह (34 बटा.), कां. राम बिलास यादव (133 बटा), कां. गौतम चौधरी (ग्रु.के. गुवाहाटी), कां. एस.आर. कोडापे (125 बटा.), धोबी राजेन्द्र सिंह (12 बटा.), है. कां. हनुमान राम (18 बटा.), है.कां. कृष्ण कुमार (115 बटा.), है. कां. दीपक लाल (88 बटा.), कां. आर.सी. मंडी (115 बटा.), है.कां. किरण टोपनो (50 बटा.), ला. नायक रंजीत सिंह (136 बटा), सब इंस्पेक्टर राम सिंह (60 बटा.), कां. राजेश्वर प्रसाद (125 बटा.), है.कां. रामबहादुर यादव (ग्रु.के. मोकामाघाट), है.कां. इंद्रेत यादव (133 बटा.), सब इंस्पेक्टर रामदीन (19 बटा.), कां. के. बच्चू भाई (90 बटा.), कां. बहादुर सिंह (96 बटा.), ला. नायक दलबीर सिंह (51 बटा.), है. कं./रे.आ.

दूध नाथ पांडेय (3 सिग.), कां./मालो बनमालो नायक (ग्रु.के. गुवाहाटी), है.कां./ड्रा. महेन्द्र सिंह (29 बटा.), कां. हेमराज (12 बटा.), सफाई कर्मचारी ओम प्रकाश (5 बटा.), ला. ना./ड्रा. बिजेंदर सिंह (1 बटा.), कुक कपिल देव प्रसाद (आर.टी.सी.-1), है.कां./रे.आ. संजय कुमार (4 सिग. बटा.), कां. आई.एम. बेलारी (50 बटा.), कां. महेन्द्र सिंह (23 बटा.), है. कां./ड्रा. राम प्रवेश दूबे (23 बटा.), कां. एन.आर. शेरप्पा (8 बटा.), है. कां. एलेक्सियर बारा (49 बटा.), वाटर कैरियर राज कुमार (115 बटा.), तथा कां./बिगुलर पी.जी. सुरेश कुमार (79 बटा.)।

इसके अतिरिक्त देर से प्राप्त समाचार के अनुसार दिसम्बर, 1999 में 36 बटा. के कां. नरसिंहमहालु और 14 बटा. के कां. बी. एन. घाटे, जनवरी, 2000 में 38 बटा. के है. कां. मंटू राम राभा, तथा मार्च, 2000 में 116 बटा. के का. राम गोपाल शाह, 62 बटा. के है. कां. लोक राम तथा ग्रुप केन्द्र हैदराबाद के है.कां./बैंड टी. लालैयाह भी मृत्यु को प्राप्त हुए।

जवान के प्रति

थको नहीं, रुको नहीं, वीर तुम चले चलो।
कोटि विघ्न दूर कर,
नद नदी उतुंग श्रृंग
बन सघन विवर व्याघ
अविचलित सदा दृढ़ सशक्त।

बन्धु वान्धव स्वजन हृद्जन,
सुख-दुख शीतोष्ण सम।
देश काल भाव विछिन्न मन,
अडिग पथ कर्तव्य संकल्प।

जाति धर्म भाषा वर्ग,
तुम निरपेक्ष सजग अदर्प।
देश प्रेम सब तप्त मन,
राष्ट्रहित न्योछावर तन।

धधकते विद्रोह की आग,
सुलगते आंतरिक आतंकवाद।
क्रूर कौमी दंगे फसाद,
विविध रंग विपुल अपराध ।

टकरा तेरी फौलादी बांहों में,
बिखरते छिन्न-भिन्न चकनाचूर।
जन-जन मुखरित तेरा आगमन,
सहज निरापद आशापूर्ण।

हे! सतत सजग प्रहरी महान,
हे! अमन शान्ति के दूत प्रखर
हे देशभक्त! तेरी भक्ति तेरी सेवा,
गायें, दिग-दिग गुंज्जित सुस्वर।
थको नहीं, रुको नहीं, वीर तुम चले चलो।

-चिन्ता मणि पाण्डेय
पुलिस महानिरीक्षक, स्पेशल सैक्टर
केरिपु बल, दिल्ली



ग्रुप केंद्र पल्लिपुरम में राजभाषा सम्मेलन का उद्घाटन करते केरल विश्वविद्यालय के कुलपति डा. डी.एस. बाबू



98 बटा. के द्वितीय कमान अधिकारी कुलदीप धर निजामाबाद में आयोजित नराकास सम्मेलन के दौरान राजभाषा शील्ड प्राप्त हुए

रजि. न. 4767/87



केंद्रीय प्रशिक्षण कालिज–3 के निर्माण के द्वितीय चरण का उद्घाटन करते महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल

पर्वतारोहण दल के सदस्य अभियान से वापसी के बाद महानिदेशक एवं अन्य अधिकारियों के साथ ग्रुप केंद्र रामपुर में



सी.आर.पी.एफ.
समाचार

31 अगस्त, 2000



श्री एम. एन. सभरवाल से के.रि पु. बल के महानिदेशक का पदभार ग्रहण करते हुए डा0 त्रिनाथ मिश्र



अमरनाथ यात्रा के दौरान यात्रियों की सुरक्षा के लिए तैनात बल के कार्मिक

सी. आर. पी. एफ.
समाचार

खंड-14 अंक-5
31 अगस्त, 2000
9 भाद्रपद, शक 1922

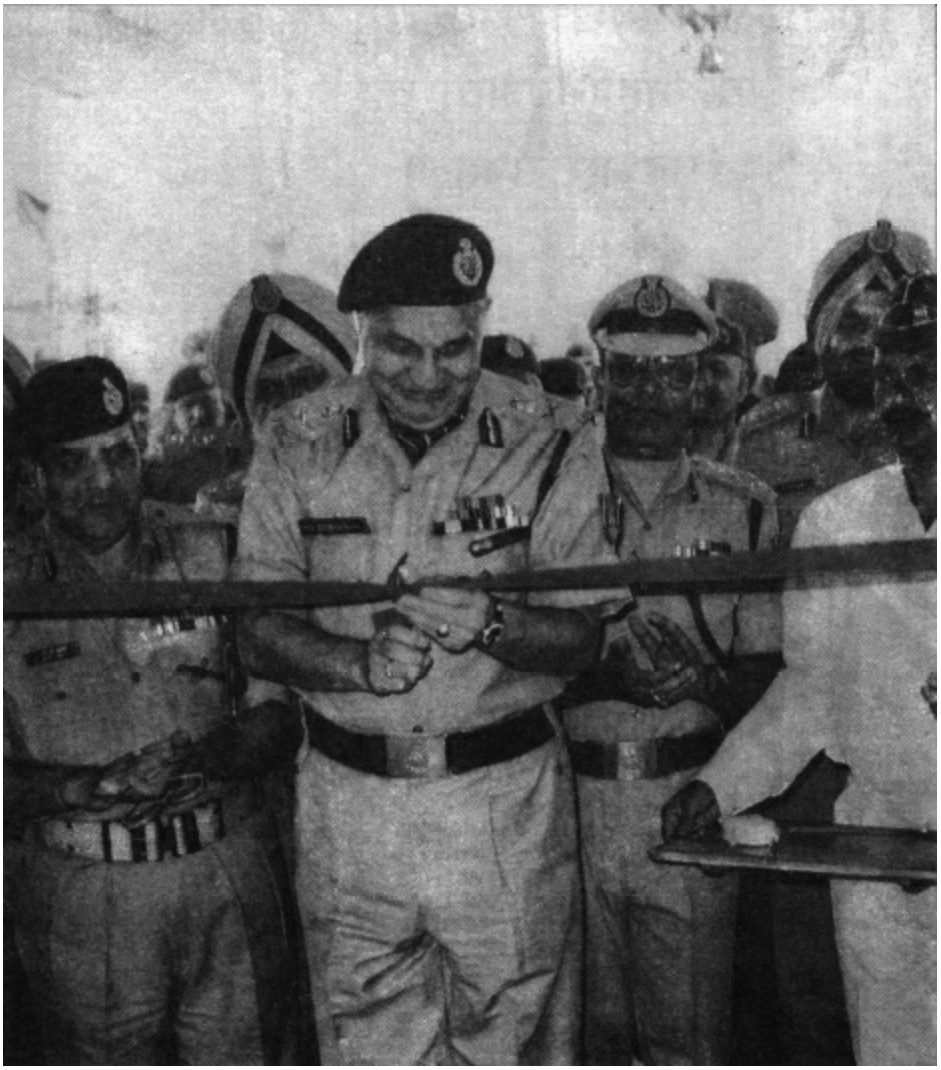
मुख्य संपादक
डी. जी. महापात्र

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र
फोटो अनुभाग के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं युनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु.बल
ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली - 110003 की ओर से डी. जी महापात्र

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ. प्रेस झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-72



इस अंक में

बल के नये महानिदेशक

नीमच में प्रशिक्षण सेमिनार

अमरनाथ यात्रा में के.रिपु. बल का योगदान

स्वतंत्रता दिवस पर बल के 30 कार्मिक सम्मानित

जम्मू में बल का नया कम्पोजिट अस्पताल

ग्रुप केन्द्र इम्फाल में कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र

अधिकारी मैस का उद्घाटन

विदाई

कविताएं

लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार हैं।
सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

-संपादक

डा० त्रिनाथ मिश्र ने के. रि. पु. बल के महानिदेशक का पदभार संभाला



डा० त्रिनाथ मिश्र ने 31 जुलाई, 2000 को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक का पदभार सभाल लिया। श्री मिश्र भारतीय पुलिस सेवा के उत्तर प्रदेश काडर के 1965 बैच के अधिकारी हैं। इस नियुक्ति से पूर्व श्री मिश्र केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के महानिदेशक पद पर कार्यरत थे।

अपने लम्बी पुलिस सेवा के दौरान श्री मिश्र कई महत्वपूर्ण पदों पर रहे हैं। मणिपुर में महानिदेशक पुलिस रहने के अतिरिक्त श्री मिश्र केन्द्रीय जांच ब्यूरो, एस. पी. जी., भारत तिब्बत सीमा पुलिस और राष्ट्रीय पुलिस अकादमी में रह चुके हैं। श्री मिश्र शौर्यवीरता के पुलिस पदक, विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति के पुलिस पदक तथा सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक से सम्मानित किये जा चुके हैं। श्री मिश्र बेसिक तथा एडवांस पर्वतारोहण प्रशिक्षण ले चुके हैं। पुलिस विषयों से जुड़ी कुछ पुस्तकों की भी उन्होंने रचना की है।

के. रि. पु. बल महानिदेशक श्री एम. एन. सभरवाल को विदाई



"मैं स्वयं को भाग्यशाली समझता हूँ कि मुझे इतने बड़े बल को नेतृत्व प्रदान करने का मौका मिला।" 31 जुलाई, 2000 शाम केन्द्रीय रिर्जव पुलिस बल के अधिकारियों और जवानों को सम्बोधित करते हुए स्थानान्तरण पर जा रहे महानिदेशक श्री एम. एन. सभरवाल ने कहा कि के. रि. पु. बल में अपने ढाई साल के कार्यकाल के दौरान मुझे आपकी समस्याओं, कठिनाइयों और कर्तव्यपालन के दौरान आने वाले तनावों और दबावों के बारे में जानने को मिला। मैं जहां भी रहूंगा, आप के दूत के रूप में कार्य करूंगा।

कैबिनेट सेकेटेरियट में सचिव सुरक्षा पद पर स्थानातंरण पर जा रहे श्री सभरवाल को के. रि. पु. बल मुख्यालय में गार्ड आफ आनर दिया गया। भारतीय पुलिस सेवा के 1964 बैच के जम्मू काश्मीर काडर के श्री सभरवाल 2 दिसम्बर, 1997 को के. रि. पु. बल में महानिदेशक के तौर पर आये।

नीमच में प्रशिक्षण सेमिनार



प्रशिक्षण गोष्ठी को सम्बोधित करते हुए श्री डी. एन. गौतम, महानिरीक्षक दक्षिण सेक्टर

के.रि.पु. बल के 61 वें स्थापना दिवस समारोह के एक भाग के रूप में 27 जुलाई, 2000 को केन्द्रीय प्रशिक्षण कालेज, म. प्र. में दो दिवसीय प्रशिक्षण सेमिनार का शुभारंभ हुआ। इसका उद्घाटन भी ए. आर. पंवार, पुलिस महानिरीक्षक परिचालन एवं प्रशिक्षण ने किया। श्री नारायण मिश्रा, पुलिस महानिरीक्षक पश्चिमी सेक्टर, के. रि. पु. बल, द्वारा उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की गई। इसमें के. रि. पु. बल, प्रशिक्षण संस्थानों के प्रिसिपल, फील्ड कमांडरो तथा बल के वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया।

सेमिनार का उद्घाटन करते हुए श्री पवार ने बल के समस्त स्तर के कार्मिकों के लिए अन्तराल से समय-समय पर प्रशिक्षण की आवश्यकता पर जोर दिया, ताकि वे बदलती हुई परिचालन संबंधी आवश्यकताओं के अनुरूप मानसिक रूप से तथा कुशलतापूर्वक कार्य कर सकें। वर्तमान में आन्तरिक सुरक्षा के दृश्य पटल तथा एंटी इन्सरजेंसी डयूटियों के लिये प्रशिक्षण, तैनाती के दौरान स्थिति अनुसार उसी स्थान पर देने के लिए पाठयक्रम में शामिल करना टेक्टीकल गलतियों को सुधारने में उपयोगी रहा है।

सेमिनार को सम्बोधित करते हुए श्री मिश्रा ने कहा कि काउंटर इनसरजेंसी कार्रवाई तथा कानून व्यवस्था से के. रि. पु. बल की ड्यूटियां धीरे-धीरे बढ़ती जा रही हैं। परिचालन संबंधी क्षमता को बढ़ाने की दृष्टि से उन्होंने कहा कि बदलती हुई स्थितियों से निपटने तथा विभिन्न परिचालन के कार्य क्षेत्र में परिचालन कौशल अपनाने के लिए बल को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

डी. एन. गौतम, पुलिस महानिरीक्षक दक्षिणी सेक्टर, के. रि. पु. बल ने इस मौके पर बोलते हुए कहा कि भारत की वर्तमान स्थिति में आंतरिक सुरक्षा और कानून और व्यवस्था को बनाये रखना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि समस्याओं से

निपटने के लिए हमारे कार्मिकों को अब आधुनिक तरीकों से आधुनिक हथियारों के साथ प्रशिक्षित किया जाना जरूरी है।

पूर्व में अपने स्वागत भाषण में प्रिंसिपल, केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय और श्री जी. जी. ए. शर्मा, पुलिस उप महानिरीक्षक ने कहा कि सेमिनार का प्रयोजन प्रशिक्षण देने वाले तथा प्रशिक्षु के बीच वार्तालाप करने और बल की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए, प्रशिक्षण को अत्यधिक प्रभावी बनाने के लिए है।

प्रात: काल शहीद स्मारक पर माल्यार्पण किया गया तथा सांयकाल में वृक्षारोपण का आयोजन किया गया, जिसमें वरिष्ठ अधिकारियों सहित सभी प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

ट्रेनिंग सेमिनार के दूसरे दिन गोष्ठी में उच्च अधिकारियों का सामान्य दृष्टिकोण था कि बल के वरिष्ठ अधिकारियों को चाहिए कि वे बल की विभिन्न शाखाओं के कार्मिकों के लिए वास्तविक और लाभदायक प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार करें इसका पता तभी चलेगा जब बल की कार्यकुशलता एवं व्यवहार में प्रगति परिलक्षित होगी। बल के कार्मिकों के लिए भविष्य में सिखलाई संबंधी प्रशिक्षण वर्तमान और भविष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आवश्यक संगठनात्मक प्रयास है। प्रशिक्षण कुशल ज्ञान प्राप्त करने और बल के कुशलतापूर्वक कार्य करने के लिए अति आवश्यक है।

संगठन के इस उद्देश्य की पूर्ति करने में प्रशिक्षण अति आवश्यक है।

सेमिनार में भाग लेते हुए बिग्रेडियर रिटायर्ड गोविन्दजी मिश्रा, पुलिस उप महानिरीक्षक प्रशिक्षण, के. रि. पु. बल ने कहा कि वर्ष 1999-2000 के दौरान बल में प्रशिक्षण की गुणवता बढ़ाने के लिए सघन प्रयास किए गए।

आधुनिक योजना के तहत सहायक कमांडेंटो और सिपाहियों की बेसिक ट्रेनिंग क्रमश: 55 और 44 सप्ताहों की बढ़ा दी गई। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण प्रक्रिया और समय-समय पर आपरेशन ड्रील करते रहना चाहिए जब तक कि परिपक्व नहीं हो जाते।

श्री डी. एन. एन. गौतम पुलिस महानिरीक्षक, दक्षिणी सेक्टर, के. रि. पु. बल, ने कहा कि प्रशिक्षण पाठयक्रम और प्रशिक्षण साधन अत्यन्त आवश्यक है, इसलिए के. रि. पु. बल में कई तरीके कार्यान्वित किये गये हैं। उन्होंने कहा कि कारगर और अर्थपूर्ण प्रशिक्षण उपलब्ध कराने के लिये हमने पहले से ही प्रत्येक प्रशिक्षण संस्थान के लिए विभिन्न प्रकार के आधुनिक साधन प्राप्त कर लिए हैं।

सेमिनार को संबोधित करते हुए श्री नारायण मिश्रा, पुलिस महानिरीक्षक, पश्चिमी सेक्टर, के. रि. पु. बल ने कहा कि प्रशिक्षण का मूल उद्देश्य जवानों की कार्यक्षमता को बढ़ाना और उच्च स्तर की जिम्मेदारी निभाने का सामर्थ्य विकसित करना है।

श्री जी. जी. ए. शर्मा, पुलिस उप महानिरीक्षक, नीमच, श्री डी. एन. एस. विष्ट, प्रिंसिपल, आन्तरिक सुरक्षा अकादमी, माउन्ट आबू, श्री एन. पी. श्री कुमार, प्रिंसिपल, सी. टी. सी. आवड़ी, श्री सी. वी. मैथ्यु, कमांडेन्ट सी. टी. सी. मुदखेड़, श्री एम. एस.

सिद्धू प्रिंसिपल आर. टी. सी. नीमच, श्री वाय. बी. के रेडडी, प्रिंसिपल आर. टी. सी. पल्लीपुरम ने भी सेमीनार में भाग लिया।

लेख आमंत्रित हैं

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की त्रैमासिक पत्रिका राजभाषा भारती में प्रकाशनार्थ ज्ञान-विज्ञान की सभी विधाओं पर स्तरीय लेख आमंत्रित किए जाते हैं। लेख ए-4 आकार के कागज पर दो प्रतियों में टाइप किया हुआ होना चाहिए जो सामान्यत: 3000 शब्दों से अधिक न हो। लेख पर उचित मानदेय देने की भी व्यवस्था है। यदि किसी कारणवश किसी लेख को पत्रिका में शामिल करना संभव न हुआ तो उसे लौटाया नहीं जाएगा। कृपया लेख निम्नलिखित पते पर भेजे: –

संपादक

राजभाषा भारती

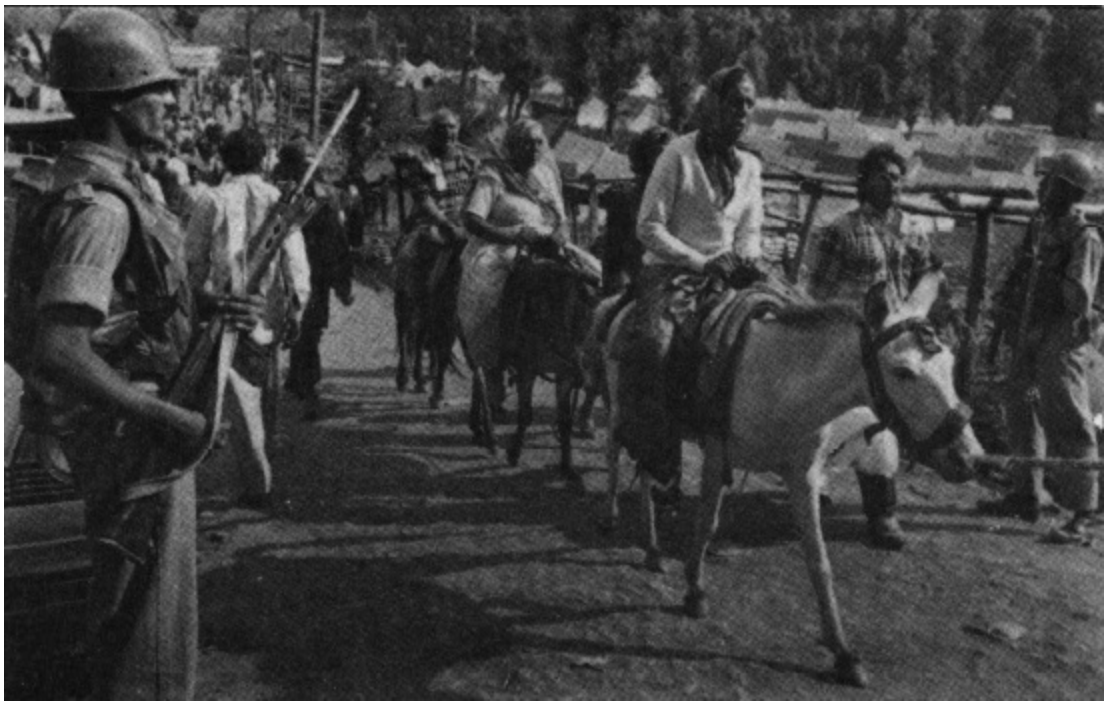
राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) कमरा सं० ए-2, द्वितीय तल, लोकनायक भवन, खान मार्केट, नई दिल्ली - 110003
दूरभाष सं० 4617807

अमरनाथ यात्रा में के. रि. पु. बल का योगदान

गत वर्षों की ही तरह इस वर्ष भी केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने अमरनाथ यात्रा के सुचारू एवं शांतिपूर्ण संचालन के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया। कई आतंकवादी गिरोहों की धमकियों को दृष्टि में रखते हुए राष्ट्रीय राजमार्ग 1 – ए और तीर्थ यात्रियों के लिए बने विश्राम स्थलों पर उनकी सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किये गये। यात्रियों की सुरक्षा के लिए काशमीर और जम्मू जोन में बल की एक महिला कम्पनी सहित 32 से अधिक कम्पनियों को तैनात किया गया।

जम्मू क्षेत्र में पत्नी टोप से बटोट (12 कि. मी.) मार्ग पर दो कम्पनियों को रोड़ ओपनिंग और पैट्रोलिंग के लिए तैनात किया गया। शीर बीबी से गंड (8कि.मी.) और रामसो ग्रिड स्टेशन से वैगोन (10 कि. मी.) तक दो कम्पनियों को रोज यात्रियों के कानवाय की सुरक्षा के लिए जम्मू से बनिहाल और वापसी के लिए तैनात किया गया। बल की

दो कम्पानेयों और तीन प्लाटून को जम्मू में यात्रेयों को सुरक्षा के लिए तीन पंजीकरण केन्द्रों तथा जम्मू शहर और डोडा जिले के राम वन में यात्रियों के ठहरने के स्थानों पर तैनात किया गया। एक कम्पनी और एक प्लाटून को जम्मू में उन जगहों पर तैनात किया गया, जहां तीर्थ यात्रियों की आवाजाही बहुत अधिक की। दो प्लाटूनों को नगरोटा में चैक पोस्ट डयूटी के लिए तथा एक प्लाटून को जम्मू के प्रस्थान केन्द्र पर तैनात किया गया। तीन से अधिक कम्पनियों को जम्मू में पी. सी. आर. रिजर्व के रूप में रखा गया। इस वर्ष यात्रा के दौरान कशमीर जोन में के. रि. पु. बल की एक महिला कम्पनी सहित 20 कम्पनियों को तैनात किया गया। 16 कम्पनियों और एक प्लाटून की तैनाती यात्री शिविरों जखूरा, बलताल, पवित्र गुफा, पंचतरनी, शेष नाग, पोशपत्थरी, जोजीपाल, पिस्सूटोप, पहलगाम तथा चंदनबाडी में की गयी। यात्रियों को इन केन्द्रों पर सुरक्षा प्रदान करने के अतिरिक्त बल के कार्मिक उन्हें जम्मू से पहलगाम और वापसी के दौरान भी नूनवान में जांच कर सुरक्षा दे रहे थे। बल के कार्मिक छड़ी मुबारक को भी श्रीनगर से पहलगाम और वहां से पवित्र गुफा तक और वापसी पर सुरक्षा प्रदान कर रह थे।



अमरनाथ यात्रा के दौरान यात्रियों को सुरक्षा प्रदान करते हुए बल के कार्मिक

के.रि.पु. बल ने कई स्थानों पर यात्रियों की मदद के लिए चिकित्सा शिविर भी स्थापित किये, जहां यात्रियों को मुफ्त जीवन रक्षक औषधियां प्रदान की गयी। पहलगाम में पर्याप्त मात्रा में किसी आपात स्थिति में चंदनवाडी तक जाने के लिए मध्यम श्रेणी के वाहनों को रिजर्व में रखा गया। दो रिकवरी वाहनों को अनंतनाग में तैनात किया गया। नूनवान, चंदनवाडी, शेषनाग तथा पवित्र गुफा स्थल पर इलाके की छानबीन के लिए

बल के श्वान दल को भी लगाया गया। किसी आपात स्थिति से निपटने के लिए बल के प्रत्येक कैम्प में कम से कम सात दिनों का राशन तथा अन्य जरूरी सामान रिजर्व में रखा गया।

स्वतंत्रता दिवस पर के. रि. पु. बल के 30 कार्मिक पुलिस पदकों से सम्मानित

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर राष्ट्रपति ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 30 कार्मिकों को उनकी सेवाओं के लिए पुलिस पदकों से सम्मानित किया हैं। इनमें से चार अधिकारियों को विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक तथा 26 अधिकारियों तथा कार्मिकों को सराहनीय सेवाओं का पुलिस पदक प्रदान किया गया है। पदक प्राप्त करने वाले कार्मिक निम्न हैं:–

विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक



पुलिस महानिरीक्षक (परिचालन) जम्मू श्री पद्मन सिहं



उप महानिरीक्षक (परिचालन) महानिदेशालय श्री सुखजिंदर सिंह



अपर उप महानिरीक्षक (परिचालन) जम्मू श्री अरूण छिब्बर



कमांडेन्ट (महानिदेशालय) श्री रमेश चंदर

सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक



उप महानिरीक्षक (नई दिल्ली) श्री महबूब आलम



उप महानिरीक्षक *(*खटखटी*)* ए. एस. चहल



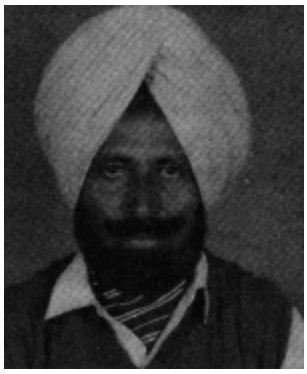
कमांडेन्ट प्रित पाल सिंह *136* बटा.



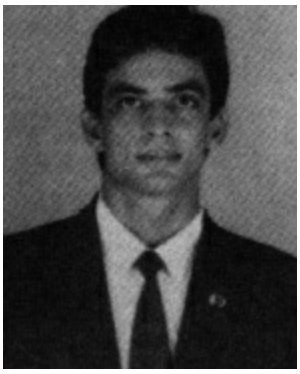
द्वितीय कमान अधिकारी राकेश चंद्रा *(103* आर. ए. एफ.*)*



द्वितीय कमान अधिकारी रजत राय *(21* बटा.*)*



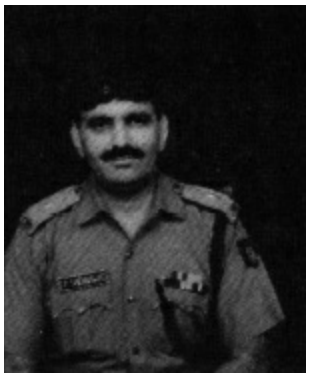
द्वितीय कमान अधिकारी जे. एस. जेंडा *(*ग्रुप केन्द्र खटखटी*)*



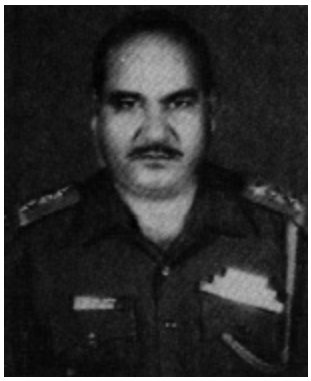
द्वितीय कमान अधिकारी खजान सिंह *(99* बटा.*)*



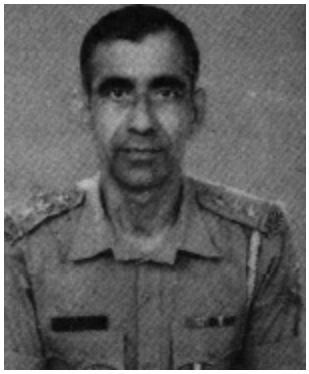
डिप्टी कमांडेन्ट आर. एस. मल *(*महानिदेशालय*)*



डिप्टी कमांडेन्ट ओ. पी. शेखावत *(125* बटा*)*



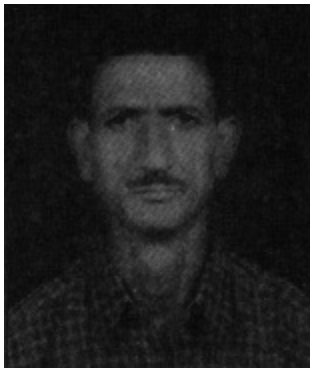
इंस्पेक्टर नंदन सिंह *(62* बटा.*)*



इंस्पेक्टर जय सिंह *(1* सिग. बटा.*)*



सब इंस्पेक्टर मुंशी सिंह *(40* बटा.*)*



सब इंस्पेक्टर तारा सिंह *(*ग्रु. के. खटखटी*)*



सब इंस्पेक्टर सूरत सिंह *(134* बटा.*)*



सब इंस्पेक्टर के. जे. जोय *(65* बटा*)*



सब इंस्पेक्टर एच. एस. रावत *(*आर. टी. सी. *– 1)*



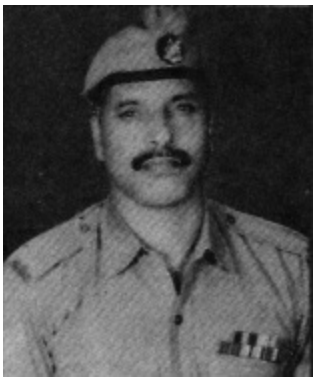
हैड कांस्टेबल हरबंस लाल *(68* बटा.*)*



हैड कांस्टेबल एस. डी. यादव *(*ग्रु. के. इलाहाबाद*)*



हैड कांस्टेबल राधा कृष्णन *(16* बटा*)*



है. कां. के. वाई. जोर्ज *(*आर. टी. सी. *–3)*



हैड कांस्टेबल भाग सिंह *(19* बटा.*)*



है.कां. डी. पी. शुक्ला *(28* बटा.*)*



है. कां./ ड्रा. मेहताब सिंह *(*आं. सु. अ.*)*



है. कां. जे. एस. रावत *(12* बटा*)*



है. कां. सुलाकन सिंह *(6* बटा.*)*



कां. यम बहादुर *(16* बटा.*)*

जम्मू में के. रि. पु. बल का नया कम्पोजिट अस्पताल



कम्पोजिट अस्पताल जम्मू

जम्मू कश्मीर में केन्द्रीय अर्द्धसैनिक बलों की भारी तैनाती और उनके कार्य की प्रकृति को दृष्टि में रखते हुए केन्द्रीय सरकार ने जम्मू स्थित केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 50 बिस्तर वाले अस्पताल को 100 बिस्तर वाले अस्पताल के रूप में विकसित करने की योजना बनायी। जिससे इस राज्य में तैनात के. रि. पु. बल, सीमा सुरक्षा बल और भारत तिब्बत सीमा पुलिस के कार्मिकों और उनके परिवारों की चिकित्सा संबंधी जरूरतों को पूरा किया जा सके। इस योजना पर सरकार द्वारा भवन निर्माण के लिए 2.5 करोड़ रूपये की स्वीकृति के साथ ही कार्य शुरू हो गया। सरकार ने अस्पताल की अन्य सेवाओं के लिए भी एक करोड़ रूपये स्वीकृत किये। इस के अतिरिक्त अस्पताल की विभिन्न सेवाओं के लिए सरकार ने 40 पदों की भी स्वीकृति प्रदान की।

विभिन्न एजेसियों तथा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के अथक प्रयासों से आज यह अस्पताल बन कर तैयार है और इसने 20 जुलाई, 2000 से अपनी सेवाएं प्रदान करना शुरू कर दिया है।

अल्ट्रा सोनोग्राफी तथा एक्सरे की सुविधाओं सहित मेडीसिन, जनरल सर्जरी, आर्थोपेडिक्स, गायनकोलोजी और ओब्सटेट्रिकस, इ. एन. टी., आंखों, पैडियाट्रिक्स, पेथोलोजी तथा रेडियोलौजी की सुविधाएं यहां उपलब्ध हैं। अस्पताल में एक फिर्जियो–थैरेपी युनिट तथा रक्त बैंक भी है।

अस्पताल में 24 घन्टे की आपात सुविधा तथा दो वातानुकूलित आपरेशन थियेटर भी

उपलब्ध हैं, ताकि भिन्न प्रकृति के रूटीन और आपात आपरेशनों को आसानी से निपटाया जा सके।

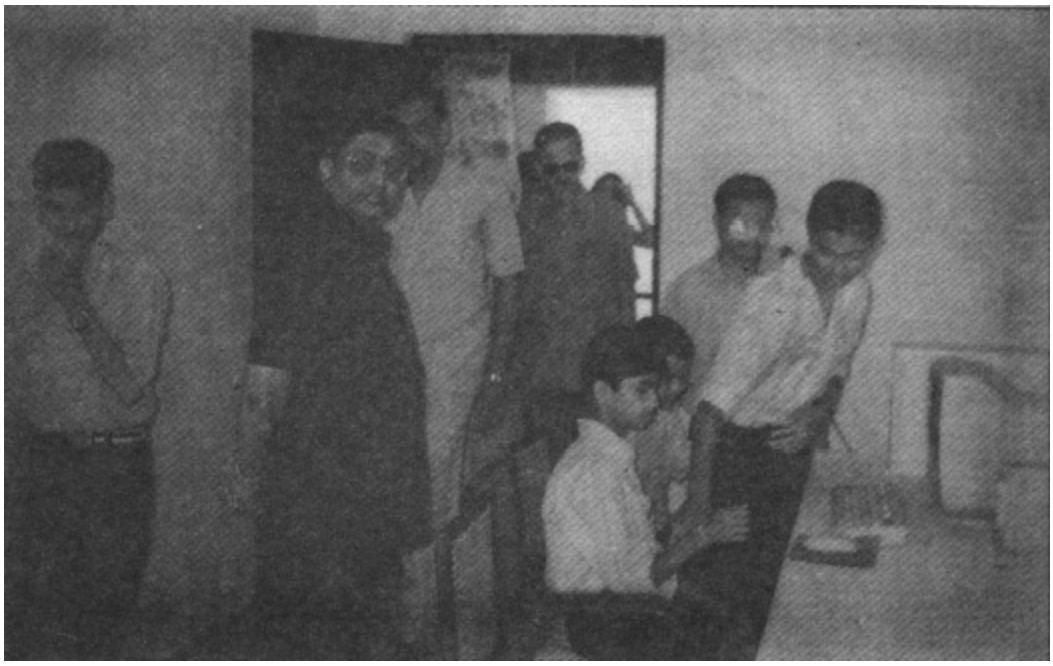
इस अस्पताल की स्थापना का उद्देश्य जम्मू कशमीर में तैनात सभी अर्द्धसैनिक पुलिस बलों के बिमार कार्मिकों को एक ही छत के नीचे इलाज की सुविधा उपलब्ध कराना है।

खिलाडी सम्मानित

“आप देश और के. रि. पु. बल का गौरव हैं।” देश के लिए पदक जीतने वाले के. रि. पु. बल के खिलाड़ियों के सम्मान में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल मुख्यालय में 16 अगस्त, 2000 को आयोजित एक समारोह में बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र ने खिलाड़ियों को बधाई देते हुए कहा कि वह दिन दूर नहीं कि जब बल के युवा पुरूष और महिला खिलाड़ी अंतर्राष्ट्रीय खेल क्षेत्र में और चमकेंगे।

3 से 7 अगस्त, 2000 तक वियतनाम की होचिनमिन सिटी में आयोजित आठवें वियतनाम अंतर्राष्ट्रीय जूड़ो टूर्नामेंट में बल के जूड़ोकाओं सब इंस्पेक्टर अकरम शाह, हैड कांस्टेबल लंदोनी देवी तथा हैड कांस्टेबल ब्रिजेश्वरी देवी ने रजत पदक जीते, जबकि सब इंस्पेक्टर परविंदर कौर तथा सब इंस्पेक्टर ओ. रिजा चानू ने कांस्य पदक जीते। हाल ही में चैन्नई में हुई 40 वीं अंतरराज्य एथलैटिक मीट-2000 में भी के. रि. पु. बल के धावकों ने चार स्वर्ण, चार रजत तथा दो कांस्य पदक जीते। सहायक कमांडेन्ट परमजीत ने 400 मीटर दौड़ में 45.56 सैंकड़ का समय लेकर नया राष्ट्रीय रिकार्ड स्थापित किया। इंस्पेक्टर मंजीमा कुरियाकोसे ने स्वर्ण तथा इंस्पेक्टर जिंसी फिलिप ने भी रजत पदक जीता।

ग्रुप केन्द्र इम्फाल में कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र



कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र का निरीक्षण करते हुए महानिरीक्षक मणिपुर नागालैंड श्री मोहन राज

16 जुलाई 2000 को ग्रुप केन्द्र, के. रि. पु. बल इम्फाल के परिवार कल्याण केन्द्र में केन्द्रीय रिर्जव पुलिस बल के कार्मिकों के बच्चों को प्रशिक्षण देने हेतु एक कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र खोला गया। जिसका उद्घाटन श्री एम. मोहन राज, पुलिस महानिरीक्षक मणिपुर व नागालैण्ड केरिपु बल, इम्फाल ने किया। इस अवसर पर श्री जे. एस. बिष्ट, पुलिस उप महानिरीक्षक, केरिपु बल इम्फाल, श्री ओ. डी. माथुर, कमाण्डेंट ग्रुप केन्द्र, केरिपु बल इम्फाल एंव अन्य अधिकारी गण उपस्थित थे।

श्री डी. एन. गौतम, पुलिस महानिरीक्षक, दक्षिणी सेक्टर केरिपु बल हैदराबाद के नेतृत्व में अधिकारियों के टीम ने सर्वोत्तम परिवार कल्याण केन्द्र के चुनाव हेतु ग्रुप केन्द्र इम्फाल के 20 से 22 जुलाई 2000 तक के अपने दौरे के दौरान कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र खोले जाने पर अत्याधिक प्रशंसा की।

नीमच में लघुबांध

नीमच में जब भूजल संवर्धन सबंधी कार्यों की लहर चली थी, तब सी. आर. पी. एफ. के जवानों ने भी वैसे कार्यों में पूरी शिद्दत से जोर दिया था, उस दौरान उन जवानों ने कंधे से कंधा मिलाकर जलकष्ट के विरूद्ध एक युद्ध छेड़कर तीन-चार स्टापडेम बना दिए थे, उन्ही स्टापडेमों में शामिल सी. आर. पी. के नाले पर बना लघुबांध बारिश के जल से पर्याप्त रूप से भर चुका है। भूजल संवर्धन कार्यों के सुखद परिणामों से बल के जवान बेहद प्रसन्न हैं। उनके उत्साह में भी मुकम्मल इजाफा हुआ है। उप महानिरीक्षक नीमच जी. जी. ए. शर्मा, रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र के प्राचार्य एम. एस.

सिद्धू और कमांडेट अब्दुल मजीद खान सहित बल के तमाम जवानों द्वारा श्रमदान करके बनाया गया उपरोक्त स्टापडेम पर्याप्त जलराशि से भर चुका है। वर्षा सत्र की शेष समयावधि में उस स्टापडेम का लबालब हो जाना तय सा लग रहा है। भूजल संवर्धन के सुखद परिणामों से बल के जवानों में व्यापक हर्ष है तो अधिकारियों के समर्पित प्रयासों को भी सराहा जा रहा है।

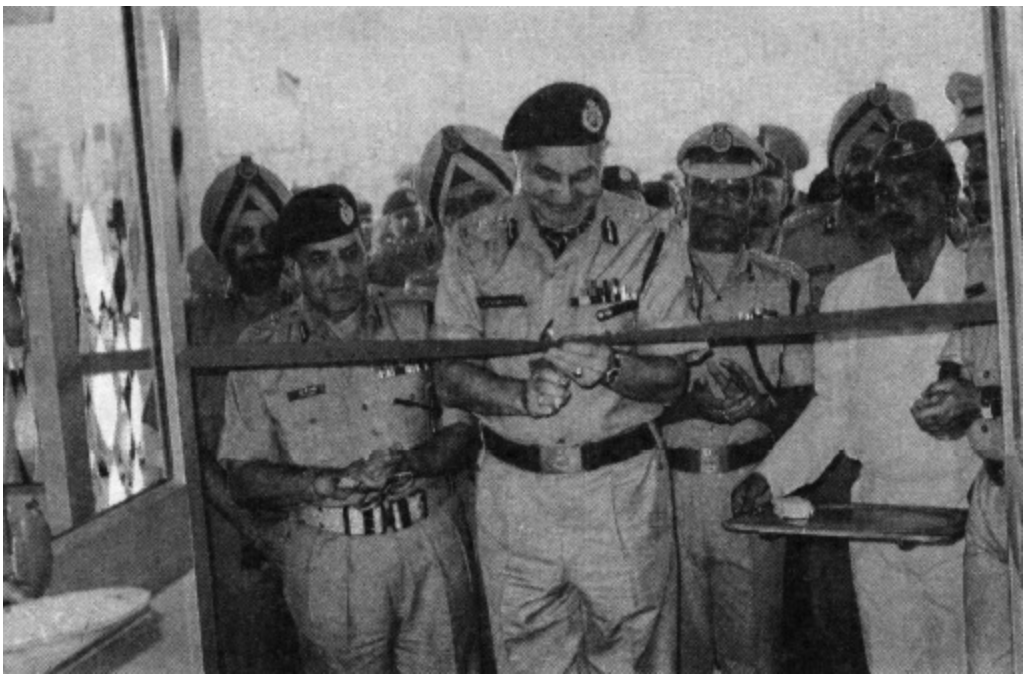
रणभूमि में बंदूक उठाकर देशवासियों की रक्षा करने वाले हाथों ने यहां कुदाल उठाकर धरती की प्यास बुझाने की दिशा में जो पुनित सहयोग दिया उसके सुखद परिणाम अब सामने आने लगे हैं।

अखिल भारतीय पुलिस खेलों में के. रि. पु. बल खिलाड़ियों की उपलब्धि

हाल ही में धर्मशाला हि. प्र. में हुए 49 वें अखिल भारतीय पुलिस खेलों में उल्लेखनीय प्रदर्शन के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के खिलाड़ियों को बल के महानिदेशक श्री एम. एन. सभरवाल ने बधाई दी है। इन खेलों की चैपियनिशप के. रि. पु. बल ने जीती।

इस के अतिरिक्त इन प्रतियोगिताओं में के.रि.पु. बल टीम बास्केटबाल प्रतियोगिता में दूसरे स्थान पर तथा कबड्डी प्रतियोगिता में तीसरे स्थान पर रही।

अधिकारी मेस का उद्घाटन



अधिकारी मेस का उद्घाटन करते हुए महानिदेशक श्री एम. एन. सभरवाल

21 जुलाइ, 2000 को महानिदेशक श्री एम. एन. सभरवाल ने रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र - 4 हुमहुमा स्थल पर निर्मित अधिकारी मेस का उद्घाटन किया। इस मौके पर महानिरीक्षक परिचालन श्रीनगर श्री पी. सी. जोशी उप महानिरीक्षक परिचालन श्रीनगर आर. सी. पुरी तथा आर. टी. सी.- 4 के प्रधानाचार्य श्री डी. सी. डे भी उपस्थित थे।

इस से पूर्व महानिदेशक श्री सभरवाल ने सम्मान गारद का निरीक्षण कर उस की सलामी भी ली। 1.52 करोड़ की लागत से बनी इस अधिकारी मेस में दो गैर आवासीय तथा एक आवासीय काम्पलेक्स है, जिस में 12 कमरों का निर्माण किया गया है। गैर आवासीय काम्पलैक्स में एक लांज, लेडिज रूम तथा एक टी.वी. रूम शमिल है।

इस मौके पर 23 जुलाई को इस मेस में एक स्टेशन डिनर का आयोजन भी किया गया। जिस में घाटी स्थित बल के सभी अधिकारियों तथा नागरिक अधिकारियों ने भाग लिया।

जोखिम निधि लाभ

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल केन्द्रीय जोखिम निधि से माह जुलाई 2000, में मृत्यु के 22 मामलों में कुल 24,87,500 रूपये तथा अक्षमता के दो मामलों में 50,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये। जोखिम निधि 'बी' से भी इस अवधि में 5 मामलों में 2,00,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये।

माह अगस्त 2000 में जोखिम निधि से मृत्यु के 29 मामलों में कुल 33,35,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये।

राजभाषा स्वर्ण जयंती वर्ष

राजभाषा स्वर्ण जयंती वर्ष समारोह के एक भाग के रूप में गत 14 सितम्बर से के. रि. पु. बल ने बल के सामान्य जन तक राजभाषा के प्रचार-प्रसार हेतु कई कार्यक्रम आयोजित किए हैं।

प्रत्येक सेक्टर के कम से कम दो कार्यालयों का निरीक्षण कर हिंदी काम-काज का जायजा लेने ताकि हिंदी मे सर्वोतम काम करने वाले सेक्टर को राजभाषा शील्ड प्रदान करने के कदम उठाए गए है। कार्यालय अध्यक्षों तथा कर्मिकों का उत्साह बढ़ाने के उद्देश्य से सरकारी काम-काज में हिंदी का सबसे अधिक प्रयोग करने वाले अधिकारी व कर्मचारी को राजभाषा शील्ड दी जा रही हैं। इसके अलावा अप्रैल-जुलाई, 2000 के दौरान महानिदेशालय में हिंदी में सबसे अधिक काम करने वाले अधिकारी/कार्मिक को 1,000 रूपये का नकद पुरस्कार देने का निश्चय किया गया है। जो सेक्टर, हिंदी/हिंदी टाइपिंग/हिंदी आशुलिपि में अपने सबसे अधिक कार्मिक प्रशिक्षित करायेंगे उन्हें महानिदेशक की ओर से प्रशंसा-पत्र दिया जाएगा।

सरकारी काम-काज में राजभाषा के प्रयोग में आने वाली विभिन्न समस्याओं से निपटने के लिए विभिन्न स्थानों पर सेमीनार व कार्यशालायें आयोजित कर समस्याओं के उपयुक्त समाधान निकाले गए। ज्ञातव्य है कि के. रि. पु. बल का 80 प्रतिशत कार्य हिंदी में हो रहा है।

माह मई, जून, 2000 में मृत्यु को प्राप्त हुए कार्मिक

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिक माह मई, जून 2000 में मृत्यु को प्राप्त हुए। सी. आर. पी. एफ. समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

कां. प्रेम पाल सिंह (31 बटा.) है. कां. राणे (20 बटा.), कां. ओनिल टी. संगमा (80 बटा.), सहायक कमांडेन्ट गुप्तेश्वर पांडे (135 बटा.), कां. एन. ब्रिज किशोर (112 बटा.) सब इंस्पेक्टर आरमोरर के. सुकुमारन (ए. डब्लू एस.-3) ला. नायक दलबीर सिंह (ग्रु. के. पिंजौर), है. कां. बी. एम. सिंह (91 बटा.) कुक सुरेश कुमार, (129 बटा.), लां. नायक ओम प्रकाश (87 बटा.), है. कां. जसवंत सिंह (9 |बटा.), कां. हनुमे गौडा (24 बटा.), कां. बैंड महेन्द्र थापा (ग्रु. के. दिल्ली), स. उ. नि./फार्मेसिस्ट मगबीर सिंह सिंगर (79 बटा.), कां. राजेन्द्र पासवान (79 बटा.), धोबी मोहन लाल (आं. सु. अ.), उ. नि. ओम प्रकाश (84 बटा.), कां. बलजीत सिंह (117 बटा.), है कां. परमजीत सिंह (60 बटा.), कां. बिगुलर अमर सिंह (ग्रु. के. रामपुर), उ.नि दयाल चंद, (79 बटा.), सफाई कर्मचारी रतन लाल (66 बटा.), है. कां. रे. आपरेटर के. सी. आचार्य (3 सिग. बटा.), है. कां. वी. वी. सलीमथ (23 बटा.), है. कां. ड्राईवर डी. डी. भाटिया (ग्रु. के. गुवाहाटी), उ. नि रतन सिंह (ग्रु. के - 2 अजमेर), लां. ना. एन. एल. शंकरम्पा (83 बटा.), कां. भुवन सिंह (135 बटा.), कां. बलराज एम. (109 बटा.), कां. कौशिक बेग (106 बटा.), उ.नि. सिराजद्दीन (106 बटा.), कां. नारायण प्रधान (116 बटा.), है. कां. बी. चौबे (116 बटा.), तथा लां. नायक राम मुरमु (10 बटा.), इसके अतिरिक्त देर से प्राप्त सूचना के अनुसार माह दिसम्बर, 1999 में 97 बटा. के कां. आकाश जी. वाघमरे तथा माह अप्रैल 2000 में 108 बटा. के कां. मुहम्मद हुसैन और 91 बटा. के. कां. शीशपाल सिंह भी मृत्यु को प्राप्त हुए।

विदाई



कावा अध्यक्षा श्रीमति वीणा सभरवाल की विदाई बेला पर उन्हें स्मृति चिह्न भेंट करती श्रीमति श्रीवास्तव



महानिरीक्षक श्री महेंद्र प्रसाद को उनकी सेवानिवृति के अवसर पर स्मृति चिह्न भेंट करते महानिदेशक श्री एम. एन. सभरवाल

कविताएं

जिन्दगी

वो जिन्दगी क्या जिसमें कोइ दुःख न हो,
वो जिन्दगी क्या जिसमें कोई तुक न हो।
वो जिन्दगी क्या जिसमें कोई मिलकर न रहे,
वो जिन्दगी क्या जिसमे खुलकर बात न कहे।
वो जिन्दगी क्या जिसमे कोई हार ना हो,
वो जिन्दगी क्या, जिसमें लोगों से प्यार ना हो।
वो जिन्दगी क्या, जिसमें कोई आशा ना हो,
वो जिन्दगी क्या, जिसमें प्यार की भाषा ना हो।
वो जिन्दगी क्या, जिसमे कोई नाम ना हो,
वो जिन्दगी क्या, जिसमे कोई शाम ना हो।
वो जिन्दगी है जो सिर्फ चलती रहे,
वो जिन्दगी है जो इन सबसे मिलती रहे।

-निरीक्षक सुमन यादव
संभरण अनुभाग महानिदेशालय

एक इतिहास

एक अजब सी पहेली है जिन्दगी
सबके साथ होते हुए भी अकेली है जिन्दगी
कभी तो एक प्यारा सा अरमान है जिन्दगी
तो कभी दर्द भरा तूफान है जिन्दगी
कभी गुलों से भरा गुलिस्तां है जिन्दगी
कभी फूलों भरी मासूम है जिन्दगी
तो कभी गुनाहों का बोझ बन जाती है जिन्दगी
कोई तो बतादे मुझे क्या है जिन्दगी
सुना है चन्द रोज की मेहमान है जिन्दगी
जिन्दगी को छोड़कर एक दिन जाना पड़ेगा
मौत को उस पल गले लगाना पड़ेगा
जिन्दगी से चाहे जितना प्यार कर लो,

होती तो आखेर बेवफा है जिन्दगी
ए बन्दे कुछ ऐसे जी के जा,
बन जाए एक एहसास, एक इतिहास जिन्दगी।

-स.उ.नि. मनमोहन सिंह
ग्रुप केन्द्र, रामपुर

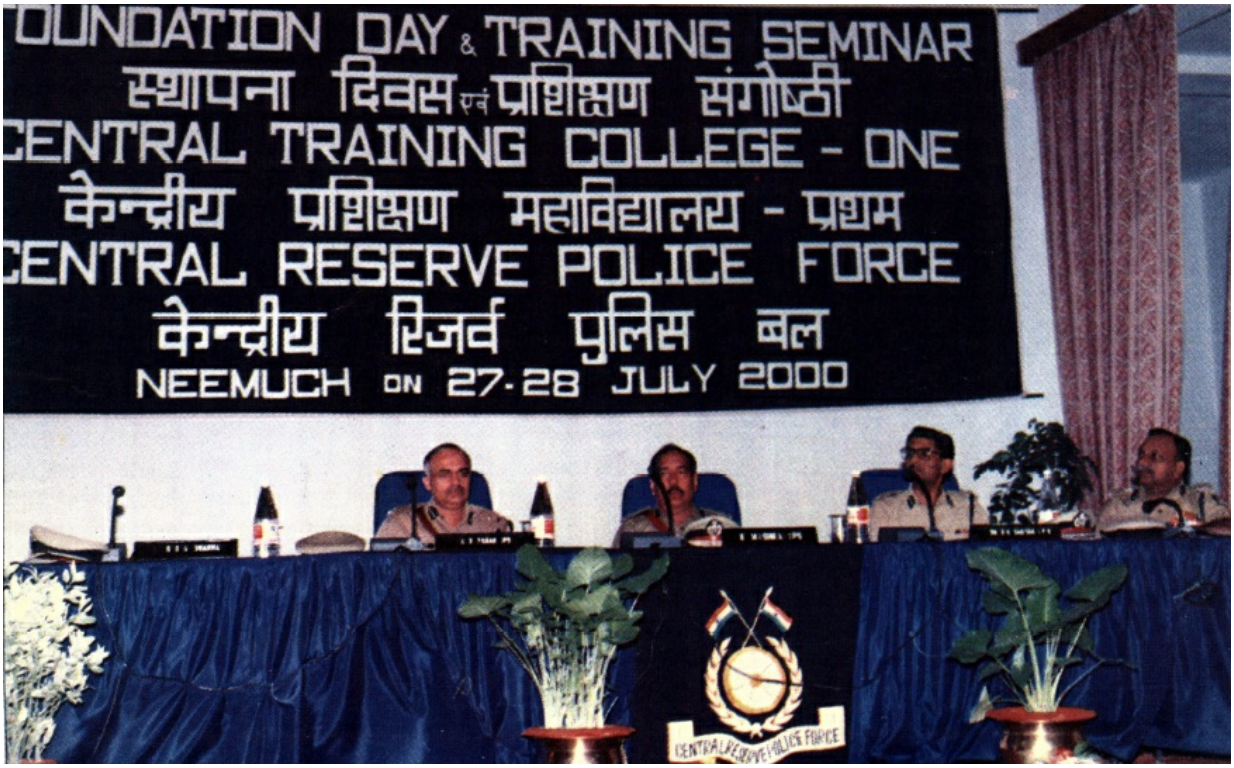
डर

सिपाही को हवलदार का डर
हवलदार को थानेदार का डर
राजनेता को कुर्सी का डर
पाकिस्तान को भारत का डर
कमजोर को रहता है बलवान का डर
औरत को रहता है मर्द का डर
सर्दी में रहता है जुखाम का डर
मल्लाह को रहता है तूफान का डर
विद्यार्थी को रहना है इम्तिहान का डर
कंजूस को रहता है मेहमान का डर
चोर को रहता है दीवान का डर
कन्डक्टर को रहता है चालान का डर
डाक्टर को रहता है मरीज का डर
खिलाड़ी को रहता है हार का डर
भलेमानस और इज्जतदार को रहता है, अपमान का डर
मुझको रहता है मेरे प्यारे भगवान का डर।

मु0 आ. (म.) कौशल्या
सी. टी. सी. केरिपु बल नीमच



महानिदेशक श्री एम. एन. सभरवाल विदाई से पूर्व के. रि. पु. बल मुख्यालय में सम्मान गारद का निरीक्षण करते हुए



नीमच में आयोजित प्रशिक्षण संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए महानिरीक्षक परिचालन एवं प्रशिक्षण श्री ए. आर. पवार

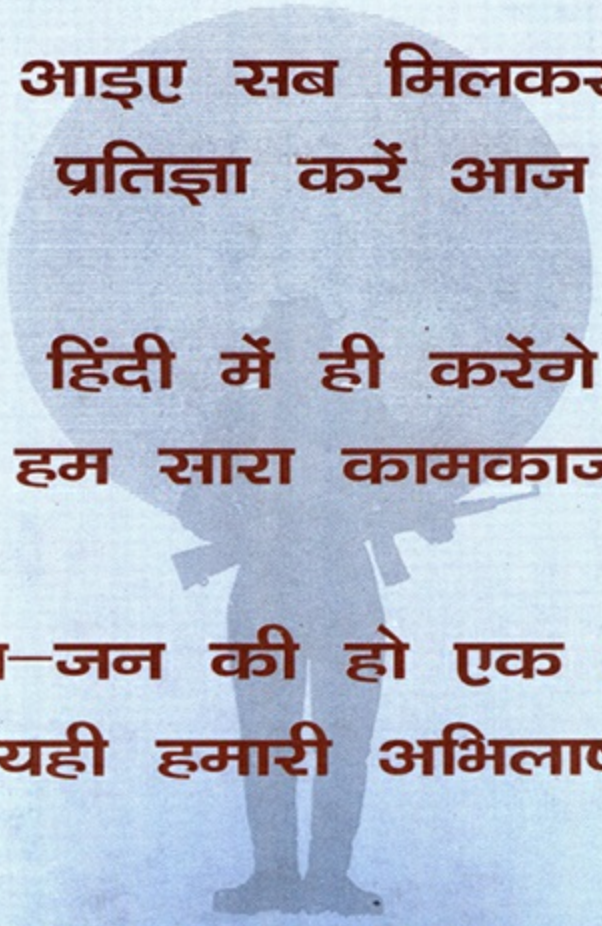
रजि. न. 4767/87



के. रि पु. बल स्थापना दिवस के अवसर पर 27 जुलाई, 2000 को नीमच स्थित शहीद स्मारक पर पुष्प चक्र अर्पित करने जाते श्री नारायण मिश्रा, महानिरीक्षक पश्चिमी सेक्टर

सी.आर.पी.एफ.
समाचार

30 सितम्बर, 2000



आइए सब मिलकर
प्रतिज्ञा करें आज

हिंदी में ही करेंगे
हम सारा कामकाज

जन–जन की हो एक भाषा
यही हमारी अभिलाषा

हिंदुस्तान . . . एक . . . विशाल देश . . . भाषाएं, संस्कृतियां, प्रांत अलग–अलग . . . फिर भी सब के हृदयों को जोड़ती है हिंदी . . . लिखने–पढ़ने, बोलने–समझने में आसान . . तभी तो पिरोती है एकसूत्र में देश को

हिन्दी दिवस पर विशेष



लखनऊ में आयोजित राजभाषा सम्मेलन के दौरान ग्रुप केंद्र जालंधर के निरीक्षक बालकृष्ण टंडन राजभाषा शील्ड व प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति निजामाबाद *(*आंध्र प्रदेश*)* द्वारा आयोजित समारोह में बल की *98* बटा. के द्वितीय कमान अधिकारी श्री कुलदीप धर राजभाषा शील्ड प्राप्त करते हुए



सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड-14 अंक-6
30 सितम्बर, 2000
8 आश्विन, शक 1922

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं युनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल
ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से **डी.जी. महापात्र**

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ. प्रेस
झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-72

निज भाषा उन्नति लहै
सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के
मिटत न हिय को शूल

भारतेंदु हरिश्चन्द्र

इस अंक में

महानिदेशक का राजभाषा संदेश

राजभाषा प्रयोग व प्रगति

भारत की सामासिक संस्कृति और हिंदी

हिंदी का व्यावहारिक प्रयोग

राजभाषा हिंदी के 50 वर्ष : हम क्या करें

भाव पुष्प

राजभाषा स्वर्ण जयंती वर्ष में आयोजित कार्यक्रम

हिंदी प्रेमी - ज्ञानी जैल सिंह

संकल्प

राजभाषा नियम

भगवान और केरिपु बल उनके साथ था

अपुरस्कृत बलिदान

कविताएं

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

-संपादक



राजभाषा संदेश

मुझे खुशी है कि पूरे बल में *14* सितम्बर *1999* से *14* सितम्बर *2000* तक राजभाषा स्वर्ण जयंती वर्ष मनाया जा रहा है। इस दिन अर्थात् *14* सितम्बर *1949* को संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ सरकार की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया था। आज हिंदी न केवल संघ सरकार की राजभाषा है बल्कि राष्ट्रभाषा के साथ-साथ देश की जनभाषा/संपर्क भाषा भी है और विश्व में भाषाओं के क्रम में तीसरा स्थान रखती है।

विगत *50* वर्षों में हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में स्वीकार करने में शायद कभी भी कोई विरोध सामने नहीं आया, क्योकि यह हजारों वर्ष से हमारे विचारों के आदान-प्रदान और चिन्तन की भाषा रही है जिसके लिए किसी प्रयास की कभी भी आवश्यकता नहीं हुई। विगत में देश को एक सूत्र में बनाए रखने तथा देश की परंपराओं व संस्कृति तथा रीति रिवाजों को देश के एक कोने से दूसरे कोने तक पहुंचाने का महान् कार्य साधु-संन्यासियों, व्यापारियों, तीर्थयात्रियों द्वारा किया जाता था और हिंदी भाषा की इसमें अग्रणी भूमिका थी, है और रहेगी। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने कहा था – "अगर आज हिंदी राजभाषा मान ली गई तो यह इसलिए नहीं कि वह किसी प्रांत विशेष की भाषा है, बल्कि इसलिए कि वह अपनी सरलता, व्यापकता तथा क्षमता के कारण सारे देश की भाषा है।"

जैसा कि मुझे बताया गया है स्वर्ण जयंती वर्ष में बल के कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए कई कार्यक्रम बनाए गए हैं, प्रतियोगिताएं की गई हैं तथा हैदराबाद में राजभाषा सम्मेलन भी आयोजित किया गया। गृह मंत्रालय के कार्यालयों में आंकड़ों के अनुसार स्वर्ण जयंती वर्ष में हिंदी/हिंदी टंकण/हिंदी आशुलिपि में के.रि.पु. बल के सबसे अधिक कार्मिक प्रशिक्षित कराए गए हैं। हिंदी में काम-काज के लिए सभी आधारभूत सुविधायें भी जुटाई जा चुकी हैं तथा प्राप्त आंकड़ों के अनुसार बल के कार्यालयों में अब अंग्रेजी की अपेक्षा हिंदी में कार्य

अधिक हो रहा है, जिसके लिए मैं आप सभी को इस पुनीत अवसर पर बधाई देता हूं तथा आशा करता हूं कि आगे भी यह प्रयास जारी रखेंगे और इस सम्मिलित संवैधानिक दायित्व को पूरा करने में आगे आएंगे।

धन्यवाद।



(डा. त्रिनाथ मिश्र)
महानिदेशक, केरिपु बल

राजभाषा प्रयोग व प्रगति

-अरूण कुमार सिंह, उप महानिरीक्षक (प्रशा.)

राजभाषा हिंदी के बारे आज हर व्यक्ति को यह कहते हुए सुना जाता है कि सरकारी जुबान में हिंदी लिखना बहुत ही मुश्किल है या अभ्यास नहीं होने से लिखते समय कलम रूक-रूक कर चलती है। इसका एक पहलू यह भी है कि पहले हम अंग्रेजी में सोचते हैं फिर उसका दिमाग में अनुवाद करते हुए लिखना चाहते हैं। कई बार अंग्रेजी के समानार्थी शब्द नहीं मिलते या मिलते हैं तो भरोसा नहीं जमता क्योंकि वे शब्द चलन में नहीं होने के कारण अटपटे लगते हैं या जुबान पर थिरकते नहीं। भाषा व शब्दों की पहचान व सार्थकता उनके चलन व प्रयोग से बढ़ती है, यदि हमें अंग्रेजी की जगह स्वदेशी नामों या शब्दों को लाना है तो उनका प्रयोग बार-बार करना होगा उनकी पहचान बढ़ानी होगी। उदाहरण के लिए सी.जी.ओ. कम्पलैक्स का प्रयोग करते हुए अधिकांश लोगों को सुना जाता है किन्तु "केन्द्रीय कार्यालय परिसर" शायद ही कोई प्रयोग करता हो या जुबान से बोलता हो।

हिंदी के प्रचलन में कुछ हमारी आदतें, शौक, दिखावा व परिस्थितियां भी आड़े आती हैं। यदि हम उ.प्र या म. प्रदेश का उदाहरण लें तो वहां के बच्चे स्कूली व कालेज की शिक्षा तक अंग्रेजी के अपनाने या पढ़ने से कतराते हैं किन्तु केन्द्रीय नौकरी में आते ही दो चार साल के बाद अंग्रेजी के प्रति उनका मोह बढ़ने लगता है, अंग्रेजी का अखबार व मैगजीन उनकी शान की निशानी बन जाती है। अंग्रेजी की नेम प्लेट या अंग्रेजी में हस्ताक्षर करना पढ़े-लिखे के रूप में पहचान बनती है ऐसी लोगों में आस्था है। हिंदी के संबंध में सबसे खेदजनक स्थिति यही है कि हम इसका प्रयोग करने से कतराते हैं। इस संबंध में हमारी हीनता का प्रमुख कारण है - हमारी मानसिक दासता और किसी न किसी बहाने अंग्रेजी को बनाए रखना।



केरल के अपर मुख्य सचिव डी. बाबू पाल से हिंदी ट्राफी ग्रहण करते ग्रुप केंद्र पल्लिपुरम के उप कमांडेंट एस. नेल्सन

बल में हिंदी प्रयोग की बात करने से पहले यहां एक सच्चाई का जिक्र करना चाहूंगा जो अभी तक हम सभी के गले से नीचे नहीं उतर पाई है। वस्तुतः ही यदि हम चाहते हैं कि हिंदी देश की राजभाषा बने तो राजभाषा का प्रयोग निचले स्तर से नहीं ऊपर के स्तर से करना होगा चाहे वह मंत्रालय हो या विभाग या अधिकारी। केवल निचले स्तर के कार्यालय, विभाग या कर्मचारी को हिंदी में काम करने का पाठ पढ़ाना हिंदी को दूसरे दर्जे की भाषा बनाना होगा। जब तक ऊपर के स्तर के अधिकारी अपना काम हिंदी में करने का आदर्श प्रस्तुत नहीं करेंगे हिंदी नहीं बढ़ेगी। इस संबंध में हमें लॉर्ड मैकाले से सबक सीखना होगा। उसकी नीति का आधार था Filteration Theory अर्थात् पानी के छनने का सिद्धांत। पानी ऊपर से छनकर नीचे आता है। उसका कहना था, आप ऊपर वालों को अंग्रेजी सिखाइये, यह स्वयं नीचे के स्तर तक आ जाएगी। यही बात हिंदी के लिए भी है। यदि ऊंचे अधिकारी अपना काम हिंदी में करने लगें तो निश्चय ही नीचे के कर्मचारियों को प्रोत्साहन मिलेगा। फिर कोई कारण नहीं कि हिंदी अपने राजभाषा के लक्ष्य को प्राप्त न कर सके।

के.रि.पु. बल में जहां तक हिंदी प्रयोग का संबंध है, किसी भी प्रकार के अपवाद पर कोई ध्यान नहीं देते हुए निश्चय ही हमने काफी सीमा तक लक्ष्य प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की है और आगे भी इस ओर प्रयासरत हैं। महानिदेशालय व कुछ सेक्टर कार्यालयों में उनके कार्य की प्रकृति तथा मंत्रालयों व विभागों के साथ पत्राचार की स्थिति को देखते हुए निचले कार्यालयों की तुलना में हिंदी प्रयोग अपनाने में पीछे जरूर हैं किन्तु निराश नहीं हैं। निरीक्षण के दौरान कई ग्रुप केन्द्रों व बटालियनों का काम-काज शत-प्रतिशत हिंदी में होने की जानकारी मिली है, जो बल के लिए उत्साहजनक बात है। देश के विभिन्न भागों में जहां-जहां भी हमारी बटालियनें व ग्रुप

केन्द्र स्थित हैं अधिकांश ने नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की शील्ड अर्जित कर बल को ख्याति दी है। बल में राजभाषा प्रयोग के लिए किए गए प्रयासों का ही प्रतिफल है कि अब पूरे बल में कुछ अपवादों को छोड़कर निम्नलिखित कार्य हिंदी में ही किए जा रहे हैं।

1. सभी फार्म, रजिस्टर, नामपट्ट, रबड़ की मोहरें, द्विभाषी बनी हुई हैं।

2. सभी मैनुअलों, प्रशिक्षण साहित्य, स्थाई आदेश व परिपत्रों को द्विभाषी में कराया गया है।

3. कंडम टाइपराइटरों की जगह अब हिंदी की या द्विभाषी इलैक्ट्रॉनिक टाइपराइटर खरीदी जा रही हैं।

4. 3/2000 की गोपनीय रिपोर्ट अधिकांश कार्यालयों में हिंदी में लिखी गई है। सर्विस बुकें व रजिस्टरों में इंदराज हिंदी में किए जा रहे हैं।

5. सभी यूनिटें अनिवार्य रूप से बल आदेश हिंदी में निकाल रही हैं।

6. अदालती जांचें, विभागीय जांचें, सैनिक सम्मेलन, अर्दली रूम रिपोर्ट, कल्याण बैठकों की कार्यसूची व कार्यवृत्त आदि द्विभाषी या हिंदी में जारी हो रहे हैं।

7. छुट्टी, वेतन वृद्धि, बदली, भर्ती, पदोन्नति, जी.पी.एफ., पेंशन, पुरस्कार, ट्यूशन फीस, एस.टी.बी., शिशु शिक्षण भत्ता, पेशगियां, रिस्क फंड, पदक्रम सूची, स्टेशनरी, पहचान पत्र/डिस्क, अनुमोदित सूचियां, लाइन कमेटी रिपोर्ट, अपीलें, आदि।

8. रा.भा. कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकें व हिंदी कार्यशालायें, निरीक्षण आदि नियमित रूप से किए जा रहे हैं।

उपर्युक्त काम हिंदी में किए जाने तथा हिंदी शब्दों के बार-बार बढ़ते हुए प्रयोग से अब धीरे-धीरे अधिकारियों व कार्मिकों में नई-नई हिंदी शब्दावली की जानकारी बढ़ती जा रही है, जिससे हिंदी में लिखना अब दिन प्रतिदिन सरल होता जा रहा है। बल में हिंदी प्रयोग के प्रति कुछ कठिनाईयों को मैंने भी समझा है और यदि प्रयोग के प्रति हम थोड़े से भी सचेत रहें तो सरकारी काम-काज में हिंदी प्रयोग सरल, सहज व बोधगम्य बनाने में हम सफल हो सकते हैं, यदि निम्न प्रकार कुछ बातों को ध्यान में रखा जाए:

1. हिंदी में संदर्भ देते समय दिनांक पहले तथा पत्र संख्या बाद में दी जाए,

2. क्रम संख्या डालते समय अनुस्वर अर्थात् ण, ङ आदि का प्रयोग नहीं करें यथा (क) (ख) (ग) (घ), (च) (छ) (ज) (झ) आदि का प्रयोग करें।

3. अंग्रेजी के अनुसार हिंदी प्रयोग न करें जो अटपटा लगता है जैसे work is in progress के लिए काम प्रगति पर है या deep drain ahead गहरा नाला आगे है। सही प्रयोग है कि खुदाई या सड़क का काम चल रहा है, यहां गहरा नाला है या आगे गहरा नाला है।

4. अग्रिम कार्रवाई करें - प्रयोग गलत है।

शीघ्र कारवाइ करें – प्रयोग किया जाए।

5. नामित करने का श्रम करें - प्रयोग गलत है।

नामित करने का कष्ट करें - प्रयोग किया जाए।

6. Rupees twenty only के लिए हिंदी में केवल बीस रूपये लिखा जाए अर्थात् केवल पहले और रूपये बाद में लिखा जाए।

7. Family accommodation के लिए रिहायशी मकान का प्रयोग करें न कि पारिवारिक आवास।

8. नामों का अनुवाद नहीं किया जाए।

9. हिंदी में लिखते समय हिंदी में सोचें और हिंदी भाषा की प्रकृति के अनुसार लिखें।

10. दूसरी भाषाओं के प्रचलित शब्दों को अपनाने से नहीं झिझकें।

उपर्युक्त कुछ बातें केवल उदाहरण स्वरूप हैं। ये छोटी-छोटी बातें यदि ध्यान में रखकर हिंदी का प्रयोग किया जाए तो भाषा सरल व सहज बनेगी तथा क्लिष्ट व दुर्बोध के कलंक से हिंदी को बचाया जा सकेगा।

यहां एक अहम् बात जिससे हमें हमेशा ही राजभाषा प्रयोग में समझौता करना पड़ता है वह है अनुरोध व प्रोत्साहन की वैशाखी पर राजभाषा प्रयोग बढ़ाना। चूंकि महानिदेशालय सहित अधीनस्थ कार्यालयों में राजभाषा प्रयोग व कार्यान्वयन की जिम्मेदारी से मेरा काफी संबंध रहा है जिसके दौरान मैंने देखा है कि अनुरोध व प्रोत्साहन की वैशाखी लेते हुए हिंदी दो कदम आगे बढ़ी है तो चार कदम पीछे हटी है अन्यथा क्या कारण है कि आजादी का समय 50 वर्ष से भी अधिक हो चुका है, किन्तु हिंदी प्रगति अभी भी आंकड़ों व प्रोत्साहन के बीच किसी तरह अपनी अस्मिता को छिपाकर सिकुड़ी हुई बैठी हुई है। सरकारी कर्मचारी नौकरी में आते समय यह शपथ लेता है कि वह संघ द्वारा बनाए गए नियमों व विनियमों का पूरी कर्तव्यबद्धता एवं सत्यनिष्ठा से पालन करेगा किन्तु राजभाषा के बारे में उसकी निष्ठा बदल जाती है। अब समय आ गया है कि सरकार राजभाषा नियमों के उल्लंघन को दंडनीय करार दे तथा गोपनीय रिपोर्ट में इस आशय की प्रविष्टि और नियमों का पूर्णतः अनुपालन न करना केन्द्रीय सिविल आचारण नियमावली का उल्लंघन माना जाए। मैं पुनः अनुरोध करना चाहूंगा कि सरकार की राजभाषा नीति का आदर करते हुए हमें स्वयं स्वतः प्रेरणा से राजभाषा का प्रयोग करना चाहिए ताकि राजभाषा हिंदी को उसका गौरव स्थान जल्द से जल्द मिल सके। इस तथ्य को किसी भी तरह नहीं नकारा जा सकता कि हिंदी प्रयोग एवं व्यवहार की भाषा है, जितना इसे प्रयोग एवं व्यवहार में लाएंगे उतनी ही भाषा की कठिनाईयों की दीवारें ध्वस्त होती जाएगी। हिंदी को वर्तमान स्वरूप के अनुसार स्वीकार करें। सुगम हिंदी का प्रयोग करें। हिंदी केवल हिंदी-भाषियों की ही नहीं, हम सबकी भाषा है। हम दूसरों की तरफ नहीं देखें, दूसरों की तरफ वही देखता है, जो निराश है, अतः हम सभी मिलकर अपने-अपने कार्य-स्थलों पर सरकारी काम-काज में तथा व्यक्तिगत व्यवहार में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग

करें, इसी में सभी का हित है, राष्ट्र का हित है।

भारत की सामासिक संस्कृति और हिंदी

-डॉ. परमानन्द पांचाल, पूर्व निदेशक, राष्ट्रपति सचिवालय

भाषा, संस्कृति की वाहिका होती है और उसके साहित्य में उसकी संस्कृति की गहरी झलक मिलती है। इसीलिए भाषा और संस्कृति का अविच्छेद्य संबंध होता है। मैडलवान ने ठीक ही लिखा है कि प्रत्येक संस्कृति का सार-तत्व उसकी भाषा में अभिव्यक्ति पा सकता है और पाया करता है। भाषा न केवल संस्कृति की अविभाज्य अंग है, अपितु उसकी कुंजी भी है। भाषा के बिना यदि संस्कृति पंगु है तो संस्कृति के अभाव में भाषा अंधी है। भारतीय संस्कृति विश्व की एक प्राचीनतम संस्कृति है जिसकी आभा विभिन्न संघर्षों से गुजरने तथा हजारों वर्षों की यात्रा करने के बावजूद धूमिल नहीं हुई है। वह प्रत्येक परिस्थिति, घात, प्रतिघात, और उतार-चढ़ाव को झेलते हुए भी एक रत्न की भांति आज भी देदिप्यमान है। इसी रहस्यमयी चमत्कार से चकित होकर उर्दू के प्रसिद्ध कवि सर मुहम्मद इकबाल ने कहा था –

"कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी, सदियों रहा है दुश्मन दौरे जमां हमारा।" वह कौन सी बात है जिसके कारण इसका अस्तित्व और उसकी अस्मिता अक्षुण्ण रही है ? भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र उसकी उदारता, सहिष्णुता और समस्त वसुधा को एक कुटुम्ब मानने में है। सत्य की खोज इसका चरम लक्ष्य रहा है। तभी तो कहा गया है "एकसदविप्रा बहुधा वदन्ति" अर्थात् एक सत्य को विद्वान, अनेक प्रकार से कहते हैं। यही विचारधारा भारतीय संस्कृति का प्राणस्पन्दन रही। अतः वह विरोधों में समन्वय को, और असत् में सत् को ढूंढ़ती रही। भारतीय संस्कृति, गंगा की तरह निरन्तर प्रवाहमान, समुद्र की तरह विशाल और गिरि शिखरों की भांति उदात्त है । वह विद्या–अविद्या, श्रेय–प्रेय, अभ्युदय, निश्रेयस, द्यावा पृथिवी, सभी को आत्मसात् करती हुई विश्व के कोने–कोने को ज्योतिमय करती आ रही है ।

अच्छे गुण कहीं से भी मिलें, उन्हें प्राप्त करने की लालसा सदा इसमें रही है । ऋगवेद का यह आभार सन्देश "आ नो भद्रा, कृत्वो यन्तु विश्वतः" अर्थात् प्रत्येक दिशा से शुभ एवं सुन्दर विचार हमें प्राप्त हों । यही इसकी गुण ग्राह्यता का प्रमाण है । हिंदी इसी सामासिक संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है ।

हिंदी की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को समझने के लिए सर्वप्रथम हमें इसके मुहावरों और लोकोक्तियों पर ध्यान देना होगा । मुहावरे और लोकोक्तियां किसी भी जीवित भाषा के प्राण होते हैं । इनके पीछे उनका सांस्कृतिक इतिहास बोलता है । ये जन

सामान्य की भावनाओं की अभिव्यक्ति का समान रूप से माध्यम होते हैं, किसी वर्ग विशेष की नहीं। ये मुहावरे और कहावतें ही हमारी सांस्कृतिक एकता की कसौटी हैं। यदि हम हिंदी भाषा में प्रचलित मुहावरों और लोकोक्तियों पर एक दृष्टि डालें तो हम देखेंगे कि इनके पीछे जो जातिगत संस्कार छिपे हैं वे स्वतः भारत की सामासिक संस्कृति की कहानी कहते हैं, जो भारत के किसी एक ही वर्ग, सम्प्रदाय या धार्मिक मान्यताओं वाले वर्ग के लिए नहीं, वरन सभी के लिए समान है।

हिंदी के कुछ मुहावरों और लोकोक्तियों को देखिए–मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक; गए थे नमाज छुड़ाने, रोजे गले पड़ गए; मिल गई रोजी नहीं तो रोजा; खुदा अपने घोड़ों को हलुवा खिलाता है; जब मियां बीबी राजी तो क्या करेगा काजी;, मुल्ला की मारी हलाल; सत्तर चूहे खा के बिल्ली हज को चली; तकदीर का सिकन्दर होना; खैरात बटना; ईद का चांद होना; खलीफा बनना; नमक हलाल होना; नमक हरामी करना; कब्र में पांव लटकना; कब्र खोदना; मियां के सर; तौबा करना; बाबा आदम के जमाने का; अल्लाह अल्लाह खैर सल्लाह आदि। ऐसे न जाने कितने और मुहावरे तथा लोकोक्तियां हमारी इस मिलीजुली संस्कृति को वाणी देते हैं।

इन मुहावरों को क्या हिंदी, क्या मुसलमान सभी बोलते हैं। यही हिंदी की सामासिक संस्कृति की विरासत है। स्पष्ट है कि इनका जन्म इस्लामी संस्कारों से हुआ और अब ये हिंदी की थाती बन गए हैं और सभी वर्गों की समान रूप से अभिव्यक्ति का माध्यम हैं।

हिंदी भाषा और साहित्य का समग्र इतिहास हमारी समन्वित संस्कृति का इतिहास है। इसके विकास में आरंभ से ही विभिन्न मतानुयाइयों और धर्मावलम्बियों का योगदान रहा है। हिंदी की सेवा हिंदीतर भाषियों ने नहीं, विदेशियों ने भी की है। साहित्य की इस गंगा–यमुना धारा के प्रवाह में, मां सरस्वती के न जाने कितने उपासकों ने अपने श्रद्धा कलश उड़ेले हैं, न जाने कितने भगीरथ पुत्रों ने इसके लिए कठोर परिश्रम किए हैं और न जाने कितने सन्तों और फकीरों के उपदेशों की यह वाग्धारा रही है। आरम्भिक काल में सिद्धों, जैनियों, नाथों, सन्तों और सूफियों ने इसी भाषा में जनता को सन्देश दिए। यद्यपि इनकी भाषा में हिंदी का वह प्राचीन रूप मिलता है जो प्राकृत और अपभ्रंश के समीप है। नाथ संप्रदाय के प्रवर्तक गोरखनाथ की यह वाणी–

"तुम्बी में तिर लोक स्माया त्रिवेणी रिब चन्दा बुझो रे ब्रभ गियानी अनहद नाथ अभंगा।"

भी इसी भाषा के माध्यम से जन सामान्य तक पहुंची थी। सिद्ध साहित्य में कण्हपा की यह उक्ति।

"जिम लोग विलिज्जई पाणिरगहं,
तिमधरिण लइचित।
समरस जाई तक्खणे,

जइ पुणुते समाणेत ।"

(जिस प्रकार पानी में नमक घुल जाता है उसी प्रकार धरणी से प्रेम में लीन हो जाने पर तत्काल समरस की अवस्था उत्पन्न हो जाती है ।)

देश में सांस्कृतिक समन्वय के समय–समय पर जो प्रयास होते रहे, उनमें हिंदी भाषा का विशेष योगदान रहा है । दक्षिण में जब भक्ति आन्दोलन का सूत्रपात होता है तो उसका प्रभाव उत्तर में भी सन्तों की वाणियों में परिलक्षित होता है । हिंदी साहित्य का समस्त भक्तिकाल उससे अनुप्राणित है । कबीर ने कहा है –

"भगति, द्रविड़ ऊपजी लाए रामानन्द"

गुरुनानक, कबीर, तुलसी, सूर, दादू, मीरा सभी ने धार्मिक सहिष्णुता, सौहार्द और प्रेम का उपदेश दिया और हिन्दू–मुस्लिम एकता की भावना की वृद्धि में योगदान दिया ।

शैव और वैष्णव जैसे मतों में समन्वय की भावना स्थापित करने में तुलसीदास जैसे सन्तों ने अथक प्रयास किए । तुलसीदास के राम तो स्पष्ट कहते हैं–

"शिव द्रोही मम दास कहावा,

सो नर नहीं सपनेहूं मोहि पावा ।"

इतिहास चक्र के साथ इस्लाम धर्म का प्रवेश भी इस देश में हुआ और मुसलमानों ने हिंदुओं के साथ कंधे से कंधा मिलाकर इस देश के विकास में योगदान दिया और हिंदी, हिंदुओं या किसी वर्ग विशेष की भाषा नहीं रही । रामधारी सिंह "दिनकर" के शब्दों में; "हिंदी साहित्य केवल हिंदू कवियों का ही निर्माण नहीं है, उसकी शक्ति और शोभा मुसलमानों ने भी बढ़ाई है । अमीर खुसरो, कबीर, जायसी, रहीम और रसखान, अनीस अहमद और कमाल, ताज और तानसेन, नेवाज और फखरुद्दीन, आलम और शेख तथा मुबारक एवं रसलीन ये सबके सब मुसलमान थे । हिंदी की परम्परा साम्प्रदायिकता की परम्परा नहीं, एकता, उदारता, सामाजिक समानता और वैयक्तिक स्वतन्त्रता की परम्परा है ।"

सच पूछिए तो इस भाषा को यह नाम भी हिंदुओं ने नहीं दिया, श्री पदम सिंह शर्मा लिखते हैं कि हिंदी नाम की सृष्टि हिंदुओं ने नहीं की और न उन्होंने इसका प्रचार ही किया है । उन्होंने तो सर्वथा इसके लिए "भाषा" या "भाखा" शब्द का ही प्रयोग किया है ।

भाषा भक्ति घोर मति मौरी – तुलसीदास ।

भाषा के लिए "हिंदी" शब्द के नामकरण का सारा श्रेय मुसलमान लेखकों और कवियों को ही जाता है । केशवदास भी इस भाषा में रचना करने में ग्लानि का अनुभव करते है–

भाषा बोलि न जानही जिनकें कुल के दास, तिन भाषा कविता करि, जड़मति केशवदास ।

हिंदी जिस समय अपने प्राकृत और अपभ्रंश काल से गुजर रही थी तभी से मुसलमानों ने इसके विकास में अपना योगदान आरंभ कर दिया था। संदेशरासक लिखने वाला अब्दुल रहमान या अददहमाण ही थे जो शहाबुद्दीन गोरी के समय से पहले के कवि हैं। अमीर खुसरों (1253–1325) ने उल्लेख किया है कि उनसे भी पहले ख्वाजा मसऊद साऊद सुलेमान (1125 ई. के पास) ने हिंदी में भी रचनाएं की थी।

मुस्लिम साहित्यकारों ने पहले इसे हिन्दुई, हिन्दवी कहा, फिर "हिंदी"। भाषा पर रीझकर अमीर खुसरों ने गर्व से कहा था –

चूं मन तूती–हिन्दम अर रास्त पुरसी जे इन हिन्दवी पुरम ता नगज़ गोयम।

–किरानुस्सादेन

(अर्थात् मैं हिन्दुस्तान की तूती हूं। अगर मुझ से सच पूछते हो तो हिन्दवी में पूछो जिसमें मैं कहीं अच्छी बातें बता सकूं।

इन्होंने अपनी रचना "खालिक बारी" में 55 बार "हिन्दवी" और 12 बार "हिंदी" शब्द का प्रयोग किया है।

हिंदी शब्द का व्यापक रूप से प्रयोग हमें दक्खिनी हिंदी के मुस्लिम कवियों में ही मिलता है। बुरहानुदीन जानम (1560 ई.) ने अपनी भाषा को "हिंदी" ही कहा –

"यह सब बोलू हिंदी बोल,
पन तू अनु भौ सेती खोल।
ऐब न राखे हिंदी बोल,
मानी तो चख देश ढंडोल।

"बहरी" भी अपनी रचना "मन लगन"
में अपनी भाषा को "हिंदी" बताता है :–

हिंदी तो जबां च है हमारी,
कहने न लग हमन के भारी।

इस प्रकार दक्खिनी के इन कवियों ने जो प्रायः इस्लाम के अनुयायी थे, दक्खिनी हिंदी में अपनी रचना कर हिंदी साहित्य को मालामाल कर दिया। यहां यह कहना अप्रासंगिक न होगा कि जिस काल में उत्तरी भारत में सूर, तुलसी और मीरा की स्वर लहरियां गूंज रही थी, केशव और बिहारी की श्रृंगारिक रचनाओं से सर्वत्र मादकता व्याप्त थी, उसी समय "नवरस" और "सबरस" जैसी रचनाओं से दक्षिणा पथ का जनमानस भी रस विभोर हो रहा था। कदम राव, पदम राव, कुतुबमुश्तरी, फूलबदन व माहियार और मैना सतवन्ती जैसे प्रेमाख्यानों से साहित्य के भंडार को भरा जा रहा था।

सूफी कवि तो भारतीय रंग में रंगे ही थे। सूफियों का तेसबुफ भारत के अद्वैत से

प्रभावित था। ये सूफी ब्रहम ज्ञानी अध्यात्मवादी और सभी धर्मों से प्रेम करने वाले थे। सूफी इस्लाम के अंतर्गत रहस्यवादी साधक माने जाते हैं। हिंदी के सूफी कवियों ने तसव्वुफ के अनुसार "प्रेम की पीर" को ही साधना का मूल मंत्र माना है। भारतीय कथानक में रूढ़ियों (श्रवण–दर्शन, चित्र–दर्शन, स्वप्न–दर्शन, सिंहलद्वीप, पदिमनी आदि) का प्रयोग कर सूफियों ने ईरानी मसनवी शैली और भारतीय परम्परा का सुन्दर समन्वय प्रस्तुत किया है।

यद्यपि दक्षिण और उत्तर के इन मुस्लिम कवियों ने उस समय फारसी लिपि में ही अधिकतर लिखा किन्तु उनकी भाषा वही हिंदी थी जो नागरी लिपि में लिखी जा रही थी। जब मुसलमानों में शुद्ध भाषा लिखने के आन्दोलन ने जोर पकड़ा तो नूर मुहम्मद जैसे लेखकों पर हिंदी में लिखने पर कटाक्ष किया गया तो उसने उत्तर में कहा–

हिंदू मग पर पांव न राखेउ,
का जो बहुते हिंदी भाखेऊ,
मन स्लाम मसल के भाजेऊ,
दीन जेवरी परकस भाजेऊ,
यह मुहम्मदी जन की बोली,
जामो कंद नवातें बोली।

सिखमत के प्रवर्तक गुरू नानकदेव जी की वाणी से कौन हिंदी पाठक अपरिचित होगा। गुरू गोविंदसिंह जी ने तो दशम ग्रंथ को इसी भाषा में लिखा था –

दशम कथा भागवत की भाषा करी बनाय अवर वासना नाहि कुछ, धर्म युद्ध को चाय।

गुरु ग्रंथ साहब में अनेक संतों की वाणियां संग्रहीत हैं जो हमें एकता का संदेश देती हैं।

हिंदुओं, मुसलमानों, जैनियों और सिक्खों के अलावा ईसाई मिशनरियों ने भी अपने धर्म प्रचार के लिए हिंदी भाषा का सहारा लिया। इसके लिए उन्होंने अनेक ग्रंथों व व्याकरण की रचना की और हिंदी के प्रेस स्थापित किए। हिंदी गद्य शैली के विकास में इनका महत्वपूर्ण स्थान है। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी इनके योगदान को स्वीकार करते हुए लिखते हैं – "हिंदी भाषा को आधुनिक रूप देने में ईसाई मिशनरियों का महत्वपूर्ण हाथ है।"

कैलॉग का व्याकरण और फादर कामिल बुल्के के हिंदी कोश को कैसे नजरअंदाज किया जा सकता है। डॉ. जार्ज ग्रियर्सन, पिनकॉट, जॉन किस आदि मिशनरियों के योगदान को हम कैसे भूल सकते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि हिंदी भाषा हमारी सामासिक संस्कृति की सही अर्थों में संवाहिका रही है और आज भी है। इसीलिए तो भारत के संविधान में भारत की सामासिक संस्कृति के परिरक्षण को सुनिश्चित करने के लिए हिंदी के विकास के

संबंध में कुछ निदेश दिए गए हैं। सांवेधान के 351वें अनुच्छेद में कहा गया है –

"संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रचार बढ़ाए, उसका विकास करे ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके।"

इस निर्देश के परिपालन के लिए हिंदी निरन्तर प्रयत्नशील रही है। हिंदी ही वह भाषा है जो देश की सामासिक संस्कृति का प्रतिनिधित्व, आरंभ से ही करती रही है। इसके विकास में सभी धर्मो, संप्रदायों और विभिन्न विचाराधाराओं का योगदान रहा है। सभी भाषाओं से शब्द ग्रहण करने की इसकी क्षमता रही है, इसी से इसकी सरलता और प्रवाह में निरन्तर वृद्धि हुई है।

विश्व में हिंदीभाषी जहां भी गए उन्होंने अपनी संस्कृति और भाषा के इन गुणों को अक्षुण रखा है। इसका उदाहरण आज हम त्रिनिडाड–टुबेको, मारीशस, फिजी, सूरीनाम, गयाना तथा दक्षिणी अफ्रीका आदि देशों में प्रत्यक्ष रूप से देख रहे हैं। हमें हिंदी की इस संजीवनी शक्ति को बनाए रखना है, इसी में इसकी लोकप्रियता निहित है। इन्हीं कारणों से हिंदी आज विश्व में लोकप्रिय होती जा रही है।

"राष्ट्रभाषा सर्वसाधारण के लिए जरूरी है और हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी ही बन सकती है।"

– लोक मान्य बाल गंगाधर तिलक

"प्रांतीय ईर्ष्या–द्वेष दूर करने में जितनी सहायता हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी चीज से नहीं।"

–नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

"यदि भारतीय लोग कला, संस्कृति और राजनीति में एक रहना चाहते हैं तो इसका माध्यम हिंदी ही हो सकता है।"

–चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

"राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी हमारे देश की एकता में सबसे अधिक सहायक सिद्ध होगी, इसमें दो राय नहीं।"

–जवाहरलाल नेहरू

"देश की भाषायी दृष्टि से जोड़ने के लिए हिंदी ही एक मजबूत कड़ी है।"

–इन्दिरा गांधी

हिंदी का व्यावहारिक प्रयोग

–सुभाष चंद्र सत्य

आज जबकि भारत एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में अपने अस्तित्व के 54वें वर्ष में प्रवेश कर चुका है, यह आत्म–विश्लेषण करना समीचीन होगा कि हिंदी को राष्ट्रभाषा, संपर्क भाषा व राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करने की भावनात्मक घोषणाओं से आगे बढ़ कर इसके व्यावहारिक प्रयोग की दिशा में हम कितने कदम चले हैं ?

जहां तक केन्द्र सरकार द्वारा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के उपायों का संबंध है, निस्संदेह संस्थागत स्तर पर बहुत कुछ किया गया है । देशभर में अनेक संस्थान आयोग, विभाग, निदेशालय, अकादमियां तथा पुरस्कार योजनाएं प्रारंभ की गई हैं, जिनका उद्देश्य हिंदी के प्रचार–प्रसार तथा सरकारी काम–काज में उसके प्रयोग को बढ़ावा देना रहा है । सरकारी काम–काज में हिंदी के प्रयोग की गति बढ़ाने के लिए तो गृह मंत्रालय में एक स्वतंत्र राजभाषा विभाग भी काम कर रहा है । इसके अलावा केन्द्र तथा राज्यों की साहित्य अकादमियां, हिंदी ग्रंथ अकादमियां तथा इसी प्रकार की अन्य संस्थाएं भी राजभाषा हिंदी के संवर्धन के उद्देश्य से स्थापित की गई हैं । इन सरकारी संगठनों के अतिरिक्त सरकारी अनुदान के बल पर अथवा निजी प्रयासों के दम पर चलने वाली असंख्य गैर–सरकारी संस्थाएं भी अपने ढंग से हिंदी सेवा में जुटी हुई हैं । अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी हिंदी सम्मेलन आयोजित किए जाते हैं ।

हिंदी के व्यावहारिक प्रयोग के मार्ग में अक्सर अंग्रेजी को सबसे बड़ी बाधा बताया जाता है । अंग्रेजी के प्रति भारतवासियों में अतिरिक्त सम्मान का भाव तथा रोजी–रोटी के साथ उसके नजदीकी जुड़ाव के कारण इस तर्क को एकदम अस्वीकार भी नहीं किया जा सकता । किन्तु हिंदी की मौजूदा दुर्दशा का क्या यही एकमात्र कारण है ? असली कारण बाहर नहीं अंदर खोजने होंगे । हिंदी की विकास यात्र में बाहरी बाधाएं तो एक दो होंगी, किन्तु आंतरिक बाधाएं असंख्य हैं । अपने हर पतन पर पराभव के लिए विदेशी तंत्र को दोषी बताने की पलायनवादी प्रवृत्ति से हम बहुत नुकसान उठा चुके हैं । आत्म–विश्लेषण एवं आत्मालोचना अपने दोषों को सुधारने का सबसे कारगर तरीका है ।

एक उदाहरण से बाद शुरू करते हैं । हिंदी हित के मंचों को प्रमुखता से सुशोभित करने वाले एक विद्वान को जब एक फार्म पर हस्ताक्षर करने को कहा गया तो उन्होंने बड़े सहज ढंग से अंग्रेजी में हस्ताक्षर कर दिए । जब उन्हें हिंदी में हस्ताक्षर करने के कर्तव्य की याद दिलाई गई तो एकदम बेफिक्री से उत्तर आया – "अरे हस्ताक्षर से क्या होता है ?" यह स्थूल उदाहरण सिर्फ यह जताने के लिए दिया गया है कि हमारे लिए यानी हिंदी भाषी लोगों के लिए हिंदी प्रेम, लगाव अथवा सम्मान की वस्तु नहीं है । "हस्ताक्षर से क्या होता है?" की यह प्रवृत्ति तथा कथित ऊंचे लोगों से चल कर प्राथमिक कक्षा के बच्चे तक पहुंचती है और इसका विस्तार "आवेदन पत्र या पत्र अथवा फाईल पर नोट लिखने से क्या होता है" तक जा पहुंचता है । हमारे जो नेता या बुद्धिजीवी आए दिन आम जनता को हिंदी अपनाने के उपदेश और प्रेरणा देते हैं, उनका आचरण तो आम लोगों से छिपा नहीं है । फिर उनकी बात कोई क्यों गंभीरता

से लेगा और अपनी पूववर्ती पीढ़ी के इस दोगलेपन को देखते–समझते युवा लोग क्यों हिंदी से प्रेम करेंगे ? असली बाधा भाषा प्रेम का अभाव तथा यह दोगला दृष्टिकोण है ।

अपनी भाषा के प्रति स्वाभिमान की कमी ही उस हीन भाव को जन्म देती है, जिसके चलते हिंदी औपचारिक तौर पर राष्ट्रभाषा, राजभाषा और समूचे देश की संपर्क भाषा का दर्जा पाकर भी व्यावहारिक धरातल पर क्षेत्रीय भाषा का स्वस्थ स्वरूप भी ग्रहण नहीं कर पाई है । अंग्रेजी का प्रभुत्व तो सारे देश में है फिर क्या कारण है कि बंगला, मराठी, मलयालम, तेलुगु, तमिल, गुजराती आदि बोलने वाले लोग अपनी–अपनी भाषा का खुल कर प्रयोग करते हैं जबकि हिंदी भाषी पढ़े–लिखे लोग सरकारी, व्यापारिक तथा औपचारिक काम–काज तो दूर, निजी व पारिवारिक कार्यों में भी अपनी भाषा का प्रयोग करने में शर्म महसूस करते हैं ? उदाहरण के लिए मित्रों – रिश्तेदारों को पत्र लिखना, निमंत्रण पत्र छपवाना, दुकानों, स्कूलों आदि के नामपट्ट तथा घरों में नेमप्लेट लगाना, संस्थाओं, दुकानों की रसीद बुकें, मोहरें आदि सब कुछ तो अंग्रेजी में ही हो रहा है । बड़े शहरों में किसी आधुनिक बाजार में निकल जाइए, आपको हिंदी में लिखा एक आध नामपट्ट ढूंढने से ही मिल पाएगा । आप किसी भी बस्ती में घूम आइए, 98 प्रतिशत घरों में लगी नामपट्टीका अंग्रेजी में ही होगी । संविधान की अपेक्षा के अनुरूप सरकारी दफ्तरों, नगरपालिकाओं, बैंकों आदि के अधिकतर फार्म द्विभाषी हैं, परन्तु हिंदी जानने वालों में भी 90 प्रतिशत से अधिक लोग अंग्रेजी में ही फार्म भरते हैं । सभी राष्ट्रीयकृत बैंकों में मोटे मोटे शब्दों में लिखा रहता है कि हिंदी में भरे गए फार्म तथा चेक स्वीकार किए जाते हैं । पर एक प्रतिशत लोग भी हिंदी में ये सब काम नहीं करते ।

हिंदी के साथ एक समस्या यह रही है कि स्वतंत्रता के बाद इसका स्वाभाविक एवं स्वतंत्र विकास बाधित हो गया है । राजभाषा बनने के बाद इसे तरह–तरह के अंकुशों, निर्देशों और उपदेशों के अनुसार आगे बढ़ने को विवश होना पड़ा । फलस्वरूप जनभाषा का इसका स्वाभाविक रूप विकृत हो गया और इसकी स्थिति उस दासी जैसी हो गई जिसे महारानी का वेश पहना कर राज सिंहासन पर बैठा दिया गया है । अब वह न तो राज कर सकती है और न ही आजादी से घूम फिर सकती है । आज तक कभी किसी राजनेता ने नहीं कहा कि अंग्रेजी, बंगला या कोई भी और भाषा कैसी होनी चाहिए किन्तु हिंदी के मामले में आए दिन राजनेता से लेकर मंत्रालय के अधिकारी और बैंक के मैनेजर तक सीख देते रहते हैं कि इसमें यह होना चाहिए, वह होना चाहिए । एक कोने से फतवा दिया जाता है कि हिंदी में संस्कृत शब्दों का ही अधिक प्रयोग किया जाना चाहिए । किसी दूसरे मंच में ऐलान किया जाता है कि अरबी, फारसी से निःसृत उर्दू शब्दों से हिंदी सरल बन सकती है । मजे की बात यह है कि यह उपदेश भाषा शास्त्री, समाजशास्त्री अथवा आम लोगों की मानसिकता को समझने वाले सामाजिक कार्यकर्ता नहीं बल्कि दफ्तरों में बैठे उच्च अधिकारी, राजनेता और कभी–कभी ऐसे विद्वान देते हैं, जिनका भाषा के व्यावहारिक प्रयोग से कोई लेना–देना ही नहीं है ।

हिंदी के व्याकरण तथा व्यवहार पर संस्कृत का अनुशासन थोपने का आग्रह भी हिंदी को स्वतंत्र रूप से विकसित नहीं होने देता।

हमारे देश में "प्राचीन" को श्रेष्ठ मानने की एक प्रतिक्रियावादी चिंतनधारा हमेशा मौजूद रही है। यह दुराग्रही प्रवृत्ति संस्कृति, भाषा और देश के अभिमान एवं प्राचीन गौरव की दुहाई देकर हमारी भाषाओं, कलाओं, संस्कृति, धर्म तथा चिंतन के खुलेपन और विस्तार का हमेशा विरोध करती रही है। इस प्रवृत्ति के पोषक तत्व भारतीय भाषाओं, विशेष कर हिंदी की मर्यादा बनाए रखने के नाम पर उसे और कमजोर करते हैं। गनीमत यह है कि इन शुद्धतावादी लोगों की ज्यादा चल नहीं पाई, नहीं तो हिंदी भी रूढ़िवाद का एक पहलू बन चुकी होती।

यह शुद्धतावादी दृष्टि अन्य देशी–विदेशी भाषाओं के शब्द व मुहावरे ग्रहण करने से परहेज के रूप में प्रकट होती है। जिन प्राचीनतावादी तत्वों का हमने ऊपर उल्लेख किया है, वे संस्कृत के तत्सम तथा तद्भव रूपों को ही हिंदी का स्वाभाविक शब्द भंडार मानने के समर्थक हैं। यहां तक कि भाषा की सैकड़ों वर्षों की यात्रा में जो विदेशी शब्द सहज ढंग से हिंदी की शब्दावली में अपना स्थान बना चुके हैं, उनके बहिष्कार एवं निष्कासन का रूख अपनाया जाता है। अरबी, फारसी के शब्दों के प्रति यह दुराग्रह अधिक तीखा है। इस दृष्टि के लिए भाषा को धर्म से जोड़ने की कुरिसत एवं अवैज्ञानिक प्रवृत्ति जिम्मेदार है। दुख की बात यह है कि भाषा के प्रयोग के सांप्रदायिक आग्रह की शिकार केवल हिंदी ही है, अन्य भारतीय भाषाएं बंगला, मलयालम, तमिल, मराठी आदि इन सांप्रदायिक रोगाणुओं से मुक्त हैं। फर्ज, इंतजाम, कैद, किताब, वकालत, अदालत, स्याही, कलम, मेज, बाग, वक्त, खाक, मंजिल, आदि असंख्य शब्द हैं जिनको निकाल देने से हिंदी के माधुर्य, विविधता एवं प्रभाव पर कुठाराघात हो जाएगा, परन्तु आज भी एक ऐसी चिंतनधारा साहित्य, पत्रकारिता, शिक्षा आदि क्षेत्रों में सक्रिय है जो इन शब्दों के स्थान पर संस्कृत तत्सम शब्दों को इस्तेमाल करने की वकालत करती है। यही रूख अंग्रेजी तथा आधुनिक टैक्नोलोजी के अन्य भाषाओं के नए शब्दों के संबंध में अपनाया जाता है। टेलीफोन, स्कूल, कालेज, काफी, टाईप, फ्लैट, कैलेंडर, डायरी, रेडियो, सिनेमा, फोटो, मशीन, रजिस्टर, बैग, कम्प्यूटर, साफ्टवेयर, कार्बन, चिमनी जैसे सैंकड़ो शब्द गिनाए जा सकते हैं जो हमें बिल्कुल पराए नहीं लगते। किन्तु यदि इनकी बजाए दूरभाष, विद्यालय, महाविद्यालय, पुस्तिका, टंकण, आवास, पंचांग, दैनन्दिनी, आदि शब्द ही लिखने और बोलने का दुराग्रह किया जाएगा तो निश्चय ही हिंदी संपन्न नहीं बल्कि विपन्न बनेगी।

छिद्रान्वेषण की प्रवृत्ति भी हिंदी में खूब प्रचलित है। जब कोई विद्वान लेखक, कवि अथवा पत्रकार हिंदी में भाषा संबंधी कोई एक प्रयोग करता है जो तब तक के मानकों को नकारता हो तो हिंदी प्रेम के नाम पर उसके खिलाफ तलवारें निकल आती है। अंग्रेजी भाषा के विश्व भर में मान्य होने के पीछे एक कारण यह भी है कि उसमें हमेशा प्रयोग होते रहे हैं। अमरीका के लोगों की अंग्रेजी ब्रिटिश अंग्रेजी से बहुत भिन्न

है, किन्तु इस पर कभी हायतौबा नहीं मचाई गई जबकि हिंदी में क्षेत्रीय प्रयोग होने पर भी शुद्धतावादी आलोचक पूरी रचना को पंजाबी, बंगाली, बिहारी या हरियाणवी प्रभाव का दोष लगा कर उसे नकार देते हैं। उच्चारण के मामले मे तो यह संकीर्णता बहुत ही शोचनीय रूप में विद्यमान है। बिहार, हरियाणा, पंजाब, पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा कई अन्य हिंदी भाषी क्षेत्रों और अन्य भाषा भाषी राज्यों में बोली जाने वाली हिन्दी का उपहास किया जाता है। इससे बड़ी विडम्बना और क्या होगी कि जो लोग स्वयं हिन्दी के प्रयोग में अपमान महसूस कहते हैं वे अहिन्दी भाषी लोगों के हिंदी प्रयोग का उपहास करके हिंदी की प्रगति को अवरूद्ध करते हैं।

हिंदी क्षेत्रों में साक्षरता की कमी और इस कारण भाषा के लिखित रूप से अधिसंख्य लोगों का संपर्क में न आना भी हिंदी के विकास में एक मुख्य बाधा है। जनसंख्या के नवीनतम आंकड़ों के अनुसार बड़े हिंदी भाषी राज्यों–बिहार, उत्तरप्रदेश, राजस्थान और मध्य प्रदेश में साक्षरता की दर सबसे कम है किन्तु इन राज्यों में जनसंख्या अन्य भारतीय भाषाओं के राज्यों से कहीं अधिक है। इस कारण हिंदी कहने को तो करोड़ों लोगों की भाषा है पर साक्षरता के अभाव के कारण उसके विकास में बहुत कम लोग योगदान कर पाते हैं।

जाहिर है कमी, सरकारी या गैर–सरकारी उपायों की नहीं, बल्कि उन पर अमल करने के संकल्प की है। यदि हिंदी के प्रयोग की वकालत करने और मंचों तथा जन संचार माध्यमों से दूसरों को हिंदी इस्तेमाल करने की सीख देने की बजाय सभी नेता, अधिकारी व बुद्धिजीवी अपने दैनिक प्रयोग के छोटे–छोटे कामों में हिंदी लिखने लगें तो कुछ ही वर्षों में हिंदी दिवस के आयोजनों पर लाखों रूपये खर्च करके हिंदी प्रयोग को बढ़ावा देने के प्रयासों की कोई आवश्यकता नहीं रहेगी। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हमारे देश में कभी अंग्रेजी दिवस नहीं मनाया जाता फिर भी इससे कोई भी इंकार नहीं कर सकता कि अंग्रेजी के इस्तेमाल में निरंतर प्रगति हुई है।

राजभाषा हिंदी के *50* वर्ष : हम क्या करें

–हरिबाबू कंसल

स्वाधीन भारत का संविधान बनाने के लिए गठित संविधान सभा ने 14 सितम्बर, 1949 को यह निर्णय किया कि केन्द्रीय सरकार की राजभाषा देवनागरी में लिखित हिंदी होगी, विभिन्न राज्य अपने-अपने राज्य की राजभाषा के लिए, अधिनियम बना कर, अपने क्षेत्र में प्रयुक्त हो रही भाषा या भाषाओं को उस रूप में अपना सकेंगे तथा अन्तर्राज्यीय कार्यों के लिए तथा केन्द्र और राज्य सरकारों के मध्य पत्रव्यवहार के लिए संघ की राजभाषा का प्रयोग होगा। तत्संबंधी उपबंध भारत के संविधान के अनुच्छेद 343, 345 एवं 346 में है।

उपयुक्त निर्णय ऐतिहासिक एवं महत्वपूर्ण था। उस निर्णय को तीथे को स्मरण करते हुए प्रति वर्ष 14 सितम्बर को 'हिंदी दिवस' मनाया जाता है और 14 सितम्बर, 1999 से प्रारंभ कर राजभाषा स्वर्ण जयन्ती वर्ष मनाने का निश्चय किया गया।

संसार के सभी स्वाधीन देश अपना आंतरिक कामकाज अपनी भाषाओं में करते हैं। अपनी भाषाओं का प्रयोग करना राष्ट्रीय स्वाभिमान का तकाजा है। स्वाधीन भारत में अपनी भाषाओं की उपेक्षा हो तथा अंग्रेजी का बोलबाला बना रहे, यह बात किसी स्वाभिमानी भारतीय को अच्छी नहीं लगेगी। देश में राष्ट्रीय स्वाभिमान रखने वाले व्यक्तियों की कमी नहीं है। हिंदी जानने वालों की भी कमी नहीं है। हिंदी भाषी क्षेत्रों में तो राज्य सरकार के विभिन्न विभागों के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी हिंदी जानते हैं, केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में भी ऐसे अधिकारियों एवं कर्मचारियों की संख्या विशाल है जो हिंदी में प्रवीणता प्राप्त हैं। उनके लिए हिंदी में काम करना कोई कठिन नहीं है। फिर भी कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में नही होता, ऐसा क्यों? क्या यह हमारे लिए चिन्ता का विषय नहीं है ? क्या हमने कभी सोचा है कि इस स्थिति को कैसे बदला जाए और इसमें हमारी क्या भूमिका रहे, हमारा स्वयं अपना क्या योगदान हो ?

हम ऐसे अवसर की तलाश में रहते हैं जब हम कोई न कोई जयन्ती मना सकें। किसी महत्वपूर्ण अवसर की याद में जयन्ती मनाना कोई बुरा नहीं है, बशर्ते कि उनके आयोजन से हम प्रेरणा प्राप्त करें और यदि किसी अच्छे कार्य को करने में कोई कसर रही है तो उसके कारणों पर विचार करें और कमियों को दूर करने का उपाय सोचें जिससे हम किसी पवित्र उद्देश्य की पूर्ति में आगे बढ़ने में सफल हो सकें। हिंदी को राजभाषा बनाए जाने के निर्णय की तिथि को स्मरण कर हम यदि राजभाषा हिंदी की स्वर्ण जयन्ती मना रहे हैं तो क्या हम ऐसा करके केवल एक औपचारिकता पूरी करके अपनी संतुष्टि कर लेना चाहते हैं अथवा वास्तव में कुछ कर दिखाने की हमारी ईच्छा है।

आइए हम वर्तमान स्थिति के कारणों पर गंभीरता से विचार करें कि हिंदी को अभी तक वह स्थान क्यों नहीं प्राप्त हआ जो संविधान के उपबन्धों के अनुसार उसे वर्षों पूर्व मिल जाना चाहिए था तथा हर वर्ष 'हिंदी दिवस', 'हिंदी सप्ताह', 'हिंदी पखवाड़ा' मनाने की आवश्यकता क्यों पड़ती है ? क्या राजभाषा स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर इतना पर्याप्त होगा कि कुछ विशाल कवि सम्मेलन या संगोष्ठियां आयोजित हो जाएं, कुछ खट्टे-मिट्ठे विचार भाषणों द्वारा प्रकट कर दिए जाएं, कुछ सरकार की आलोचना हो जाए और कुछ अपनी प्रशंसा? क्या कुछ लोग इस बात पर भी विचार करने जा रहे हैं कि हिंदी का प्रयोग प्रशासन में न्यायालय में, शिक्षा क्षेत्र में, तकनीकी क्षेत्रों आदि में बढ़े, वृद्धि केवल नाममात्र की न होकर व्यापक हो, अति व्यापक हो? यह गणना करने की आवश्यकता ही न रहे कि अब कितना 'प्रतिशत' काम हिंदी में हो रहा है, होना यह चाहिए कि सर्वत्र 'सभी काम' सामान्यतः हिंदी में होते दिखाई पड़ें। अंग्रेजी अथवा अन्य किसी भाषा का प्रयोग तभी हो जब उसकी

विशेष रूप से आवश्यकता पड़े।

क्या एक सामान्य व्यक्ति, एक सामान्य कर्मचारी अथवा सामान्य स्तर का अधिकारी इस स्थिति में परिवर्तन ला सकता है, क्या अकेला चना भाड़ फोड़ सकता है ? क्या अंग्रेजी के रौब दाब से प्रभावित वातावरण को बदला जा सकता है, ऐसा करने के लिए कितनी शक्ति चाहिए, कितना समय लगेगा, क्या अपने जीवन काल में इस दिशा में कुछ ठोस प्रगति होती दिखाई पड़ेगी, ऐसे प्रश्न हिंदी से प्रेम रखने वाले किसी भी व्यक्ति के मन में उठ सकते हैं। ऐसे प्रश्न उठने स्वाभाविक भी हैं, अनुचित नहीं।

वर्तमान वातावरण को बदलना संभव है और इसमें प्रत्येक व्यक्ति की भूमिका होनी चाहिए। एक-एक बूंद इकट्ठी मिल कर सूखी धरती को हरा-भरा बना सकती हैं। इस्राइल में पानी का भयंकर अभाव है। वहां खेती के लिए विपुल मात्रा में जल उपलब्ध नहीं है। वहां एक-एक बूंद का सुनियोजित उपयोग होता है और उससे वहां की मरुभूमि में फल उगाए जा रहे हैं। एक-एक व्यक्ति के सहयोग से भारत में भी सांस्कृतिक क्रांति लाई जा सकती है तथा स्वाधीन भारत अब तक जो सांस्कृतिक दासता व्याप्त रही है उसका निवारण हो सकता है।

फिर मूल प्रश्न पर लौट आएं। हमारी सदाशयता में कोई कमी नहीं है। हमारे राष्ट्र प्रेम एवं हिंदी प्रेम में भी कोई संदेह नहीं है। हम संकोच छोड़ें, अपने पर भरोसा करें, स्वयं अपना कामकाज हिंदी में करने का निश्चय करें, अपने उदाहरण से दूसरों को प्रेरणा दें, अपने मित्रों से तथा पड़ौसियों से अनुरोध करें कि वे भी अपना काम हिंदी में करना आरंभ करें। हो सकता है कि प्रारंभ में हमारी बात की ओर विशेष ध्यान न दिया जाए, हमारे अनुरोध को तत्काल स्वीकार न किया जाए, किन्तु यदि हम अपने विश्वास के अनुसार स्वयं आचरण करते होंगे और हमारे मित्रों को यह दिखाई पड़ेगा कि हम जिस बात की अपेक्षा दूसरों से करते हैं उस तरह का व्यवहार स्वयं करते हैं तो हमारा अनुरोध निष्फल नहीं रहेगा। अधिकांश लोग हमारे अनुरोध को मानेंगे, जहां आज हिंदी में काम होता दिखाई नहीं पड़ता वहां थोड़े समय उपरांत ही हिंदी का प्रयोग होता दिखाई पड़ेगा। प्रारंभ में गति धीमी रहना स्वाभाविक है। उससे हम चिन्तित न हों, निराश न हों, कुछ समय बाद प्रगति तेजी से होती दिखाई पड़ेगी। यदि एक कार्यालय में या एक नगर में हम अपने जैसे कई व्यक्ति जुटा लें और टोली बना कर इस दिशा में कार्य आरंभ कर दें तो इसका फल अगले महीने से ही दिखाई पड़ने लगेगा और वर्ष के पूरा होते-होते एक बड़ा परिवर्तन होता देख सकेंगे। यदि हमने इस कार्य को किया तो यह होगा राजभाषा हिंदी के स्वर्ण जयंती वर्ष का सार्थक आयोजन।

कृपया विचार करें कि आप इस वर्ष को किस रूप में मनाना चाहेंगे, मात्र औपचारिकता निभाने के लिए अथवा कुछ कर दिखाने के लिए? स्वाधीनता से पूर्व जिन व्यक्तियों ने स्वाधीनता प्राप्ति के लिए संघर्ष किया उन्हें आज सारा देश 'स्वतंत्रता सेनानी' के रूप में जानता है तथा संबोधित करता है। यदि हम उस संघर्ष में इसलिए शामिल नहीं हो पाए थे कि उस समय हमारा जन्म नहीं हुआ था तो आज वह

अवसर है कि हम भारत में सांस्कृतिक क्रांति के अग्रदूत बनें और भारत में हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को प्रतिष्ठित कर देश का गौरव बढ़ाने का महत्वपूर्ण कार्य उस रूप में कर दिखाएं जिस प्रकार स्वतंत्रता सेनानियों ने देश की स्वाधीनता के लिए किया था।

भाव पुष्प

उस भाषा को राष्ट्र भाषा के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए, जो देश के सबसे बड़े हिस्से में बोली जाती हो अर्थात हिंदी।

–रविन्द्रनाथ ठाकुर

हिंदी में राष्ट्रभाषा बनने की पूरी क्षमता है।

राजा राममोहन राय

हिंदी हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक व्यवहार में आने वाली भाषा है।

–राहुल सांकृत्यायन

हिंदी देश की गंगा है।

–रामकुमार भुवालका

यदि भारत में प्रजा का राज चलाना है तो यह जनता की भाषा में ही चलाना होगा।

–काका कालेलकर

अंग्रेजी और हिंदी को साथ-साथ रखना बाघ और बकरी को एक साथ बैठाना है।

–गंगाशरण सिंह

कोई भी देश सच्चे अर्थों में तब तक स्वतंत्र नहीं है, जब तक वह अपनी भाषा में नहीं बोलता।

–महात्मा गांधी

किसी विदेशी भाषा का किसी स्वतंत्र राष्ट्र के कामकाज और शिक्षा का माध्यम होना, सांस्कृतिक दासता है।

–वाल्टेर चेनिंग

दुनिया–भर में भारत को छोड़कर कोई भी ऐसा देश नहीं मिलेगा, जहां एक विदेशी भाषा के माध्यम से शिक्षा दी जाती है।

–महाकवि पी. कुंजि

राष्ट्रभाषा की उपेक्षा से देश का भविष्य अन्धकारमय हो जाएगा।

–महादेवी वर्मा

अब भी अंग्रेजी को राजभाषा बनाए जाने का आग्रह दासता के अभिशाप का अवशेष

है।

–राहुल सांकृत्यायन

अंग्रेजी को हटाए बिना हिंदी अपने न्यायोचित स्थान पर प्रतिष्ठित नहीं हो सकती।

–जगजीवन राम

हिंदी के शब्द–भण्डार में कमी नहीं है, कमी है हमारी राष्ट्रीय निष्ठा की, देश–भक्ति की भावना की।

–डॉ. अम्बाप्रसाद "सुमन"

यदि भारतीय लोग कला, संस्कृति और राजनीति में एक रहना चाहते है, तो इसका माध्यम हिंदी ही हो सकती है।

–चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

हिंदी प्रचार का कार्य देश–भक्ति का कार्य है।

–गंगाशरण सिंह

अस्सी प्रतिशत दक्षिण वासियों का हिंदी के प्रति सम्मान–भाव है।

–डॉ. राजगोपालन

संस्कृत मां, हिंदी गृहिणी और अंग्रेजी नौकरानी है।

–डॉ. कामिल बुल्के

अंग्रेजी को बनाए रखने की नीति मानसिक दासता की द्योतक है।

–जगदगुरू शंकराचार्य स्वामी

अंग्रेजी के अन्धभक्त इस देश की धरती को छोड़कर इंग्लैण्ड या अमेरिका चले जाएं।

–पी. जान

अंग्रेजी यहां दासी या अतिथि के रूप में रह सकती है, बहूरानी के रूप में नहीं।

–कामिल बुल्के

राजभाषा स्वर्ण जयंती वर्ष में आयोजित कार्यक्रम

जैसा कि विदित है 14 सितम्बर, 1949 को संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया गया था तथा भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343(1) में यह व्यवस्था की गई थी कि हिंदी संघ की राजभाषा होगी। इस ऐतिहासिक दिन को 50 वर्ष, 14 सितम्बर, 1999 को पूरे हो चुके हैं। इस अवधि में केन्द्र सरकार

के अन्य कार्यालयों के समान ही इस बल में भी राजभाषा संबंधी प्रावधानों/नीतियों को निष्ठापूर्वक लागू करने के प्रयास किए गए। बल के बहुभाषी स्वरूप को ध्यान में रखते हुए राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए प्रेरणा, प्रोत्साहन व सद्भावना से सरकार की राजभाषा नीति का कार्यान्वयन किया गया जिसके परिणामस्वरूप आज बल के सरकारी काम–काज में हिंदी के प्रयोग में काफी अभिवृद्धि हुई है। बल में लगभग 80 प्रतिशत कार्य हिंदी में हो रहा है इसका एक उदाहरण यह भी है कि हिंदी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए गृह मंत्रालय की राजभाषा शील्ड योजना के तहत केरिपु बल को कई वर्षों से लगातार प्रथम/द्वितीय स्थान के लिए चुना गया। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए बल में समय-समय पर अनेक समारोह, बैठकें, प्रतियोगिताएं, कार्यशालायें, गोष्ठियां व सम्मेलन आयोजित किए जाते रहे हैं फिर भी पूरे बल में 14.9. 99 से 14.9.2000 तक की अवधि में राजभाषा स्वर्ण जयंती वर्ष के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया तथा इस उपलक्ष्य में इस महानिदेशालय तथा अधीनस्थ कार्यालयों के स्तर पर अलग–अलग चलाए जाने वाले विशेष कार्यक्रम बनाए गए तथा उनको निष्ठापूर्वक कार्यान्वित करने के प्रयास किए गए :-

महानिदेशालय स्तर पर चलाए गए कार्यक्रमः

1. सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की प्रगति का जायजा लेने के लिए बल के प्रत्येक सेक्टर के दो–दो कार्यालयों का निरीक्षण कर सर्वोत्तम पाए गए कार्यालय को हिंदी दिवस पर राजभाषा शील्ड प्रदान करने की योजना बनाई गई।

2. राजभाषा स्वर्ण जयंती वर्ष के दौरान सहायक उप निरीक्षक (मं) तथा उप निरीक्षक (स्टेनो) की रिक्तियां हिंदी टाइपिंग व हिंदी आशुलिपि जानने वाले उम्मीदवारों से भरे जाने के प्रयास करने का सुझाव रखा गया। परन्तु सरकार द्वारा भर्ती पर रोक लगाए जाने के कारण इसका अनुपालन नहीं किया जा सका।

3. वर्ष 1999–2000 की मूल हिंदी टिप्पणी/आलेखन की प्रोत्साहन योजना के अन्तर्गत पूरे बल में सबसे अधिक शब्द लिखने वाले कर्मचारी तथा उसके कार्यालय अध्यक्ष को प्रोत्साहित करने के लिए राजभाषा शील्ड योजना बनाई गई।

4. वार्षिक कार्यक्रम में रखे गए लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए स्वर्ण जयंती वर्ष के दौरान सबसे अधिक कर्मचारियों को हिंदी भाषा, हिंदी टंकण तथा हिंदी आशुलिपि का प्रशिक्षण दिलाने वाले सेक्टर को महानिदेशक की ओर से प्रशंसा पत्र देने का निश्चय किया गया।

5. हिंदी दिवस पर सी.आर.पी.एफ. समाचार का राजभाषा स्वर्ण जयंती अंक प्रकाशित किया जा रहा है।

6. बल की कार्य प्रकृति को देखते हुए महानिदेशालय द्वारा विभागीय शब्दावली, फार्म व विभिन्न पत्रों/ज्ञापनों की अलग–अलग विषयों पर सामग्री जारी करने का लक्ष्य रखा गया था। गोपनीय रिपोर्ट, पेंशन तथा अन्य विषयों से संबंधित प्रपत्र व सामग्री जारी की जा चुकी है तथा बल के सभी कार्यालयों को सुलभ करा दी गई है।

7. महानिदेशालय की शाखाओं के अनुभाग अधिकारियों व कार्मिकों के लिए एक प्रोत्साहन योजना चलाई है, जिसके तहत 1.4.2000 से 30.7.2000 तक की अवधि में सबसे अधिक हिंदी शब्द लिखने वाले अधिकारी/कर्मचारी को हिंदी दिवस पर एक–एक हजार रूपये के नकद पुरस्कार देने का प्रस्ताव किया गया।

अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा चलाए गए कार्यक्रमों का कार्यान्वयन

1. राजभाषा स्वर्ण जयंती वर्ष के दौरान "क" "ख" व "ग" क्षेत्रों में स्थित बल के सभी कार्यालयों द्वारा क्रमशः कम से कम 50 प्रतिशत, 30 प्रतिशत तथा 20 प्रतिशत कार्यालय टिप्पणी हिंदी में लिखने की अनिवार्यता की गई है। प्राप्त रिकार्डों तथा मौके पर किए गए निरीक्षणों के अनुसार कार्यालयों द्वारा इसका अनुपालन किया जा रहा है।

2. बल में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में आ रही कठिनाईयों पर परस्पर चर्चा कर उनका हल ढूंढने के लिए ग्रुप केन्द्र, हैदराबाद तथा मोकामाघाट मेंराजभाषा संगोष्ठी आयोजित करने का कार्यक्रम बनाया गया था। तदुनसार ग्रुप केन्द्र हैदराबाद में दिनांक 3.12.99 को राजभाषा संगोष्ठी आयोजित की जा चुकी है तथा सर्वसंबंधित को अनुपालन/कार्रवाई हेतु कार्यवृत्त भेज दिया गया है। ग्रुप केन्द्र मोकामाघाट में संगोष्ठी आयोजित करने संबंधी प्रस्ताव पर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक में लिए गए निर्णय के अनुसार सरकार द्वारा जारी विभागों के सरकारी खर्चों में 10 प्रतिशत कटौती करने तथा किफायत बरतने के निर्देशों को ध्यान में रखकर इसका आयोजन फिलहाल स्थगित कर दिया गया है।

3. बल के सभी कार्यालयों में दो–दो कार्यशालाएं चलाने का लक्ष्य रखा गया है। अधिकांश कार्यालयों द्वारा एक हिंदी कार्यशाला आयोजित कर ली गई है तथा हिंदी पखवाड़े के अवसर पर 21 अगस्त, 2000 से दूसरी हिंदी कार्यशाला चलाने का कार्यक्रम बनाया गया है।

4. बल में जो भी यांत्रिक टाइपराइटर अथवा इलैक्ट्रोनिक टाइपराइटर खरीदे गए हैं वे सभी देवनागरी अथवा द्विभाषी हैं।

5. अहिंदी भाषी अधिकारियों व कर्मचारियों में हिंदी कार्य के प्रति रूचि पैदा करने के उद्देश्य से दक्षिण भारत में स्थित कार्यालयों के बीच 1 अप्रैल, 2000 से 30 जून, 2000 की अवधि की एक अहिंदी भाषी कर्मचारियों की हिंदी व्यवहार तथा अहिंदी भाषी अधिकारियों की हिंदी डिक्टेशन प्रतियोगिता आयोजित कर सर्वाधिक हिंदी शब्द लिखने व डिक्टेशन देने वाले प्रतियोगी को एक–एक हजार रूपये के नकद पुरस्कार/ मानदेय तथा प्रशस्ति पत्र देने का प्रस्ताव रखा गया है। कार्यक्रम आयोजित किए जा चुके हैं तथा पुरस्कार स्वीकृत किए जाने की रिपोर्ट प्रतीक्षित है।

6. बल के सभी ग्रुप केंद्रो द्वारा बल आदेश भाग दो का शत प्रतिशत हिंदी में प्रकाशन करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया। निरीक्षण के दौरान इसका अनुपालन किए जाने की समीक्षा करने पर बल आदेश के पूर्णतया हिंदी में प्रकाशित होने की पुष्टि की गई।

7. बल के प्रत्येक मुख्य कार्यालय के प्रवेश द्वार पर एक बोर्ड में "आज का हिंदी शब्द" शीर्षक पेंट में लिखवाकर उसमें रोजमर्रा के सरकारी काम–काज में इस्तेमाल होने वाले अंग्रेजी शब्द का हिंदी पर्याय लिखने के निर्देश जारी किए गए थे ताकि कार्यालय में प्रवेश करने वाले उसको पढ़कर अपने शब्द भंडार में बढ़ोत्तरी कर सकें। महानिदेशालय सहित बल के सभी कार्यालयों द्वारा इसका अनुपालन किया जा रहा है।

8. उपर्युक्त कार्यक्रमों के क्रियान्वयन पर निगरानी रखने तथा उनके अनुपालन किए जाने की सेक्टर कार्यालयों द्वारा प्रत्येक तिमाही बैठकों में समीक्षा की जाती है। उपर्युक्त विशेष कार्यक्रमों के अलावा निम्नलिखित कार्यान्वयन भी सुनिश्चित किये गये हैं :-

(1) हिंदी दिवस/पखावड़े के दौरान पूरे बल में हिंदी व्यवहार, हिंदी नोटिंग/ड्राफ्टिंग, हिंदी टाइपिंग तथा हिंदी कार्यशाला की सत्रांत परीक्षा आयोजित की जाएगी तथा प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों को क्रमशः एक हजार, छ: सौ व चार सौ रूपये के नकद पुरस्कार दिए जाएंगे।

(2) दिनांक 14 सितम्बर, 2000 को पूरे बल में स्टेशन स्तरीय हिंदी दिवस का मुख्य समारोह आयोजित किया जाएगा।

(3) सभी कार्यालयों में इस्तेमाल की जा रही रबड़ की मोहरें द्विभाषी हैं।

(4) कार्यालयों के सभी बोर्ड द्विभाषी बनाए गए हैं।

(5) फाइलों व रजिस्टरों पर नम्बर व विषयों के नाम द्विभाषी हैं।

(6) गाड़ियों पर नम्बर व यूनिट का नाम द्विभाषी हैं।

(7) सभी कार्यालयों में छुट्टी के आवेदन व स्वीकृति आदेश हिंदी में हैं।

(8) 5 हिंदी अनुवादकों को पुनश्चर्या तथा 2 कार्मिकों को केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो में गहन अनुवाद प्रशिक्षण दिलाया गया है।

(9) बल के 35 कार्मिकों को विभिन्न कार्यालयों द्वारा हिंदी कंप्यूटर प्रशिक्षण के लिए नामित किया गया है।

(10) 38 कार्मिकों को इलैक्ट्रॉनिक टाइपराइटर पर हिंदी टाइपिंग का प्रशिक्षण दिलाया गया है।

(11) महानिदेशालय मुख्यालय में हिंदी कामकाज का प्रत्येक तिमाही में जायजा लिया जाता है।

(12) इस मुख्यालय सहित बल के सभी कार्यालयों में प्रत्येक तिमाही में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकों नियमित रूप से आयोजित की जा रही हैं।



हिंदी में सर्वोत्कृष्ट कार्य करने पर लखनऊ में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर सचिव, स.भा. विभाग भारत सरकार, गृह मंत्रालय, गाजियाबाद द्वारा सहायक उप निरीक्षक *(*मं.*)*बी.सी. पाठक *–136* बटालियन को प्रशस्ति पत्र एवं शील्ड प्रदान करते हुये।

अन्य उपलब्धियां

1. केरल हिंदी प्रचार सभा, तिरूवनंतपुरम द्वारा दिनांक 14 सितम्बर, '99 से 28 सितम्बर, '99 तक चलाये गये, हिंदी पखवाड़ा समारोह में ग्रुप केन्द्र, केरिपु बल पल्लिपुरम के 5 कार्मिकों ने भिन्न-भिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लिया तथा पुरस्कार व प्रमाण पत्र हासिल किए।

2. तिरूवनंतपुरम, नगर भाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा वर्ष 1999 का संयुक्त हिंदी पखवाड़ा मनाया गया तथा दिनांक 6 दिसम्बर, '99 से 10 दिसम्बर '99 तक विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें ग्रुप केन्द्र, पल्लीपुरम का उत्कृष्ट प्रदर्शन रहा और वर्ष 1999 की चल वैजयंती शील्ड प्राप्त की गई।

3. क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, कोचिन एवं बैंगलूर के संयुक्त तत्वाधान में दक्षिण क्षेत्रीय राजभाषा का सम्मेलन, तिरूवनंतपुरम में ग्रुप केन्द्र, केरिपु बल, पल्लीपुरम के मनोरंजन कक्ष में दिनांक 10-11 मार्च, 2000 को आयोजित किया गया। उक्त सम्मेलन में दक्षिण क्षेत्र में स्थित विभिन्न कार्यालयों के प्रमुखों/अध्यक्षों एवं उच्च श्रेणी अधिकारियों ने भाग लिया। दक्षिण क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन आयोजक के मुताबिक काफी सफल रहा।

4. राजभाषा स्वर्ण जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में लिए गए निर्णय के अनुसार ग्रुप केन्द्र पल्लीपुरम, रं.प्र. केन्द्र-3 तथा 105 बटा., द्रु.का. बल द्वारा वर्ष भर संयुक्त रूप से हिंदी व्यवहार प्रतियोगिता, कार्यालयीन कामों की प्रतियोगिता, हिंदी कविता/वाक्

प्रतियोगिता, हिंदी निबंध प्रतियोगिता, (विषय–"हिंदी कल आज और कल") प्रशासनिक शब्दावली/कार्यालयीन कामों से संबंधित प्रबंधों पर प्रतियोगिता तथा हिंदी टंकण प्रतियोगिता (केवल अहिंदी भाषी कार्मिकों के लिए) आयोजित की गयी।



बेस अस्पताल गुवाहाटी के डा. जी.सी. सत्पथी को हिन्दी में लिखी में उनकी पुस्तक भारतीय पुलिस बलों में स्वास्थ्य सेवा के लिए पुरस्कृत करते केंद्रीय मानव संसाधन मंत्री श्री मुरली मनोहर जोशी

5. वर्ष 1999-2000 के वार्षिक-कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में हिंदी प्रयोग में सक्रिय योगदान तथा सतत प्रयासों के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति नीमच (म.प्र.) द्वारा रेंज कार्यालय नीमच तथा 112 बटा. को वर्ष 1999 की प्रथम छः माही व दूसरी छः माही के लिए अलग-अलग चल बैजयंती प्रदान की गई।

6. 1998-99 के दौरान राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए 136 बटा. केरिपु बल को द्वितीय स्थान के लिए चयन किया गया तथा क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (उत्तर) गाजियाबाद द्वारा दिनांक 11 जनवरी, 2000 से 12 जनवरी, 2000 तक सहकारिता भवन लखनऊ में आयोजित राजभाषा सम्मेलन व पुरस्कार वितरण समारोह में स.उ.नि. (मं.) बी.सी. पाठक को प्रशस्ति पत्र व राजभाषा शील्ड प्रदान की गई।

7. वर्ष 1999-2000 के दौरान राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए पूर्वी सेक्टर केरिपु बल कार्यालय को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कलकत्ता द्वारा 25 अप्रैल, 2000 को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

8. वर्ष 1998-99 के दौरान राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए ग्रुप केन्द्र मुजफ्फरपुर का द्वितीय स्थान के लिए चयन किया गया तथा क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्वी क्षेत्र) कलकत्ता द्वारा रवीन्द्र भवन आडिटोरियम, जी.एन.बी. रोड़, गुवाहाटी में दिनांक 19 फरवरी, 2000 को आयोजित समारोह में असम के महामहिम राज्यपाल ले. जनरल श्री एस.के. सिन्हा द्वारा राजभाषा शील्ड व प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

हिंदी प्रेमी
ज्ञानी जैल सिंह

–श्योनाथ सिंह, हिंदी अधिकारी, महानिदेशालय

ज्ञानी जैलसिंह भारत के एक ऐसे महान सपूत निर्भीक व स्वतंत्रा सेनानी थे जो अपने अप्रतिम गुणों के बल पर ही भारत के राष्ट्रपति बने । स्वदेश या विदेश जहां भी वे गए सभी सरकारी व गैरसरकारी कार्यक्रमों में हमेशा हिंदी में बोलो और गौरव का अनुभव करते थे। राष्ट्रपति के पद से मुक्त होने के पश्चात भी वे आजीवन हिंदी की सेवा में समर्पित रहे। राष्ट्रपति के भूतपूर्व विशेषाधिकारी रहे डॉ. परमानंद ने उनके स्वदेश प्रेम व भाषाओं के प्रति अगाध प्रेम से हमें जो अवगत कराया उसके कुछ उदाहरण यहां प्रस्तुत हैं।

12 जून 1986 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित 33वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार वितरण समारोह में ज्ञानी जी ने कहा था–

“जो देश अपनी मां और मातृभाषा का आदर नहीं कर सकता, दुनिया में कोई उसकी इज्जत नहीं करेगा। अपनी मां दूसरे की मां से कितनी भी कम सुन्दर और कम समझदार हो, फिर भी वह अपनी मां है। दूसरे की मां अपनी मां के समान नहीं हो सकती। इसलिए बच्चों को अपनी मां का आदर बढ़ाना चाहिए।” तत्कालीन सूचना और प्रसारण मन्त्री, श्री गाडगिल की अध्यक्षता में पुरस्कार समारोह की सारी कार्यवाही अंग्रेजी में ही चलते रहने पर चुटकी लेते हुए राष्ट्रपति जी ने कहा, “गाडगिल साहब की मातृभाषा मराठी है। महफिलों में अच्छी खासी हिंदी बोलते हैं, तो यह जो सारे समारोह में अंग्रेजी बोली गई, तो क्या दर्शकगण विदेशों से आए हैं? जिन फिल्मों को पुरस्कार दिया जा रहा है, वे प्रायः सभी हिंदी की है। अंग्रेजी की एक प्रतिशत भी नहीं है और विदेशियों को छोड़कर यहां बैठे सभी हिंदी जानते हैं। पता नहीं राष्ट्रीय समारोह का संचालन हमेशा अंग्रेजी में ही क्यों आवश्यक समझा जाता है ?”

वे भारतीय भाषाओं के प्रबल पक्षधर थे और अंग्रेजी के बजाय अपने देश में क्षेत्रीय

भाषाओं के प्रयोग पर बल देते थे। उर्दू के संबंध में उनका कहना था कि उर्दू और हिंदी दोनो का जन्म भारत में हुआ है, दोनों ही भारतीय भाषाएं हैं, जो सारे भारत में समझी जाती है। लिपि को छोड़कर दोनों में ज्यादा अन्तर भी नहीं है। ये दोनों एक दूसरे की पूरक हैं। हमें इन दोनों भाषाओं के विकास के लिए कदम उठाने चाहिए। यह भूल होगी यदि इनमें से किसी एक की भी उपेक्षा हो । उनका कहना था कि किसी भी भाषा को किसी धर्म विशेष के साथ जोड़ना ठीक नहीं है।

हिंदी के प्रयोग पर बल देते हुए राजभाषा विभाग द्वारा 29 जनवरी, 1987 को आयोजित एक समारोह में उन्होंने कहा था, हिंदी से किसी भी भारत की भाषा का कोई टकराव नहीं है और किसी भी क्षेत्रीय भाषा की कीमत पर इसका विकास नहीं किया जा सकता। वे विश्वविद्यालयों में ज्ञान विज्ञान की उच्च शिक्षा भी हिंदी और भारतीय भाषाओं में देने के पक्षधर थे।

उनका कहना था कि विश्वविद्यालयों को डाक्टर, इंजीनियर और अन्य तकनीशियन अपनी क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से ही तैयार करने चाहिए न कि अंग्रेजी के। पूणे विश्वविद्यालय में दीक्षान्त भाषण देते हुए उन्होंने कहा था–

“जब रूस, चीन और जर्मनी तक ऐसे विशेषज्ञ अपनी भाषा में तैयार कर सकते हैं, तो फिर हम क्यों नहीं ? अन्तरिक्ष में अगर अंग्रेजी बोलने वाले अमरीकी गए हैं, तो रूसियों ने भी बिना अंग्रेजी के सहारे यह सफलता हासिल की है। हम भारतीयों को भी हिंदी के प्रति अपनी कुण्ठा की भावना को त्याग देना चाहिए और हिंदी माध्यम को खुले आम दिल से अपनाना चाहिए।

पूणे विश्वविद्यालय में घटी एक रोचक घटना का उल्लेख करना भी यहां अप्रासंगिक न होगा। मुझे याद है कि राष्ट्रपति महोदय यहां अपनी दीक्षान्त भाषण अंग्रेजी में ही देने वाले थे और उसी प्रतियां भी अंग्रेजी में तैयार कर ली गई थी, परन्तु राष्ट्रभाषा की उपेक्षा के प्रति उनका स्वाभिमान विद्रोह कर उठा और उन्होंने ऐन मौके पर अपना भाषण पूर्णतः अलिखित रूप में हिंदी में ही दिया। इस पांडित्य पूर्ण भाषण को सुनकर सभी अवाक रह गए।

पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में 31 मार्च 1985 के अपने दीक्षांत भाषण में तो उन्होंने अपने दिल को खोलकर रख दिया। अंग्रेजी में सारी कार्यवाही चलते देखकर उन्होंने कहा –

“आज यहां की सारी कार्यवाही अक्षर-अक्षर अंग्रेजी में हो रही है। लेकिन मैंने हिंदी में अपना भाषण दिया। मैं भी इंगलिश में लिखित भाषण दो-चार दफे दबादब पढ़ देता, तो भी गुजारा हो सकता था लेकिन मैंने वह नहीं किया और शायद मेरी इस बात को लिए गुस्ताखी नहीं समझेंगे। हमें अपनी क्षेत्रीय भाषाओं को भी बढ़ावा देना चाहिए और हमारी तो “ओफ्शियल लेंगुएज” हिंदी है, उसको भी सारे भारत में सम्मान मिलना चाहिए। मेरी यह समझ से दूर है कि 37 साल के बाद अब तक हम इंजिनीयर नहीं बन सकते इंगलिश के बगैर। हम डाक्टर नहीं बन सकते। हम साइंसदान नहीं बन सकते। दुनिया में जो जर्मनी देश है, वहां जर्मन भाषा में हर मजमून के विशेषज्ञ

हैं। रूस और चीन में भी हैं इन के अलावा जापान और फ्रांस जैसे छोटे देशों में भी हैं, तो भारत में क्यों नहीं? मैं अंग्रेजी के खिलाफ् नहीं हूं। हमारे संविधान ने हमको 15 साल के लिए कहा था, फिर हमें समय बढ़ाना पड़ा। अभी भी बढ़ायेंगे। समय तो बढ़ाना पड़ेगा, लेकिन ये जो हमारे गुरू और प्रोफेसर यहां बैठे हैं, इनसे मैं यह प्रार्थना करता हूं कि हमें गुलामी की निशानियों से कब निजात दिलाओगे और क्या हमने गुलामी की निशानी को अपने माथे पर दाग न समझते हुए तिलक समझ रखा है? इसको मिटाना होगा।"

राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह की हिंदी के प्रति आस्था अडिग थी। एक बार भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली के एक छात्र श्री श्याम रूद्र पाठक इंजिनीयरी का कोई शोध पत्र हिंदी माध्यम से देना चाहते थे, किन्तु संस्थान ने उसे अनुमति नहीं दी। इसे लेकर समाचारपत्रों में बड़ा हंगामा मचा। राष्ट्रपति जी को जब इसकी सूचना मिली तो उन्होंने श्री पाठक को अपने पास बुलाया और उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा कि जो काम आप कर रहे हैं, वह आदर्श कार्य है। इसके लिए अधिक प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

वे अक्सर हिंदी की हिमायत लेते देखे जा सकते थे। ऐसी एक घटना तब हुई जब वे ताज-होटल में कुछ उद्यमियों को उनके श्रेष्ठ कार्यों के लिए राष्ट्रीय एकता पुरस्कार से सम्मानित कर रहे थे। श्री हरि कृष्ण शास्त्री (स्व. लाल बहादुर शास्त्री के पुत्र) ने भी अपना भाषण अंग्रेजी में दिया, तो महामहिम ने पूछा कि क्या मजबूरी है जो आप भी यहां अंग्रेजी में भाषण कर रहे हैं ? इसके बाद उस समारोह में धन्यवाद प्रस्ताव अंग्रेजी के स्थान पर केवल हिंदी में ही हुआ।

उन्होंने अपनी इस परम्परा को उस समय भी नहीं तोड़ा जब महारानी ऐलिजाबेथ द्वितीय इस देश की दूसरी यात्रा पर आई थी। राष्ट्रपति भवन में राजकीय भोज के अवसर पर उनके सम्मान में ज्ञानी जी ने हिंदी में ही भाषण दिया। यह पहला अवसर था जबकि भारत के राष्ट्रपति संसद के दोनों सदनों के समक्ष वे अपना अभिभाषण मूल रूप से हिंदी में ही देते थे, जिसे अंग्रेजी में उपराष्ट्रपति द्वारा पढ़ा जाता था।

राष्ट्रपति भवन में उन दिनों यह प्रथा थी कि जब किसी देश का कोई राजदूत या उच्चायुक्त अपना प्रत्यय-पत्र राष्ट्रपति जी को प्रस्तुत करता था, तो उसे स्वीकार करते हुए राष्ट्रपति जी भारत की ओर से उसे दिए जाने वाले पत्र को स्वयं हिंदी में ही पढ़ते थे। सम्भवतः अब इसे पढ़ने की प्रथा नहीं रही है।

एक बड़ी रोचक घटना उस समय घटी, जब तत्कालीन सोवियत संघ के राजनेता श्री गोर्बाचव भारत की यात्रा पर आए। राष्ट्रपति भवन में एक विशेष बैठक में गोर्बाचव ने अपना भाषण रूसी भाषा में दिया तो राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह ने हिंदी में ही अपने विचार व्यक्त किए। जैसे ही बैठक समाप्त हुई, रूसी दूतावास के एक अधिकारी मेरे पास आए और उन्होंने राष्ट्रपति के भाषण की एक प्रति मुझ से मांगी। मैंने कहा कि वह तो हिंदी में है। तो उसने कहा, हां मुझे वही हिंदी प्रति चाहिए। मैं उसे तुरन्त मास्को को फ्लेश करना चाहता हूं। वही मौलिक है। इस से हिंदी की मौलिकता और

उसकी अन्तराष्ट्रीय मान्यता के पहली बार दर्शन हुए। प्रसिद्ध पत्रकार श्री राजेन्द्र अवस्थी ने इस सम्बंध में एक और भी रोचक बात कही। उन्होंने ज्ञानी जी से पूछा – "राजीव जी से आप ने कहा कि वे भी हिंदी बोलें, वैसे बोलते तो हैं, लेकिन ....? ज्ञानी जी ने बताया –

"राजीव से कह दिया था गोर्बाचव के सामने आपने अंग्रेजी में तकरीर क्यों की? आपको हिंदी में करनी थी। गोर्बाचव रूसी में बोले थे।"

अंग्रेजी के अनावश्यक बढ़ते प्रयोग से ज्ञानी जी बड़े खिन्न थे। इसे स्वीकार करते हुए एक बार उन्होंने एक पत्रकार से कहा था। मुश्किल तो यह है कि अंग्रेजी बढ़ रही है। खुशहाल तबके के लड़के, लड़कियां पब्लिक स्कूलों में जाते है। अंग्रेजी बढ़ेगी नहीं तो क्या होगा? ये ही लोग तो सब कुछ नहीं है। हिन्दुस्तान यही नहीं है, "हिन्दुस्तान यानी–हिंदी।"

इस प्रकार वे हिंदी में राष्ट्रीय अस्मिता का स्वरूप देखते थे।

राष्ट्रपति पद से सेवा निवृत होने के बाद भी हिंदी के प्रति उनके प्रेम में कोई कमी नहीं आई। वे हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के वार्षिक अधिवेशन में भाषण देने के लिए इलाहाबाद भी गए। हिंदी साहित्य सम्मेलन ने उनके सम्मान में हिंदी सहित भारत की 10 भाषाओं में एक अभिनन्दन ग्रन्थ भी निकाला था। हिंदी और भारतीय भाषाओं के प्रति उनकी गहरी निष्ठा का सब से बड़ा प्रमाण वह अभूत-पूर्व घटना है जब वे संघ लोक सेवा आयोग के बाहर भारतीय भाषाओं के लिए धरना दे रहे युवकों की मांग के समर्थन में धरने पर बैठ गए। यह थी हिंदी और भारतीय भाषाओं के प्रति उनकी सच्ची निष्ठा और उनका दिली-प्रेम।

इस प्रकार राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह जी ने भारतीय जन मानस में अपने देश की भाषा के प्रति श्रद्धा और सम्मान जागृत करने में जो अभूतपूर्व योगदान दिया था वह सदा अविस्मरणीय रहेगा। भारतीय भाषाओं और हिंदी के इतने हिमायती होने के कारण उनके जन्म दिवस 5 मई को "भारतीय भाषा दिवस" के रूप में मानने की परम्परा भी चल पड़ी थी। आशा है कि इसे बनाए रखा जाएगा।

संकल्प

राजभाषा के संबंधित संसद द्वारा पारित निम्नलिखित संकल्प आम जानकारी के लिए प्रस्तुत है :–

जबकि संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी रहेगी और उसके अनुच्छेद 351 के अनुसार हिंदी भाषा की प्रसार-वृद्धि करना और उसका विकास करना ताकि वह भारत के समाज तथा संस्कृति के सब तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम हो सके, संघ का कर्तव्य है, यह सभा संकल्प करती है कि हिंदी के प्रसार

एवं विकास को गति बढ़ाने हेतु तथा संघ के विभिन्न राजकीय प्रयोजनों के लिए उत्तरोत्तर इसके प्रयोग के हेतु भारत सरकार द्वारा एक अधिक गहन एवं व्यापक कार्यक्रम तैयार किया जाएगा और उसे कार्यान्वित किया जाएगा और किये जाने वाले उपायों एवं की जाने वाली प्रगति की विस्तृत वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट संसद की दोनों सभाओं के पटल पर रखी जाएगी, और सब राज्य सरकारों को भेजी जायेगी।

जबकि संविधान की आठवीं अनुसूची में हिंदी के अतिरिक्त भारत की 14 मुख्य भाषाओं का उल्लेख किया गया है, और देश की शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि इन भाषाओं के पूर्ण विकास हेतु सामूहिक उपाय किये जाने चाहिए।

यह सभा संकल्प करती है कि हिंदी के साथ-साथ इन सब भाषाओं के समन्वित विकास के हेतु भारत सरकार द्वारा राज्य सरकारों के सहयोग से एक कार्यक्रम तैयार किया जायेगा और उसे कार्यान्वित किया जाएगा, ताकि वे शीघ्र समृद्ध हों और आधुनिक ज्ञान के संचार का प्रभावी माध्यम बनें।

जबकि एकता की भावना के संवर्धन तथा देश के विभिन्न भागों मे जनता में संचार की सुविधा के हेतु यह आवश्यक है कि भारत सरकार द्वारा राज्य सरकारों के परामर्श से तैयार किये त्रैभाषा सूत्र को सभी राज्यों में पूर्णतः कार्यान्वित करने के लिए प्रभावी उपाय किये जाने चाहिए।

और जबकि यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि संघ की लोक सेवाओं के विषय में देश के विभिन्न भागों के लोगों के न्यायोचित दावों और हितों का पूर्ण परित्राण किया जाए।

यह सभा संकल्प करती है :–

(क) कि उन विशेष सेवाओं अथवा पदों को छोड़ कर जिनके लिए ऐसी किसी सेवा अथवा पद के कर्तव्यों के संतोषजनक निष्पादन के हेतु केवल अंग्रेजी अथवा केवल हिंदी अथवा दोनो जैसी कि स्थिति हो, का उच्च स्तर का ज्ञान आवश्यक समझा जाए संघ सेवाओं अथवा पदों के लिए भर्ती करने के हेतु उम्मीदवारों के चयन के समय हिंदी अथवा अंग्रेजी में से किसी एक का ज्ञान अनिवार्यतः अपेक्षित होगा, और

(ख) कि परीक्षाओं की भावी योजना, प्रक्रिया सम्बन्धी पहलुओं एवं समय के विषय में संघ लोक आयोग के विचार जानने के पश्चात अखिल भारतीय एवं उच्चतर केन्द्रीय सेवाओं सम्बन्धी परीक्षाओं के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित सभी भाषाओं तथा अंग्रेजी को वैकल्पिक माध्यम के रूप में रखने की अनुमति होगी।

राजभाषा नियम

1. शाखा/विभाग में आये प्रत्येक हिंदी पत्र का उत्तर हिंदी में ही दिया जाना चाहिये।
2. कार्यालय द्वारा “क” एवं “ख” क्षेत्रों को शतप्रतिशत पत्र हिंदी में ही लिखे जाने चाहिए।
3. कम से कम 60 प्रतिशत चेक व तार हिंदी में भेजे जाने चाहिये।
4. कार्यालय के सभी साइनबोर्ड व नाम पट्ट द्विभाषी तैयार किये जाने चाहिये।
5. सभी प्रपत्र (फार्म) व परिपत्र (सर्कुलर) द्विभाषी अर्थात् हिंदी तथा अंग्रेजी में ही तैयार किये जाने चाहिये।
6. निम्नलिखित कागजातों में हिंदी तथा अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाना चाहिए :–

    1. संकल्प (रिज़ोल्यूशन्स)
    2. सामान्य आदेश (जनरल आर्डर्स)
    3. नियम (रूल्स)
    4. अधिसूचना (नोटीफिकेशन्स)
    5. परिपत्र (सर्कुलर)
    6. प्रेस विज्ञप्तियां
    7. संविदा (कान्ट्रेक्ट्स)
    8. करार (एग्रीमेन्ट)
    9. लाइसेंस
    10. परमिट
    11. टेण्डर मंगाने के नोटिस और
    12. प्रशासनिक या अन्य रिपोर्ट (एडमिनिस्ट्रेटिव व अन्य रिपोर्ट),

7. सभी रबर की मोहरें (स्टेप) द्विभाषी अर्थात् हिंदी तथा अंग्रेजी में ही बनाई जानी चाहिये।
8. रजिस्टरों के शीर्षनाम हिंदी तथा अंग्रेजी में लिखने चाहिये।
9. लिफाफों पर पते हिंदी में लिखे जाने चाहिये।
10. सम्मेलनों की बैठकों के नामपट्ट द्विभाषी रूप में तैयार किये जाने चाहिये।
11. प्रत्येक शाखा की राजभाषा उपसमिति की बैठक प्रत्येक तिमाही में करके उसका कार्यवृत तैयार करना चाहिये।
12. हिंदी के कार्यान्वयन की जिम्मेदारी शाखा/विभाग के प्रमुख की ही होती है। उन्हें इन कार्यों में विशेष रूचि लेनी चाहिये।

भगवान और केरिपु बल उनके साथ था

–नंदिनी आर.अय्यर

अमरनाथ यात्रा के दौरान 1 अगस्त, 2000 को यात्रियों के एक पड़ाव पर आतंकवादियों द्वारा किए गए हमले के दौरान केरिपु बल जवानों की सतर्कता ने कई तीर्थ यात्रियों की जान बचाई। इस संबंध में भुक्तभोगी तीर्थ यात्रियों के बयान कई अखबारों में भी छपे, जिनमें उन्होंने केरिपु बल जवानों की हिम्मत और कार्यकुशलता की भरपूर प्रशंसा की। दी स्टेट्समैन अखबार में छपे कुछ ऐसे ही संस्मरणों के कुछ अंश हम यहां दे रहे हैं। –संपादक

नई दिल्ली का रेलवे स्टेशन तब "बम बम भोले, ... सी.आर.पी.एफ. जिंदाबाद, भारतीय सेना जिंदाबाद के नारों से गूंज उठा, जब आतंकवादियों की गोलीबारी से बचे तीर्थयात्रियों को ले कर एक स्पेशल रेल गाड़ी नई दिल्ली स्टेशन पहुंची। पहलगाम में पाकिस्तान समर्थक आतंकवादियों की गोलीबारी में 32 व्यक्ति मारे गये।

रेलगाड़ी से उतरते ही यात्रियों ने पत्रकारों को देख कर शोर मचाना शुरू कर दिया। .... वे चीख चीख कर कह रहे थे कि हमे मौत के मुंह से बचाने का श्रेय केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को जाता है।

एक यात्री भीड़ में से चिल्लाता है, "मैं बताता हूं आप को मैं वहां था।" रायकवाड का मौत से सीधा सीधा सामना हुआ था।

गोलीबारी शुरू होने के कुछ ही पल पहले वह उसी स्थान पर था। "मैं वहां अपने परिवार के साथ गया था और हम लोग प्राकृतिक नजारों का आनंद लेने के लिए कुछ ही पल पहले कैम्प से निकले थे। हम सभी एक टाटा सूमो में थे। अभी हम एक मोड़ से मुड़े ही थे कि हमें गोलियों के एक ब्रस्ट की आवाज सुनायी दी। उसके बाद कुछ नहीं। और उसके बाद फिर गोलीबारी शुरू हो गयी। हम समझ गये थे हम गोलीबारी के बीच फंसने वाले हैं।"

रायकवाड याद करते हुए बताते हैं कि अगर हम दो सैकंड भी देर से निकलते तो शायद मैं और मेरे परिवार का हर सदस्य मर चुका होता।

एक अन्य यात्री जुगल किशोर मेहता कहते हैं, "करीब 25 आदमी घटना स्थल पर ही मारे गये। मेरे परिवार ने अपने हाथ धोए ही थे, और हम लोगों ने भोजन शुरू किया ही था। भोजन लंगर द्वारा परोसा जा रहा था। अचानक चारों तरफ से गोलियां चलने लगी। एक गोली तो मेरे कान के पास से गुजरी।"

रेलवे के एक कर्मचारी पूरन चंद शर्मा कहते हैं, "इस गोलीबारी में इतने लोग केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के तुरंत हरकत में आ जाने के कारण ही बच पाए।"

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि जब गोलीबारी शुरू हुयी, तो के.रि.पु. बल के जवान हमें चिल्ला चिल्ला कर जमीन पर लेट जाने के लिए कहने लगे। वे चिल्ला रहे थे। हिट दि ग्राउंड, जमीन पर गिर जाओ, जमीन पर लेट जाओ। केरिपु बल का हर जवान यह संदेश अपनी अपनी मातृभाषा में दे रहा था, ताकि अगर किसी को हिंदी न आती हो तो वो भी उनकी बात समझ सके। वे दक्षिण भारतीय भाषाओं में, मराठी में, बंगाली में चिल्ला रहे थे।"

अमरनाथ यात्रा के एक अन्य यात्री ने बताया कि, "एक दम सन्नाटा छा गया था। तब सन्नाटे को चीरती हुयी एक जवान की आवाज सुनायी दी। वह कह रहा था कि हमें जमीन से चिपके हुए रेंगते रेंगते सुरक्षित स्थान की ओर बढ़ना है। अभी वह बोल ही रहा था कि फायरिंग फिर शुरू हो गयी। और जब हम रेंग रहे थे, तब वे आतंकवादियों को हम से दूर रख रहे थे।"

घटनाक्रम के बारे में एक अन्य रेलवे कर्मी अशोक कुमार बताते हैं, "बारिश अभी कुछ देर पहले ही तो थमी थी। जमीन फिसलन भरी थी। और हम लोग भोजन शुरू करने ही वाले थे, कि गोलियां चलना शुरू हो गयी।

"उस वक्त वहां भगदड़ सी मच गयी। लोग शरण लेने के लिए जिधर मुंह आया भाग रहे थे। हर कोई जल्दी जल्दी से गोलीबारी की जद से निकल जाना चाहता था। हमारे चारो तरफ लोग मर रहे थे।"

कुमार का क्रोध अभी शांत नहीं हुआ। "एक युवा महिला की गोद से उस का छः महीने का बच्चा गिर गया। घबराहट में वह फिर भी भागे जा रही थी, जब उसने पीछे से बच्चे के रोने की आवाज सुनी तो वह पलट कर उसकी तरफ भागी तो एक गोली का शिकार हो गयी। मुझे नहीं पता कि वह बची या नहीं। क्योंकि तब मैं भी भाग रहा था।"

हालांकि सभी यात्री अपने सकुशल बच जाने के लिए ईश्वर को धन्यवाद दे रहे थे मगर जब जयपुर की शांति देवी से पूछा गया कि क्या वे फिर अमरनाथ यात्रा पर जाएंगी? क्योंकि अभी उन्हें दर्शन नहीं हुए हैं। तो उनका जवाब था - नहीं अब तो मैं प्रभु को अपने दिल में ही पूज लूंगी।"

इस गोलीबारी के पीछे हिजबुल मुजाहिद्दीन और लश्करे-ए-तोएबा का हाथ होने का संदेह है।

दी स्टेट्समैन (दिनांक 25 अगस्त, 2000) से साभार।

संस्मरण

अपुरस्कृत बलिदान

-मक्खन सिंह कठैत, निरीक्षक/हे.अ. ग्रुप केन्द्र, नागपुर

नवम्बर, 1974 में 60 बटालियन के पश्चिम बंगाल से अरूणाचल प्रदेश में एम.पी.एस.ए.एफ. बटालियन की बदली करने के लिए आदेश मिलने पर हम विशेष रेलगाड़ी से तिनसुकिया पहुंचे और वहां से आगे पानीतोला में रियर मुख्यालय स्थापित करके 2 कम्पनियां अनीनी एवं एक-एक कम्पन क्रमशः नामसाई, रोईंग, हयुलियांग एवं वालोंग के लिए हेलिकॉप्टर एवं सड़क के रास्ते रवाना की गई।

मेरी कम्पनी वालोंग पहुंची तथा वहीं पर लोहित (आगे चल कर ब्रह्मपुत्र) नदी के किनारे बनी हवाई पट्टी से करीब 100 गज ऊपर कम्पनी मुख्यालय स्थापित किया गया। प्लाटूनों को आगे भारत-चीन सीमा की संवेदनशील चौकी थापा, किवथू, डिव्चू और इससे भी आगे करीब 12-13 हजार फीट की ऊंचाई पर भारत-चीन-बर्मा सीमा पर स्थित हॉट्स्प्रिंग एवं जेचप चौकियों पर तैनात करने से पूर्व जलवायु का अभ्यस्त बनाने के लिए कुछ दिन रोका गया। इस स्थान के बारे में ज्ञात हुआ कि सन् 1962 के भारत-चीन युद्ध में ऊंचे पहाड़ों से घिरे और नदी के तट पर संकरे "इंडिया गेट" नामक स्थान से चीनियों ने भारतीय सैनिकों को घेर कर धोखे से "सीज फायर" (युद्ध समाप्ति का बिगुल बजाया था। हमारे सैनिकों के बंकरों से बाहर आते ही उन पर चारों ओर से गोलियों की बौछार की गई। वे भारी संख्या में हताहत हुए तथा चीनी सैनिकों के भारी सफलता मिली।

वालोंग में कुछ दिन रूकने के बाद कम्पनी की 8वीं प्लॉटून को चीन-बर्मा के सीमा से लगे सबसे आगे की हॉटस्प्रिंग और "डिच्चू" पोस्टों पर तैनात किया गया और 9वीं प्लॉटून को "थापा" तथा "किवथू" पोस्टों पर तैनात किया गया। दिसम्बर, 74 और जनवरी, 75 के मध्य तक एम.पी.एस.ए.एफ. से सभी चौकियों को चार्ज में ले लिया गया और सामान्य रूप से कार्य होने लगा।

इन चौकियों में कुछ के समीप तो "एयर ड्रापिंग जोन" थे और उन्हें एडीएसटी मोहनवाड़ी (आसाम) द्वारा उनकी मांग के अनुरूप "एयर ड्रापिंग" से रसद आदि पहुंचाई जाती थी और कुछ को इन्हीं पोस्टों से रसद पहुंचाई जाती थी।

प्लॉटूनों के अपनी-अपनी चौकियों पर स्थापित हो जाने के बाद उनका कम्पनी मुख्यालय से डाक, दैनिक जरूरत का कैण्टीन सामान लेने और छुट्टी/ड्यूटी/कोर्स आदि पर जाने के लिए कार्मिकों का आना-जाना शुरू हो गया। जिन जवानों के वेतन-भत्तों में से उनके परिजनों को मनिआर्डर भेजे जाते थे। उनका लेखा-जोखा मुझे कम्पनी लिपिक के नाते करना पड़ता था। उनके बारे में पूछ-ताछ करने और संचालन आदेश में आमद-रवानगी दर्ज कराने के लिए मेरी भेंट आते-जाते सभी से हो जाती थी।

22 फरवरी, 1975 को सिपाही रामदेव और सिपाही प्रकाशचन्द जो हॉटस्प्रिंग से डाक लेकर आए थे, सुबह-सबेरे लगभग 6 बजे वापस जाने के लिए अपने निजी हथियार, गोली-बारूद, बीच के पड़ावों के लिए रसद एवं अंतिम रसद प्रमाण पत्र/

डाक व अन्य आवश्यक सामान के साथ चलने लगे तो सिपाही रामदेव ने बन्द मुट्ठी में से मेरे हाथ पर टाफियां रखते हुए हाथ मिलाया और अच्छा बाबू जी अलविदा, फिर मिलेंगे कहकर गंतव्य के लिए रवाना हो गए।

उन्होंने "डिच्चू" चौकी तक के 3 दिन के सफर को बिना रूके और विश्राम के एक दिन में ही तय कर लिया। दूसरी सुबह डिच्चू से चलकर दुर्गम पहाड़ियों और बर्फीले रास्तों से तीन दिन के सफर को जी तोड़ मेहनत से एक ही दिन में पूरा किया। रास्ते में सिपाही प्रकाशचन्द के ज्यादा थकान के मारे हिम्मत हार जाने पर सिपाही रामदेव ने उसका सामान/हथियार आदि भी स्वयं ही उठा लिया और गिरते-पड़ते वे रात 9-10 बजे अपनी दुर्गम और संवेदनशील चौकी "हॉटस्प्रिंग" पहुंचे। रात किसी तरह बीत गई।

दूसरे दिन से ही सिपाही रामदेव के शरीर में अजीब बदलाव आया। वह गर्मी महसूस करने लगा और बैरक से निकलकर ऊपर पहाड़ी की तरफ दौड़ने और बर्फ पर लोटने लगा। अपने कपड़े भी फाड़ने लगा। उसे किसी तरह बलपूर्वक वापस बैरक में बांस से निर्मित चारपाई पर लिटाया गया और पहरेदारी भी बिठा दी गई। इसी बीच चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने के लिए कम्पनी एवं बटालियन मुख्यालय तेजू को बेतार सन्देश भेजे गए, परन्तु न तो दवा-दारू आई और ना ही रोगी को लेने कोई हेलिकॉप्टर पहुंचा। अन्ततः 25 फरवरी की सुबह मृत्यु ने उसे अपने आगोश में ले लिया। कम्पनी और बटालियन को इस मृत्यु से गहरा आघात पहुंचा। सभी को इस बात का मलाल था कि काश समय पर चिकित्सा सहायता पहुंच पाती।

अब शव परीक्षा की औपचारिकताएं पूरी करने के बाद अन्तिम संस्कार किया जाना था। इसके लिए 4 मार्च को युनिट के डॉक्टर हेलिकॉप्टर से कम्पनी मुख्यालय वालोंग पहुंचे। 5 तारीख की सुबह ओ.सी. डॉक्टर, 2 अन्य जवान, एक गाइड, और कुछ पोर्टरों (सामान ढोनेवालों) के साथ घटना स्थल के लिए रवाना हुए। रास्ता इतना जोखिम भरा था कि कहीं पर चट्टान पर लटकी तार की सीढ़ी पार करनी थी तो कहीं पर पेड़ की जड़ों के सहारे चढ़ना था तारों के झूला पुल भी इतने ऊंचे और संकरें कि उन्हें पार करते हुए व्यक्ति की रूह कांप जाएं। कदम-कदम पर जोखिम। जरा चूके और शरीर नदी/नाले में चकनाचूर। हम भी रास्ते के एक पड़ाव को छोड़कर पहले दिन सीधे थापा और अगले दिन "डिच्चू" पहुंचे। 7 मार्च, 75 की सुबह आगे के लिए रवान हुए। पहले पड़ाव पर रात्रि भोजन के बाद विश्राम किया। इसी रात को बहुत अधिक बर्फ गिर जाने के कारण मार्ग अवरूद्ध है गया और पोर्टरों ने भी आगे जाने से इनका कर दिया। चूंकि उस पड़ाव से पीछे हटने के लिए भी मार्ग अवरूद्ध था, इसलिए मार्च को वहीं रूकना पड़ा। 9 मार्च को कुछ बारिश होने से बर्फ पिघली और हम वापर "डिच्चू" आ गए और वहीं पर रास्ते की बर्फ पिघलने का इन्तजार करते रहे। उस चौकी के लिए राशन ड्रापिंग समय पर न होने के कारण वहां पर नमक, चायपत्ती और आटे जैसी बुनियादी वस्तुओं का अभाव था। स्थानीय लोगों की पनचक्कियों पर चावल पीसक रोटियां बनाई जाती। नमक और चाय पत्ती सेना के

लोगों से मांग पर लानी पड़ती चाय की पत्ती को बार-बार उबाल करके उसे छान कर अगली बार के लिए रख लिया जाता। इन परिस्थितियों में भारत-चीन की इस अत्याधिक संवेदनशील चौकी पर डटे कार्मिकों के हौसलों को बरबस नमन करना पड़ा। लगभग एक सप्ताह नीचे रूकन के बाद मार्ग की बर्फ कुछ-कुछ पिघली। हम पुनः 15 मार्च को गन्तव्य के लिए रवान हुए। अगले दिन सुबह जब हम दूसरे पड़ाव के लिए अग्रसर थे, तभी हम में से एक हरियाणा निवासी जवान जोश में तेजी से आगे-आगे चला गया। उसे जहां-तहां सफे बर्फ के ढेर के ढेर बिखरे दिखाई पड़े। उसने छूकर देखा तो बर्फ मक्खन जैसे कोमल लगी। उसका मन खाने के लिए ललचाया और कई दिनों के भूखे इन्सान की तरह वह ताबड़तोड़ उसे खाने पर जुट गया। सुबह से खाली पेट होने और उस पर बर्फ खा लेने के कारण वह थोड़ी देर चलने के बाद ही गश खाकर औंधे मुंह गिर गया। हम उसकी यह हालत देख कर सकपका गए। उसे पीठपर लादकर नजदीकी पड़ाव (निरीक्षण भवन) में ले गए। गर्म चाय का एक मग पिलाने के बाद उसे स्लीपिंग बैग सोने के लिए दिया, परन्तु उसे इसके प्रयोग की जानकारी न होने से उसने पैरों की तरफ सिर घुसा दिया और फिर दम घुटने की स्थिति बन गई।



हॉटस्प्रिंग्ज स्थित शहीद स्मारक

सफर के अन्तिम दिन 17 मार्च, 75 को चौकी के जवान काफी दूर तक चलकर हमें लेने आए। पगडंडी के इर्द-गिर्द बर्फ से आच्छादित पेड़ पौधों के मध्य गुफाओं में चाय नाश्ते की व्यवस्था की गई थी। साथ ही वे बर्फ से बचने के लिए जूते, दस्ताने, गोगल्स आदि जरूरी सामान भी लेकर आए थे। करीब 11-12 बजे हम लोग हॉटस्प्रिंग पहुंचे। सर्व प्रथम शव परीक्षण और प्राथमिक जांच की औपचारिकता पूरी करने के बाद कैम्प से करीब डेढ़ फलांग की दूरी पर कर्तव्यनिष्ठ, सहृदय और जीवट के धनी इस जवान को पूरे पुलिस सम्मान के साथ अन्तिम विदाई दी गई। उसके पश्चात सभी

ने गंधकयुक्त गर्म पानी (इसीसे इस जगह का नाम हॉटस्प्रिंग पड़ा) के उद्गम पर स्नान किया। यह भी एक अनूठा अनुभव था। बर्फीली चोटी पर जहां ठण्ड के मारे कपड़े उतारने को मन नहीं होता था, वहीं पानी में उतरने के बाद बाहर आने को मन नहीं कर रहा था।

अगले दिन फूल चुनने और चौकी पर उपस्थित सी.आर.पी. एवं आई.बी. के लोगों से विदाई लेकर हम वापस लौट पड़े। उस शहीद की विधवा पत्नी और 2 मासूम बच्चों को उनके पति और पिता के "फूलों' के साथ कम्पनी के लोगों द्वारा एकत्रित की गई बहुत ही छोटी रकम भेजी जा सकी। कदाचित कोई पेंशन, नौकरी व अन्य सरकारी गैर सरकारी इमदाद भी उन्हें नहीं मिली जैसी की आज मिल रही है।

लगभग 12000 फुट की ऊंचाई पर स्थित भारत-चीन सीमा की अति संवेदनशील चौकी हॉटस्प्रिंग में कर्तव्य की बलिवेदी पर इस राजस्थानी जाबांज सिपाही रामदेव द्वारा किया गया बलिदान अपुरस्कृत ही रहा। हालांकि पुण्य आत्माएं "अच्छा है कुछ ले जाने से देकर ही कुछ जाना" की उक्ति को ही चरितार्थ करती हैं, फिर भी 25 वर्ष बाद आज भी यदि हम उनके परिवार की सुध-बुध ले पाएं तो दिवंगत आत्मा के प्रति यही सच्ची श्रद्धांजली होगी।

कविताएं

छुट्टी योजना का साकार होना

बल के सदस्यों का
आप्स एरिया से छुट्टी जाना
योजना के सपनों का साकार होना
कारगिल युद्ध के समान ही
अकस्मात्, अनिश्चित व कठिन कार्य होता है।

सबसे पहले लीव ड्यू
उसके बाद अप्लाई फयू
स्वीकृति, चार्ज लेने, देने, लीव प्रमाण पत्र व वारंट तुड़ाना
सम्भव हुआ तो ट्रेन चुन कर रिजर्वेशन लेना
नहीं तो अनिश्चितता में ट्रेन पकड़ने की कशमकश

मेरे अपने ही हाल के अनुभव पर एक छंद
बोकॉजान से चले तो फाटक बंद
अचानक बरसात व घर के ख्यालात
हर सदस्य व प्रियजन के प्रति उमड़ती असीम चाहें
मन करता रहा कि अम्बर ले जायें

साधनों की सीमितता, बजट की मजबूरियां
तोहफों की खरीद में अड़चन होते हुए भी
बेशकीमती प्यार व असीम स्नेह से
दूर हो पाती है सभी कठिनाइयां
लड़की के लिए कोई सूट
लड़के के लिए एक बूट
पत्नी के लिये कुछ कुछ खास
ऐसे ख्यालातों में लगते हैं बिल्कुल पास
क्योंकि वो सभी करते होंगे कुछ आस

छुट्टी जाते समय जज्बाती सफर
रास्ते के अनेकों अनुभव व नये सीन
एकाकीपन व भावुकता में बहता मन
रेल का लेट होना, बेसब्री व इन्तजार की घड़ियां
दीमापुर से पकड़ी रात की राजधानी
सामान, पैकिंग व पीने का पानी
लगडिंग से सुरक्षित भाव व सीटों पर अधिकार
जब वहां से न हुआ कोई यात्री सवार
सुबह सुबह बैरा आया तो मिली चाय
बाहर देखा तो मिली मुगलसराय
ट्रेन काफी लेट थी पर क्या करें हाय
छुक छुक ..... कुछ कुछ .....
मैने नजदीक से देखे ट्रेन में
छुट्टी जाते हुये अफसर व जवान
दो सहयात्री एक जैसी मानसिक भावना में

ट्रेन की असाधारण देरी से चिन्तित
दोनों ही बराबर लग रहे थे उद्वेलित
एक सोने की असमय अनावश्यक चेष्टा में
दूसरा अपनी भावनाओं को नावल पढ़कर बिताते हुए

एक के मन में थी राजकुमारी
दूसरे के मन में सरोज
दोनों की बातों में एक अनमोल अनुभूति छिपी थी
हर पति व पिता के चिन्तन का विषय था
जो दर्शा रहा था उनका समर्पण व प्यार

दोनों लगते थे यूं सफर में मशगूल
हजारों प्लानें थी मन में संजोये
चंद दिनों की छुट्टी में हजारों अरमान
परिवार से मिलने को आतुर श्रद्धा के फूल

अंत में यूं किया छुपी भावना का इजहार
एक ने लिए बच्चों के लिए
दो अदद खरगोश
दूसरे ने एक किलो इलाहाबादी अमरूद
कितना मधुर व स्मरणीय है छुट्टी का सफर
इस में छिपा होता है छुट्टी का वजूद
बल में दो माह की ई.एल.
व 10 दिन की सी.एल.
बीच बीच में कभी टेम्पोरेरी ड्यूटी या कोर्स
इतने ही अवसर देता है यह फोर्स

बल के सदस्यों को, परिवार को अलग रखने में
बहुत समस्याएं हैं, त्याग हैं व अनेकों गम
ऊपर से सरकार ने सी.एल. 15 दिन से कर दी कम

कारांगेल युद्ध में बल के जवानों के शहीद होने पर
मरणोपरांत काफी उद्गार व ऐलान हुए
क्या ऐसा नहीं हो सकता कि जीते जी भी
कम से कम 2 या तीन महिने में एक बार
ये जवान अपने घर हो आयें

कुछ रियायत सरकार दे
कुछ रेलवे
कुछ खर्चा जवान भी खुद झेल लें
कुछ टेलीफोन विभाग करे दया दृष्टि
कम से कम आगे जनता से सस्ती दरों पर
राष्ट्र हित में परिवारों से दूर रहते हुए
वे बल के सदस्य परिवार से तो बतियाऐं
कुछ ऐसी व स्वस्थ व्यवहारिक भावना पनपे
कि इन सुविधाओं को लेते हुए बजट आगे न आये

हरी राम सिंह
कमाण्डेंट 85 बटा, केरिपु बल

मां भारती

नई सदी में नए युग का
विश्व-प्रेम और बंधुत्व का
संस्कृति और न्याय का
आओ हम संचार करें।
अरुणाचल से अस्तांचल
हिम-श्रृंग से नीलम सागर
जन जन की वाणी का
आओ हम प्रसार करें।
अपने देश की मिट्टी में
सम्मान का सौरभ हैं।

हिंदी ने यहां जनम लिया
आओ हम अंगीकार करें।
निज भाषा पर गर्व
सामर्थ्य का संचय है
पर-भाषा का मोह
पराभव का परिचय है।
किंतु मानस-बेड़ियों में जकड़ी
जन-गण-मन की वाणी
अपने घर में मांग रही
न्याय हिंदी की रानी।
भारत-भूमि के आंगन में
बहती गंगा की दुधिया धारा
इससे सिंचित सब भाषाओं का
आओ हम सत्कार करें।

नारायण प्रसाद सिंह
*(*हिंदी अनुवादक*)*
ग्रुप केंद्र पूणे

परमाणु की व्यथा

परमाणु को एक बार गुस्सा आया।
वह तेजी से बड़बड़ाया।
कमबख्त इंसान मेरा पीछा नहीं छोड़ता है।
कभी मिसाईल, कभी बम से जोड़ता है।
कहता है, दुश्मन का सर्वनाश कर दो।
हमारी झोली में वाही-वाही भर दो।
मेरे पीछे हर कोई ऐसे पड़ा है।
जिसके पास मैं हूं, वही सबसे बड़ा है।
मगर कमबख्तों ऐसा नहीं है।
इन्सानियत से बड़ा कोई नहीं है।
मैंने अशान्ति कर दी तो पछताओगे।

हिरोशिमा, नागासाकी बन जाओगे।
मुझे अशान्ति के कार्यों से छोड़ दो।
शान्ति के कार्यों से जोड़ दो।
तब मैं, तुम्हारा एहसान कभी नहीं भुलूंगा।
इन्सानियत के जिंदा रहने तक साथ दूंगा।

केदार सिंह,
ग्रु.के., केरिपु बल, रामपुर *(उ.प्र.)*

जरूरत

आज जरूरत है भारत को, फिर से एक सुभाष की।
रोज-राज भारत में होते, इस विनाश के नाश की।

हमें वीर ऐसे चाहिए जो, हिन्द की जय-जयकार करें।
नहीं चाहिए देशद्रोही जो, शत्रु से मिल कर वार करें।
रहें प्रेम से मिल कर सब, नहीं इच्छा जीत और हार की।
आज जरूरत है भारत को, फिर से एक सुभाष की।

जितनी जरूरत हो तुमको हम, खून तुम्हें दे सकते हैं।
इतने पर ना बात बने तो, जान भी हम दे सकते हैं।
शर्त हमारी पूरी करो जो, चिरस्थाई सद्भाव की।
आज जरूरत है भारत को फिर से एक सुभाष की।

जहां नृत्य भांगड़ा होता था, अब वहां चिताएं जलती हैं।
दूध की नदियां सूख चुकी, अब रक्त की नदियां बहती हैं।
नजर लग गई मेरे भारत को, किस राक्षस राज की।
आज जरूरत है भारत को, फिर से एक सुभाष की।

दुश्मन से जो मिल बैठा, भाई-भाई को लड़ा रहा।
भोले-भाले युवकों से, अपनी मनचाही करा रहा।
नहीं जरूरत जयचन्द की, है पृथ्वीराज चौहान की।

आज जरूरत है भारत को, फिर से एक सुभाष की।

नेताजी तुमको अपने, भारत में फिर आना होगा।
भटक गए हैं राह से जो, उन्हें राह पे फिर लाना होगा।
विनती अब स्वीकार करो तुम, इस मनोज कुमार की।
आज जरूरत है भारत को, फिर से एक सुभाष की।

मनोज कुमार शर्मा
सहायक उप-निरीक्षक
83 बटा. केरिपु बल

के.रि.पु. बल के वीर जवान

केरिपु बल की आन की, हम शान हिन्दुस्तान की।
परवाह नहीं जान की, मर्यादा हिन्दुस्तान की।
हैं फूट के खिलाफ हम, हैं एकता के साथ हम।
हैं दुश्मन के काल हम, आतंक के खिलाफ हम।
हम अखण्ड देश के, हर मनुज विशेष के।
दिग्विजय विशेष के, हम सारथी दिनेश के।
देश प्रेम की लगन, लक्ष्य के लिए मगन।
हर एक पल, हर एक पग, कुछ प्राप्त करने की लगन।
कुर्बानी की डगर चले, खून की होली मिले।
शत्रु पर गोली चले, मित्र पर ममता ढले।
परवाह नहीं मौत की, कीमत न कोई जान की।
चिन्ता नहीं परिवार की, पहचान हिन्दुस्तान की।
श्याम सुधा की पहचान, संगम है संग में बलवान।
केरिपु बल के वीर जवान, केवल भारत मां की शान।

श्याम वीर सिंह
का. पुलिस उप-महानिरीक्षक,
केरिपु बल, इलाहाबाद *(उ.प्र.)*



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति चंडीगढ़ की अध्यक्ष श्रीमती सुरेंद्र पाल कौर से राजभाषा पुरूस्कार प्राप्त करते प्रशासनिक अधिकारी प्रवीण कुमार



हैदराबाद में हिंदी संगोष्ठी को सम्बोधित करते महानिदेशालय के हिंदी अधिकारी श्री श्योनाथ सिंह



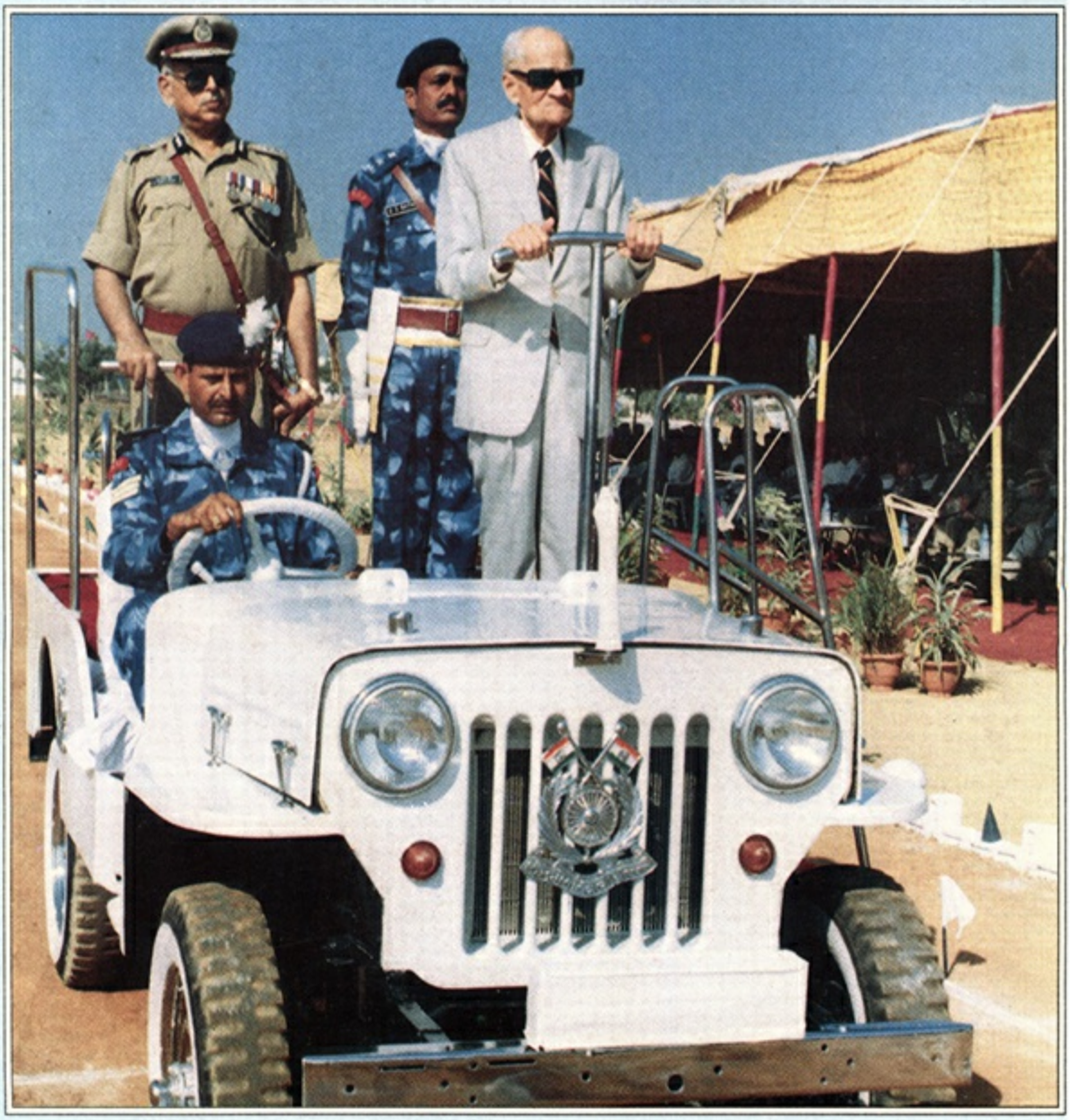
युप केंद्र पल्लिपुरम में राजभाषा सम्मेलन का उद्घाटन करते केरल विश्वविद्यालय के कुलपति डा. डी.एस. बाबू

युप केन्द्र हैदराबाद में राजभाषा संगोष्ठी का दीप जला कर उद्घाटन करते दक्षिण सेक्टर के महानिरीक्षक श्री डी.एन. गौतम



सी.आर.पी.एफ. समाचार

30 नवम्बर, 2000



आर.ए.एफ. परेड का निरीक्षण करने जाते बल के प्रथम महानिदेशक श्री वी.जी. कानेटकर



गृह मंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी से राजभाषा शील्ड प्राप्त करते महानिरीक्षक (मुख्यालय एवं कार्मिक) श्री पी.पी.एस. सिद्धू



गृह राज्य मंत्री श्री विद्यासागर राव बल की बैंड टीम को अखिल भारतीय पुलिस बैंड प्रतियोगिता की ट्राफी प्रदान करते हुए



सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड–14 अंक–7
30 नवंबर, 2000
9 अग्रहायण, शक 1922

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं युनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल
ब्लाक–1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली–110003 की ओर से डी.जी. महापात्र

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ. प्रेस
झड़ौदा कलां, नई दिल्ली–72



इस अंक में

आरएएफ की 8वीं वर्षगांठ
के.रि.पु. बल को राजभाषा शील्ड
के.रि.पु. बल ने बैंड प्रतियोगिता जीती
दक्षिणी व बिहार सेक्टर ने टेनिस प्रतियोगिता जीती
महानिदेशक का 40 बटालियन का दौरा
अंतर वाहिनी बास्केट बाल प्रतियोगिता

राजभाषा संसदीय सामीते का मोकामा दौरा

14 बटा. द्वारा सद्भावना पखवाड़ा

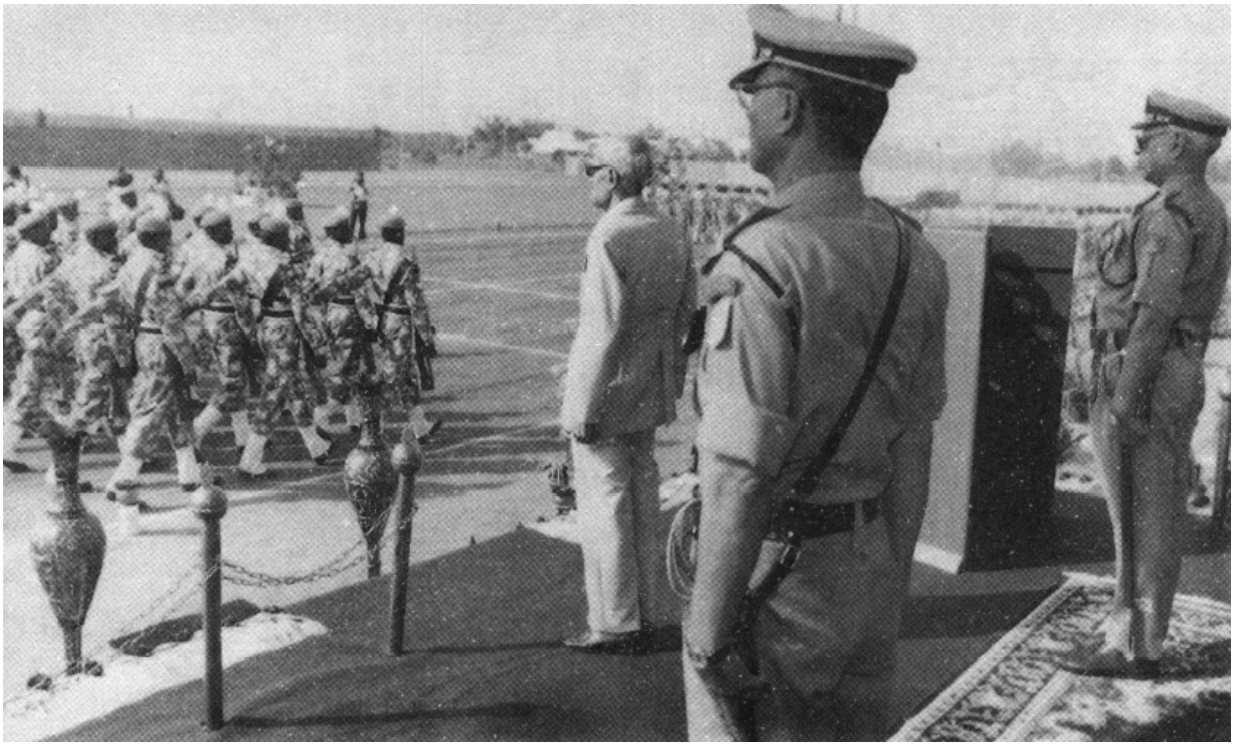
फोटो फीचर

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

–संपादक

आर.ए.एफ. की आठवीं वर्षगांठ

–डी.जी. महापात्र



आर.ए.एफ. वार्षिक परेड की सलामी लेते बल के प्रथम महानिदेशक श्री वी.जी. कानेटकर

"रैपिड एक्शन फोर्स के गठन से ही बड़े पैमाने पर होने वाले साम्प्रदायिक दंगों और दंगों जैसी स्थितियों पर कुशलता और प्रभावशाली ढंग से नियंत्रण कर पाना संभव हुआ है।" रैपिड एक्शन फोर्स की आठवीं वर्षगांठ के अवसर पर 7 अक्तूबर, 2000 को भोपाल में 107 बटालियन मुख्यालय में अधिकारियों और जवानों को सम्बोधित करते हुए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के प्रथम महानिदेशक श्री वी.जी. कानेटकर ने कहा कि अपने धर्म निरपेक्ष स्वरूप और सार्वदेशिक चरित्र के कारण इस बल ने जन विश्वास अर्जित कर देश में अपनी श्रेष्ठ छवि कायम की है। उन्होंने कहा कि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की इस विशिष्ट दंगा विरोधी शाखा ने अपनी व्यवसायिक कुशलता, प्रशिक्षण, उपकरणों तथा अचूक कर्तव्यपरायणता के बल पर एक पहचान बनायी है।

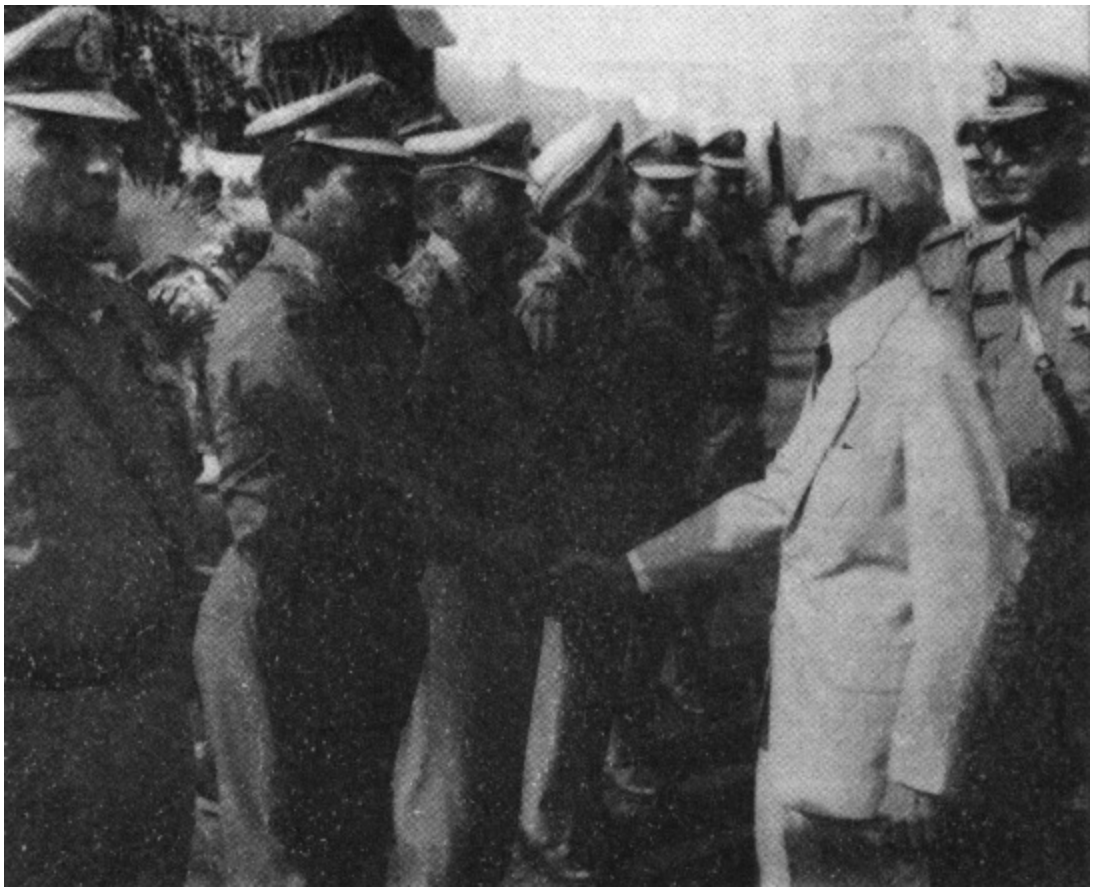
इस मौके पर श्री कानेटकर ने एक शानदार परेड का निरीक्षण कर उसकी सलामी ली। उन्होंने के.रि.पु. बल और आरएएफ के 58 अधिकारियों और जवानों को राष्ट्रपति के विशिष्ट सेवाओं के पुलिस पदक भी प्रदान किये।

इस से पूर्व के.रि.पु. बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र ने अपने स्वागत भाषण

में कहा कि के.रे.पु. बल देश के विभिन्न हिस्सों में कानून व्यवस्था की स्थितियों में तैनाती के अतिरिक्त आतंकवाद और विद्रोही गतिविधियों से ग्रस्त राज्यों में भी अपने कर्तव्य को कुशलता पूर्वक निभा रहा है। आरएएफ की भूमिका की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि इस बल ने अपने आठ वर्ष के छोटे कार्यकाल में ही अल्पसंख्यक समुदाय के अन्दर विश्वास का संचार किया है, और देश के सुरक्षा परिदृश्य में अपनी अलग पहचान बनायी है।

डा. मिश्र ने आगे कहा कि सीतामढ़ी के दंगे, कोयम्बतूर के बम विस्फोट, मुम्बई के दंगों, सूरत में प्लेग, बिहार में बाढ़, जबलपुर में भुकंप और उड़ीसा के तुफान के दौरान आरएएफ के कार्मिक अपने आराम, सुरक्षा और स्वास्थ्य की परवाह किये बिना तत्काल कम से कम समय में हरकत में आ कर प्रभावित क्षेत्रों में सक्रिय हो कर पीड़ित मानवता की सेवा करने और शांति और सद्भाव बहाल करने में कामयाब रहे हैं। उन्होंने कहा कि संयुक्त राष्ट्र शांति मिशनों में भाग लेकर आरएएफ ने अंतर्राष्ट्रीय फलक पर भी अपनी पहचान बनायी है। आरएएफ की टुकड़ियां संयुक्त राष्ट्र शांति मिशनों के तहत 1995 में हैती तथा इस वर्ष 2000 में कोसोवो में तैनात हैं। उच्च स्तर की व्यवसायिक कुशलता, समर्पण, कुछ कर गुजरने के जुनून और देशभक्ति की भावना ने इस बल को देश का जाना पहचाना नाम बना दिया है।

आरएएफ के महानिरीक्षक श्री ताशी दावा ने अंत में अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया।



आर.ए.एफ. बटालियनों के कमांडेंटों से परिचय प्राप्त करते श्री कानेटकर



आर.ए.एफ. महिलाओं द्वारा बचाव और राहत कार्य का प्रदर्शन

के.रि.पु. बल ने लगातार दो सालों के लिए राजभाषा शील्ड जीती



गृह मंत्री से हिंदी में कार्य के लिए पुरस्कार प्राप्त करते सहायक निदेशक श्री एम.टी. शेवकरमानी

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को गृह मंत्रालय ने अपने विभिन्न कार्यालयों में वर्ष 1998–99 और 1999–2000 में सर्वाधिक कार्य हिन्दी में करने के लिए शील्ड प्रदान की है। यह शील्ड 17 अक्तूबर, 2000 को विज्ञान भवन में आयोजित एक समारोह में गृह मंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी से के.रि.पु. बल के महानिरीक्षक श्री पी.पी.एस. सिद्धू ने ग्रहण की।

के.रि.पु. बल के सहायक निदेशक श्री एम.टी. शेवकरमानी, सहायक उप निरीक्षक जी.एल. जाट और उप निरीक्षक देवी सिंह को भी अपने सरकारी कामकाज में अधिकाधिक हिन्दी प्रयोग के लिए प्रशंसा पत्र दिये गये।

के.रि.पु. बल मुख्यालय में सतर्कता जागरूकता सप्ताह

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल(के.रि.पु. बल) मुख्यालय में 31 अक्तूबर, 2000 को सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया गया। के.रि.पु. बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र ने बल के अधिकारियों व जवानों को शपथ दिलाई तथा क्रिया–कलापों के सभी क्षेत्रों में उन्हें निष्ठा व पारदर्शिता लाने की कोशिशें करने की सलाह दी।

द्वितीय अखिल भारतीय पुलिस बैन्ड

प्रतियोगिता में के.रि.पु. बल को ओवरआल चैम्पियनशिप



के.रि.पु. बल का पाइप बैंड अपना प्रदर्शन करता हुआ

5नवंबर, 2000 को नई दिल्ली में सम्पन्न द्वितीय अखिल भारतीय पुलिस बैन्ड प्रतियोगिता में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सी.आर.पी.एफ.) ने ओवरआल चैम्पियनशिप जीत ली । बिगुलर काल में मध्य प्रदेश पुलिस ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, जबकि आईटीबीपी व आंध्र प्रदेश पुलिस संयुक्त रूप से दूसरे स्थान पर रहे । के.रि.पु बल तीसरे स्थान पर आया । ब्रास बैन्ड में आईटीबीपी ने प्रथम स्थान लिया जबकि सीमा सुरक्षा बल व मध्य प्रदेश पुलिस ने क्रमशः द्वितीय व तृतीय स्थान के पुरस्कार जीते । श्री विद्यासागर राव, गृह राज्य मंत्री ने ट्राफियां व इनाम वितरित किए ।

समापन समारोह को सम्बोधित करते हुए, श्री राव ने कहा कि पुलिस बल की वार्षिक क्रियाओं में, राज्य पुलिस बलों तथा केन्द्रीय पुलिस संगठनों की विभिन्न इकाइयों के बीच वार्षिक खेल–कूद प्रतियोगिता का आयोजन एक नियमित व महत्वपूर्ण घटना रही है । उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण व सेरेमोनियल आवश्यकताओं के एक महत्वपूर्ण भाग के रूप में प्रत्येक पुलिस बल के पास पारंपरिक रूप से अपनी–अपनी बैन्ड टुकड़ियां है जो बल कार्मिकों की दैनिक व परिचालनिक ड्यूटियां को करने में मदद देती हैं ।

के.रि.पु. बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र, ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि अखिल भारतीय पुलिस खेलकूद कार्यक्रमों में बैन्ड प्रदर्शन की योग्यता व

प्रवीणता को भी एक प्रतिस्पर्धात्मक खेल के रूप में शामिल किया गया है।

आसूचना ब्यूरो के निदेशक व केन्द्रीय समन्वय समिति के अध्यक्ष श्री श्यामल दत्ता द्वारा प्रतियोगिता के समापन की घोषणा की गई।

के.रि.पु. बल द्वारा आयोजित इस 4 दिवसीय प्रतियोगिता में ब्रास बैन्ड की 17, पाइपबैन्ड की 13 तथा बिगुल वादकों की 15 टीमें शामिल हुईं, जिनमें विभिन्न राज्यों तथा संघ शासित क्षेत्रों की पुलिस व केन्द्रीय पुलिस संगठनों के लगभग 1100 बैन्ड कर्मियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता का उद्घाटन 2 नवम्बर, 2000 को गृह राज्य मंत्री श्री आई.डी. स्वामी ने किया था।

दक्षिण एवं बिहार सेक्टर ने टेनिस प्रतियोगिता जीती



श्री ताशी दावा महानिरीक्षक आर.ए.एफ. से ट्राफी प्राप्त करती विजेता टीम

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 10वीं अन्तर सेक्टर टेनिस प्रतियोगिता की सिंगल चैम्पियनशिप बिहार सेक्टर ने जीत ली। 25 अक्तूबर, 2000 को खेले गए फाईनल मुकाबले में बिहार सेक्टर ने दक्षिण सेक्टर को 7–6 (टाई ब्रेकिंग) 6–3 और 7–5 से पराजित किया। बिहार सेक्टर की ओर से श्री आर.डी. एस. शाही और दक्षिण सेक्टर की ओर से श्री आर.के. स्वामी खेल रहे थे।

अन्तर सेक्टर टेनिस प्रतियोगिता की डबल चैम्पियनशिप में दक्षिण सेक्टर ने बिहार सेक्टर को 6–3, 6–2 से पराजित किया। श्री रणदीप दत्ता और श्री ए.वी. एस. चौहान ने दक्षिण सेक्टर और श्री आर.डी.एस. शाही और श्री संजय सिंह ने बिहार

सेक्टर का प्रातिनिधित्व किया।

आर.ए.एफ. सेक्टर के महानिरीक्षक श्री ताशी दावा ने इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में विजेताओं को शील्ड एवं पुरस्कार प्रदान किये।

मानवीय सेवा एवं कर्मठता का उत्कृष्ट उदाहरण

7सितंबर, 2000 को नीमच के कृषि उपज मंडी समिति में एक कुंए के धसक जाने से उसमें करीब 25–30 व्यक्ति फंस गये, जिसके बचाव हेतु स्थानीय प्रशासन ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को सूचित किया एवं मदद मांगी। सूचना मिलते ही इस संस्थान की रिकवरी वेन प्राचार्य के साथ एवं ग्रुप केन्द्र, आर.टी.सी. से करीब 200 से ज्यादा कार्मिक घटनास्थल पर पहुंचे। जिससे करीब 12–15 व्यक्तियों को जिन्दा बचाया जा सका तथा 7 व्यक्तियों को मृत अवस्था में निकाला गया।



श्री जी.जी.ए. शर्मा, पु.उ.म.नि. के.रि.पु. बल नीमच एवं श्री जयप्रकाश पु.उ.म.नि प्राचार्य केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय प्रथम के.रि.पु. बल नीमच अपनी टीम के साथ कुएं में फंसे व्यक्तियों को सहायता पहुंचाते हुए

उपरोक्त घटना के बारे में नीमच के स्थानीय समाचार पत्रों के अतिरिक्त इन्दौर एवं म.प्र. से प्रकाशित महत्वपूर्ण समाचार पत्रों में उल्लेख किया गया। सभी समाचार पत्रों, स्थानीय नागरिकों, एवं स्थानीय प्रशासन ने के.रि.पु. बल के अधिकारियों एवं जवानों द्वारा प्रदर्शित मानवीय सेवा एवं कर्मठता की भूरि भूरि प्रशंसा की।

महानिदेशक द्वारा *40* बटालियन का दौरा

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र ने अपना पदभार ग्रहण

करते हो जुलाइ 2000 को श्रीनगर प्रवास के दौरान 40 बटालियन का दौरा किया। उन्होंने अपने इस दौरे के दौरान वाहिनी के विभिन्न क्रियाकलापों में रूचि दिखायी व वाहिनी के क्वार्टर गार्ड, मैंगजीन, अन्य रेंक के भोजनालय, मनोरंजन गृह, सेण्ड मॉडल कक्ष, मोटर परिवहन तथा कैंटीन का निरीक्षण किया। महानिदेशक महोदय को वाहिनी के परिचालन कक्ष (सेण्ड मॉडल कक्ष) में श्रीनगर में बल की तैनाती, इस वाहिनी की तैनाती एवं उपलब्धियों के बारे में जानकारी दी गयी। महानिदेशक महोदय ने उसकी सराहना की। महानिदेशक के साथ पुलिस उप महानिरीक्षक (परिचालन) श्रीनगर श्री आर.सी. पुरी मौजूद थे। महानिदेशक महोदय ने इस वाहिनी के कार्यों व परिचालन उपलब्धियों की भूरि-भूरि प्रशंसा की।



महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र *40* बटा. स्थल पर गार्ड की सलामी लेते हुए

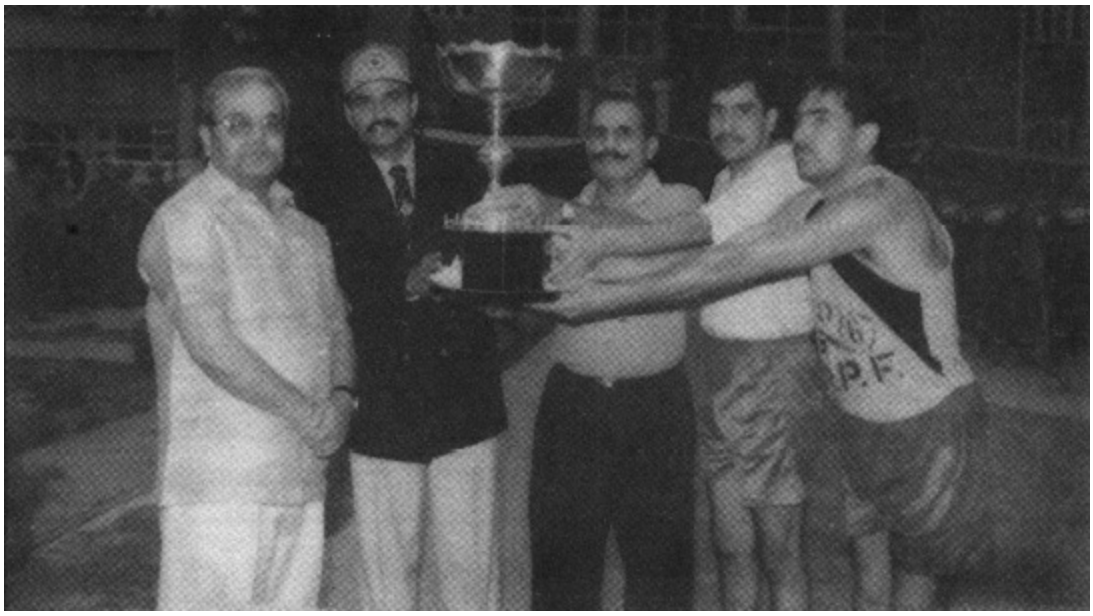
82 बटालियन द्वारा सिविक एक्शन कार्यक्रम



जम्मू कश्मीर के समाज कल्याण मंत्री श्री किचलू आतंकवाद पीड़ितों को तिपहिया कुर्सियां प्रदान करते हुए

19 अक्टूबर, 2000 को जम्मू कशमीर के अनंतनाग जिले के खन्ना बल डाक बंगले में के.रि.पु. बल की 82 बटा. द्वारा आयोजित एक सिविक एक्शन कार्यक्रम में जम्मू कशमीर के समाज कल्याण मंत्री श्री बी.ए. किचलू ने आतंकवाद प्रभावित परिवारों के व्यक्तियों को 28 तिपहिया साइकिलें, पांच व्हील चेयर विकलांगों के लिए और 20 सिलाई मशीने भेंट की। मंत्री महोदय ने घाटी में आतंकवाद के विरूद्ध संघर्ष में के.रि.पु. बल के योगदान की प्रशंसा की, साथ ही उन्होंने सामाजिक कार्यों में के.रि.पु. बल द्वारा दिये जा रहे सहयोग की भी सराहना की। इस मौके पर बोलते हुए बल के उप महानिरीक्षक श्रीनगर श्री आर.सी. पुरी ने बताया कि के.रि.पु. कशमीर के दूरदराज के इलाकों में इस प्रकार के सिविक एक्शन कार्यक्रमों का आयोजन करता रहता है। इन कार्यक्रमों में स्कूल इमारतों का निर्माण, शिक्षण सामग्री का वितरण, चिकित्सा कैंपों का आयोजन तथा हैंड पम्प लगाना शामिल है।

अन्तर वाहिनी परिचालन सेक्टर की बास्केट बॉल प्रतियोगिता–2000



विजेता टीम को ट्राफी प्रदान करते अपर महानिदेशक पश्चिमोत्तर अंचल श्री जे.पी. वर्मा

21 से 26 जून, 2000 तक बर्न हॉल स्कूल के प्रांगण में श्रीनगर परिचालन क्षेत्र की अन्तर वाहिनी बॉस्केटबॉल प्रतियोगिता, 2000 का आयोजन 40 बटा., केरिपु बल द्वारा किया गया। इस प्रतियोगिता में घाटी में स्थित कुल 26 बटालियनों ने भाग लिया, जिसमें 40 बटालियन ने अपने उत्कृष्ट खेल का प्रदर्शन करते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया और 127 बटा. उपविजेता रही। 40 बटालियन की टीम वर्ष 1999 में भी अन्तर वाहिनी बास्केट बॉल प्रतियोगिता की विजेता टीम थी।

इस प्रतियोगिता का उद्घाटन पुलिस उप महानिरीक्षक (परिचालन) श्रीनगर श्री आर.सी. पुरी के करकमलों द्वारा किया गया एवं इस प्रतियोगिता का समापन श्री जे.पी. वर्मा, अपर महानिदेश, पश्चिमोत्तर अंचल, केरिपु बल ने किया जिन्होंने विजेता व उपविजेता टीम को ट्राफी एवं सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों को पारितोषिक प्रदान किये। प्रतियोगिता की विजेता ट्राफी 40 बटा. के श्री आर.जी. आर. भट्ट, द्वि.क.अ. व बटालियन की टीम के खिलाड़ियों ने ग्रहण की।

जोखिम निधि लाभ

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल जोखिम निधि से माह सितंबर, 2000 में मृत्यु के 40 मामलों में कुल 37,74,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये, इसी प्रकार अक्षमता के 11 मामलों में 2,60,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये। जोखिम निधि 'बी' से भी इसके 7 सदस्यों की मृत्यु के मामले में 2,80,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये।

माह अक्टूबर, 2000 में जोखिम निधि से मृत्यु के 71 मामलों में 68,90,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये, इसी प्रकार अक्षमता के 28 मामलों में कुल 7,95,000 रूपये

देने स्वीकृत किये गये।

जोखिम निधि 'बी' से भी इसके 7 सदस्यों की मृत्यु के मामलों में कुल 2,80,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये।

श्री शेवकरमानी सेवानिवृत्त



महानिदेशालय में सहायक निदेशक प्रशासन और लेखा पद पर कार्यरत श्री एम.टी. शेवकरमानी 31 अक्टूबर, 2000 को अपनी दीर्घकालीन समर्पित सेवा के बाद सेवानिवृत हुए। महानिदेशालय के अधिकारियों और कर्मियों ने उन्हें भावभीनी विदाई दी। श्री शेवकरमानी 6 फरवरी, 1959 को बल में सिविलियन कलर्क के रूप में शामिल हुए। और अपनी समर्पित सेवाओं के बल पर अपने काडर के उच्चतम पद तक पहुंचे।

श्री शेवकरमानी को उन के सेवा काल में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए महानिदेशक केरिपु बल एवं एन.एस.जी. की प्रशंसा डिस्क, विभिन्न प्रशंसा अभियुक्तियों, नकद पुरस्कारों एवं सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक से सम्मानित किया गया।

राजभाषा संसदीय समिति का दौरा

संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति ने ग्रुप केन्द्र, केरिपु बल, मोकामाघाट (बिहार) में 23 सितम्बर, 2000 को दौरा किया और राजभाषा की प्रगति का जायजा लिया। श्री रमणीक कुमार सक्सेना, अपर पुलिस उप महानिरीक्षक ने ग्रुप केन्द्र के सदस्यों एवं गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, महानिदेशालय, केरिपु बल, बिहार सेक्टर मुख्यालय के प्रतिनिधियों के साथ समिति के संयोजक एवं सदस्यगणों का सभागार में हर्षोल्लास एवं गर्मजोशी के साथ स्वागत किया। तत्पश्चात समिति के सदस्यों को कार्यालय में राजभाषा के प्रयोग संबंधी आंकड़ों एवं अन्य विवरणों से अवगत कराया गया। समिति के सदस्यों ने प्रश्नावली में दिए गए प्रश्नों के उत्तर पर चर्चा की और कुछ सुझाव देने के साथ ही सभी सदस्यों ने ग्रुप केन्द्र कार्यालय के कामकाज में राजभाषा के प्रयोग पर अपनी खुशी जाहिर करते हुए राजभाषा के प्रयोग की प्रगति के लिए किए गए प्रयासों की खुल कर सराहना की।



ग्रुप केंद्र मोकमा घाट कार्यालय के कामकाज में हिंदी प्रयोग का जायजा लेती राजभाषा समिति

हिन्दी दिवस

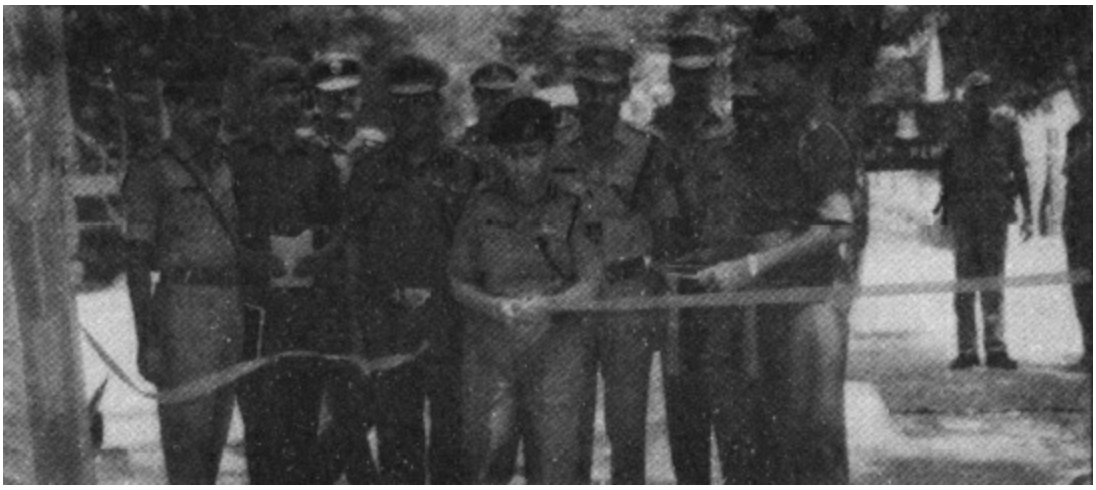


हिंदी दिवस कार्यक्रम का दीप जला कर उद्घाटन करते *107* बटा. के कमांडेंट श्री ए.एम. मुहम्मद

ग्रुप केन्द्र, पल्लिपुरम में, 14 सितम्बर, 2000 को आयोजित हिन्दी दिवस का उद्घाटन 105 बटा., द्रु.का. बल के कमांडेन्ट, श्री ए.एम. मोहम्मद द्वारा दीप प्रज्जवलित कर किया गया। इस मौके पर ग्रुप केन्द्र पल्लिपुरम के अपर पुलिस उप महानिरीक्षक श्री पी. दामोदरन मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। अध्यक्ष महोदय का स्वागत करते हुए उप कमांडेन्ट (प्रशा.)/राजभाषा अधिकारी श्री राम चरित्र ने हिन्दी का प्रयोग, कामकाज की भाषा में अपनाने की ओर सबका ध्यान आकृष्ट किया। ग्रुप केन्द्र के द्वितीय कमान अधिकारी, श्री अ. निर्मला राज भी समारोह में उपस्थित थे । अध्यक्षीय भाषण में अध्यक्ष महोदय ने बढ़ती हुई हिन्दी की गति को,

कार्यालयीन कामों में अपनाकर एक नई दिशा प्रदान करने का आह्वान किया। हिन्दी का सदुपयोग करके भारत की राष्ट्रभाषा को देश–विदेशों में गौरवान्वित करने पर भी उन्होंने बल दिया। हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में विजयी कार्मिकों को प्रशंसा पत्र से सम्मानित किया गया। अंत में निरी./हिं.अनु. पी.पी. सुनील ने अध्यक्ष महोदय, उपस्थित अधिकारी गण तथा सभी कर्मचारी वृन्द को, इस अवसर को शोभान्वित कर, राज भाषा की गरिमा को बढ़ाने के लिए, अपर पुलिस उप महानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र की ओर से अपनी कृतज्ञता व्यक्त की।

14 बटालियन द्वारा सद्भावना पखवाड़ा



14 बटा. द्वारा आयोजित रक्तदान शिविर का उद्घाटन करती उत्तरी सेक्टर की महानिरीक्षक श्रीमती मंजरी जारूहार

के.रि.पु. बल की 14 बटालियन द्वारा दिनांक 20 अगस्त, 2000 से 5 सितम्बर तक सद्भावना पखवाड़े का आयोजन किया गया, जिसके दौरान रेड क्रास सोसायटी व सवाई मान सिंह अस्पताल के सहयोग से दिनांक 6 सितंबर, 2000 को रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 14 बटालियन के 37 कार्मिकों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। रक्तदान शिविर का उद्घाटन श्रीमति मंजरी जारूहार, भा.पु.से. पुलिस महानिरीक्षक, उत्तरी सेक्टर ने किया।

इसके अतिरिक्त श्री रणपाल सिंह, कमांडेन्ट 14 बटालियन के निर्देशन में लालवास व आस–पास के गांवों में साफ–सफाई अभियान चलाया गया व पोलिथिन के विरूद्ध जन–जागरण रैली का आयोजन किया गया और लोगों को साक्षरता के लिए जागरूक किया गया। 14 बटालियन, के.रि.पु. बल के सदस्य/कार्मिक प्राथमिक/उच्च प्राथमिक विद्यालयों में छात्रों को खेल–कूद, शारीरिक व्यायाम व अन्य उपयोगी नियमित शिक्षाएं भी प्रदान कर रहे हैं।

7वीं राष्ट्रीय थांग–टा प्रतियोगिता

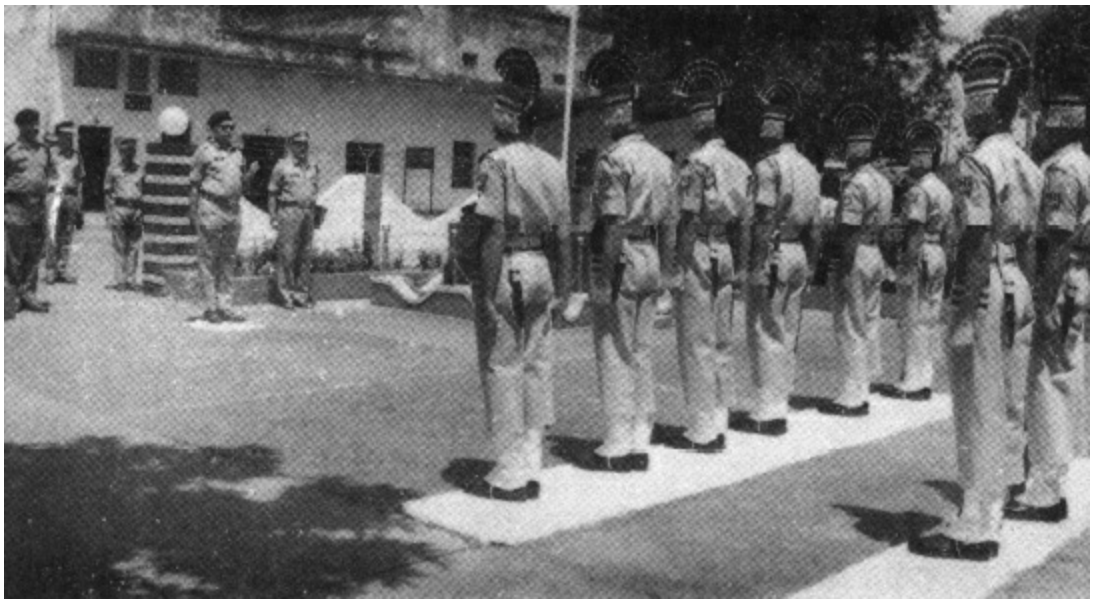


प्रतियोगिता के विजेता बल के खिलाड़ी

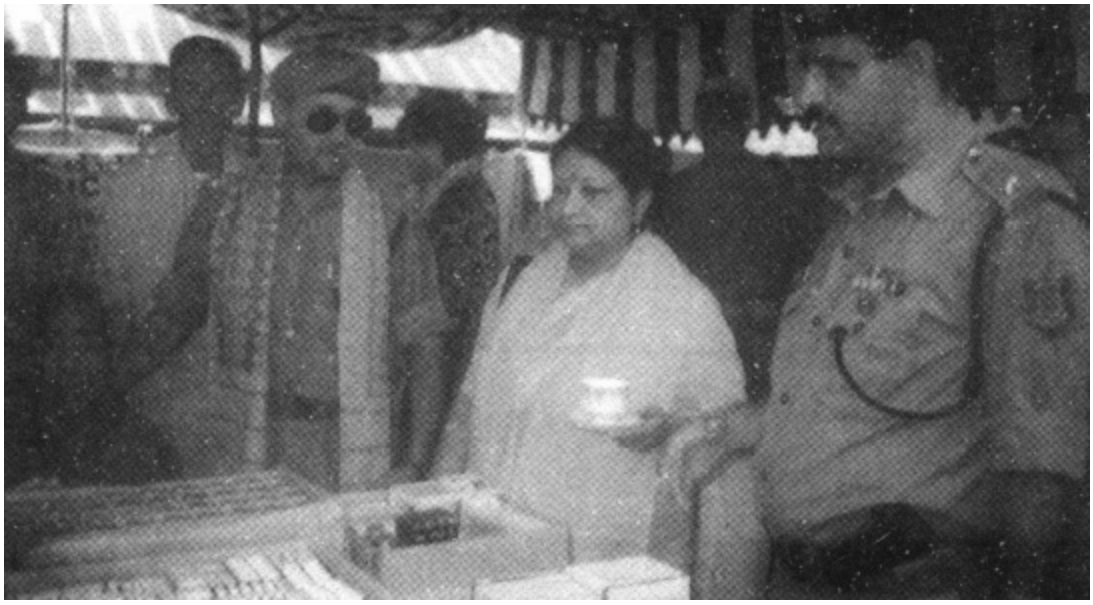
7वीं राष्ट्रीय थांग–टा प्रतियोगिता दिनांक 6 से 8 अक्टूबर, 2000 तक डा. राजेन्द्र प्रसाद स्टेडियम, नीमच (म.प्र.) में सम्पन्न हुयी । प्रतियोगिता का आयोजन नगर पालिका परिषद, नीमच के द्वारा किया गया । के.रि.पु. बल की टीम सहित प्रतियोगिता में कुल 15 राज्यों के खिलाड़ियों ने भाग लिया । प्रतियोगिता में मणिपुर राज्य की टीम प्रथम रही, जम्मू एवं कशमीर द्वितीय एवं मध्यप्रदेश की टीम तृतीय रही ।

सीआरपीएफ टीम के खिलाड़ियों ने भी प्रतियोगिता में भाग लेकर विभिन्न इवेन्ट में पदक प्राप्त किये । सिपाही चुखाम कोपेश्वर सिंह (ब्लैक बेल्ट) ने फीनवां इवेन्ट में स्वर्ण पदक तथा थांगटा हायवा इवेन्ट में दूसरा स्वर्ण पदक प्राप्त किया और इस प्रतियोगिता में ग्रांड मास्टर अवार्ड में भी सम्मानित हुये । सिपाही एम. गदाधर सिंह ने फोनवा अनेसूवा इवेन्ट में स्वर्ण पदक प्राप्त किया । सिपाही ए. जंगु सिंह ने फोनवा अनेसूवा इवेन्ट में रजत पदक प्राप्त किया ।

कुल मिला कर सातवीं नेशनल थांगटा चैम्पियनशिप–2000 में हमारे खिलाड़ियों ने तीन स्वर्ण, एक रजत एवं एक कांस्य पदक प्राप्त किया ।



दमदम हवाई अड्डा कलकत्ता स्थित *43* बटा. में गार्ड की सलामी लेते महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र



24 बटा. ने *25* सितम्बर, *2000* को तिपकई असम में एक चिकित्सा कैंप का आयोजन किया ।कैम्प का निरीक्षण करती डूबरी की डिप्टी कमीशनर श्रीमती गायत्री बरूआ



अहमदाबाद शहर में दंगों के बाद *18* सितंबर, *2000* को शांति व्यवस्था के लिए तैनात आर.ए.एफ. के कार्मिक

माह जुलाई, अगस्त और सितंबर में मृत कार्मिक

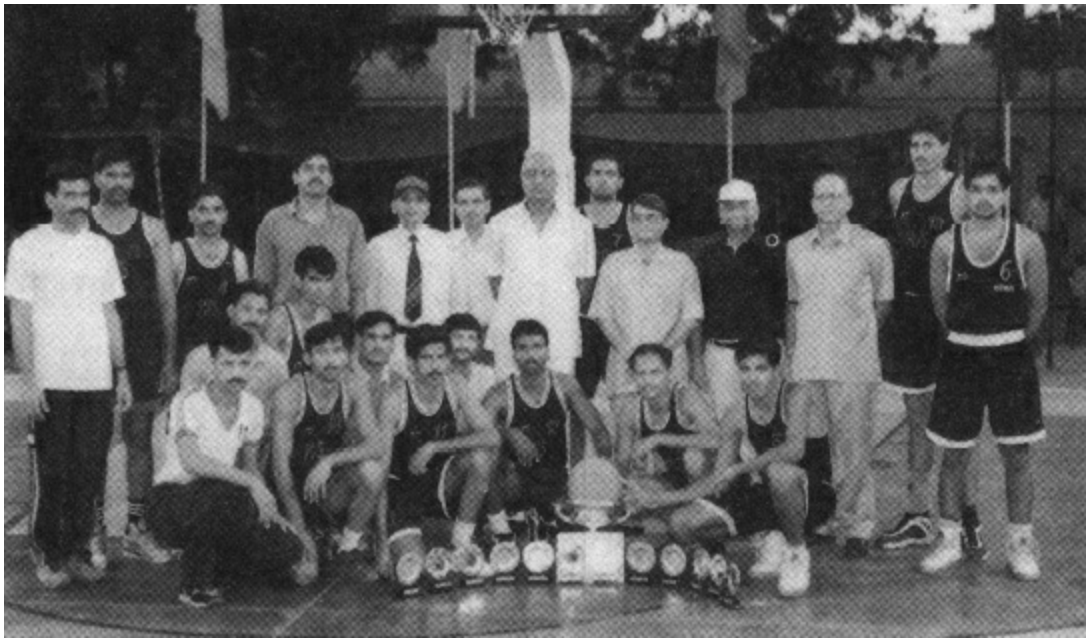
के.रि.पु. बल के निम्न कार्मिक माह जुलाई, अगस्त, सितम्बर एवं अक्टूबर, 2000 माह में मृत्यु को प्राप्त हुए। सीआरपीएफ समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

इंस्पेक्टर सी. चिन्ना राज (ग्रु.के. रामपुर), धोबी डी. नागेश (90 बटा.). कां. संजीव कुमार (ग्रु.के. जमशेदपुर), है.कां. देव दास गराय (3 सिग. बटा.), है.कां. दिलवार सिंह (113 बटा.), कां. स्टेलिन फ्रांसिस (64 बटा.), है.कां. एल. जौन (ग्रु.के. भोपाल), ला. ना. गोपाल राम (35 बटा.), है.कां. बी.सी. नाथ (69 बटा.), कां. कुश्मा देवी (105 बटा), कां. पी.एन. राय (12 बटा.), ला.ना. बस्ती राम (120 बटा.), है.कां. सुखविन्दर सिंह (122 बटा.), है. कां. राम विश्वास सिंह (04 बटा.), है.कां. आमपाल सिंह (117 बटा). एस.के. अजित मलाकार (07 बटा.), ला.ना. एन.आर. मण्डल (132 बटा.), सब इंस्पेक्टर आर.एच. अहीर (100 आर.ए.एफ.), कां. रंजीत कुमार शाहा (130 बटा.), है.कां. राजबीर सिंह (1 सिग. बटा.), सब इंस्पेक्टर ए.बी. मोथी (60 बटा.), है.कां. चांद किरण (124 बटा.), है.कां. जगरूप सिंह (34 बटा). कां.के. बास्कर (19 बटा.), कां. नौशाद खान (123 बटा.), लां.ना. जे.आर. तामलिया (122 बटा.), है.कां. राम प्यार प्रसाद (97 बटा). कां. शंकर लाल वाईकर (10 बटा.), कां.के. समबईया (40 बटा.), है.कां. मंजूर हुसैन (93 बटा.), है.कां. ए.के. सिंह (65 बटा.), कां. बी.आर. बोरकर (ग्रु.के. गोहाटी), सब इंस्पेक्टर जमालुद्दीन खान (ग्रु.के. भोपाल). कां. अखिल अहमद (1 सिग. बटा.), कां. पिपल सिंह (ग्रु.के. पिंजौर), कां. मुने स्वामी (63 बटा.), कां.

जादेजा प्रवीण सिंह (102 आरएएफ), कां.एन. कुमार (58 बटा.), कां. आनेल कट्टीमाणी (36 बटा.), कां. मलकित सिंह (28 बटा.), ला.ना. वी.बी. सिंह (82 बटा.), कां.के. रोकिमा सिंह (23 बटा.), इंस्पेक्टर ओ.पी. शर्मा (129 बटा.), सब इंस्पेक्टर बी.एन. पाण्डेय (107 बटा.), है. कां. एस. सत्या दास (110 बटा.), कां. श्याम वीर सिंह (125 बटा.), कां. जितेन्द्र कुमार त्रिपाठी (125 बटा.), इंस्पेक्टर ए.के. टण्डन (ग्रु.के. गोहाटी), है.कां. निहाल सिंह (29 बटा.), है.कां. ओम प्रकाश (82 बटा.), कां. सतीश कुमार (55 बटा.), हैड. कां. गोपाल दत (1 सिग. बटा.), कां. सुरेन्द्र ठाकुर (44 बटा), है.कां. बी.एम. नाथ (107 बटा.), रंगरूट रतन सिंह (ग्रुप केन्द्र पिंजोर) कां. नारायण मण्डल (117 बटा.), डी.सी. श्री एस.के. झा (31 बटा.), कां. श्रीधर वहेरा (126 बटा.), कां नरेन्द्र सिंह (ग्रु.के. गोहाटी), सब इंस्पेक्टर के. रहमान (91 बटा), है.कां. एन.एम. चिन्नपा (ग्रु.के. मोकामा), है.कां. सतबीर सिंह (127 बटा.), कां. शंजयू काम्बले (23 बटा.), है.कां. डी.वी. सुर्यवंशी (133 बटा.), कां. एस. बाबू (85 बटा.), कां. रामानन्द तिवारी (101 आर.ए.एफ), है.कां. हरा कुमार सिंघा (12 बटा.), कां. अजय कुमार (23 बटा.), है.कां. कुलदीप सिंह (125 बटा.), ला.ना. वाई. टेमन (10 बटा), कां. एम. शंकरैया (25 बटा.), है.कां. राम नगीना पांडेय (ग्रु.के. इलाहाबाद), कां. संतोष कुमार पाण्डेय (92 बटा.), कां. इम्तियाज अहमद (82 बटा.), कां. राम सिंह (महानिदेशालय), है.कां. एन.डी. बागडी (3 सिग. बटा.), कां. तरसेम सिंह (34 बटा), कां. जय सिंह आर. पवार (ग्रु.के. नागपुर), ला.ना.बी.पी. सिंह (123 बटा.), कां. डब्ल्यु.आर. बाऊसाहेब (64 बटा), है.कां. सुमीत सिंह (125 बटा.), सब इंस्पेक्टर ललन तिवारी (ए.डब्ल्यु एस.-5), लां.ना. महीपाल सिंह (122 बटा.), कां. जाबेर सिंह (89 बटा), एस.एम. गोपाल जी मिश्रा (ग्रु.के. मोकामा), कां. रामा शंकर (49 बटा.), सब इंस्पेक्टर अमी लाल (104 आरएएफ), सब इंस्पेक्टर मुरलीधर (108 आरएएफ), है.कां. शिव नारायण सिंह (40 बटा.), सब इंस्पेक्टर वी सुब्रारायाडु (ग्रु.के. मोकामाघाट), है.कां. सी.पी. दुबे (23 बटा), कां गोविन्द दास (34 बटा.), है.कां. शेर नाथ (125 बटा.), कां. हनुमप्पा मादार (4 बटा), कां सतेन्द्र कुमार तिवारी (34 बटा.), है.कां. नेमहास कुंजुर (37 बटा.), वाशरमैन आर. मोहन राव (ग्रु.के. पुणे), है.कां. जमेल अहमद खान (21 बटा.), कां.बी. लक्ष्मन राव (ग्रु.के. –दो अजमेर), कुक लक्ष्मण सिंह (ग्रु.के. रामपुर), कां. भुपेन्द्र ओझा (87 बटा.), कां. बी.पी. राय (50 बटा.). कां. जी.बी.के. नायर (ग्रु.के. पल्लीपुरम), कमांडेन्ट श्री जे.एस. गिल (21 बटा.), ला.ना. राकेश कुमार (ग्रु. के. पिन्जौर), कां. एन.के. पात्रा (ग्रु.के. जमशेदपुर), इसके अतिरिक्त देर से प्राप्त समाचार के अनुसार माह अप्रैल 2000 में 100 आरएएफ की कां. मारगेट हेमलता विल्सन, माह मई 2000 में ग्रुप केन्द्र दुर्गा पुर के रंगरूट अनुप कुमार मण्डल तथा माह जून 2000 में 28 बटा. के कांस्टेबल/ड्राईवर वेलु मुरगन तथा 2 बटा. के कांस्टेबल मोहम्मद रफीक शाहा भी मृत्यु को प्राप्त हुए।

उत्तरी सेक्टर ने अंतर सेक्टर बास्केट बाल

प्रतियोगिता जीती



उत्तरी सेक्टर की विजेता टीम

2से 7 अगस्त, 2000 तक ग्रुप केंद्र अजमेर में हुयी 9वीं अखिल भारतीय अंतर सेक्टर बास्केटबाल प्रतियोगिता उत्तरी सेक्टर ने जीत ली। प्रतियोगिता में बल की 12 सेक्टरों की टीमों ने भाग लिया। प्रतियोगिता के मैच लीग कम नाक आउट आधार पर खेले गये। प्रतियोगिता का उद्घाटन राजस्थान पुलिस के अजमेर रेंज के उप महानिरीक्षक श्री मनोज भट्ट ने किया। जबकि प्रतियोगिता के समापन के अवसर पर राजस्थान के पूर्व पुलिस महानिदेशक श्री देवेंद्र सिंह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे, उन्होंने विजेताओं को पुरस्कार भी दिये।

दक्षिण सेक्टर तथा उत्तर पश्चिम जोन की टीमें क्रमशः दूसरे व तीसरे स्थान पर रही।



चैन्नई में हुयी *44*वीं अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी मीट में केरिपु बल टीम ने लगातार तीसरी बार कंप्यूटर अवेयरनेस प्रतियोगिता की ट्राफी जीती।



तमिलनाडु के मुख्यमंत्री श्री करूणानिधि से ट्राफी प्राप्त करते बल की टीम के मैनेजर एम.आर. आलम. एवं विजेता टीम महानिदेशालय में महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र के साथ

रजि. न. 4767/87



18 सितम्बर, 2000 को कर्फ्यू के दौरान दरियापुर अहमदाबाद में एक बच्चे की मदद करते आर.ए.एफ. कार्मिक

सी.आर.पी.एफ.
समाचार

31 दिसम्बर 2000



61वें वार्षिकोत्सव पर विशेष



माउंट श्री कैलाश पर्वत पर चढ़ाई करने वाले बल के पर्वतारोही गृहमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी के साथ



अपने त्रिपुरा दौरे के दौरान महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र स्थानीय बच्चों के साथ



सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड-14 अंक-8
31 दिसम्बर, 2000
10 पौष, शक 1922

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं युनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल
ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से डी.जी. महापात्र

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ. प्रेस
झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-72

इस अंक में

महानिदेशक की ओर से

शांति प्रहरी – केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल

केरिपु बल में कल्याण कार्यक्रम

उत्तर पूर्व में केरिपु बल

जम्मू-कश्मीर में केरिपु बल

कोसोवो में दोस्ती का माहौल पैदा कर रहे हैं भारतीय बल

अम्बुश : कारण और निवारण

Central Reserve Police Force-A Unique Froce

CRPF - A Glorious past and challenging future

Some Do’s and Dont’s for CRPF

Housing for the CRPF

Communal Violence - Role of Law Enforcement Agencies

Rapid Action Froce - A Friend in Need

Modernisation of Training

Human Resource Training in CRPF

Computerisation in CRPF

Improvised Explosive Devices-A Tool of Terror

Peace Mission in Kosovo

CRPF Anniversary

Sports and Adventure Activites in CRPF

DG CRPF in Tripura

Training for Excellence

Retirement Blues

A Question of Rejuvenation

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

–संपादक

महानिदेशक की ओर से



केरिपु बल इस वर्ष अपना *61*वां वार्षिकोत्सव मना रहा है। इस अवसर पर हमें देश की इस सबसे बड़ी व पुरानी फोर्स द्वारा देश के निर्माण के लिए किए गए योगदान का निष्पक्ष मूल्यांकन व आत्मनिरीक्षण करना है। और जहां कहीं भी इस महान लोकतांत्रिक गणतंत्र की किसी संस्था को खतरा उत्पन्न हुआ है, केरिपु बल इन खतरों का निष्फल करने के लिए मजबूती के साथ निर्णायक भूमिका के रूप में आगे आया है। बल द्वारा की जा रही विभिन्न प्रकार की ड्यूटियों में *1962*, *1965* व *1971* के तीन राष्ट्रीय युद्ध, पंजाब में आतंकवाद, जम्मू व कश्मीर में छद्म युद्ध में संलग्न उग्रवादियों तथा पूर्वोत्तर में विद्रोही गतिविधियों का मुकाबला करना, साम्प्रदायिक व जातीय हिंसा से निपटना, अत्यावश्यक प्रतिष्ठानों और अति महत्वपूर्ण व्यक्तियों को सुरक्षा प्रदान करना तथा बड़े स्तर पर प्राकृतिक अथवा मानवकृत आपदाओं के दौरान बचाव व राहत सेवाएं उपलब्ध करना शामिल है। *21* अक्टूबर *59* को हाट स्प्रिंग (लद्दाख) में चीनियों के साथ मुठभेड़ में केरिपु बल के जिन कार्मिकों ने अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दिया था, उनकी याद में इस दिन पूरे देश में पुलिस स्मारक दिवस मनाए जाने के साथ ही केरिपु बल के बलिदानों की गाथा अमर हो गई है।

एक मजबूत प्रजातंत्र के लिए स्वतंत्र व निष्पक्ष चुनाव होना सबसे पहली आवश्यकता है। आजादी के बाद भारत में जितने भी चुनाव हुए हैं उन सभी को बिना किसी अवरोधक सफलतापूर्वक संपन्न कराने में केरिपु बल का बहुत बड़ा योगदान रहा है। कठिन परिस्थितियों के बावजूद, केरिपु बल ने पहले पंजाब व पूर्वोत्तर राज्यों में और *1996* में जम्मू व कश्मीर में प्रजातांत्रिक प्रक्रिया बहाल करने में महत्वपूर्ण योगदान किया। केरिपु बल को जहां कहीं भी तैनात किया गया उसने हमेशा ही उल्लेखनीय क्षमता का प्रदर्शन किया तथा अपनी व्यवसायिक दक्षता के आधार पर स्थानीय पुलिस को मजबूत किया।

सांप्रदायिक दंगों और दंगों जैसी स्थितियोंसे निपटने के लिए केरिपु बल के एक

भाग के रूप में विशेष्ट रैपेड एक्शन फोर्स खड़ा किया गया था। महिलाओं व बच्चों के साथ नम्रता व आदर के साथ निपटने के लिए फोर्स में दो महिला बटालियनें भी खड़ी की गई हैं।

फोर्स के प्रति जनता के दिल में जगह बनाने तथा इसका "मानवीय-पक्ष" सामने रखने के लिए केरिपु बल ने देश के विभिन्न भागों में सामुदायिक कल्याण गतिविधियां सफलतापूर्वक चलाई हैं। बल ने खेलों के राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय जगत में चोटी तक ख्याति प्राप्त कर नाम कमाया है।

प्रगति के मामले में, केरिपु बल का केवल कलेवर ही विस्तृत नहीं हुआ है बल्कि ख्याति और मान-सम्मान भी बढ़ा है। वास्तव में यह बड़े संतोष की बात है कि पिछले *61* वर्षों के कठिन दौर में भी केरिपु बल संपूर्ण राष्ट्र के विश्वास को अटूट रखने में सफल रहा है।

देश के उत्तर पूर्वी राज्यों तथा जम्मू कश्मीर में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवान भारी रूप से तैनात हैं। यहां हमें उल्लेखनीय सफलताएं मिली हैं।

सिर्फ देश ही नहीं मौका मिलने पर इस बल के जवानों ने देश से बाहर भी अपनी वीरता और साहस के जौहर दिखाए। हैं। श्रीलंका में भारतीय शांति रक्षक सेना के एक अंग के रूप में केरिपु बल की टुकड़ियां भी तैनात रहीं। संयुक्त राष्ट्र के शांति मिशन के एक अंग के रूप में केरिपु बल की टुकड़ियां कम्बोडिया, हैर्ती, बोस्निया, अंगोला, नामीबिया तथा सोमालिया में भी तैनात रही। वर्तमान में भी बल की टुकड़ियां कोसोवो में तैनात हैं।

हमारे अधिकारियों और जवानों को भारी संख्या में शौर्य और युद्ध सेवा पदक मिले हैं। हमें अपने धर्मनिरपेक्ष एवं सार्वदेशिक स्वरूप पर गर्व है। हमारे जवान देश के हर वर्ग, क्षेत्र, धर्म और जाति का प्रतिनिधित्व करते हैं। समाज के हर वर्ग को इस बल में उचित प्रतिनिधित्व मिला है और इस प्रकार केरिपु बल की हर बटालियन अपने आप में एक छोटे भारत का प्रतिनिधित्व करती है।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के बहुआयामीय स्वरूप के दर्शन इसी बात से होते हैं कि जहां एक और चुनावों के दौरान । हर राज्य से इस की तैनाती की मांग की जाती है, वही अमरनाथ यात्रा जैसी गतिविधियों के दौरान भी इसे यात्रियों की सुरक्षा तथा सहायता के लिए तैनात किया जाता है। यही नहीं खेलों के क्षेत्र में भी केरिपु बल छिपी प्रतिभाओं की खोज कर सामने लाने और उन्हें प्रशिक्षित करने का कार्य करता रहा है। केरिपु बल के कई खिलाड़ी आज अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर देश का नाम रोशन कर रहे हैं।

61 वर्ष पूर्व मध्य प्रदेश के एक छोटे से कस्बे नीमच में एक बटालियन से गठित हुए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के परिवार में आज *141* बटालियनें हैं। इसके सदस्य आज हर उस भूमिका को निभाने में सक्षम हैं, जिसकी एक प्रशिक्षित पुलिसकर्मी और सैनिक से उम्मीद की जाती है।

केरिपु बल इस समय आतंकवादियों तथा विघटनकारी शक्तियों द्वारा देश की एकता और अखंडता के सम्मुख खड़ी की जा रही चुनौतियों से निबटने में पूरी तरह व्यस्त है। इस कार्य में केरिपु बल के जवानों ने भारी संख्या में अपने प्राणों की आहुति दी है, इस मौके पर हम अपने उन बहादुर साथियों को याद करते हुए उन्हें सलाम करते हैं। इन शहीद हुए जवानों के परिवारों के प्रति भी हमारे मन में गहरी संवेदना है। हम इन परिवारों को यह यकीन दिलाना चाहेंगे कि हम हमेशा उनके साथ हैं। उनका हित हमारे लिए सर्वोपरि है।

केरिपु बल को अपने अतीत और उपलब्धियों पर गर्व है। हम देश के सम्मुख खड़ी चुनौतियों के प्रति भी सजग हैं। देश के द्वारा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के प्रति व्यक्त किये गये विश्वास को पूरा करने के लिए हम अपने जवानों को सघन प्रशिक्षण दे रहे हैं, अपनी क्षमताओं को बढ़ा रहे हैं। कई वर्षों के अंतराल के बाद हमने 'फील्ड एक्सरसाइज' प्रशिक्षण क्रम की शुरूआत की है। इसी महीने में कम्पनी स्तर पर 'आपरेशन अमन' एक्सरसाइज चित्तौड़ उदयपुर क्षेत्र में की गई। आगामी वर्ष में हर सेक्टर में इस प्रकार का प्रशिक्षण चलाने की योजना है ताकि नयी चुनौतियों का सामना करने के लिए हम सक्षम हो सकें। हम अपने उद्देश्य वाक्य "सेवा और भक्ति" को हमेशा दिमाग में रखते हैं।

इस मौके पर केरिपु बल में हम सभी यह प्रतिज्ञा लेते हैं कि देश की एकता और अखंडता, शांति और सद्भाव को बनाए रखने के लिए हम कोई भी कदम उठाने से नहीं चूकेंगे, ताकि देश शांति और समृद्धि के पथ पर आगे बढ़ सके।

इस मौके पर मैं बल के सभी सदस्यों और उनके परिवारों को हार्दिक बधाई देता हूं।

जय हिंद।



(डा. त्रिनाथ मिश्र)
महानिदेशक, केरिपु बल

शांति प्रहरी केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल

–डी.जी. महापात्र, जन सम्पर्क अधिकारी

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का इतिहास देश की एकता, अखंडता और शांति व्यवस्था को बनाए रखने के लिए दिये गये बलिदानों और कर्तव्य के प्रति उच्च कोटी के

समर्पण की गाथा है। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने पूरे देश में अपनी उपस्थिति को पूरे समर्पण और सेवा भाव के साथ दर्ज कराया है। चाहे वो बाहरी खतरा हो, आतंकवाद हो, जातीय दंगे हों या फिर प्राकृतिक विभीषिकाएं, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवान हमेशा सरकार तथा जनता द्वारा उनमें व्यक्त किये गये विश्वास पर खरे उतरे हैं।

देश की आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था को बनाए रखने वाला केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल केन्द्र का एक प्रमुख सशस्त्र बल है, 1939 में क्राउन रिप्रेजेंटेटिव पुलिस के रूप में गठित किया गया यह देश का सर्वाधिक पुराना अर्द्धसैनिक पुलिस बल है। 1936 में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी द्वारा मद्रास अधिवेशन में पारित प्रस्ताव के बाद भड़के प्रजामंडल आंदोलन से निबटने तथा देशी राजों रजवाड़ों को कानून व्यवस्था बनाए रखने में मदद देने के उद्देश्य से 27 जुलाई 1939 को सेना की तर्ज पर इस बल की एक बटालियन के गठन की स्वीकृति प्रदान की गयी और इस प्रकार इस बहुमुखी तथा बहुआयामीय बल की शुरूआत हुयी।

स्वतंत्रता के बाद संसद के एक विशेष अधिनियम के द्वारा 28 दिसम्बर, 1949 को इसका नाम बदल कर सेंट्रल रिजर्व पुलिस कर दिया गया। इस अधिनियम के द्वारा इस बल को भारतीय संघ का एक सशस्त्र बल बना दिया गया। तत्कालीन गृहमंत्री सरकार वल्लभ भाई पटेल ने नव स्वतंत्र हुए देश की भविष्य की जरूरतों के अनुरूप इस बल के महत्व को पहचान लिया था। भारत के राष्ट्रपति की ओर से बल को 19 मार्च, 1950 को ध्वज प्रदान किया गया।



केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल को ध्वज प्रदान करते प्रथम गृह मंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल



हाट स्प्रिंग्ज में शहीदों को श्रद्धांजलि देते पुलिस कर्मी

केरिपु बल का प्राथमिक कार्य आंतरिक सुरक्षा बनाए रखने के लिए राज्यों को मदद देना है। अतः इस दृष्टि से इस बल की तैनाती का कोई निश्चित क्षेत्र नहीं है, तैनाती तथा सगठन की दृष्टि से यह बल पूर्ण रूपेण अखिल भारतीय स्वरूप वाला है। आंतरिक सुरक्षा की जरूरतों के मद्दे नजर इस बल को पूरे देश में तैनात किया जाता रहता है। यह एक उच्च व्यवसायिक दक्षता से संपन्न बल है जो राज्य पुलिसों के साथ सम्पूर्ण सद्भाव के साथ काम करता है।

1950 के दशक में भुज, पेप्सू तथा चंबल के इलाकों में केरिपु बल द्वारा चलाए गए डकैत विरोधी अभियान को भारी सफलता मिली। बल ने स्वतंत्रता के बाद छोटे-छोटे राज्यों के भारत में विलय के समय भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस बल ने विद्रोही जूनागढ़ राज्य तथा काठियावाड जैसे छोटे राज्यों द्वारा उस समय किए जा रहे विद्रोह को दबाने में अहम् भूमिका निभाई।

आजादी के तत्काल बाद बल की टुकड़ियों को कच्छ, भुज, राजस्थान तथा सिंध से लगी सीमा पर घुसपैठ को रोकने तथा सीमा से जुड़े अपराधों की रोकथाम के लिए तैनात किया गया। जम्मू-कश्मीर से जुड़ी पाकिस्तान की सीमा पर भी पाकिस्तानियों तथा देशद्रोही तत्वों की घुसपैठ को रोकने के लिए बल की टुकड़ियों को तैनात किया गया। 21 अक्टूबर, 1959 को भारत तिब्बत सीमा पर स्थित हाट स्प्रिंग्ज (लद्दाख) में अपने से बहुत बड़ी चीनी सेना की एक टुकड़ी के साथ लड़ते हुए बल के 10 वीर जवानों ने अपने प्राणों की आहुति दी। उनकी शहादत की याद में 21 अक्टूबर पूरे देश में पुलिस स्मारक दिवस के रूप में मनाया जाता है।

1962 में चीनी आक्रमण के समय अरूणाचल में भी बल ने भारतीय सेना को कंधे से कंधा मिलाकर सहयोग दिया। इस युद्ध में अपने कर्तव्य का पालन करते हुए बल के आठ जवान वीरगति को प्राप्त हुए। 1965 के भारत पाक युद्ध के दौरान भी बल

की टुकाड़ियां पाश्चेम और पूर्वी सीमा पर भारतीय सेना के साथ कंधे से कंधा मिला कर लड़ीं।

देश के अर्द्धसैनिक बलों के इतिहास में पहली बार केरिपु बल की 13 कंपनियों को जिस में एक महिला टुकड़ी भी शामिल थी, देश के बाहर श्रीलंका में तमिल विद्रोहियों से निबटने में लगी भारतीय शांति रक्षक सेना के सहयोगी के तौर पर तैनात किया गया।

1995 में बल की 123 सदस्यों की एक टुकड़ी हैती में चुनावी प्रक्रिया के सुचारू संचालन के लिए संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन के तहत तैनात की गयी। इसके अतिरिक्त बल के कार्मिक संयुक्त राष्ट्र शांति मिशनों के तहत हैती, नामीबिया, सोमालिया, मालदीव तथा बोस्निया हर्जेगोबिना आदि में भी भेजे जाते रहे हैं। वर्तमान में केरिपु बल की 240 सदस्यों वाली एक टुकड़ी जिस में 14 अधिकारी भी शामिल हैं। संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन के तहत मई, 2000 से कोसोवो युगोस्लाविया में तैनात है।

सत्तर के दशक ने अंत में जब कुछ आतंकवादी तत्वों ने त्रिपुरा और मणिपुर में शांति भंग करना शुरू किया तो केरिपु बल की बटालियनों को वहां शांति स्थापना के लिए तैनात किया गया। इसी दौरान अपेक्षाकृत शांत माने जाने वाली ब्रह्मपुत्र घाटी में भी अशांति भड़क उठी। यहां बहुत छोटे पैमाने पर शुरू हुए इस आंदोलन ने आगे चलकर पूरे असम को अपनी चपेट में ले लिया। केरिपु बल को यहां अपनी पूरी शक्ति के साथ न केवल कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए तैनात किया गया, अपितु यहां की संचार व्यवस्था को बनाए रखने का जिम्मा भी केरिपु बल के ही पास था। वर्तमान में बल की 336 कम्पनियां उत्तर पूर्वी राज्यों में तैनात हैं। 1988 से 2000 के बीच उत्तर पूर्वी राज्यों में केरिपु बल ने 19,422 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। विभिन्न मुठभेड़ों में 304 आतंकवादी मारे गये। मगर इस सबके एवज में केरिपु बल को भारी कीमत चुकानी पड़ी, यहां इस अवधि के दौरान बल के 382 जवान वीरगति को प्राप्त हुए तथा 741 गंभीर रूप से घायल हुए।

80 के दशक में जब पंजाब में आतंकवाद का उदय हुआ तो राज्य सरकार ने बड़े पैमाने पर केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल की तैनाती की मांग की। 1981 में पंजाब में बल की 50 कम्पनियों की तैनाती की गयी, जो आगे चल कर 336 कम्पनियों यानि लगभग 56 बटालियनों के बराबर हो गयी। अपनी इस भारी तैनाती तथा कार्य कुशलता के बल पर केरिपु बल ने राज्य सरकार को आतंकवाद खत्म करने में मदद दी। इस दौरान बल के जवानों ने यहां 12997 आतंक़वादियों को गिरफ्तार किया तथा 2551 आतंकवादी विभिन्न आपरेशनों में मारे गये। यहां बल के 192 वीर अधिकारी और जवान शहीद हुए तथा 500 गंभीर रूप से घायल।

जम्मू कश्मीर में 1990 से 1992 के दौरान आतंकवाद पर नियंत्रण पाने के लिए केरिपु बल को काफी नुकसान उठाना पड़ा। यहां आतंकवाद पर काबू पाने के लिए केरिपु बल द्वारा किये गये प्रयासों की सर्वत्र सराहना हयी है। 1988 से यहां बल के जवानों की आतंकवादियों के साथ हुयी मुठभेड़ों में 747 आतंकवादी मारे गये है तथा

4205 को गिरफ्तार किया गया। मगर इस सबके एवज में यहां बल के 189 कार्मिक वीरगति को प्राप्त हुए तथा 1758 गंभीर रूप से घायल।

केरिपु बल की एक विशिष्ट शाखा रैपिड एक्शन फोर्स का गठन अक्टूबर 1992 में सांप्रदायिक दंगों तथा दंगों जैसी स्थितियों से निबटने के लिए किया गया। इसका गठन केरिपु बल की मौजूदा 10 बटालियनों को परिवर्तित करके किया गया। सांप्रदायिक दंगों तथा तनावों के दौरान तुरंत हरकत में आकर तथा निरपेक्ष ढंग से कार्य कर इस बल ने जनता विशेषकर अल्पसंख्यक वर्गों का विश्वास अर्जित किया है। इसकी तैनाती मात्र से संवेदनशील स्थितियां सामान्य होती देखी गयी हैं। दंगों, बाढ़, भूकंप, तूफान, डेंगू, प्लेग आदि प्रकोपों तथा दुर्घटनाओं के दौरान तुरंत हरकत में आकर बचाव और राहत कार्यों में आरएएफ के योगदान ने सरकार तथा इस बल के मानवीय पहलु को उजागर किया है।

अक्टूबर 1999 में उड़ीसा में आए विनाशकारी तूफान के बाद वहां बचाव व राहत कार्यों के लिए रैपिड एक्शन फोर्स की 6 कम्पनियां तैनात की गयी। बल की 10 मैडिकल टीमों ने तूफान प्रभावित जिलों में मरीजों का इलाज किया।

केरिपु बल देश का अकेला ऐसा अर्द्धसैनिक पुलिस बल है जिसकी अपनी दो महिला बटालियनें हैं। 6 फरवरी 1986 को केरिपु बल की पहली 88 महिला बटालियन का गठन किया गया। जांच और तलाशी कार्यों के अलावा महिला कर्मियों को अमरनाथ यात्रा के दौरान पहलगाम से पवित्र गुफा तक यात्रियों की सुरक्षा के लिए भी तैनात किया गया। बल की महिला कर्मियों ने अपनी भूमिका के लिए नागरिक और सैन्य प्रशासन से व्यापक प्रशंसा अर्जित की है। इस बटालियन ने पहले मेरठ के दंगों के दौरान तथा बाद में श्रीलंका में तैनाती के दौरान अपनी भूमिका के लिए काफी प्रशंसा अर्जित की। वर्तमान में इस बटालियन की कम्पनियां श्रीनगर, गुवाहाटी, दिल्ली तथा अयोध्या में तैनात हैं। दूसरी 135 महिला बटालियन का गठन 1996 में किया गया, जिसका मुख्यालय गांधीनगर, गुजरात में है। इस बटालियन की टुकड़ियां दिल्ली, अहमदाबाद तथा इम्फाल में तैनात हैं।



श्रीलंका में तैनात बल की महिला कर्मी

जम्मू कशमीर तथा उत्तर पूर्वी राज्यों जैसे अशांत क्षेत्रों में अपने कर्त्तव्य को अंजाम देने के अतिरिक्त महिला बटालियन की लड़कियों ने राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय स्तर पर खेलों में भी नाम कमाया है।

केरिपु बल ने भारी तादाद में वृक्षारोपण के कार्यक्रम को अपनाया है। उड़ीसा में केरिपु बल ने 1994 में भुवनेश्वर के पास 24000 हेक्टेयर क्षेत्र के बरबरा वन क्षेत्र को संवर्धन एवं संरक्षण के लिए अंगीकृत किया है। कार्मिक अपनी तैनाती के बाद से इस वन क्षेत्र में अवैध कटायी तथा शिकार आदि पर पाबंदी लगाने में कामयाब रहे हैं। इस वन क्षेत्र से बल के कार्मिक लगभग 77.80 लाख रुपए की अवैध वन सम्पदा बरामद करने के अतिरिक्त इलाके में चल रही 40 अवैध आरा मशीनों को भी बंद कराने में सफल रहे।

केरिपु बल ने खेल तथा खेल प्रतिभाओं को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। केरिपु बल ने देश को जी.एस. रंधावा, हरिचंद, ईश्वर सिंह, खजान सिंह, बन्नू सिंह, सुखवंत सिंह, सुरेश चंद, आर.एस. बल, एन. कुंजारानी देवी, जीवन ज्योति, एन. लक्ष्मी, राजाराम टोकस, तिलक थापा, परमजीत सिंह, रिग्जेन अगमों, जिंसी फिलीप तथा गीता मनराल जैसे चौटी के खिलाड़ी दिये हैं। रोमांचक खेलों के क्षेत्र में भी केरिपु बल ने पर्वतारोहण, नौकायान, मोटर साइकिल अभियान जैसे अभियानों का आयोजन किया है। इसी वर्ष 20-21 मई को केरिपु बल के पर्वतारोहियों ने गढ़वाल हिमालय की माउंट श्री कैलाश (6932 मीटर) की चोटियों पर विजय प्राप्त की। इस पर्वतारोहण दल में चार महिलाओं सहित कुल 16 पर्वतारोही शामिल थे।



वाइट वाटर राफ्टिंग के दौरान बल की महिला कर्मी

अपने गठन के बाद से अब तक केरिपु बल ने एक जोर्ज क्रास (जी), एक वीर चक्र, एक पद्म श्री, तीन किंग्स पुलिस मेडल फार गेलेंटरी, 49 राष्ट्रपति के विशिष्ट सेवाओं तथा शौर्यवीरता के लिए पुलिस फायर सर्विस पदक, 215 शौर्यवीरता तथा विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति के पुलिस पदक, 1672 शौर्यवीरता तथा सराहनीय सेवाओं के लिए पदक, 4 विशिष्ट सेवा मेडल, 1 युद्ध सेवा मेडल, 5 सेना मेडल, 77 प्रधानमंत्री के जीवन रक्षा पदक, एक जीवन रक्षा पदक तथा 7 आई.पी.एम. जी. प्राप्त किये हैं।

1939 में एक बटालियन से गठित किया गया यह बल आज 141 बटालियनों, 13 सेक्टरों, 28 रेंजों, 30 ग्रुप केन्द्रों, 8 प्रशिक्षण संस्थानों, तीन बेस अस्पतालों तथा एक 100 बिस्तर वाले अस्पताल का विशाल परिवार है।

केरिपु बल का स्वरूप अखिल भारतीय है। केरिपु बल की छोटी से छोटी युनिट में देश के सभी हिस्सों, वर्गों और धर्मों के लोग मिल जाएंगे। यह सही मायनों में एक राष्ट्रीय बल है। इसका राष्ट्रीय और धर्मनिरपेक्ष स्वरूप ही इसकी शक्ति है। इसके इसी गुण की वजह से नागरिकों को इस बल में पूर्ण विश्वास है। इस बल की भूमिका आतंकवाद के मुकाबले से लेकर जातीय दंगों के दौरान तैनाती, कानून व्यवस्था की स्थितियों, हड़तालों, धरनों आदि के दौरान शांति व्यवस्था बनाना तथा प्राकृतिक विभीषिकाओं के दौरान बचाव और राहत कार्यों तक फैली है। अपने उद्देश्य वाक्य सेवा एवं भक्ति के अनुरूप यह बल देश के सम्मुख खड़ी सभी चुनौतियों का दृढ़ता के साथ सामना करने की अपनी प्रतिबद्धता को बनाए रखते हुए देश के शांति रक्षक की अपनी भूमिका को निभाता रहेगा। देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने की इसकी समर्पित सेवाओं के कारण देश की आंतरिक सुरक्षा में इस बल को एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। इसने सही मायनों में स्वयं को शांति प्रहरी साबित किया है।

केरिपु बल में कल्याण कार्यक्रम

देश की आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था में लगा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल देश का एक प्रमुख अर्द्धसैनिक पुलिस बल है। एक लाख सत्तर हजार सदस्यों वाला यह बल अपने संगठन तथा तैनाती की दृष्टि से अखिल भारतीय पुलिस बल है। केरिपु बल का प्राथमिक कार्य राज्यों को कानून व्यवस्था बनाए रखने के कार्यों में मदद देना है।

अपनी उच्च कोटि की व्यवसायिक दक्षता के कारण स्थानीय पुलिस के साथ तुरंत तालमेल बैठा लेने की इसकी क्षमता इसकी बहुत बड़ी शक्ति है। कठिन आंतरिक सुरक्षा समस्याओं से निबटने के लिए राज्य पुलिस बलों की दक्षता बढ़ाने में यह एक उत्प्रेरक की भूमिका अदा करता है। स्थानीय स्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढाल लेने की इसकी क्षमता इसकी प्रमुख विशेषता है, देश की आंतरिक सुरक्षा समस्याओं से निबटने के लिए बहुत कम समय पर मिले नोटिस पर भी यह देश के एक कोने से दूसरे कोने में गतिमान रहता है। अपने गठन से ही केरिपु बल ने देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने में एतिहासिक भूमिका निभायी है। पंजाब में शांति बहाल करने तथा जम्मू-कश्मीर में लोकतांत्रिक प्रक्रिया को फिर शुरू करवाने में केरिपु बल की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण रही है।



केरिपु बल वार्षिक परेड में एक जवान की विधवा को सम्मानित करते हुए उपराष्ट्रपति श्री कृष्णकांत



केंद्रीय मंत्री श्री सुंदरलाल पटवा *35* बटा. के द्वितीय कमान अधिकारी श्री आर.के. सिंह की विधवा श्रीमती गिरीबाला सिंह को सम्मानित करते हुए। श्री आर.के. सिंह मणिपुर में *3* अक्तूबर, *1999* को एक आतंकवादी हमले में शहीद

हुए।

देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने के लिए अपने कर्तव्य का निर्वाह करते हुए के.रि.पु. बल के कार्मिकों ने भारी कीमत अदा की है। कर्तव्य पर मारे गये बल के इन कार्मिकों के परिवारों का कल्याण बल के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य है। बल के कार्मिकों को जिन स्थितियों में रहते हुए अपने कर्तव्य को अंजाम देना पड़ता है, विशेषकर उनमें बल की कल्याण गतिविधियों की प्रासंगिता और बढ़ जाती है।

के.रि.पु. बल के कार्मिकों का जीवन काफी कुछ बनजारों का सा है, देश में लगातार बिगड़ती कानून व्यवस्था की स्थितियों के कारण इन्हें अत्यधिक दबाव व तनाव में रहना पड़ता है, इन सभी तथ्यों को दृष्टि में रखते हुए बल के कार्मिकों के कल्याण कार्यक्रमों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती है। बल के सभी अधिकारियों को निर्देश है कि वह अपने मातहत सभी कार्मिकों से तालमेल बनाए रखें तथा उनकी समस्याओं का तुरंत समाधान करें। बल के कार्मिकों के कल्याण के लिए इस समय कई योजनाएं चलायी जा रही हैं। जिनमें से कुछ प्रमुख योजनाए निम्न है।

बल में सेवारत सभी अराजपत्रित कार्मिकों के लिए मुफ्त आवास तथा सभी कार्मिकों के लिए मुफ्त चिकित्सा सुविधा उपलब्ध हैं। मंहगें उपचार के लिए केन्द्रीय कल्याण निधि से कार्मिकों को वित्तीय सहायता भी उपलब्ध करायी जाती है, इसी उद्देश्य के लिए कार्मिकों को कल्याण निधि से डेढ़ महीने का अग्रिम वेतन लेने की भी सुविधा है। बल की सभी युनिटों में सेक्शन स्तर पर मनोरंजन सुविधाएं उपलब्ध हैं। कार्मिकों से अलग रह रहे परिवारों के लिए आवास का प्रस्ताव विचाराधीन है।

सभी ग्रुप केन्द्रों में पुनर्वास केन्द्रों की स्थापना की गयी है, जोकि सेवानिवृत्त कार्मिकों को रोजगार प्राप्त करने में मदद करते हैं।

कर्तव्य निर्वाह के दौरान शत–प्रतिशत रूप से अक्षम हो चुके कार्मिकों को आजीवन 3,000 रुपया प्रतिमाह जोखिम निधि से प्रदान किया जाता है। यदि बीच में उसकी मृत्यु हो जाती है, तो उसके आश्रित को 20 वर्षों तक 1000 रुपए प्रतिमाह कल्याण निधि से प्रदान किये जाते हैं। 100 प्रतिशत से कम अक्षम व्यक्ति को निम्न लाभ दिये जाते हैं।

30 प्रतिशत अक्षमता के मामले में कार्मिक को एक मुश्त 40,000 रुपए का अनुदान प्रदान किया जाता है। 30 से 50 प्रतिशत अक्षमता पर 50,000 रुपए, 50 से 60 प्रतिशत अक्षमता के मामले में 60,000 रुपए, 60 से 70 प्रतिशत अक्षमता के मामले में 70,000 रुपए, 70 से 80 प्रतिशत मामले में 80,000 रुपए, और 80 से 90 प्रतिशत मामले में 90,000 रुपए तक का अनुदान दिया जाता है। 90 प्रतिशत से अधिक अक्षमता पूर्ण अक्षमता मानी जाती है। यदि अक्षमता 50 प्रतिशत है तो 5000 रुपए कल्याण निधि से भी दिये जाते हैं। और प्रति 10 प्रतिशत अक्षमला पर 1000 रुपए बढ़ाया जाता है।

मृत कार्मिकों के परिवारों के लिए कल्याण योजनाएं : विभाग की विभिन्न कल्याण

योजनाओ के तहत दी जाने वाली वित्तीय सहायता के अतिरिक्त सरकार द्वारा भी मृतक कार्मिक के परिवार को अनुदान राशि प्रदान की जाती है।

परिवार के किसी एक योग्य व्यक्ति को रोजगार उपलब्ध कराया जाता है। कार्मिक के एक बच्चे को अपनी शिक्षा जारी रखने के लिए छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है।

प्रत्येक ग्रुप केन्द्र में दो टाइप–एक आवास "निर्मल सदन" नाम से मृत कार्मिकों के परिवारों के लिए आरक्षित हैं।

आतंकवादियों या देशद्रोही गतिविधियों से निबटते हुए कर्तव्य पर मारे गये कार्मिक के आश्रित को केन्द्रीय सरकार द्वारा 7.5 लाख रुपए की अनुग्रह राशि प्रदान की जाती है।

सरकारी ड्यूटी पर असमाजिक तत्वों या आतंकवादियों द्वारा मार दिये जाने या वाहन दुर्घटना में मृत्यु हो जाने पर कार्मिक के आश्रित को 5 लाख रुपए की अनुग्रह राशि प्रदान की जाती है।

इसके अतिरिक्त विभिन्न राज्य सरकारें भी कर्तव्य पर मारे गये कार्मिकों के आश्रितों को अलग अलग अनुग्रह राशि प्रदान करती हैं। उन कार्मिकों को सामान्य तौर पर मिलने वाले सभी सेवा लाभ भी दिये जाते हैं।

आतंकवादी घटनाओं में मारे गये कार्मिकों की विधवाओं को रेलवे दूसरी श्रेणी की यात्रा में 75 प्रतिशत रियायत देता है।

पैट्रोलियम पदार्थो की एजेंसियों के लिए कर्तव्य पर मारे गये कार्मिकों के आश्रितों व विकलांगों (सामान्य नागरिक) के लिए 8 प्रतिशत आरक्षण है।

कर्तव्य पर मारे गये अर्द्धसैनिक बलों के कार्मिकों के बच्चों के लिए एमबीबीएस एवं बीडीएस में योग्यता के आधार पर 7 सीटों की व्यवस्था की गयी है।

के.रि.पु. बल अधिकारियों की पत्नियों की कल्याण संस्था : के.रि.पु. बल अधिकारियों की पत्नियों की कल्याण संस्था कर्तव्य पर मारे गये कार्मिकों की विधवाओं को कल्याण केन्द्रों तथा मांटेसरी स्कूलों में रोजगार दिलाने में मदद करती हैं। यह संस्था विधवाओं के लिए पुनः विवाह का आयोजन भी के.रि.पु. बल की मदद से करती है। इस तरह के विवाहों पर होने वाले खर्च का वहन केन्द्रीय कल्याण निधि से किया जाता है।



सी.आर.पी.एफ. पब्लिक की एक छात्रा नृत्य प्रस्तुत करते हुए

परिवार कल्याण केन्द्र : सभी ग्रुप केन्द्रों में चल रहे परिवार कल्याण केन्द्रों में बल के कार्मिकों की पत्नियों तथा बेटियों को सिलाई आदि का काम उपलब्ध कराने के अतिरिक्त यहां प्रौढ़ शिक्षा की कक्षाएं भी चलायी जाती हैं। साथ ही अचार, जूस, आम तथा कालीन आदि बनाने का काम भी यहां सिखाया जाता है। इसके अतिरिक्त बल की सभी युनिटों तथा ग्रुप केन्द्रों में सहकारी स्टोर तथा केंटीन की सुविधाएं उपलब्ध हैं। कुछ ग्रुप केन्द्रों में बेकरी, कोल्हू तथा गैस एजेंसियां भी काम कर रही हैं।

शिक्षा : दिल्ली में केन्द्रीय स्कूलों में पढ़ने वाले बल के कार्मिकों के बच्चों के लिए ग्रुप केन्द्र नयी दिल्ली में एक छात्रावास खोला गया है। छात्रावास का बाकी सभी खर्च

शिक्षा निधि से किया जाता है, यह सुविधा अन्य स्थानों पर भी उपलब्ध है।

मैट्रिक तथा इंटर की परीक्षाओं में उच्च प्रदर्शन करने वाले बल के कार्मिकों के बच्चों को मेडिकल तथा इंजीनियरिंग की परीक्षाओं की तैयारी के लिए मदद प्रदान की जाती है।

नई दिल्ली, रोहणी तथा जवाहर नगर रंगारेड्डी हैदराबाद में दो सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल चलाए जा रहे हैं। बल के काफी कार्मिकों के बच्चे इन स्कूलों तथा इनमें स्थित छात्रावासों का लाभ उठा रहें हैं। बल के कार्मिकों के बच्चों के लिए दिल्ली, आवड़ी (तमिलनाडु) तथा भुवनेश्वर (उड़ीसा) में तीन आईटीआई स्थापित किये गये हैं। यहां बल के कार्मिकों के बच्चों को मुफ्त प्रशिक्षण दिया जाता है। यहां कार्मिकों के बच्चों के लिए छात्रावास की सुविधा भी उपलब्ध है।

के.रि.पु. बल शिक्षा निधि से सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल तथा आईटीआई चलाने के अतिरिक्त योग्य बच्चों के लिए छात्रवृत्तियों, मुफ्त किताबों तथा विशेष पुरस्कारों आदि का भी प्रबन्ध किया जाता है।



सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल के बच्चों द्वारा लगायी गयी प्रदर्शनी का मुआयना करते हुए के.रि.पु. बल अधिकारियों की पत्नियों की कल्याण संस्था की अध्यक्षा श्रीमती चित्रा मिश्र

बल के सभी ग्रुप केन्द्रों में मांटेसरी स्कूल चलाए जाते हैं, जहां बच्चों को दोपहर का मुफ्त भोजन भी उपलब्ध कराया जाता है।

केन्द्रीय कल्याण निधि लाभ : मंहगें चिकित्सा उपचार के लिए बल के कार्मिकों तथा उनके बच्चों को वह वित्तीय सहायता उपलब्ध करायी जाती है जो सरकारी चिकित्सा नियमों के तहत देय नहीं है। इलाज के दौरान कार्मिक के पास कोई छुट्टी उपलब्ध न होने पर उसे इस निधि से पूरा वेतन उपलब्ध कराया जाता है। अगर बल का कार्मिक किसी आतंकवादी घटना के दौरान घायल हुआ है तो उसे उसके इलाज

के दौरान वित्तीय सहायता भी उपलब्ध कराया जाती है।

जोखिम निधि : यह बल के प्रत्येक कार्मिक के लिए आवश्यक योजना है बल का प्रत्येक कार्मिक इस निधि में प्रतिमाह 100 रुपए का योगदान देता है। इस निधि के सदस्य की मृत्यु के मामले में उसके आश्रित को इस निधि से एक मुश्त 1,00,000 (एक लाख) रुपए की सहायता उपलब्ध करायी जाती है। इसके अतिरिक्त उसको 20 वर्षों तक 1000 रुपए प्रतिमाह का आवर्ती भुगतान भी किया जाता है।

स्पेशल जोखिम निधी (बी) : यह एक स्वैच्छिक योजना है, जिसके तहत इसके सदस्य को आसान किश्तों में 820 रुपए जमा करने होते हैं। सदस्य के मृत्यु के मामले में उसके आश्रित को इस निधि से 40,000 रुपया एक मुश्त प्रदान किया जाता है। बाकि सदस्यों को सेवानिवृत्ति के बाद यह राशि निम्न अनुपात में लौटायी जाती है। 6 साल की सेवा के बाद 800 रुपए, 7 से 20 साल की सेवा के बाद 1600 रुपए तथा 21 साल से अधिक की सेवा के बाद 2400 रुपए।

बीमा : मुठभेड़ों, दुर्घटनाओं तथा दूसरी अप्राकृतिक स्थितियों में बढ़ती मृत्यु दर को दृष्टि में रखते हुए बल के सभी कार्मिकों का बीमा कराया गया है। बल के अराजपत्रित कर्मचारियों के लिए प्रिमीयम की राशि 70 रुपए प्रतिवर्ष है जबकि उनका बीमा 1,10,000 रुपए का है। बल के राजपत्रित अधिकारियों के लिए प्रीमियम राशि 140 रुपए प्रतिमाह है तथा उनका बीमा 2,20,000 रुपए का है।

उत्तर पूर्व में के.रि.पु. बल

देश का उत्तर पूर्वी भाग सात बहनों के नाम से जाना जाता है। अब इसमें आठवां राज्य (सिक्किम) एक भाई के रूप में और जुड़ गया है। और अब उत्तर पूर्व के राज्य सात बहनें और एक भाई के रूप में जाने जाते हैं। यह क्षेत्र विभिन्न समुदायों, वर्गों और भिन्न भाषाएं बोलने वाले लोगों का क्षेत्र है जिन की सांस्कृतिक विरासत और परंपराओं में भी भिन्नता है। इस क्षेत्र के मनमोहक सौंदर्य के अतिरिक्त यहां के निवासियों का भोलापन और उनका सादगी भरा जीवन भी यहां आनेवालों को अपनी ओर आकर्षित करता है। खूबसूरत झीलों, नदियों, पहाड़ों और घने जंगलों से भरा यह प्रदेश यहां आने वाले सैलानियों के लिए स्वर्ग से कम नहीं है। हालांकि देश के अन्य राज्यों की अपेक्षा ये सभी राज्य पिछड़े हुए हैं, किन्तु यहां के निवासी बहुत सभ्य और सुसंस्कृत हैं। मैदानी क्षेत्रों के नागरिकों के मन में यह गलत धारणा है कि इन प्रदेशों में रहने वाले नागरिक आदिवासी या जनजातियों के लोग हैं। लेकिन ऐसा नहीं है।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल और उत्तर पूर्वी राज्यों का बड़ा पुराना रिश्ता है। जब आजादी के फौरन बाद के.रि.पु. बल की एक टुकड़ी को नागा विद्रोहियों से निबटने के लिए नागालैण्ड में तैनात किया गया था। इस क्षेत्र में नागाओं की विद्रोही

गतिविधियां सब से पुरानी हैं तथा अंग्रेजों की देन हैं। नागा क्लब की स्थापना 1918 में हुयी थी और 1929 में जब साइमन कमीशन कोहिमा आया तो नागाओं ने उससे कहा कि उन्हें प्रस्तावित सुधारों से दूर रखा जाए। नागा नेशनल कौंसिल (एनएनसी) का गठन कोहिमा के तत्कालीन डिप्टी कमीशनर चार्ल्स पावसे की पहल पर हुआ। भारत और बर्मा के जनजातीय इलाकों को मिलाकर एक ब्रिटिश कालोनी बनाने के विचार ने जन्म लिया। यही विचार बाद में एनएससीएन के अंतर्गत अलगाववादी आंदोलन में बदल गया। के.रि.पु. बल की चार कंपनियों की एक टुकड़ी को सबसे पहले 1956–57 में इस इलाके में कोहिमा और उसके आस–पास के क्षेत्रों में नागा विद्रोहियों की गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए भेजा गया। यह इलाका असम जिले के नागा हिल्स और नेफा के त्वेन सांग सीमांत प्रांत के रूप में जाना जाता था। बाद में 1957 में इनसे केन्द्रीय प्रशासन के अधीन क्षेत्रों में ले लिया गया और 1 दिसम्बर, 1963 को इसे नागालैण्ड राज्य के रूप में बदल दिया गया। अब तक नागालैंड में विद्रोही गतिविधियां अपने चरम पर पहुंच चुकी थीं। 1956 से 62 के दौरान नागाओं ने पांच बार केरिपु बल कैम्पों पर हमला किया। केरिपु बल ने 311 विद्रोहियों को गिरफ्तार कर 195 घातक हथियार बरामद किये। यह संघर्ष और भीषण होता गया और 1974 तक बल के 154 कार्मिक कर्त्तव्य पर लड़ते हुए। मणिपुर और नागालैण्ड क्षेत्र में वीरगति को प्राप्त हो चुके थे।



कोहिमा इम्फाल मार्ग पर एक पुल की निगरानी करते बल के कार्मिक

1962 के भारत चीन युद्ध के दौरान केरिपु बल को तत्कालीन नेफा के कामेंग और सियांग सीमांत प्रदेशों में तैनात किया गया। बाद में यह प्रदेश 1972 में संघ शासित प्रदेश और 1987 में अरूणाचल प्रदेश के रूप में अलग राज्य के रूप में अस्तित्व में

आ गया। युद्ध विराम के बाद केरिपु बल को एक तटस्थ बल के रूप में हाथेयार और गोलाबारूद को अपने अधिकार में लेने के लिए चुना गया। उस वक्त चीन का इरादा नेफा के कामेंग सियांग, लोहित और तिरेप तक के सीमांत क्षेत्रों को अपने कब्जे में ले लेने का था। वहां हमारी टुकड़ियों ने दोबारा नागरिक मुख्यालय स्थापित कर इन पांचों क्षेत्रों में भारतीय प्रशासन का कामकाज सुचारू रूप से शुरू कराने में मदद दी। 1971 के भारत पाक युद्ध के दौरान केरिपु बल की तीन बटालियनें पूर्वी सेक्टर में तैनात की गयी। बल के कार्मिकों ने महत्वपूर्ण संस्थानों की सुरक्षा के साथ साथ सरहद पर लड़ रही सेनाओं की सप्लाई लेन को भी यथावत बनाए रखने में मदद दी।

केरिपु बल जिसका गठन मूलतः कानून व्यवस्था की स्थितियों को बनाए रखने के लिए किया गया था। दिन प्रति दिन आतंकवाद विरोधी चुनौतिपूर्ण भूमिकाओं में उलझता जा रहा था। चीनी आक्रमण के बाद आंतरिक गड़बड़ियों के कारण उत्तर पूर्वी क्षेत्र में केरिपु बल की तैनाती लगातार बढ़ती गयी। बल की टुकड़ियों को असम, नेफा और नागालैंड में तैनात किया गया । असम का लुसाई पहाड़ी जिला (मिजोरम) 60 के दशक के शुरू में विद्रोही गतिविधियों से सर्वाधिक प्रभावित था। विद्रोह का यह स्तर घटता बढ़ता रहता, था जिस ने अंततः देश के विरूद्ध सशस्त्र विद्रोह का रूप ले लिया। असम के लुसाई जिले को 1972 में मिजोरम के रूप में एक संघ शासित प्रदेश बना दिया गया। डिस्टर्ब एरिया एक्ट के तहत इसे अशांत क्षेत्र घोषित कर दिया गया। उस समय यहां केरिपु बल की 15 बटालियनें तैनात थी। हमारे जवानों की बहादुरी लगातार एमएनएफ (मिजो नेशनल फ्रंट) पर दबाव बना रही थी और उन्हें आत्म समर्पण के लिए मजबूर कर रही थी। 1987 में शांति समझौते के बाद मिजोरम भारतीय संघ का 23वां राज्य बन गया। राज्य के प्रथम चुनावों को सुचारू एवं शांति पूर्ण ढंग से संपन्न कराने में केरिपु बल ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। लोकतांत्रिक ढंग से चुनी गयी सरकार के साथ ही राज्य में सामान्य स्थिति बहाल हो गयी।



एक दुर्गम क्षेत्र में बल की गश्त

त्रिपुरा भारत में विलय के साथ ही 1949 में संघ शासित प्रदेश के रूप में गठित हो गया और 1972 में एक पूर्ण राज्य बना दिया गया। किन्तु यह राज्य अपने जन्म से ही जनजातीय और गैर जनजातीय और घुसपैठियों के बीच संघर्ष की भूमि बना रहा। अन्य उत्तर पूर्वी प्रदेशों की तरह त्रिपुरा में भारत संघ से अलग होने के लिए कोई

आंदोलन नहीं चला, किन्तु यहां संघर्ष का रूप राज्य के अंदर ही अल्पसंख्यक जनजातीय समुदायों की पहचान बनाए रखने से संबंधित था। इस संघर्ष के सूत्रधार मुख्य गुट एटीटीएफ (आल त्रिपुरा ट्राइबल फोर्स) का गठन 1990 में टीएनवी (ट्राइबल नेशनल वालंटियरस) से टूट कर हुआ। 1988 में भारत सरकार के साथ शांति समझौता करने वाला टीएनवी त्रिपुरा में सबसे खतरनाक भूमिगत गुट था। राज्य में बल की 11 बटालियनों की लगातार तैनाती बनी रही। बल के जवानों ने इलाके में अपना दबाव बनाए रखते हुए स्थितियों पर नियंत्रण बनाए रखा।

असम में केरिपु बल ने 1960 के दशक में भाषाई आंदोलन के दौरान स्थानीय पुलिस को मदद दी। केरिपु बल को गुवाहाटी से डिब्रूगढ़ तक और नोगांव और तेजपुर में कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए तैनात किया गया। जैसे-जैसे तूरा, सिलचर और डिब्रूगढ़ में अशांति फैलती गयी केरिपु बल की इन क्षेत्रों में तैनाती बढ़ती रही। बल के जवानों की कठोर कर्तव्यनिष्ठा और बहादुरी के दम पर बिगड़ती स्थितियों पर प्रभावशाली ढंग से नियंत्रण कर लिया गया। कचार में स्थितियों पर नियंत्रण पाने में केरिपु बल ने अद्वितीय कौशल का परिचय दिया। 11 बटालियन ने 38 पाकिस्तानी घुपैठियों को पकड़ कर एक इतिहास की रचना की।

फरवरी 1976 में उत्तर पूर्वी राज्यों में लगातार बढ़ती बल की तैनाती को दृष्टि में रखते हुए महानिरीक्षक (उत्तर पूर्व) के कार्यालय की स्थापना की गयी। बाद में महानिरीक्षक परिचालन मणिपुर और नागालैंड तथा त्रिपुरा की स्थापना के साथ उत्तर पूर्व में परिचालनिक जिम्मेदारियों को बांट दिया गया।

उत्तर पूर्व का सबसे पुराना राज्य असम, आज फिरौती, लूट, अपहरण और हत्याओं की भूमि बन कर रह गया है। इन सब गतिविधियों को अंजाम देने वाले मुख्य गुट उल्फा (युनाइटेड लिब्रेशन फ्रंट आफ असम) की स्थापना कुछ असंतुष्ट लोगों ने 1979 में की थी, बहरहाल 1986 तक यह नागरिकों को बंगला देशी घुसपैठियों के खिलाफ भड़काने में लगा रहा। बाद में 1992 तक इस ने अपने अभियान का स्वरूप बदल कर असम को एक तथाकथित स्वतंत्र देश का दर्जा दिलाने के लिए सशस्त्र संघर्ष का रूप दे दिया। असम में कार्यरत मुख्य अलगाववादी गुट हैं। उल्फा, यूएनएलएफ (युनाईटेड नेशनल लिब्रेशन फ्रंट आफ मणिपुर), एनएससीएन (नेशनल सोशलिस्ट काउंसिल आफ नागालैंड), के इसाक और मुइवाह गुट तथा पीएलए (पीपुल लिब्रेशन आर्मी), इन गुटों की सक्रियता के कारण यहां सुरक्षा बलों को अत्यधिक चौकसी और अहतियात बरतनी पड़ रही है। इस क्षेत्र में एक दम से उभरे हिंसा एवं अलगाव वादी माहौल के कारण सातों राज्यों की सरकारों तथा केन्द्र सरकार ने आतंकवादियों के विरूद्ध एक साथ मिलकर अभियान चलाने की ठानी और 1995 में असम में युनीफाइड कमांड के अधीन एक संयुक्त आपरेशन चलाया गया। इस आपरेशन तथा इलाके पर केरिपु बल के दबाव के कारण इन अलगाववादी गुटों को गंभीर परिणाम भुगतने पड़े । बंगलादेश, भुटान तथा एनएससीएन के साथ शांति वार्ताओं के साथ स्थितियों को और बेहतर बनाने का मौका मिला।

तीन आतंकवादियों द्वारा आत्मसमर्पण



श्री जोर्ज सी पोडीपारा, महानिरीक्षक (परिचालन) त्रिपुरा को हथियार सौंपता एक आतंकवादी

अगरतल्ला, त्रिपुरा में 9 दिसम्बर, 2000 को तीन एन.एल.एफ.टी. उग्रवादियों ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिरीक्षक परिचालन (त्रिपुरा) श्री जोर्ज सी. पोडीपारा ने समक्ष आत्मसमर्पण किया। इन उग्रवादियों ने एक .22 विदेशी पिस्तौल, तीन .22 जिंदा कारतूस, एक .36 एच.ई. ग्रेनेड, 9 एम.एम. के 34 जिंदा राउंडस, एक राकेट लांचर बम, एक सी.एम. गन तथा कई दस्तावेज भी आत्मसमर्पण के समय महानिरीक्षक श्री जोर्ज सी. पोडीपारा को सौंपे। इस मौके पर त्रिपुरा के पुलिस महानिदेशक सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद थे।

उत्तर पूर्वी राज्यों में अपनी परिचालनिक क्षमताओं के अंतर्गत कार्य करते हुए केरिपु बल ने हमेशा प्रयास किया है कि भारतीय संविधान के दायरे के अंतर्गत ही सभी गुटों को वार्ता के लिए तैयार कर सके । यह केरिपु बल टुकड़ियों के ही प्रयास थे कि सरकार और एमएनएफ, टीएनवी और बोडो गुटों के बीच वार्ताएं संभव हो सकीं। किन्तु समझौतों पर हस्ताक्षर करना उतना कठिन नहीं था, जितना की इन समझौतों के प्रावधानों को लागू करना था। सबसे पहले नागरिकों के दिलो दिमाग में पुनः विश्वास पैदा करने की जरूरत थी। वे खुद को विद्रोहियों और कानून के रक्षकों के बीच फसा न महसूस करें। इस के लिए जरूरी है इलाके की बुनियादी समस्याओं की तरफ जल्दी से ध्यान दिया जाए।

इन इलाकों में केरिपु बल विद्रोहात्मक गतिविधियों से निबटने के अतिरिक्त बाढ़ आदि प्राकृतिक विभीषिकाओं के दौरान बचाव और राहत कार्यों, नागरिकों के लिए चिकित्सा शिविरों, पल्स पोलियों कैम्पों, वृक्षारोपण, कमजोर तबकों की मदद तथा रेल दुर्घटनाओं आदि के समय भी मदद देने के कार्य में लगा है।

आज केरिपु बल की कुल 766 कम्पनियों में से 338 कम्पनियां उत्तर पूर्वी राज्यों में तैनात है – यानी लगभग आधा बल इस समय उत्तर पूर्व में तैनात है। यही अपने आप में इस बात का साक्ष्य है कि केरिपु बल की भूमिका उत्तर पूर्वी राज्यों एवं वहां के नागरिकों के लिए कितनी महत्वपूर्ण है।

1988 से लेकर अब तक लगभग 12 वर्षों के दौरान केरिपु बल ने अकेले असम में 15,148 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया है। जबकि 188 आतंकवादी इस दौरान 272 आपरेशनों में मारे गये। इस दौरान 1359 घातक हथियार तथा 12,066 गोली बारूद भी बरामद किया गया। मगर इस उपलब्धि की भारी कीमत भी बल को चुकानी पड़ी है। बल के 97 जवान और अधिकारी इस दौरान यहां वीरगति को प्राप्त हुए तथा 247 गंभीर रूप से घायल ।



उत्तर पूर्व के संवेदनशील क्षेत्रों में बल के जवानों की गश्त

जबकि मणिपुर में बल के कार्मिकों ने इस दौरान 1591 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया और 45 विद्रोही मारे गये। इस दौरान 95 आपरेशनों में बल के 202 कार्मिकों ने देश की एकता और अखंडता की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहूति दी। बल ने यहां से 577 घातक हथियार और 5184 गोली बारूद भी बरामद किये।

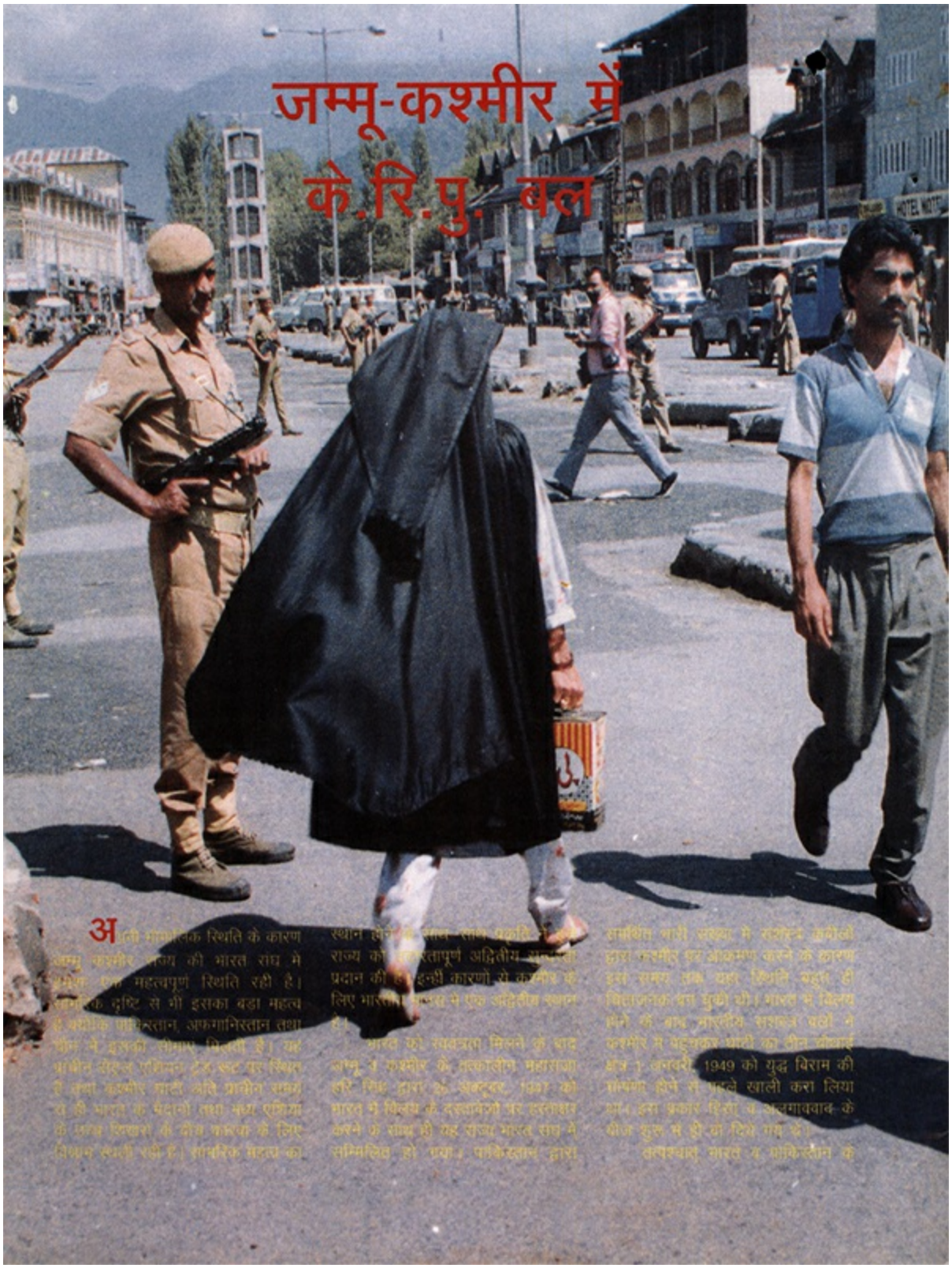
इस अवांधे में नागालैंड में बल के कार्मिकों से साथ हुई 40 मुठभेड़ों में 5 विद्रोही मारे गये तथा 213 घातक हथियार तथा .9582 गोली बारूद बरामद किया गया। बल के 16 बहादुर कार्मिकों ने यहां अपने प्राणों की आहूति दी।

त्रिपुरा में गत 12 सालों में बल के साथ हुयी 150 मुठभेड़ों में 55 विद्रोही मारे गये तथा 1649 को गिरफ्तार किया गया। इसके अलावा 724 हथियार और 1257 गोली बारूद बरामद किया गया। यहां बल के 54 कार्मिक शहीद हुए तथा 101 गंभीर रूप से घायल।

मिजोरम, अरूणाचल प्रदेश तथा मेघालय में बल ने 354 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया तथा 2 आतंकवादी मारे गये।

उत्तर पूर्वी राज्यों में नागरिकों का विश्वास जीतने के लिए अपने सिविक एक्शन कार्यक्रम के तहत बल की युनिटें इन राज्यों के दूरदराज के इलाकों में मुफ्त दवा, पुस्तकें, शिक्षण सामग्री तथा खेल सामग्री आदि का वितरण करती रहती हैं। इसके अलावा जरूरत होने पर केरिपु बल की युनिट स्थानीय रूप से स्कूल, बाथरूम तथा अन्य सामाजिक महत्व की स्थायी या अस्थायी इमारतों आदि को बनाने में भी स्थानीय प्रशासन को मदद देती हैं। बल के इन प्रयासों को स्थानीय जनता का भरपूर सहयोग और प्रशंसा प्राप्त होती है।

1996 से 2000 के दौरान बल के इस सिविक एक्शन कार्यक्रम के तहत असम में 51 लाख रूपए और मणिपुर, नागालैंड और त्रिपुरा में 65 लाख रूपए खर्च किये गये।



बीच जम्मू व कश्मीर का मामला राजनीतिक व सैनिक रूप से एक अत्यधिक नाजुक मुद्दा बन गया। वैधानिक रूप से जम्मू व कश्मीर भारत का अभिन्न अंग हो यह

पाकिस्तान को बिल्कुल भी बर्दास्त नहीं था, अतः वह लगातार राज्य में तोड़-फोड़ की गतिविधियों में उलझा रहा तथा इस पर अपना कब्जा लेने की कोशिशें भी करता रहा। उसने 1965 तथा 1971 में भारत पर आक्रमण पर कश्मीर को हथियाने के असफल प्रयास भी किए गये। बहरहाल पाकिस्तान द्वारा लगातार विरोध जताने तथा शरारतपूर्ण प्रचार करने से जम्मू व कश्मीर राज्य में शांति व स्थिरता का माहौल नहीं बन पाया। तबाही मचाने तथा हिंसात्मक आंदालनों के लिए स्वार्थी तत्वों द्वारा लोगों की भावनाएं भड़कायी गईं। इस प्रकार की स्थितियों से निपटने के लिए केरिपु बल को शुरू से जम्मू व कश्मीर में लगाया गया था। केरिपु बल जम्मू व कश्मीर में 1953 से भी पहले से मौजूद था। विभिन्न प्रकार के आंदोलनों के समय शांति व्यवस्था बनाए रखने में इसने सहायता दी। इन आंदोलनों के दौरान आंदोलनकारियों द्वारा ऐसेम्बली हॉल में आग लगा दी गई थी और यदि केरिपु बल समय पर पहुंचकर आग बुझाने में मदद नहीं करता तो वह जलकर पूरा भस्म हो जाता। वर्ष 1954 के शुरू में केरिपु बल कम्पनियों को वापिस बुला लिया गया, परंतु 1956 में प्रथम बटालियन की कंपनियां दोबारा राज्य को कूच कर गई तथा 1959 तक वहां तैनात रहीं। इस अवधि में शांति व्यवस्था बनाने में इस बल ने राज्य सरकार की सहायता की।

केरिपु बल की एक और बटालियन (तीसरी बटा.) फरवरी, 1957 के दौरान राज्य में भेजी गई थी जो जुलाई, 1966 तक वहां रही। सीमा पर अपराधों में बढ़ोत्तरी होने पर 1958-59 के दौरान इस बटा. को भारत-पाक सीमा पर पुंछ सैक्टर में लगाया गया। इस बटा. ने घुसपैठ व तस्करी रोकने, छापामारों तथा जानवरों की चोरी करने वालों से निपटने में प्रशंसनीय कार्य किए। 1958 के दौरान शेख अब्दुल्ला के जेल से मुक्त होने पर राज्य में कानून व व्यवस्था की स्थिति गंभीर हो गई। तीसरी बटा. की कंपनियों को कानून व व्यवस्था बनाए रखने में व्यापक रूप से प्रयुक्त किया गया तथा राज्य के तत्कालीन प्रधानमंत्री ने इनकी कार्य कुशलता की भरपूर सराहना की। इस बटालियन की कंपनियों को जम्मू स्थित स्पेशल जेल तथा कुद स्थित सब जेल की निगरानी पर भी लगाया गया जहां शेख अब्दुल्ला तथा अफजल बेग जैसे महत्वपूर्ण कैदियों को नजरबंद रखा गया था।



अमरनाथ यात्रा के दौरान पवित्र गुफा के बाहर तैनात बल के जवान

जम्मू व कश्मीर में केरिपु बल की शुरूआती तैनातियों का जिक्र करना अधूरा ही रहेगा यदि लद्दाख में 21 अक्तूबर, 1959 को चीनी सैनिकों के हमले में शहीद हुए 10 के.रि.पु. बल कार्मिकों का जिक्र न किया जाए। उन्हीं की याद में 21 अक्तूबर पूरे देश

में पुलिस स्मारक दिवस के रूप में मनाया जाता है।

पचास के मध्य तक जम्मू व कश्मीर में केरिपु बल की स्थायी तैनाती के लक्षण स्पष्ट हो चुके थे। अतः भारत सरकार को जम्मू व कश्मीर में ड्यूटियों के लिए बल की तीन बटालियनें खड़ी करने का निर्णय लेना पड़ा। 1956 में सरकार ने केरिपु बल के अधीन पहली, दूसरी व तीसरी ज.व.क. बटालियनें खड़ी करने की स्वीकृति दे दी। अस्तित्व में आने के बाद इन बटालियनों को के.रि.पु. बल की 4थी, 5वीं व 6वीं बटा. के रूप में बल में शामिल कर दिया गया। प्रशिक्षण के पश्चात् चौथी व छठी बटालियनें जम्मू व कश्मीर भेज दी गई जबकि 5वीं बटा. को नागालैंड भेजा जाना था। 1967 में राज्य की लगातार बिगड़ती हुई हालातों के कारण के.रि.पु. बल की दूसरी बटा. भी जम्मू व कश्मीर रवाना कर दी गई। काफी आई.आर. बटालियनों को केरिपु बल में सम्मिलित करने के बाद तीन अन्य बटालियने अर्थात 16, 20 व 22वीं बटा. भी जम्मू व कशमीर में भेज दी गई। 16वीं व 20वीं बटा. को सेना के नियंत्रण में सीमा पार से होने वाले अपराधों तथा तस्करी रोकने के लिए कुछ प्रेक्षण चौकियों के रख-रखाव की जिम्मेदारी दी गई थी। पुंछ में कुछ दिन ड्यूटी करने के बाद, 22वीं बटा. को भी घाटी में कानून व व्यवस्था बनाए रखने के लिए भेजा गया।



डल झील में बल के जवानों की गश्त

1989 के दौरान उग्रवाद बढ़ने से पूर्व कानून व व्यवस्था बनाए रखने के लिए राज्य में केवल 4 से 6 बटालियनें ही तैनात थीं।

1989 में पाकिस्तान ने भारत से कश्मीर को अलग करने के लिए अप्रत्यक्ष लड़ाई लड़ने की एक और साजिश रची। भारी संख्या में कश्मीरी युवकों को फुसलाकर पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में बुलाया गया तथा वहां उन्हें तोड़फोड़ करने का प्रशिक्षण दिया गया तथा हिंसा फैलाने के लिए राज्य में वापिस भेजा गया। 1989-90 के अंत तक यहां का माहौल भयंकर रूप धारण कर चुका था। आतंकवाद का

शुरूआती आघात इस बल को सहना पड़ा। आतंकवादी गतिविधियों के कारण राज्य पुलिस पूरी तरह पंगु हो गई थी, अतः केरिपु बल को प्रति – विद्रोहात्मक अभियान चलाने के लिए स्वतंत्र जिम्मेदारी दे दी गई। स्पेशल टास्क फोर्स की संकल्पना भी केरिपु बल की देन थी और साथ ही संपूर्ण कश्मीर घाटी में प्रति-विद्रोहात्मक अभियान चलाए गए। इन तीन सालों में भारी शस्त्रों से लैस आतंकवादियों के साथ संघर्ष में केरिपु बल के 113 जवानों की जाने गई जिससे बल को भारी नुकसान हुआ। 1992 के अंत में केरिपु बल की भूमिका उस समय बदल गई जब सीमा सुरक्षा बल को भारी संख्या में पंजाब से जम्मू व कश्मीर भेज दिया गया तथा केरिपु बल को अशांतग्रस्त राज्य पंजाब में समान्य स्थिति बनाए रखने के लिए भेज दिया गया। केरिपु बल की नफरी 129 कंपनियों से घटाकर 89 कंपनियां कर दी गई। केरिपु बल बड़े-बड़े प्रतिष्ठानों व अति-विशिष्ट व्यक्तियों की सुरक्षा में तैनात था जबकि सीमा सुरक्षा बल को जम्मू व कश्मीर में प्रति-विद्रोहात्मक अभियानों के संचालन की जिम्मेदारी दी गई। 1995 में केन्द्र सरकार ने जम्मू कशमीर में चुनाव कराने का निर्णय लिया था तथा केरिपु बल की 105 अतिरक्ति कंपनियां जम्मू व कश्मीर में भेजी गई जिससे वहां कुल कंपनियों की संख्या बढ़कर 255 हो गई। इन अतिरिक्त कंपनियों को वहां चुनाव से पहले स्थिति को नियंत्रण में रखने हेतु स्पेशल अभियान चलाने में लगाया गया था। 1995 के चुनाव हालांकि स्थगित करने पड़े थे किन्तु केरिपु बल की अतिरिक्त कंपनियों की तैनाती लगातार बनी रही। 1996 में भारत सरकार ने अंतिम रूप से निर्णय लिया कि जम्मू व कश्मीर में पहले संसदीय चुनाव कराए जाएं और इसके बाद विधान सभा चुनाव। चूंकि राज्य में उस समय कोई लोकप्रिय सरकार नहीं थी और न ही चुनाव ड्यूटियां करने के लिए स्थानीय कर्मचारी ही आगे आ रहे थे, अतः चुनाव प्रक्रिया में सरकार की ओर से समन्वय कार्य निभाने की जिम्मेदारी केरिपु बल को सौंपी गई। केरिपु बल के अधिकारियों ने इस कठोर जिम्मेदारी को सहर्ष स्वीकार कर लोकसभा व विधान सभा के दोनों ही चुनावों को शांतिपूर्वक संपन्न कराया। केरिपु बल के समर्पित जवानों व अधिकारियों के प्रयास से ही जम्मू व कश्मीर में 8 साल के अंतराल के बाद लोकप्रिय सरकार का गठन संभव हो पाया।

अक्टूबर, 96 में लोकप्रिय सरकार का गठन होने के बाद केरिपु बल ने कश्मीर घाटी में जम्मू व कश्मीर पुलिस के स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप के साथ स्पेशल आपरेशन का अभियान चलाया। विगत चार वर्षों में केरिपु बल तथा स्पेशल आपरेशन ग्रुप के संयुक्त आपरेशनों में अधिकांश महत्वपूर्ण आतंकवादियों का सफाया कर दिया गया तथा भारी मात्रा में हथियार व गोलाबारूद आदि बरामद किया।

वर्तमान में केरिपु बल की 237 कंपनियां जम्मू व कश्मीर में तैनात हैं जिनमें से 161 कंपनियां कश्मीर क्षेत्र में है तथा 76 कंपनियां जम्मू क्षेत्र में हैं। सामान्य सुरक्षा तथा प्रति विद्रोहात्मक ड्यूटियां करने के साथ-साथ, केरिपु बल ने पल्स-पोलियो के टीकाकरण तथा सिविक-एक्शन प्रोग्राम में बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया है।

वर्ष 1998 व 1999 के दौरान नागरिक कार्रवाई कार्यक्रम पर कुल 65 लाख व्यय

किए गए थे जबकि वर्ष 2000 के लिए भी 50 लाख रूपये की राशि सीएपी के लिए स्वीकृत की गई है। श्री अमरनाथ यात्रा के दौरान केरिपु बल के योगदान ने आम नागरिकों का ध्यान अपनी ओर खींचा है। श्री अमरनाथ यात्रा के दौरान केरिपु बल ने विभिन्न प्रकार की सुविधाएं प्रदान की हैं जैसे करीब एक साथ 700 यात्रियों के लिए पहलगांव में टेंट में मुफ्त आवास, मुफ्त अल्पाहार, नाश्ता, कैंटीन सुविधाएं तथा सूचना केन्द्र आदि।

जम्मू व कश्मीर में 1989 से लेकर आज तक विभिन्न आतंकवाद विरोधी अभियानों में केरिपु बल को 191 बहुमूल्य जीवनों से हाथ धोना पड़ा है। बल के अधिकारियों व जवानों द्वारा दिए गए बलिदान व्यर्थ में नहीं गए हैं। राष्ट्रीय सुरक्षा तथा एकता को बनाए रखने तथा इस अशांतग्रस्त प्रदेश में शांति बहाल करने के प्रयासों में इनका बहुमूल्य योगदान रहा है।

विगत दो वर्षों के दौरान जम्मू व कश्मीर की स्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। राज्य में वर्तमान समय आतंकवाद भाड़े के विदेशी तत्वों से चल रहा है जो पाकिस्तान द्वारा भेजे जा रहे हैं। बल स्थानीय पुलिस के साथ शानदार सौहार्दता बनाए हुए है तथा राज्य में पूरी तरह सामान्य स्थिति बहाल करने के लिए सभी संभव मदद दे रहा है। पिछले दो वर्षों में केरिपु बल की ओर से मानव–अधिकार हनन का एक भी मामला नहीं हुआ है।



जम्मू कश्मीर चुनावों के दौरान मतदान कर्मियों की सुरक्षा के लिए तैनात बल के जवान



जम्मू कशमीर में तैनात बल की महिला कर्मी



अखिल भारतीय पुलिस बैंड प्रतियोगिता में केरिपु बल बैंड ने ओवरआल चैंपियनशिप जीत ली। बल की टीम को चैंपियनशिप ट्राफी प्रदान करते हुए गृह राज्य मंत्री श्री विद्यासागर राव



प्रतियोगिता में केरिपु बल पाइप बैंड को भी प्रथम स्थान प्राप्त हुआ।



राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के तत्वाधान में सीमा सुरक्षा बल द्वारा मानवाधिकारों पर आयोजित वाद-विवाद प्रर्तियोगिता की सर्वश्रेष्ठ टीम की ट्राफी केरिपु बल को प्रदान करते हुए राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति जे.एस. वर्मा



राजभाषा स्वर्ण जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेता महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र के साथ

कोसोवो में दोस्ती का माहौल पैदा कर रहे हैं भारतीय बल

– रंजीत कुमार, संवाददाता नव भारत टाइम्स

प्रिस्तीना (कोसोवो) : पिछले साल नाटो की बमबारी और जातीय युद्ध से तबाह युगोस्लावियाई प्रांत कोसोवो में शांति व व्यवस्था बनाए रखने के लिए जहां एक ओर भारतीय पुलिस गश्त लगा रही है वहीं किसी भी आपात स्थिति में उग्र, हिंसक भीड़ से निबटने के लिए सीआरपीएफ के रैपिड एक्शन फोर्स के कमांडो भी यहां तैनात हैं और भांगड़ा नाच, दौड़ और खेल प्रतियोगिताओं से अपनी मौजूदगी को यहां चर्चा का विषय बनाए हुए हैं।

हालांकि यहां कोसोवो और युगोस्लावियाई सर्बिया प्रांत की सीमा पर तथा शहरी और ग्रामीण इलाकों में 39 देशों की 43 हजार सेनाएं 'कोसोवो फोर्सेज' अर्थात केफोर के नाम से तैनात है जिससे करीब सौ किलोमीटर के दायरे में फैला शहर एक सैन्य छावनी में तब्दील हो गया है। हर नुक्कड़ चौराहे पर नाटो (उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन) के टैंक और बख्तरबंद वाहन गश्त लगाते दिखते हैं, लेकिन कानून व व्यवस्था ड्यूटी के लिए 49 देशों से आई पुलिस टुकड़ियों में भारत के कुल 539 जवान

तैनात है, जिनकी संख्या अमेरिका के बाद दूसरे स्थान पर है। न केवल यही बल्कि कोसोवो रक्षा बल (केपीएफ) खड़ा करने में भी भारतीय पुलिस बल का सहयोग लिया जा रहा है।

यहां भारत के केन्द्रीय आरक्षी बल (सीआरपीएफ) के त्वरित कार्रवाई बल (आरएएफ) के कमांडेंट जसबीर सिंह गिल बताते हैं कि कोसोवो फोर्सेज और नागरिक पुलिस के बीच भी संयुक्त राष्ट्र को एक ऐसे पुलिस बल की जरूरत थी जो उग्र या दंगाई भीड़ को काबू में कर सके। इसलिए एक 'स्पेशल पुलिस यूनिट' का गठन किया गया और इसमें भारत और जॉर्डन के दो–दो तथा पाकिस्तान, स्पेन, यूक्रेन, पोलैंड, नाइजीरिया तथा अर्जेंटीना की एक कमांडो टुकड़ी आमंत्रित की गई। इस स्पेशल पुलिस यूनिट में भारतीय रैपिड एक्शन फोर्स के 239 जवान अत्यंत कठिन इलाकों में तैनात किए गए हैं। वास्तव में प्रिस्तीना शहर से बाहर 14वीं सदी के एक सर्बियाई ऐतिहासिक स्मारक पर फ्रांसीसी सेना द्वारा दिन भर ड्यूटी पूरी करने के बाद शाम को आरएएफ के जवान इनसे ड्यूटी ग्रहण करते हैं और फिर क्षेत्र के सभी रिहायशी इलाकों में छितरा जाते हैं और अपनी नीली सफेद धब्बों वाली वर्दी से लोगों के आकर्षण का केन्द्र बनते हैं और अपनी उपस्थिति मात्र से न केवल लोगों में खौफ पैदा करते हैं, बल्कि उनके खेल के मैदान और मनोरंज केन्द्र आदि फिर से उपयोग लायक बनाकर उनमें भरोसा भी पैदा करते हैं। श्री गिल कहते हैं, वास्तव में हमारे जवान अक्सर विभिन्न जगहों पर स्टैंड बाई में तैनात किए जाते हैं। भारतीय कमांडो अलबेनियाई बहुल इलाकों में अलबेनियाई परिवारों की रक्षा के लिए तैनात किए गए हैं।



कोसोवो में भांगडा प्रस्तुत करते आरएएफ के कार्मिक



कोसोवो में आरएएफ कार्मिकों को संबोधित करते कमांडेंट श्री गिल

पिछले साल मार्च से जुलाई तक चले नाटो हमले के बाद कोसोवो पर संयुक्त राष्ट्र का प्रशासन है और यहां युगोस्लाविया और सर्बियाई पुलिस और सेना को हटा दिया गया था। कोसोवो की तीस लाख आबादी में 90 प्रतिशत अलबेनियाई मूल के लोग रहते हैं और बाकी सर्ब, रोमा, असकालिया आदि अल्पसंख्यक समुदायों के हैं। श्री गिल कहते हैं कि जुलाई महीने से कोसोवो के जिस पूर्वी इलाके में उनके जवानों की तैनाती हुई है वहां सर्व लोगों पर हमले काफी कम हो गए हैं। यहां रैपिड एक्शन फोर्स के कमांडो कोसोवो से लगने वाले पड़ोसी देशों की सीमा पर कस्टम चैक प्वाइंट पर भी जब से तैनात किए गए हैं, यहां प्रशासन का राजस्व काफी बढ़ गया है, क्योंकि व्यापारी अब कर चुका कर ही आगे बढ़ पाते हैं।

दूसरी ओर कोसोवो में शांति व व्यवस्था बनाए रखने के लिए 295 नागरिक पुलिस अधिकारी भी हैं, जिनमें भारतीय पुलिस सेवा की एक महिला अधिकारी अंजु गुप्ता एक थाने के डिप्टी स्टेशन कमांडर का दायित्व निभा रही हैं। कोसोवो को पांच क्षेत्रों में बांटा गया है जिनमें एक प्रिस्तीना के डिप्टी रीजनल कमांडर उत्तर प्रदेश के पुलिस अधिकारी शफली ए रिजवी हैं। श्री रिजवी बताते हैं कि उनका मुख्य दायित्व मारपीट, चोरी, डाका, वेश्वावृत्ति, तस्करी आदि गतिविधियों के खिलाफ कार्‘नाटो की सेना जब हम पर भरोसा कर हमें यह महत्वपूर्ण दायित्व सौंपती है तो हमें अच्छा लगता है और हमारा आत्मविश्वास बढ़ता है।’ यहां भारतीय पुलिस का 49 देशों से तालमेल हो रहा है और सभी के कामकाज का तरीका समझने का मौका मिल रहा

है, जिसके आधार पर अपने देश की पुलिस व्यवस्था में समुचित सुधार पर एक रिपोर्ट सरकार के लिए तैयार करेंगे। श्री रिजवी बताते हैं कि यहां हर पुलिस अधिकारी के पास एक लैपटाप कम्प्यूटर है और हर थाने के पास 25 वाहन हैं, जबकि भारत में लैपटाप की तो कोई सोच ही नहीं सकता और वाहन भी एक ही दिया जाता हैं। उन्होंने बताया कि जिस तरह वह भारत में दंगों के बाद विभिन्न समुदायों के लोगों में मेलजोल की कोशिश करते हैं उसी तरह यहां भी सर्ब और अलबानियाई लोगों के बीच कर रहे हैं जिसकी काफी सराहना की गई है। यहां सर्ब और अलबानियाई पुलिसकर्मी एक साथ गश्त लगाते हैं।

–नवभारत टाइम्स से साभार।

अम्बुश : कारण और निवारण

– डी.एन.एस. बिष्ट, अ.पु. उपमहानिरीक्षक

गुरिल्ला या छापामार हमले का सबसे प्रचलित रूप अम्बुश है। यह सटीक आसूचना तथा विस्तृत योजना पर आधारित होता है, जिसे अकस्मात् व दृढ़ निश्चय के साथ कार्यान्वित किया जाता है। अम्बुश का उद्देश्य सुरक्षा बलों को भारी से भारी नुकसान पहुंचाना होता है। वैसे तो जंगली पथरीला व पहाड़ी इलाका इसके लिए सर्वोत्तम होता है परन्तु मैदानी इलाकों में भी अम्बुश लगाया जा सकता है। अमुमन इसे उंचाई से छुपाव हासिल करते हुए नजदीकी हमले के रूप में अधिकाधिक बल प्रयोग के साथ अंजाम दिया जाता है। ईसा मसीह से पूर्व भी छापामार युद्ध का प्रचलन था। श्रीमद्भागवत महापुराण में उन निरंकुश लोभी राजाओं का वर्णन है जो आम जनता को वनों व पहाड़ों में शरण लेकर युद्ध करने को बाध्य करते थे।

वैदिक साहित्य में ऋगवेद में 30वीं सूक्ति में कहा गया है कि इन्द्र ने शत्रु के कोषों पर हमेशा घात लगाकर हमला किया व उसे जीता है। महाभारत में भीष्म–युधिष्ठिर संवाद में भी छापामार युद्ध के सिद्धांतों का वर्णन किया गया है।

मनुस्मृति में भी छापामार युद्ध व अम्बुश के सिद्धान्तों का वर्णन है। धर्मयुद्धों में, चीन के राजा हयांग व जनरल सुनजू द्वारा, कुरान–ए–शरीफ के (मूरा–ए–नीमा आयात 88), स्पेन युद्ध में, वियतनाम में, बांग्लादेश में सभी जगह अम्बुश का प्रयोग हुआ है। परन्तु सबसे सटीक विवरण महापंडित कौटिल्य के अर्थशास्त्र में, मराठा साहित्य के शिवाजी के संदर्भ में, तथा वियतमिन आचारसंहिता से मिलता है।



कूट युद्ध शिरोमणि कौटिल्य कहते हैं :

दृश्य, शत्रु या आटविक के वेष में रहने वाले गुप्तचर सेना के पीछे से धावा बोल दें अथवा उनका मुकाबला करें अथवा वन में छिपकर रहने वाले गुप्तचर सरहदी इलाकों की रक्षा के लिए नियुक्त सेना को किसी बहाने अपनी ओर खींचकर मार डाले, जिस समय सेना या संसाधन को किसी तंग रास्ते से लाया जा रहा है, उस समय उसे नष्ट कर दिया जाए।

आज भी इसका प्रयोग अफ्रीकी देशों, श्रीलंका, पूर्वोत्तर भारत तथा चेचन्या जैसे देशों में भरपूर हो रहा है। इतिहास इस बात का गवाह है कि अम्बुश विद्रोहियों की सर्वप्रिय सांग्रामिक युक्ति रही है। इसके कारण निम्न हैं:–

— इसके द्वारा धोखे से ताकत द्वारा मुख्य घटकों पर प्रहार कर नष्ट करना संभव होता है।

— उच्च प्रशिक्षण प्राप्त सुरक्षा बलों से प्रत्यक्ष व प्रमाणिक युद्ध की आवश्यकता नहीं पड़ती।

— हमले के लिए जल्दी एकत्र होकर अंजाम देना तथा विभिन्न दिशाओं में तेजी से भाग निकलना संभव होता है।

— हमला अपनी अनुकूल भूमि पर, अनुकूल समय, तैयारी से होता है।

— पहल अपने हाथ होती है।

— सुरक्षा बलों के हताहत होने पर उनका मनोबल टूट जाता है तथा विद्रोहियों का

डर बढ़ता है।

— जुगाड़ू–विस्फोटक यंत्रों का प्रयोग कर परिणाम में गुणात्मक अभिवृद्धि संभव होती है।

— दुश्मन का हथियार व साजोसामान हथिया लिया जाता है। साथ में संचार के साधन हाथ लगने से सुरक्षा संबंधी आसूचना भी प्राप्त हो जाती है।



अम्बुश क्यों होते है ?

— अचानक बिना समुचित तैयारी के बल द्वारा अनियोजित ढंग से परिचालन पर अग्रसर हो जाना तथा लापरवाही करना।

— परिचालन प्रकृति, आने–जाने के मार्ग व इलाके का ज्ञान न होना तथा सिविल पुलिस पर अत्यधिक निर्भरता।

— जिम्मेदारी के इलाके के अनुकूल नफरी न होना तथा आर.ओ.पी. न लगा होना या आर.ओ.पी. में लापरवाही करना।

— अधिकारियों से लेकर सेक्शन–कमाण्डर तक के स्तर की ब्रीफिंग न होना।

— पक्के सेक्शन व सेक्शन कमाण्डर न होने से तालमेल का अभाव ।

— परिचालन हेतु आवश्यक बुलेट–प्रूफ गाड़ियों का अभाव, गाड़ी चालक की ब्रीफिंग न होना, गाड़ियों के बीच उचित दूरी न रखना, व उपलब्ध होने पर भी बुलेट–प्रूफ गाड़ियों को परिचालन हेतु उपयोग में न लाना ।

— रूटीन व अधिक प्रशासनिक ड्यूटियों की वजह से सुरक्षा निर्देशों की अवहेलना व लापरवाही होना ।

— अधिकारियों समेत आवश्यक ऑप्स–स्ट्रैन्थ का अभाव ।

— टेल–बोर्ड खुला न होना, एरिया वेन माउन्ट न होना, तारपोलिन मुड़ा न होने के कारण डिबासिंग के समय भारी नुकसान।

— रूट, समय व वाहनों की बदली न करना।

— जुझारूपन, प्रीइन्डक्शन ट्रेनिंग व हथियारों व अमुनिशन की सही बांट का अभाव।

— नजरी मिलाप तोड़ देना व अस्वाभाविक हरकत पर चौकन्ना होकर कार्यवाही न करना।

— एरिया वेपन का कम या इस्तेमाल ना करना।

— हथियारों की कमजोर हैंडलिंग

— अम्बुश होने पर आड़ लेकर अपने स्थान से इक्का दुक्का या अंधाधुंध फायर करना। फंसे साथियों को बचाने हेतु काउण्टर अम्बुश ड्रिल न करना।

— रिहर्सल की कमी के कारण सही निर्णय न ले पाना व यह ज्ञान न होना कि कौन क्या करेगा।

— खतरे के आभास पर चौकन्ना न होना व कमाण्डर की गलत पोजीशन।

— सही एक्शन — फार्मेशन न होना। जवाबी कार्यवाही करने की बजाय आदेश का इंतजार करना।

— चालकों की कमजोर सिखलाई व संचार प्रणाली का फेल हो जाना।

— टेक्टीकली मूव न करना : सबसे अहम कारण

— परिचालन में अनुशासन का अभाव फंदों को न भांप पाना।

— ग्रिनेड व हथियारों की सावधानी से सफाई, मेंटेनेंस न करना व 2” मोर्टार का प्लाटून कमाण्डर के पास न होना।

— लाठी-कल्चर द्वारा बल को विद्रोहिता की ज्वलंत समस्या से लड़ने हेतु अक्षम करना : उपयुक्त जुझारू मानसिकता का अभाव।

— बल का ‘रिजर्व नेचर न होकर अत्याधिक ड्यूटी से संत्रस्त होना : ट्रेनिंग पर कुंठाराघात होना।

अम्बुश से बचने के उपाय :

उचेत प्रशिक्षण, चुस्त व चौकना होकर टैक्टेकल मूवमेंट व काउण्टर अम्बुश ड्रिल द्वारा बहुत हद तक अम्बुश को टाला जा सकता है। सुरक्षात्मक उपायों को दो भागों में इस प्रकार बांटा जा सकता है।

1. निवारक (प्रिवेन्टिव) उपाय
2. प्रतिघात (काउंटर) उपाय – पैदल, वाहन में



निवारक उपाय :

– परिचालन सम्बंधी सूचना की सुरक्षा रूटीन व अनावश्यक मूवमेंट पर रोक
– 'जानने की आवश्यकता' के सिद्धांत का अनुपालन
– रूट की सुरक्षा करना : सही आर.ओ.पी.
– विस्तृत ब्रीफिंग-डीब्रीफिंग
– जवाबी कार्यवाही की मानसिक तैयारी
– टास्क की बांट समझबूझ से करना ।

– रिहर्सल करना

– गहन पर्यवेक्षण

– चौकन्नापन, नफरी मिलाप, टैक्टीकल मूव-बाउण्ड-बाई-बाउण्ड : जिससे सभी एक साथ किलिंग जोन में ना आए।

– संभावित खतरनाक इलाकों की जानकारी होना एवम् विगत हादसों का इतिहास ज्ञान होना।

– फायर खोलने के आदेश स्पष्ट हो।

– आप्रेशन या यथासंभव विस्तृत नियोजन

– यथासंभव समय, मार्ग व वाहन की बदली करना

– खुदी जमीन, पुल, वीरान-मकान, तार आदि से सावधानी : विस्फोटकों की संभावना

– अपने-अपने इलाकों को पैटरोलिंग से डोमीनेट करना।

– सजग व तैयार दिखाई देना। वाहन में बैठे सैनिक बाहर की ओर देखभाल मुद्रा में बैठे।

– सुगम एमबसिंग व डीबसिंग हेतु वाहन में मोडीफिकेशन

– खतरे का बोध हो तो उसे नजरअंदाज न करें। तुरंत पोजीशन लें, वाहन में हो तो तुरंत उतरें व काउंटर अम्बुश ड्रिल करें।

– एरिया वेपन जैसे 51 एमएम मोर्टर, राइफल ग्रेनेड इत्यादि तैयार हो।

– खतरनाक इलाकों को वाहन की बजाय पैदल पार किया जाए।

– आप्रेशन पर या एडम ड्यूटी पर जाने से पहले प्रत्येक जवान अपनी जांच करे कि क्या हथियार, गोलाबारूद, बुलेट-प्रूफ जैकेट, हैल्मेट, सेट ले लिया गया है ?

– गाड़ियों में भीड़भाड़ न हो, जिससे जरूरत पड़ने पर फायर किया जा सके, ऐसी सीटिंग अरेजमेंट हो।

– टैक्टीकली कमजोर जगह को तेजी से, उंचाई कायम रखते हुए बाउण्ड-बाय-बाउण्ड क्रास किया जाय।

– अम्युनिशन व गोलाबारूद हथियारों के साथ रहें।

प्रतिघात के उपाय पैदाल रहने पर

– अम्बुश होने पर तुरंत, बिना समय गंवाए फायर खोलना चाहिए। फायर का तुरंत, फायर से जवाब देना जरूरी है। उसका निशाने पर होना बहुत जरूरी नही है। फायर जबरदस्त हो।

– फायर करते करते नजदीक आड के पीछे या जमीन पर पोजीशन लो।

– पता लगाओ कि कौन सा हिस्सा अम्बुश के नीचे आया है ?

– जो हिस्सा अम्बुश से सुरक्षित हो, रिग्रुप करके फलैक से विद्रोहियों पर हमला करें।

एरिया वेपन का इस्तेमाल विद्रोहियों की पोजीशन या उनके संभावित भाग निकलने के रास्तों पर किया जाय।

– अम्बुश के किलिंग जोन में फंसने वाली पार्टी को अपनी-अपनी जगह से लगातार फायर जारी रखते हुए नजदीकी आड तक पहुंचने का प्रयास करना चाहिए ताकि विद्रोहियों को नजदीक आने से रोका जा सके।

– भूल कर भी घबराकर भागने का प्रयास न किया जाए। ऐसा करना मौत को दावत देना होगा। डटकर मुकाबला करें।

– गोलीबारी के दौरान एक-दूसरे का हौंसला बढ़ाते रहना चाहिए।

– यदि पूरी पार्टी अम्बुश में फंस गई हो तो सभी को तुरंत फायर खोलकर अम्बुश पार्टी पर यथासंभव पोजीशन से फायर करते रहना चाहिए।

– अम्बुश की समाप्ति पर घायलों को प्राथमिक उपचार देकर तुरंत नजदीकी चिकित्सालय पहुंचाने का प्रबंध किया जाए।

– रिइन्फोर्समेंट तुरंत किंतु सावधानी पूर्वक पहुंचे। एक छोटा अम्बुश बड़े अम्बुश की पूर्वसूचना हो सकता है।

– रिआर्ग करके क्षति का जायजा ले व मुख्यालय को सूचित करें।

प्रतिघात के उपाय : वाहन में रहने पर

– वाहनों के बीच उचित दूरी बनाए रखें जिससे कि सभी गाड़ियां एक साथ किलिंग जोन में न आए।

– अम्बुश से तेजी से, सुरक्षात्मक ड्राइविंग करते हुए वाहनों को बाहर निकालें।

– तुरंत फायर का जवाब फायर से दें। चलती गाड़ी से फायर करते रहें जब तक कि पहाड़ी की तरफ या सुरक्षित स्थान तक न पहुंचे। फायर अम्बुश की दिशा में करें।

– गाड़ियों से उतरें व फायर जारी रखें। आपसी गोलीबारी से बचें।

– जो गाड़ियां अम्बुश में नहीं फंसी हैं, उनके जवानों को तुरंत उतरकर अम्बुश पर फ्लैक से धावा बोलना चाहिए।

– यदि पिछली अम्बुश हो तो आगे की गाड़ियों को यथासंभव नजदीक रोककर फ्लैक से धावा बोलना चाहिए।

– एरिया वैपन का प्रयोग अम्बुश पार्टी व उसके भाग निकलने के संभावित मार्गों पर करना चाहिए।

– एक दूसरे का हौंसला बढ़ाते रहें।

– रिइनफोर्समेंट की मांग करें व कोशिश करें कि अम्बुश पार्टी भागने न पाए।

– यदि नफरी उपलब्ध है तो अम्बुश पर जोरदार धावा बोला जाए।

– अम्बुश टूटते ही निम्नलिखित कार्यवाही करें :- (क) घायलों को प्राथमिक उपचार

देकर नजदीकी अस्पताल पहुंचाने का प्रबंध करें। इससे पहले आल राउण्ड डिफेंस कायम करें। (ख) नजदीकी पोस्ट/मुख्यालय से सम्पर्क साधे। (ग) रिआर्ग करें व क्षति/उपलब्धि का जायजा लें।



अम्बुश कमजोर दल का सशक्त हथियार है। विगत हादसों से सीख लेते हुए हमें अपनी कमजोरियों का निदान बेहतर व कारगर प्रशिक्षण से करना होगा। बल का मनोबल उंचा बनाए रखने हेतु भी कदम उठाने होंगे। काउंटर अम्बुश ड्रिल का अभ्यास करते रहने की आवश्यकता है। केरिपु बल के किट का पुनर्निधारण करने की आवश्यकता है। अच्छे प्रशिक्षण व उंचे मनोबल से ही हम इस समस्या से निदान पा सकते हैं। अम्बुश की समस्या आगे आने वाले दिनों में भी बनी रहेगी। अतः आवश्यक है कि जुझारूपन के साथ इसका मुकाबला किया जाए व विद्रोहियों को हताहत किया जाए। ताकि वे अम्बुश करने से पहले कई बार सोचने को बाध्य हों।

Central Reserve Police Force

A Unique Force

—D.R. Karthikeyan,
Former Director CBI, Spl. DG, CRPF and DG NHRC

The Central Reserve Police Force is not only the oldest Central Para-Military Force of the nation, but it has also proved to be the most dependable Force to meet all types of situations and emergencies. It is a truly multi-dimensional Force.



A CRPF post in the North East

During my various visits abroad, I have always made it a point to talk about the Central Reserve Police Force, and the Government and police officers abroad always evinced keen interest in hearing more and more

about the composition, the training and the operational capability of the CRPF to meet critical situations in various parts of the country.

They are amazed to hear about the versatility of the Force, which can not only deal with any internal situation but also can fight shoulder to shoulder with the Army at times, as it happened during the war with China and Pakistan or in the IPKF operations in Sri Lanka. CRPF is confident of handling any serious law and order situation or challenges posed by insurgency, terrorism and extremism. CRPF with its better known components RAF (Rapid Action Force) and Mahila Battalion is looked upon as the saviour during the communal riots. There is a clamour for CRPF from all sections of the public during communal situations. Though the CRPF personnel belong to the various religions, laguages, castes and communities, the effective training, efficient supervision and long glorious traditions make every member of the Force rise above narrow loyalties and function objectively as peace-keepers of the nation.

The CRPF, at the time of its birth on 27th July 1939, was known as Crown Representative Police created to afford protection to the Indian Princely States and to act in aid of civil power. Since the last 61 years, it has grown from a small force of 1000 into a mighty well-trained and well-motivated Para-Military Force of nearly 2,00,000. Thanks to the farsightedness and vision of Sardar Patel, the Iron Man of India, the country now has a thoroughly well-trained, disciplined and highly motivated Force which can take care of any threat to the unity, integrity and security of the nation.

Since its new reincarnation as Central Reserve police Force by an Act of Parliament in the year 1949, there has been a metamorphosis in its composition and function.

India is a country with prolific diversity of caste, creed, race, religion and language. Right from the advent of Aryans in the early times and with the successive invasions of Greeks, Huns, Turks, Mangols, Mughals, British, Protugese and French, till date, India has been a unique land of diversity in every aspect of life and times. Yet, there has always been an underlying concept of unity and culture that keeps it bound together. With a combination of such ethos and ever-evolving socio-economic and political milieu, it is a herculean task policing India. In a situation when there is a constant threat to the internal security of the nation by centrifugal and

centripetal forces, inimical forces trying to create disorder by instigating disaffection and hostile neighbours and their collaborators indulging in low-intensity warfare posing a constant threat to the internal security and orderly existence and development of the nation, the task of the CRPF has assumed new importance and dimension to face new challenges.



Tough training makes CRPF men professionally competent

The Force is enormously popular not only with all sections of people but also with the administrations of the various States because of its adaptability. The Force works cordially and smoothly not only with the Armed Forces of the Union but also with the various State Police Forces. Hence, there is a constant demand for the CRPF from every State and Union Territory, whichever political party may be in power there. Because of its political neutrality, clean image, secular outlook and professional efficiency, the very arrival of CRPF units in areas of disturbance has a sober and stabilizing influence in the minds of the general public and the local administration. At the same time, it puts the fear of God and Law in the minds of the anti-social and anti-national forces because of the effectiveness and efficiency of the Force and the courage with which CRPF is reputed to discharge its enormous responsibilities.

Sine-quo-non of any Government is to govern and then only development and progress is possible. Hence, the first duty of any Government is to maintain order and peace. Then only the rights of the individual and collective rights of the people can be respected, ensured and protected. The CRPF has again and again lived up to its reputation as the dependable executive arm of the Government in enforcing the law of the Land and ensuring order and peace in the society.

The CRPF is committed to the ideal of social justice. It applies the laws with a deep appreciation and the understanding of changing needs of the pluralistic society.

As the Gore Committee emphasised, no aspect and role of the police is more important than their active and purposeful participation in programmes of national integration based on the principles of equality, secularism and natural justice.

The CRPF has played an effective role in every activity aimed at national building. It has done very well in the field of education, training, welfare, re-marriage and rehabilttation of widows, implementation of medical schemes for the poor and needy, medical aids to the needy and rescue and relief operations during natural national calamities like floods, cyclones and earthquakes, and protection of environment.

The CRPF has been a model institution in afforestation at macro level

and blood donation at micro level. CRPF has always undertaken massive tree plantation campaigns. All its campuses are like mini-forests. Blood is a precious commodity produced only within the human body. In our country thousands suffer and die for non-availability in time of life-saving blood. CRPF personnel have made it a habit and tradition of blood donation all the time.

In pre-lndependence days, the role of CRP was essential repressive and protective, serving the interests of an alien Power. In a developing free society, the role of the CRPF changed dramatically making its role more promotive and protective. The CRPF has adapted to the new role in a most commendable manner. Not only at home, but also abroad, the CRPF has proved its mettle.

The CRPF performed a commendable task in Sri Lanka as a part of the IPKF. Most of the tasks of the civil police were performed by the CRPF in the northern parts of Sri Lanka during IPKF operations. I have personally heard tributes being paid to the efficiency and the correct and courteous manner with which the CRPF officers and personnel conducted themselves while discharging their delicate and difficult tasks in Sri Lanka. Since then CRPF has increasingly become the main source of drawing personnel to serve as components of the UN Peace Keeping Force in various disturbed theatres in many parts of the world. Their role in peace keeping operations has come up tor commendation again and again by UN Authorities.



Rescue and relief operation by RAF in flood hit Kerala

The CRPF has an unenviable human rights record. Despite great provocations in many disturbed areas, very few complaints are received of human rights violations by the CRPF. The Force itself has a tradition of respecting human rights. The Force Leadership does not tolerate human rights violations in the pretext of ‘morale’. Whenever such violations are found, deterrent and severe action is initiated against the delinquent personnel for indulging in illegalities and violating human rights.

While the CRPF has every right to be proud of its tradition and past record of achievements, it has to prepare itself to face new emerging challenges of the future.

Even though the nation can justifiably proud of its achievements since the last five decades, there are several factors which give us sufficient cause for concern about peaceful and orderly existence of the society in future. There are still millions and millions of citizens who are denied their basic right to development and dignity and are deprived, socially, politically and economically. There are still forces both within and outside the country attempting to create disorder, disaffection, hatred, bitterness and violence within the society.

To meet such formidable and increasing challenges, the Force needs to be modernised and equipped in all respects, physically, mentally, psychologically, tactically and technically so that it is enabled to rise to the occasion and meet such challenges effectively as it has always done in the past.

It is a Force in which bulk of the personnel are forced to remain away from their families for months and months together. Some of the units keep moving constantly from place to place, from one hostile climate to another. This results in certain hardships which are peculiar to the CRPF. I know of many instances where the personnel could not receive letters from home for months together because they have constantly been on the move from one theatre of operation to another. I know personally of instances where the CRPF officers and other ranks could not be with their families when their parents died or children are born.



Social service like blood donation camp is a regular feature in force

Though enormous welfare activities have been undertaken and more and more residential accommodation is provided year after year, still they have not reached the optimum level. Still, a large number of families of the CRPF personnel are living in remote villages or in slums in cities. With the joint family system breaking up, many young wives with young children find it very difficult to exist by themselves in villages. This puts enormous strain on married life. Hence, there is an urgent need for increasing the separated family accommodation. The nation and the Government should certainly give priority for providing more funds and ensuring that all such separated families are provided accommodation either at the Group Centres or Bn. Hqrs., or at Centres meant for separated families. If these aspects are taken care of, most of the worries and grievances of the CRPF personnel could be

solved.These would relieve the CRPF personnel of their constant worries regarding their families and enable them to concentrate on the tasks on hand and perform their duties better adding glory to the Force and the nation.

The CRPF which has been rendering yeoman service to the nation, living up to its motto "Serivce and Loyalty" and making the supreme sacrifice of hundreds of lives every year, deserves to be rightly called Internal Security Force of the Nation.

CRPF - A GLORIOUS PAST AND CHALLENGING FUTURE

—M .N. Sabharwal, Ex-DG, CRPF

CRPF has, had, a unique place among the law and order and security agencies in the country. Right from the modest raising as Crown Representative Police in 1939, to its continued evolution and growth, to its present size and dimensions as CRPF, the force has played an important and strengthening role in the governance of the State. However, since under the Indian Constitution, law and order is primarily a state subject, CRPF is charged to provide the supportive backbone role for the aggravated security challenges and problems. Its all-India character in the composition and spread, as also its professionalised training and skills of a multi-dimensional force, have all been a major stabilising and unifying factor in the country's security set up.

By its very nature, in the large array of duties assigned to it throughout the country, CRPF has always worked with the state administration and police forces, in a manner which is both complementary and fully adaptable, alongwith maintaining the professional strength and confidence. The impartiality and restrained approach to human rights, has found wide acceptability of CRPF among the state police forces in the country. There is hardly a district in India where CRPF has not helped out or served in times of exigency or emergency. The operational achievements of CRPF in the integration of princely states, as also its law and order role in Goa and Sikkim have been acknowledged widely. Its firm bonding with the Punjab

police in checking and eliminating militancy could be the envy of any internal security force. Its various successes in different north-eastern states, as also more recently in J&K with the Special Operational Group of J&K police, have all been possible due to the disciplined professional commitments and good responses on ground.

The wide variety of assignments of CRPF including attending to law and order and serious riot situations, to containing militancy and contributing In the counter-insurgency efforts and other high security duties, are all well known. Indian elections over many years would have been incomplete and unsuccessful without the wide commitment and deployment of CRPF, which has strengthened democracy in more ways than one. The role of CRPF in support of state administration and the people in the various law and order, security and even in the war efforts in independent India, has also been widely acknowledged and accepted.The CRPF has also contributed to overseas peacekeeping efforts including those in Sri Lanka, and is currently deployed under UN efforts in Kosovo.



CRPF jawans patrolling somewhere in North-East

The contribution of CRPF and its outstanding sports persons in popularising and achieving high standards in various sports and game activities are a continuation and reflection of its professional physical standards which have not only brought laurels to the force and the country but also evoked admiration from the citizens, whose truly representative and friendly force, it has developed to be. The specialised ten battalions of

Rapid Action Force (RAF) covering the most communally sensitive areas of the country and the two battalions of Mahila Police deployed in operational and other active duties have also proved their utility, professionalism and prowess in the various situation over the last decade.



Shri V.G. Kanetkar first DG CRPF inspecting RAF Parade

The all-round and almost all-pervasive utilisation of CRPF by the state police forces though found extremely useful and efficacious, has itself at times, been not so fully appreciated and understood in some active operational quarters. This, however, is because of the very charter and limitations of working the multifaceted and multi-dimensional challenges attended by the CRPF. Actually, in many ways, it is a tribute to the quiet, perseverant and none-too-flaunting approach of its character and working, that the CRPF takes in its stride, the various challenges and problems by readily and willingly responding in the most appropriate manner. Its overall working and management is symptomatic of the concept of an ever-flowing and long serving river like the Ganga, which absorbs all the dirt and pollution inflicted on it enroute and yet moves on steadfastly on its chartered course. The trials and challenges very often put a severe strain on the working and living conditions of individual force members, who however, eternally move at short notices and take on duties after merging with the state milieu. Yet in the coordinated working of the CRPF with the state police on ground, is fully and typically reflected, the very concrete quasi-federal character of the Indian Constitution.

A continued high deployment so as to meet the various increasing law and order and the security challenges of the country is an accepted and accomplished fact. The focus and confidence on CRPF, as the mainstay internal security agency, would continue to increase and it is in this context that both the internal management of such a large force, as also its continued growth in professionalism and responses, pose an abiding challenge. In my tenure of heading the Force (December 1997-July 2000), I found all these challenges and responses quite exciting as also deserving to be met with full commitment and attention.

SOME DOs AND DONTs FOR THE CRPF

—V.G. Kanetkar, Ex-DG, CRPF

It is not my intention to stress in this article the importance of virtues like

strict discipline, punctuality, cleanliness, smart dress etc. because they have always been an essential part of the initial training of officers and men in all uniformed organisations such as the CRPF. What I have in mind are certain additional requirements in the mental make-up of the personnel discharging duties much more complex and facing situation much more risky than ever before.

The first situation that comes to mind is the violent face-offs with members of the public which are now pretty frequent almost everywhere and are required to be handled by the CRPF as an aid to the local police. A reservoir of patience combined with firmness is essential on such occasions unless and of course agitated mobs indulge in vicious violence and leave no option for the police except to answer them with force including use of firearms. I have in my time led my force to face onslaughts of crowds bent on meyhem and can state with authority that even such crises could sometimes be diffused with determined composure. In July 1957 when I was I.G. Police, Rajasthan - there were no Ds. G.P's posts in states at that time - we had to deal with large groups of college students in Jaipur angered by the increase in fees ordered by the state government for the new academic year. Every day they came out on the streets and lathi charges and firing of tear gas shells were a daily occurrence. On the 30th of that month the students decided to invade the secretariat and confront the Chief Minister and I decided to prevent them from doing so by stopping them some distance away with a large posse of my policemen blocking the road. The government and I were vilely abused, our effigies burnt, we were stoned, an ambulance car was egged on to drive through and break our ranks and lastly an excited bull came rushing from somewhere and crashed through our human barrier knocking me and two policemen flat on the ground! Even this did not provoke me to counter-attack and the rioters gave up in despair and retreated into the town behind.



Shri V.G. Kanetkar, the first DG of CRPF being introduced to the Parade Commanders during RAF Anniversary Parade

The upshot is remain cool but alert as long as possible and use well controlled force when there is no alternative. At the same time there should be no thought of bitter revenge against everybody found in the way, innocent or not.

A similar mindset must prevail when the CRPF is called upon to handle internal terrorism by brigands or disperados or that let loose by insurgents on our borders. There is no justification whatsoever for deliberate attacks on bystanders or innocent people in the vicinity or mindless arson or molestation of women or torture of suspected persons. After all paramilitary organisations have the sense of discipline instilled into them right from day one of their service and occasions such as above do reveal whether it is properly absorbed or not. Any deviation only invites opprobrium and it frequently washes out good work done earlier anywhere.

The next point I wish to dwell on is one facet of personnel management. The bigger a force becomes the more imperative is the necessity of superior officers to remain in touch with their respective subordinate officers and men, in other words to have a finger on their pulse all the time. To cultivate their respect and regard, senior officers must consider even jawans as good

human beings as themselves and not belittle their dignity by addressing them in the singular (i.e. - tu) instead of plural (i.e.-tum). There should also be no use of abusive or insulting words while finding fault with them. It is one thing to get displeased or even angry for inefficient or sloppy work or immoral or unsavoury behaviour but even that cannot justify a rebuke administered in foul language. Where stiff disciplinary action is certainly warranted and has to be taken, it can and should be done in a non-offensive manner.

I do not know wnether the practice of holding orderly rooms still exists in the CRPF. I hope it does. Whenever I inspected battallions or detachments, a few hours were always earmarked for this process. I not only dealt withf defaults and requests but also invited those who were keen on seeing me alone, i.e. without the presence of local superior officers. If there were any complaints against the latter, I did take their cognisance and made enquiries. If the complaints were found genuine I always gave full hearing to those against whom they were made and then only issued final orders.

My last ‘dont’ in this article is the possibility of malignant microbes of corruption creeping into the body of any big organisation with annual budgets running into crores of rupees. I sincerely believe that the CRPF has kept its hands clean by not succumbing to temptations which are galore and so all pervading that today there are in our country very few bodies or institutions which are untouched by whispers of scams. A very regrettable statement to be made but it is true.

Avenues of sleaze in an agency like the CRPF could be selection of builders for constructing new offices, quarters, messes, halls etc. ongoing recruitment of personnel in different ranks, sanctioning of promotions, awarding of punishments, ordering of postings and transfers, large-purchases of articles for messes, offices etc. The modus operandi adopted to extort moolah at such times is too well known to need mention here. What does require emphasis however is the very deleterious effects this evil produces on the morale, performance of work, discipline and reputation of the force if this scourge is not checked in time and strong action is not taken to uproot it lock, stock and barrel.

It should not be forgotten that scandals of this type cannot be suppressed for long and they do wipe out the very good work done for years and the bright image formed of the organisation.



Playing active role in Pulse Polio Campaign

The evil that men do lives after them.

The good is oft interred with their bones. (Shakeshpear in Julius Cacesar)

HOUSING FOR THE CRPF

—A.V. Liddle, Ex-DG, CRPF

Initially when welfare was taken up in the CRPF (as also the other state police forces at more or less the same time) the emphasis was on providing an opportunity to the wives of serving personnel to supplement the income of their husbands, by doing such work as stitching of uniforms and other garments, embroidery, weaving etc. Over the years due to a steady rise in the pay scale of the personnel, as also the stitching charges of uniform articles not going up proportionately, the emphasis has had to undergo a change. It has also been observed that whereas in the past large majority of our personnel belonged to rural areas now an increasing number hail from urban areas. This is because due to the spread of education as also slower development of infrastructural facilities (e.g. communication, education, health etc.) in the rural areas as compared to the urban there has been

distinct increase in migration from villages to small towns in the neighbourhood. Otherwise also, whereas fragmentation of land from generation to generation is making agriculture uneconomical, new job opportunities also are coming up mainly in the urban areas. The change in the social scenario and environment has brought about a rapid erosion in the joint family system and there is a distinct shift to the nuclear family. This is a majpr cause of problems for the CRPF personnel. This is because of the very role of CRPF as a fire-fighting force they have to move from-place to place to tackle serious problems of law and order, as well as insurgency or terrorism, which are beyond the capacity of local police forces. Once the situation returns to normal the CRPF contingents are moved somewhere else for duty-again for an unspecified tenure.



Bulk of CRPF Jawans living in tentage accommodation

Some years ago when ethnic violence broke out in the state of Manipur between the Kukies and the Nagas a large contingent of the CRPF was deployed in the state to help the local forces in handling the situation. As I was the Director General of Police of Manipur, and monsoons were just around the corner, to ensure that the CRPF personnel were made as comfortable as possible within the shortest possible time I decided to visit all the proposed Battalion headquarters. On one such spot I encountered a

small advance party which was preparing for the induction of their Battalion. I went around the campus and shared a cup of tea with the CRPF personnel. While briefing them about the tasks ahead I gave them an opportunity to speak out their mind on any problem. An old Head-Constable stood up in the sainik sammelan and after giving his particulars said that the only problem he had was that he was unable to finalize a match for his daughter who was of marriagable age.

I did not quite appreciate his problem and just responded “In this matter I am afraid I cannot help you. As the father of the girl the match will have to be ultimately finalised by you”. “Sir, this is not my problem; my problem is that we have moved so frequently in the past one year, that I have not been able to give an address to the father of the boy I have selected, to write to me”. This incident illustrates beautifully that the families of CRPF personnel have to mostly stay away from the bread-winner over long periods of time. Not only is the wife supposed to fend for herself as regards medical treatment when needed but has also to look after the children and supervise their education. Many of the children, particularly boys, go astray due to lack of control bv the male parent.

The setting up of Group Centres in the CRPF was planned in such a way that Battalions belonging to the particular Group Centre would be deployed near about the Group Centre with one Battalion deployed at the centre for training, rest, recuperation and local requirements. A small percentage of constabulary and slightly higher percentage of NGOs and officers were able to keep their families at the Group Centre where family accommodation for them would be available. Unfortunately, over the past few years the demand for CRPF has increased to such an extent that the deployments of the Battalions are often at great distances from the Group Centre concerned, and in such circumstances even if the family is staying at the Group Centre, the personnel concerned are not able to visit them and fulfil their responsibilities.

If we analyse the deployment of CRPF Battalions over the last few years we can easily identify many stations where CRPF have been deployed more or less on a permanent basis but have not been provided with family accommodation at such stations. It is high time that such locations are identified (alongwith the locations of RAF Battalions) where adequate family accommodation is provided on priority basis. If we have to extract

the optimum from our personnel they have to be given these facilities to ensure that they are able to relax and also to perform their duties without having to feel tense and guilty about not looking after their families in a proper manner. During the last few years the force has made rapid strides in the construction of family accommodation in many places, but much more remains to be done. Not only is a decision required to construct accommodation at all such locations where the CRPF has remained deployed for the last 15-20 years but even the authorisation of family accommodation needs to be revised upwards.

At present all construction work in the CRPF is handled by the CPWD. As per existing rules the CPWD executes projects on behalf of the CRPF and is thus only an executing agency. This implies that if the project sanctioned is completed in time and with some saving, the saving is ploughed back into the resources of the CRPF. But at the same time if the project is delayed for any reason and there is a cost over-run, the CRPF has to provide for these. There are numerous projects which have been delayed inordinately. The construction of a hospital at Group Centre, Imphal took years to execute. Thus not only the personnel and the families for whose benefit the hospital has come up were denied this facility for a long time, but cost escalation considerably dentedthe budget. Many of the reasons for delay of execution of projects is on account of loopholes in the CPWD manual (as a result of which errintj contractors cannot be changed for sub-standard work or not sticking to the time schedule laid down) red tapism and some times due to lack of interest on the part of the CPWD official concerned in timely execution of the project.

Not infrequently it has been seen that sub-standard constructions also come up, on account of poor supervision. Such instances are really unfortunate because a defective building will continue to occupy valuable land and at the same time it has to be demolished and replaced by a properly constructed one. Yet, even the cost of demolition and re-construction has to be paid for by the CRPF : A living example are the multi-storeyed residential buildings in Jharoda Kalan. Time-consuming administrative enquiries by the CPWD have failed to fix responsibilities for permitting the contractor concerned to use saline water for carrying out the construction, which has resulted in their becoming unsafe for habitation within a short period.

The moral of the story is that, as the CPWD is only an executing agenGy for the construction, the local commander must associate himself closely with the execution of the project, so that not only are the buildings completed in the scheduled period or earlier, but are of a good standard and serve their purpose for a long time. Nevertheless, it has been noticed that even the procedures laid down in CPWD manual can be completed in a much shorter period, than it normally takes, if the local commander is involved in the process. An excellent example is the construction of accommodation for the CRPF Battalions at Bawana consequent to their displacement from the ridge, New Delhi according to the decision of Hon'ble Supreme Court.

To ensure optimum use of funds being provided by the Ministry for construction of housing, some other agencies (for example the State Police Housing Corporation who have an excellent track record in U.P., Andhra Pradesh, Maharashtra, M.P. and some other states) also need to execute construction projects. This will not only reduce the cost, but a fair competition will bring about marked improvement in the quality and speed of construction.

COMMUNAL VIOLENCE ROLE OF LAW ENFORCEMENT AGENCIES

—A.A. Siddiqui, ADGP/Director Punjab Police Academy, Phillaur

Commal Violence and com munal riots are ofter, referred to in the same context but if you look at them closely riots/communal riots are crime under the Indian Penal Code and have specific ingredients. The Communal violence includes and incompasses a series of violent activi-ties which may include number of acts and omission some of which are crime as defined in law but many others may not fall strictly under the criminal activities. The devastating effect of communal violence is much more dangerous and alarming than if it was simply a riof. Whether we call it a communal

violence or communal riots the fact is that it has become an integral disturbing phenomenon of socio-political life in India. The communal violence takes place with repeated frequencies and the police is projected as inefficient instrument in preventing and controlling the communal riots. We may apportion some of the biames on the police machinery but the fact is that the communalism and communal violence are much more than an ordinary crime which can neither be prevented nor tackled effectively by the police alone.

Theory of Communal Riots (Historical Perspective)

Before discussing the role or effectiveness of police it is necessarv to understand the dynamics of communal Violence in its proper perspective. I would like to draw your kind attention towards series of field studies which have been carried out by various Enquiry Commissions appointed by the Govt, immediately after large scale riots. If we study these reports it will be easy to theorise some of the important features accounting for the causation of riots. Some of the important features from all these reports of Enquiry Commissions are :-

(i) Historically speaking it is felt that majority of riots prior to the partition were attributed to the divide and rule policy of Britishers coupled with role played by elites in the Indian society during the British rule.

(ii) In the most independent India besides the legacy of partition, the aynamics of economic and political development and the accompanying social changes have been taker into account to explain the true nature of caste and communal riot.

(iii) The failure of the police in particular and criminal justice system in general while dealing with the criminal cases arising out of communal riots have also contributed towards recurring phenomenon of communal violence. It is interesting to note that majority of the criminal cases registered during and after communal riots are never put to the trial and even if they are sent before the courts not even a single culprit is ever penalized.

(iv) While theorising the causative factor we have to take into account the problems of class ridden society on the one hand the under developed economy and scarcity of resources on the other. Some times these factors are also exploited by the vested interest to create riotous situation.

(v) In our traditional society the sense of insecurity generated by socio economic changes increases the appeal of religion which provides some solace and reduces the psychological tensions. The recent rise of religious fundamentalism must be seen in this background.

(vi) Contrary to the general belief, religion has never been the root cause of communal conflict or communal violence, but it is powerful instrument in the hands of vested interest who have used religion to achieve their own objectives. It will not be wrong to sugqest that communalism is the results to control political and economic power through exploitation of religious sentiments. Communalism essentially belong? to the category of politics whereas religion belongs to the category of faith. There; fore it may not be an exaggeration to say that truly religious person belonging to any faith is incapable of being communal.

To sum up it will be appropriate to say that in economically backward and communally divided society it becomes difficult to develop any class solidarity across communal lines especially in the case of working class which, ironically happens to be the main victims of communal riots. In our society the case and communal identities are far more emotionally stronger than any class identity. For any discussion on the problems of communal violence it is necessary to keep this in the background.



Patrolling for peace during curfew at Dariapur in Ahmedabad

The Harsh Realities (The Dynamics of Communal Violence)

Some of the observations made by Madan Commission while analysing the phenomenon of communal violence have been summed up as follows :-

(i) If one was merely to take a surface view of the bare facts of any riot, it would appear that the riot was caused by an incidence so insignificant that we would stand amazed how such a trifle matter could have led to so much arson, looting and murder. It, however, does not require any thinking to know that this incident was not the real cause of the riot but was merely the result of something else which concretely expressed itself in the riot.

(ii) The basic cause of all communal disturbances is the communal atmosphere pervading the country and the communal tensions built up between the two communities. This communal atmosphere provides a ready-tilled soil for communal-minded people to sow seeds of communal hatred and nurture them untill the bitter harvest of a communal riot is reaped.

(iii) Communal philosophy and ideas constantly propagated through papers and journals having communal bias and from religious platforms have so poisoned the minds of the ignorant sections of the two communities and even of a certain section of the edu-cated and literate class that every action of a member of the opposite community is looked upon with distrust and suspicion and the most uncharitable construction placed upon it. In some cases officials whose duty is to hold the balance evenly between the two communities are not found free of this trait.

(iv) Rumours, spread deliberately or out of love of rumour mongering, play an important role in rousing communal passions. It is easy to start a rumour and easier to multiply it, but almost impossible to check it. The analytical mind is rarely, brought to bear on the rumour and rumours are, not weighted by the multitude, but swallowed in mass, unchewed and crude.

(v) A rumour most ettective used to incite communal passions to a frenzy is that a woman of one community has been molested, raped or abducted by a member of the other community or that a cow has been slaughtered by a Muslim on a public road or near a Hindu locality. Rumours which though sometimes true, are in quite a few instance as the evidence before the commission shows, untrue and baseless.

(vi) Once a riot has started, the vast anonymity that a mob provides brings out the beast in man, turning even decent, law abiding citizens into savages, blinded by hate, over-powered by the lust to kill and destroy and indulge in

acts they would be terror-striken even to contemplate in cold blood.

(vii) Anti-social elements and hooligans, out for loot and plunder, soon take over and a town or city is left battered and bruised, to lick its wounds and slowly limp back to normalcy. The disease is deep rooted and the treatment can only be of long and patient duration.

The Role of Police :

While analysing the role of police, it is necessary to understand certain observations made by enquiry commissions set up after the riots, which has direct bearing on the role of police in handling communal riots



Demo of Vajra - A riot controlling vehicle of RAF

(i) Most of the riots can be prevented if effective and speedy preventive action is taken by the police. The speed with which the police reacts prior to the riots and on the outbreak of riots is most essential factor.

(ii) For taking any preventive action timely intelligence relating to force is necessary ingredient which is generally lost sight off. An effective and smooth communication between law enforcement agencies and leaders of various communities would save lot of situation which may at times lead to communal riots.

(iii) Adequate demonstration of police preparedness and determination to handle the situation effectively and impartially on the part of police is essential requirement.

(iv) Appearance of fairness on the part of police forces is sine-qua-non of success. The riot situation is essentially surcharged in which each side seems to see the other hostile. If the law and order machinery is seen as partisan or acts as partisan, the public confidence is likely to be eroded and the aggrieved group is likely to act beligerently even towards the police forces. Therefore, it is imparative that the Forces not only act but are seen acting fair and non-partisan.

(v) The handling of riot situation involves show of decisiveness on the part of police while dealing with violence. However, there are number of occasion where empathy rather than high handedness on the part of police can produce better results. For example while conducting searches due regard to cultural notions of privacy and sensitivity towards women and children can serve as confidence building mechanism.

(vi) In any riotous situation there are vested interest inciting and continuing violence. At the same time there are large sections of populations in all the communities who are interested in keeping peace. The utilization of this group for control of violence will al-ways yield positive results.

Conclusion and Suggestions

No matter, how, we choose to understand the communalism, one thing which emerges out of the discussions so far clearly indicates that it is not a surface phenomenon. It has deep social roots and therefore to deal with any situation related with communal riots/communal violence in a fair and objective manners, the state machinery has to take measures at various levels. It will not be possible for the police alone to deal with the virus of communal violence in all its dimensions.

It is necessary to point out that society is much wider than the state in its operations. In society where the outlook of the people gets influenced by communalism, the state can not function for a long time because prevailing social tendencies will find their expression sooner or later in the activities of the state. It is, therefore, imperative that a conserted and continued efforts should be directed by all concerned towards creating a society in which mutual respect and freedom of opportunity are given due importance.

We are all aware that police is primarily meant for maintenance of peace and order and prevention and detection of crime. Over a period of time this role has been expanded manifold by the demands of society. The multiplicity of the role has blunted the sharpness and efficiency of police force in general. Therefore in case of such a special problems of communal violence having various socio-economic and political dimensions the police is bound to fail in performing the sensitive task.

On the basis of recommendations of some of the commissions of enquiry the Govt, has created a specialist task force known as Rapid Action Force specially for handling communal violence. If you look at the objective and guidelines laid down by the Govt, of India it will be clear that such a force will have to be sensitised for dealing with communal violence in a different manner. The objectives are : “The Force personnel should be well educated in directive principles of state policy. They have to be specially trained in behavioural and attitudinal aspects of their duties to enable them to rise above caste and communal biases. Non partisan behaviour as a sine-quo-non of their conduct must be assiduously inculcated in them. They should also be given sensitivity training through specially designed training modules so that they could effectively deal with mob situation and with situations where they have prolonged contact with the people. When not deployed, the Force personnel should be given intensive training to develop cohesion among themselves and society.”



Officer and Jawans of RAF at Rath Yatra festival of Ahmedabad

The Characteristices of the New Police

(a) The force would essentially be utilised to tackle only communal riots or riot-like situations, (b) The organisa-tional structure of RAF is different from that of a standard CRPF Bn. The lowest unit of deployment is headed by a Gazetted officer, (c) One platoon in each Bn of the RAF comprises of women officers and personnel so that they can deal more effectively with the situations where the force faces women demonstrators or where it has to carry out searches in the house and also to provide relief to women victims, (d) Every member of the Force is trained in special skills for dealing with communal situation and the units are adequately equipped with First-Aid and other rescue equipments, so that emergency First-Aid and assistance could be provided to the victims of riots, (e) Every member of the force is trained in fire fighting so that the Force could provide fire fighting cover to the victims affected by the fire at the time of riots, (f) While not deployed on duties, the Units are continuously under training to ensure proper physical fitness and optimum efficiency. (g) The force maintains ‘Zero Response Time’ and for this purpose they have been provided with vehicles independently upto the team level which make them self sufficient and highly mobile, (h) To maintain a separate identity, the personnel of RAF are

issued with distinct uniform which is different from normal Khaki Police uniform.

From the feed back received so far the performance of this new force has been excellent. The people specially the minorities have developed faith in this force whose credibility is much better than any other local police force. This has in turn helped the RAF to deal with communal violence in much better ways. Encouraged by this many states police forces have also trained their men and organized the police forces on the pattern of RAF. This should be indication enough to realize that the communal violence can not be tackled as a normal law and order situation. It needs better understanding and sensitive handling at all levels of decision making.

The author has been associated with the raising and Trg. of RAF right from the beginning as DIG and later Commanded the force as IGP for long years.

RAPID ACTION FORCE A FRIEND IN NEED

—D.G. Mohapatra, PRO, CRPF

The primary role of police has been maintenance of law and order and prevention and detection of crime. Over a period of time this has been expanded by the demands of society due to changing socio-economic and political scenario. The multiplicity of roles affected the sharpness and efficiency of the police forces and failed them in various specialist roles, which they are required to perform. This gradually led to the creation of various specialist task forces.

The increasing incidence of communal riots in the country necessitated the creation of a Force to deal primarily with communal riots and similar situations. This necessitated the setting up of the Rapid Action Force (RAF) on 7th October 1992 by converting 10 CRPF battalions into RAF battalions at Hyderabad, Ahmedabad, Allahabad, Mumbai, Delhi, Aligarh, Trivandrum, Jamshedpur, Bhopal and Meerut. In a short span of 8 years the force has built for itself an enviable image of a secular, impartial and people

friendly force.



RAF Mahilas - A symbol of sensitive policing

Though the Force was raised primarily to handle communal riots and riot like situations, the Government may, however, deploy it for law and order duties in grave emergencies. The Force also undertakes socially useful work by organising medical camps, cultural programmes and adult literacy programmes. Once the situation in a riot prone area is brought under control, the personnel of RAF immediately take up the work of providing relief and succour to the riot victims by administering first aid and arranging their evacuation to the hospital. This is the humane face of the Force, which gives a healing touch.



RAF jawans being trained about non lethal weapons

A composite character is given to the Force by giving adequate and due representation to all sections of the society irrespective of caste and religion. A RAF battalion, in effect, represents a mini-India where one comes across people from all over the country speaking different languages, practicing different religious beliefs but essentially Indian at heart. This indeed is the strength of the Force. A Force, which is not secular in outlook, cannot be expected to fairly and impartially handle a communal riot. It is this secular attitude and outlook that has brought this Force so close to the people and endeared itself to them.

RAF is armed with sophisticated equipments like shock batons, rubber bullets and plastic pellets which though non-lethal, are effective deterrents. The purpose is not to maim or injure but to dissuade the rioters.

To maintain a separate identity, RAF personnel have been provided with a distinct separate uniform. While on operational duty, they wear blue/light blue striped overalls (dungarees).

The Force is also equipped with special tear smoke munitions and stun grenades apart from normal riot control equipment. The stun grenade which produces a flash and a deafening sound blast helps disperse mobs without causing injury. The dye market stains the clothes of the rioters and helps identify the miscreants.

The goal of RAF is to achieve what is called Zero Response Time. The Government has authorised adequate transport to improve mobility of the Force in a bid to achieve this goal. Vehicles have been provided right down

to the team level. VAJRA, the state-of-, the-art riot control vehicle has proved immensely effective in controlling riotous mobs. The multi-barrel launcher atop the vehicle is used to fire tear gas shells and rubber bullets both electrically and manually in all directions. It is equipped with stretchers and generators.



First DG CRPF Shri V.G. Kanetkar taking salute of RAF parade

Training

Training is a regular feature in the Rapid Action Force. All new entrants in the Force have to undergo a 12-week conversion training to familiarise themselves with the working of the Force. Besides, they have to undergo specialised courses on Human Rights, First Aid, Fire Fighting, Rescue and Relief, and Disaster Management. About 4,000 personnel undertake various courses annually. Efforts are also made to acquaint them with broad principles and practices of various religions to enable uninhibited interaction. They are also made aware of inter-community misunderstandings and prejudices.

Encouraged by the success story of RAF, many State governments have approached the Directorate General, CRPF to help train their Armed Force personnel on the RAF pattern. So far the Force has trained some armed

force personnel of West Bengal, Karnataka, Uttar Pradesh, Rajasthan and Delhi. Presently, the Goa police is being trained.

Achievements

Ever since its inception, the RAF has effectively dealt with situations arising out of communal riots and natural calamities. A recent example was the most devastating cyclone which hit the coastal areas of Orissa with a speed of 290 kms/hr killer winds and pitted man against nature in October 1999. Hundreds of villages in the cyclone path were wiped off the map. An estimated 8 million people or one-fourth of the population of Orissa spread across 11 districts were affected. Conservative figures put the number of houses demolished at around 3 lakh. Apart from 20,000 cattle dead, bumer standing crops spread across 3.23 lakh hectares were instantly destroyed. 5,000 people were feared dead. Hungry, homeless and desperate mobs were roaming the streets way laying passing trucks and rioting for food and water. In this hour of crisis, RAF men in blue dungarees rushed from Bihar and Andhra Pradesh and spread in all directions of Orissa, carrying tonnes of food and distributing to poor and destitute with their own hands. Braving the nauseating stench and health hazards, RAF men and women went around distributing clothes, utensils, tarpaulins, blankets, candles, milk and above all love and sympathy. RAF doctors and para-medical staff established medical camps at all places where their personnel carried out rescue and relief work. The Officers and men did not hesitate even in the disposal of decomposed human bodies and carcasses thus preventing spread of epidemics and motivated other NGOs to come forward. This yeoman's service to the people of Orissa will be written in golden letters in the history of the State.

In July 2000, severe communal riots broke out in Malpur and Tordi towns of Tonk district in Rajasthan. Living up to its image of ‘Zero Response’ the RAF troops from Ahmedabad and Delhi were rushed without loss of time and deployed in Jaipur, Tonk and Ajmer. Extensive patrolling, round the clock vigil and firm handling soon brought the situation under control attracting praise from the public, local administration and media.

UN Mission

During the last eight years the Force had to go beyond its frontiers carrying the message of peace. In 1995, a 123 men strong contingent of

RAF was sent to Haiti as a part of the UN Mission to assist in the Haitian election process. The contingent won praises from all quarters for its professionalism and steadfastness to duty.

Now specially selected, trained and well equipped 240 personnel strong two companies of RAF as a part of the Indian Contingent on UN Mission are deployed in the strife-torn-Kosovo from May 2000. This Special Police Unit provides protection and security to UNO officials, assists the local police in controlling crowd during violent demonstrations and civil unrest and renders necessary assistance to the humanitarian agencies.

RAF units are being increasingly deployed in riot-prone areas to prevent and quell disturbances. The force has largely fulfilled the expectations of the people. They have proved themselves as true instruments of service to the community.



RAF personnel providing rescue and relief to the cyclone victims of Orissa



Taking oath for integrity and unity of the nation





Modernisation of Training

—Brig. Govind Ji Mishra, VSM,
DIG (Trg), Dte. Genl.



All training activities need to be oriented towards improving basic skills and attitude to develop better professionalism in the Force. While concentrating adequately to develop individual skills like physical endurance, marksmanship, field and battle craft, sub-unit and unit level training also needs to be given adequate importance to integrate individuals into an effective sub-unit, confident to undertake their operational role in changing scenario with due flexibility of mind.

Presently the training is being imparted at two levels; the institutional training conducted in different training institutions of the Force which includes basic, promotional and inservice/specialist training in the form of structured courses of varying duration and training of sub-units in the field in the form of rotational training. On one hand courses are being designed to meet adhoc requirements of the Force" from time to time without suitable increment in staff and infrastructural facilities affecting the quality of training, on the other, over 80% of the Force is operationally committed and where ever sub-units are being spared for rotational training they lack

infrastructural support as the Force has not been able to develop their own facilities. For effective training, these anomalies need to be removed.

The National Training Policy and operational guidelines lays down the objectives to be achieved during training:- (a) Keeping up to-date and enhancing professional knowledge and skills needed for better performance of individual and organisations (sub-units/units), (b) Promoting better understanding of professional requirement as well as sensitisation of professional, economic and political environment in which work is done; and (c) Bringing about right attitudinal orientation.

The training policy further lays down the training would be imparted to all ranks of the organisation starting from lowest and cutting edge to the highest in policy making. For this purpose, training design need to be divided into three levels :- (a) The lowest level functionaries that is operative at the cutting edge which includes sub-unit and units, sub-junior and junior level commanders.This training should improve functional skill and .attitudinal orientation, (b) The supervisory level and the middle management/administration level training should contribute to enhancement of the professional knowledge and skill as also the widening of professional outlook and (c) The top management which includes the formation commander where training should offer stimuli for expansion of mental horizon and attainment of professional excellence. At this level training should also aim at equipping the commanders intellectually and professionally for holding position that involves policy analysis, strategic planning and policy formulation.

Keeping above factors in mind, there has been very concerted efforts in last one year to give reorientation to the training. Keeping in mind the present and future Internal Security Scenario, the training content of basic training has been revised with greater emphasis on outdoor content and specific areas like physical endurance, observation, map reading, marksmanship, VIP security, security of vital installations, counter insurgency operations, detection and disposal of explosives and lEDs. To accommodate all these subjects and to ensure that officers and men are prepared to take their place in the sub-unit fully trained, the duration of basic training of recruits has been enhanced from 36 to 44 weeks and DAGOs from 46 to 55 weeks. The syllabus of rotational training of companies has also undergone revision bringing in more practical

orientation to meet the present day operational challenge. Apart from endurance and marksmanship, operationally oriented company level exercises with simulated enemy are being organised to integrate the individual vidual skills and practice various operational drills as a sub-unit. ever, with the operational comnmitment and frequent interruptions in rotational training it has only been possible to train 365 coys till November, 2000, though there has been positive improvement in availability of coys for rotational training this year.

Training is a continuous process and as the individual grows up in the command structure, there is a need to impart specific training to give the required input for his next assignment. Accordingly compulsory pre-promotional and promotional courses have been introduced both at sub-junior and junior level as also at senior levels of command during the year 2000. While designing these course, it has been endeavored to include subjects which are required to improve functional skill and attitudinal orientation at junior level, provide necessary professional input and widen horizon at middle level and inculcate strategic thinking and planning at higher level. Further refinements in these course syllabi of various promotional courses will be undertaken based on the feed-backs received from the participants. It has also been planned that every Gazetted Officer spends at least 10% of his career undergoing different training programmes in the Force and outside. For this purpose, more seats are being demanded on various training courses in other organisations particularly for senior functionaries of the Force.



Weapon training AWT Instructor ready with IWESS

For our operational success, intelligence is one of the most important input. Accordingly this year intelligence cells have been created at Unit and formation levels. Training for these personnel have been organised by conducting special courses at Central Training College-ll. Coimbatore as

also by demanding additional vacancies at the BSF (G) training school. It has also been decided that our intelligence personnel will be given on the job training by “G” branch of the BSF in the respective Sector Institution. Instructions on this have already been issued. This on the job training coupled with the basic intelligence training in the training institutions should make our intelligence personnel much more proficient in collection, interpretation and dissemination of actionable intelli-qence.



Training through modern Gadget at ISA Mt Abu

The infrastructural support for training is very essential. The training institutions are acquiring modern training aids including electronic simulator systems. In this regard, all our training institutions viz. ISA, CTCs and RTCs have been equipped with Small Arms Training Simulators. We have acquired 3 sets of Infantry Weapon Effective Simulator System (IWESS) for conduct of simulated tactical exercises where the marksmanship of individuals in a combat situation could be assessed. 5 more sets are being procured which should be available by the end of this financial year. To sharpen the individual reflexes, Central Training Colleges have improvised Room Intervention Shooting and Jungle Lane Shooting ranges where Counter Insurgency Marksmanship training is being imparted during professional, promotional and specialist courses. However, the

training infrastructure in the field need to be given proper attention so that such facilities are available even to our sub-units while they are undergoing their rotational training. In this regard, construction of ranges including Field Firing range, creation of Room Intervention, Jungle Lane Shooting facilities at selected places in the field will go a long way in enhancing our training potential.

The Internal Security Academy which has been identified as a 'Centre of Excellence' is being provided with modern training aids to upgrade their training facility and this year an amount of Rs. 50 lakhs have been provided under plan head to procure training aids like Multimedia Projector, Direct White Light Projector, Multi-media Computers, Very Small Aperture Terminal and Video Camera. Similarly, a 5 year plan for modernisation of training facilities in training institutions has been worked out to create better facilities in our training institutions in next five years.

With the commitment of Force in maintaining law and order and combating insurgency and terrorism, it is essential to acquire highly professional approach and provide facilities to the leaders and men of Force to acquire knowledge and skills to meet their day-to-day challenges. The role of the Force demands both offensive action against insurgents and anti-social elements and at the same time adequate sensitivity to the public order and respect to human rights. This contradiction demands greater flexibility in thinking and action of the Force which could only be developed, if all ranks are conscious and committed to improve their professionalism. A board of officers have been constituted for long term planning "Re-organisation and Re-structuring of the Force as Vision - 2020". Long term plans and systematic development of training infrastructure will help in modernising the training of the Force and making them more operationally effective.

Human Resource Training in CRPF: The Changing Perspectives

—Dr. Krishna Mohan Mathur, IGP, CRPF (Retd.)

Human Resource Training has enjoyed undiminished importance - and it peaked in institutionalising of guru-shishya parampara not only among artists, artisans and professionals but also in the field of administration and police services. Training is indeed a continuous process to improve the knowledge, skills, techniques and attitudes of the people in organisation in order to manage the changing job demands. In the context of CRPF a training system needs to be so devised that it may anaiyse the work elements, the new job environment, the relationship patterns, the social-political net work, behavioural dynamics and the total cultural perspective by realigning the attitudes response pattern and skills to the job needs. Human resources training in CRP, as an intervention strategy, should aim at :- (i) Preventing and arresting organisational and individual obsolescence, (ii) Combating insufficiencies of knowledge and professional skills, (iii) Shaping adjustments with socio-technological and political environment, (iv) Developing new outlook and perceptions and promoting quality excellence and goal accomplishment and (v) Transforming the human resources of the organisation into totally well developed personalities with new professional attributes/character, behaviour and total commitment to its assigned mission.

Human Resource Training is a planned process of helping people to acquire new competencies and to sharpen and fine-tune the existing ones. Human Resource Training can be a very effective tool for developing competencies in the areas such as :- (a) Technical competence - This is required to equip individuals with the knowledge, skills, professional ability to carry out the assigned jobs in an effective manner, (b) Managerial competence - It is necessary to enable supervisory staff perform their roles effectively and develop managerial qualities of planning, organising, motivating, monitoring and supervising their subordinates in a professional manner. (c) Strategic competence - enabling personnel using flexible strategies to deal with complex developing situations in a most professional manner, keeping into consideration various laws, guidelines and instructions on the one hand and demands of the critical situation on the other hand and (d) Role effectiveness and responsiveness -training has to improve the role effectiveness and responsiveness of the employees to various critical situations with a human consideration.



DAGOs negotiating snake trenches during battle inoculation exercise



A Jawan in action during jungle training

CRPF has been using training as a change strategy to ensure that (i) Trainees know what it is they are expected to do and (ii) Trainees are persuaded to adopt new strategies to achieve desired goals and objectives. Action training is basically designed to solve a problem, to effect change, to implement a policy or to arrive at other observable and desirable results. The effectiveness of any training is dependent upon careful selection of

appropriate training methods, qualified and committed trainers and an organisational climate which nurtures new learning.

History of CRP training took birth along with the formation of CRP in 1939 but it has evolutional development over the last six decades. The first phase the seminal phase (1939-1963) brought about a fragile training system with Army model of training as its base. The second phase of CRP training (from 1963 to 1968) was organised mostly at Battalion levels with Central Training College, Neemuch acting as its co-ordinator and basic institution. The third phase of training (from 1968 to 1974) witnessed expansion of various training efforts and opening of another Central Training College of Avadi and opening of Recruit Training Centres of Burwaha and Avadi. The fourth phase of training started with the establishment of Internal Security Academy at Mount Abu in February 1975 and starting of senior officers internal security courses for State Police Officers and officers of Central Police Organisation. The fifth phase of training witnessed consolidation and specialisation from 1987 onwards. From the beginning training in CRP was of collaborative pattern where many courses were organised as in-house exercises by its own training institutions but it also utilised the services of other Army and police training institutions for training its human resources. Although Committee on Police Training (Gore Committee) had not covered CRP in its terms of reference, CRP training syllabus and training techniques were modified to implement the various new subjects such as management and behaviour science. Training in CRP evolved a system in which outside support was harmonised and suitably blended with the inhouse training efforts. Training has been recognised as an important component of human resource development in CRPF. Training in CRP has witnessed many high and low tides during the last sixty years. CPRF carries out regular revision of its various courses to meet the changing demands of the job. CRP training institutions have many laudable achievements to its credit. The calender of training programmes issued by various training institutions are strictly adhered to and trainees are given adequate inputs of knowledge, skills, techniques, attitude and field experience.



Rigorous training makes a man perfect

Training Institution of CRPF

Training activity has to observe certain sequence :- identifying training needs; then accordingly devising a suitable plan of action backed up with essential resources and methodology, followed by an implementation phase and ultimately carrying out evaluation and feed back of training efforts. In CRP every training institution continuously carries out evaluation and monitoring of training and at the Directorate Level, IGP training assisted by DIG(T) monitor the training efforts. Training programmes of CRPF are continuously undergoing changes and modifications so that training remain constantly linked with functional job requirements. The primary mission of the Internal Security Academy, CRPF, Mount Abu is to prepare officers with right attitudinal orientation for the police organisation and other services for their assigned tasks and responsibilities with uprightness, dedication and a strong commitment of service to the people. It aims to inculcate in the trainees professional knowledge and skills, attitudes, values and commitment to excellence by inculcating in them responsiveness,

commitments, awareness, infusion of scientific temper and accountability to the constitution. The Internal Security Academy sensitizes its trainess to the fast changing social, political and economic scenario and inculcates regard for human rights, broad liberal perspective of law and justice, high standards of professionalism, physical and mental alertness and specialisation in their respective fields. It aims at producing “young men and women with muscles of iron and nerves of steel”. Internal Security Academy conducts basic and inservice courses for directly appointed Gazetted officers and others. Internal Security Academy Mount Abu has been accepted as a “Centre of Excellence” for internal security training.

In CRP there are three Central Training Colleges (CTCs) viz. Neemuch (M.P), Coimbatore (Tamil Nadu) and Nanded (Maharashtra). These training institutions organise basic, in service and promotional courses for the subordinates, under officers and constables. There are Recruits Training Centres at Neemuch (M.R), Avadi (Tamil Nadu), Pallipuram (Kerala) and Srinagar (Kashmir) who organise basic training of constables of CRPF and other police organisations. Efforts are being made to equip all training institutions with small arms training simulators (SATS) which is computerised, Laser Beam stimulator, extremely effective to improve individual marks manship. To modernise training infantry weapons effect simulator system (IWFSS) with which simulated engagements in a tactical scenario can be conducted and effect of shooting skill, field and battle craft of every individual can be judged should be procured for all central training college and internal security academy.



Planting explosive charge

Need for Revitalising-Training-in-view-of-Changing-Perspectives

Training in CRP is however facing serious challenges due to rapid expansion of the force and infrastructural problems of various training institutions. There is always constant need to update the quality and quantity of training, creation of more modern infra structure and linking training to the job needs. Lot has to be done to develop human resources of CRP to the fullest extent and CRP restructuring on a holistic basis can alone promote qualitative and quantitative development of human resources.

Human Resource Training in CRP cannot sit on its past laurels and achievements and CRPF must continue as a “learning organisation” which should have the main features such as :- (1) Training institution must create an environment in which every trainee is actively involved in learning. (2) CRF must recognise faculty members and trainers as “Facilitators”, “Mentors”, counselors and coaches and must confer attractive rewards and recognition and meritorious faculty. (3) Training should remain a dynamic,

flexible and creative exercise which should encourage individual initiative and leadership qualities among trainees. (4) CRP should become a more humanic and organic forum of learning organisation which should adopt best practices of HRD, provide stimulating working conditions, adequate opportunities for advancement and build up self image of the trainers. (5) Training in CRPF has to take into consideration the changing internal security scenario and the increasing nexus between criminals, mafia gangs, businessmen and politicians. (6) CRPF trainers must maintain live contacts with the realities of their organisation and its changing perspectives. (7) CRP training institutions can play a larger role by offering consultancy services to the various organisations and State Governments. (8) Faculty members and heads of Police training institutions of CRPF should pay adequate attention to institution building and constant improvement in training methodology training aids and training evaluation process and (9) Training policy should not be changed too frequently with the change of senior supervisory officers. CRP training should have strategic thinking and long term perspective to give stability and continuity to the training efforts.

Computerisation in CRPF

—Brig J.S. Sawhney, DIGP (Comm), CRPF

Advancement in the field of computers in the last decade have been so phenomenal that they have fundamentally changed the way people live and work especially in the advanced societies. Information Technology revolution has also arrived in India and we stand to benefit greatly by adopting it speedily. Recognising the importance of Information Technology, the Government of India in a Gazette Extra Ordinary of 25 Jun ‘99 has enunciated its policy whereby each department/agency in the Central Government and State Governments is required to formulate a 5 year IT plan and implement it. We in the CRPF had already taken note of power of IT and prepared our 5 year policy in 1997. In the last 3 years we have initiated quite a few steps to bring about computer culture in the Force to the extent possible by encouraging various formations to buy computers and train as many people as possible in its use. We have also encouraged our officers to use Internet to surf for professional information. This too has

helped in improving computer culture in the Force.

Current Status of IT in the Force

The CRPF had computerised its pay roll in 1972 but acquired its own computer only in 1988. This computer ND-530 was mainly for handling the pay roll jobs for all ranks of the Force which were earlier done in the NCRB. While this computer sufficed for the job it was installed for, it had. very limited capabilities. It was therefore replaced in 1998 by a more powerful RISC based work station, it is an Alfa Server from Digital, a powerful machine. The old pay roll software in COBOL has also been converted to Oracle RDBMS. Along with this Server machine we had also acquired 12 PCs and connected them into a Mini LAN, but in absence of suitable application software it has not been much in use till date.



*Principal CTC (T) Shri M.S. Aggarwal **(facing page)** and ADIGP (Comns) Shri Rizwan Rasul **(above)** interacting on video conference*

Development of Integrated Application Software

Unless a suitable and appropriate programme is loaded into the computer it is not possible to use it meaningfully. For the very reason we after due process of codal formalities and Government sanction appointed M/s NIIT to develop an Integrated Software for CRPF. They will prepare a software for all branches, all offices and all functionalities of CRPF. This will include

Operational Planning, Personal Management, Inventory Management, Finance Planning, Mail and Messaging and create a workflow environment. The software will be Web based making it user friendly. The Project covers software for entire Directorate General and Pilot Project to a Sector headquarter, range headquarter, a GC and a GD Bn. The software of Pilot Project will help us later to use it at other places as and when hardware is in place.

5 Year Computerisation Policy

As mentioned earlier we had prepared a 5 year Computerisation Policy in 1997 which was accepted in principle by the Ministry of Home Affairs some time in November 1998. This Policy visualises computerisation of the Force in 4 phases. The phase I and II is likely to be completed by March-2002 and phase III and IV is likely to be completed by March-2004. The details of each phase is as given below :-

Phase I : Phase I basically consists of a comprehensive LAN at Dte. Genl., Group Centres and for training institutions for training purpose. The existing Mini LAN at Dte. Genl. will be extended to almost 150 machines: In every Group Centre there would be approximately 26 PCs and 3 Servers; data base and 2 mail and messaging. Total cost of Phase-I comes to Rs. 13 crores and 79 lakhs

Phase II : In Phase II we will provide computers at sector/IG Ops HQ and Range/DIG Ops HQ with an approximate cost of Rs. 6 crores 29 lakhs.

Phase III In this phase it is proposed to computerise the Base Hospitals, RAF and Signal Bns etc. The cost will be Rs. 4 crores, 77 lakhs approximately.

Phase IV Phase IV will be the total computerisation of executive Bns both attached and unattached and other remainder Units. This phase will cost approximately Rs. 12 crores 73 lakhs.



Networking

An exhaustive study of Networking requirement has been carried out by CRPF. The total expenditure for the installation of Networking including implementation comes to Rs. 9,04,45,735/-

CRPF's 5 years computerisation policy is as per Government of India's Information Technology Policy, it is comprehensive and aims at total computerisation by resorting to networking country-wide, it aims at saving manpower for its basic tasks of provision of security.

The CRPF has taken a pioneering lead in total Computerisation of its functioning. Once implemented CRPF will become an IT based Force. Other CPMFs are to follow our model as decided by the MHA's Core Group on computerisation.

Improvised Explosive Devices -A Tool of Terror

—C.V. Mathew, Commandant, CTC-III, CRPF

Explosions, blasts and the gory trail of destruction it leaves behind is a CBIQUTOUS News item these days. Alfred Nobel who is considered to be the father of Modern Explosives probably did not realize that the highly volatile explosive substance which he desensitized and made safer for handling and transportation will be used for creating such violence and destruction. In his lifetime itself the wrong use of his invention and consequent catastrophic effect on humanity filled him with remorse and he instituted Nobel Prize for promotion of peace out of the royalty he earned through invention and manufacture of dynamite. The perpetration of violence through explosives however continued. New explosive substances with very high potential like TNT, Cyclonite and Hexagon which is also known as RDX have been discovered and fallen into the hands of terrorists. The chronology of destruction caused by terrorists bombs is long and additions are made everyday. From highly protected VIPs to common man on the streets all have become victims of terrorists bombs.

A bomb as understood in Military terminology has a definite ballistic shape whereas a terrorist bomb has no such defined contours. It can be in the shape of any item of day-to-day use and a variety of operating mechanisms can be incorporated in these devices like time delay, chemical delay, radio control, infrared or radio wave sensitive etc. The advancement of technology that is available can be employed by an ingenious terrorist to design his bomb. A bomb is an indiscriminate killer. It does not show any mercy even to its maker. Many terrorists have been killed by their own explosive devices. In the nineties 60% terrorist attacks were bombings and the sheer variety of its shape, sizes and sophistication compelled the NATO to classify it as Improvised Explosive Devices.



An IED concealed in a battery operated toy

An IED is manufactured with (IEDS) components, which are not necessarily manufactured as bomb components such as electrical circuits, sugar, chemical substances, bottles, household products etc. lEDs are limited only by the imagination of the maker. lEDs can be classified by method of use such as:-

(i) **Delivery** :- how an IED is delivered to the intended target.

(ii) **Activation** :- Includes command activation, which utilizes radio waves, electrical waves, pull wire and other mechanical strikers ?

Action Activation is achieved by the action of the target wherein the IED is handled in some way by the target himself or herself. Trip wire, pressure device or electrical switch etc. come under this category. Ambient conditions like light or sound can also be incorporated to initiate an IED. Time delay activation is achieved by clock, burning fuse, a chemical delay or even atmospheric pressure

(iii) From the point of view of uses lEDs can be classified as **tactical IED** which used against a specific individual and **strategic IED** which are used against society, Govt. and the system to create shock and terror, such lEDs are placed at market places, bus stands, Railway stations and trains etc.

IEDs are made as a multi purpose device, which can kill and injure persons, damage property and also have incendiary effects. It can also be designed to destroy a particular person. The essential requirements of using an improvised explosive device are stealth and concealment. Every effort is made to design the IED to look like an ordinary common place object, which does not arouse suspicion. lEDs these days are increasingly becoming complex with more than one operating mechanism making it extremely difficult to defuse. The essentials of an IED are **a container, explosives, power source, detonator** and **triggering device.** No place can be considered safe and free from lEDs. A terrorist can deliver an IED with least amount of difficulty and he prefers it because it is cheap to make, easy to conceal and transport. It is difficult to establish the identity of the bomber once the device is exploded. Most important it does not require the presence of the bomber. Extreme vigilance and keen observation of the surroundings is the best defence against these treacherous devices. It is advisable not to handle or touch any strange object, which appear out of place. The temptation to show one's expertise is avoidable.

The security forces are particularly vulnerable to IED attacks. They can be lead into an IED trap by false information or simulated incidents. When troops rush out for operation following the lead or as reinforcements they are drawn into well laid out IED traps. The patterns unwittingly established by security forces are a great help to the terrorists in anticipating their moves and planting lEDs against them. lEDs are also employed by insurgents in tandem with ambushes. The vehicle of security forces are particularly vulnerable when they are moving on unmettled road or dirt tracks. There are certain places and spots which the security force personnel tend to use such places can be used to place IED to target them. The force personnel in terrorist infested areas are well advised to verify information, avoid setting patterns and tendency to use particular spots and places. lEDs are a dreaded tool of terror in the hands of terrorists and the only viable defence is being unpredictable and extremely watchful. This principle is applicable to security force personnel and civilians alike. **Eternal vigilance** is the watchword for safety against these dangerous devices.



Freshly dug earth being examined for IED



A patrol man inspecting lead wire connecting an IED buried in the road

Peace Mission to Kosovo

—Vikram Sahgal, 2IC, 104 RAF

During the first week of July ‘99’ RAF HQrs received directions to select, train and equip two coys of RAF with a total strength of 240 personnel for special mission of United Nations in Kosovo.

Officers and men found fit in all respects were then concentrated at Bawana camp in Delhi from 30th Aug. ‘99 for imparting intensive training. The training was planned and conducted keeping in view the requirements of the UN Mission, terrain, past history, nature of duties and prevailing situation in Kosovo.

Keeping in view the international image of the Force, efforts were made to provide the contingent with the best possible infrastructure and state-of-the-art equipments.

The contingent was equipped with 26 vehicles including 2 Vajras, 14 TATA-407, 8 TATA Sumos and 2 Tata Sumo Ambulances which had been specially fabricated and modified with heating and AC systems to meet the requirements in Kosovo.

Visit by UN Team

A high level delegation of UN Officials visited India in October, 1999 to conduct evaluation of the suitability and preparedness of the contingent.

After witnessing a detailed presentation on CRPF/RAF and demonstration on Riot drill the team in its report assessed RAF contingent to be highly professional, disciplined, well equipped and opined that the troops had an in-built desire to provide the much needed support to the United Nations Interim Administrative Mission in Kosovo (UNMIK). They extremely appreciated the preparations coupled with contingent's knowledge of the present conditions in Kosovo and functioning and structure of the UNMIK.

After having been fully trained, equipped and put through the acid test of quality, the advanced party consisting of three officers, 5 SOs and 12 ORs took off for Kosovo on April 10, 2000 followed by first team comprising 4 officers, 13 SOs and 93 men on May 11, 2000 and the second team comprising 7 officers, 16 SOs, 87 men and 3 Engineers from TATAs on May 15, 2000.

Ever since landing in Kosovo RAF contingent and camp has been

adjudged as the best amongst other SPU camps which speaks volumes of the professionalism of the Force.

RAF which has been performing exceedingly well on the national security scenario ever since its inception has carved an enviable image on the international horizon too.



Shri S.K. Mathur, Ambassador of India to Yugoslavia being introduced to the officers of RAF team on his visit to the camp in Kosovo

100 Km Dancon Death March

Organised by Danish Bn - KFOR, on July 15, 2000 in which 180 KFOR, CIVPOL and SPU personnel participated. The route for the march was through tough undulating terrain and jungle area, worsened by the slush and mud caused by incessant rains and chilly winds blowing throughout the duration of the run. Overcoming all the odds and displaying tremendous grit and determination Shri Mohsen Shahedi, DC and Ct. Sunil Kumar of our contingent jointly stood first in 13 hours and 15 minutes followed by Ct. Mohinder Singh (14 hours and 45 minutes). Eleven Indian SPU participants were among the first 29 to complete the march.

Indian Cross Country Championship - 2000

On 6 Aug the contingent conducted 12.5 Km Indian Cross Country Championship - 2000 in Pristina. 324 entries were received for different categories of team. Male, female and veterans from KFOR UNMIK Police and SPU - total 261 participated in the run. This included 29 Indian SPU

personnel. In the individual male category, SI Azar Mohammad secured the third position whereas KFOR Commando Logistic Regiment won the team championship trophy securing 74 points. The Indian SPU was the Runners up with 88 points.



Shri M. Shahedi and Sunil Kumar of the Indian SPU proudly display Indian National Flag after being declared joint winners of the 100 kms Dancon death March at Kosovo

Operational Achievements

The deployment area of our contingent is primarily Pristina Region. But presently the teams from both SPUs are performing duties at Trepca Lead Smelter Factory, Mitrovica (Vital installation) and Patrolling duties/Vehicle Check point (VCP) at Oblic, Stimlje. In addition Prisoner escort duty is also being performed. Excellence has been the hall mark of our operations.

Operation Black Hole was conducted by one platoon of SPU for 3 days from June 16, 2000 to June 19, 2000 on shift basis to provide security to Customs and Border Police Officers during checking of vehicles at General Jankovie border (Macedonia). Mr. Gordon Mc. Rae, Director Operations, UNMIK Police MHQ presented a commendation letter applauding the over all professionalism of Indian - SPU.

Trepaca Lead Smelter Factory Both the SPUs have been performing the security duty of Trepca Lead Smelter Factory since its taking over by UN on 15th of August. This has been the most difficult task in the UNMIK. Surrounded by hills on all sides and though located amidst Serbian hostile population, the complex remained incident free eversince the deployment of

our troops. The professionalism alertness of SPU has been commended at the highest level in UN. Despite logistics problems, lengthy duty hours and health hazard owing to high level lead contamination, the contingent continues to perform this arduous task effectively and efficiently.

During the course of routine deployment a good number of arms and ammunition have been recovered by the RAF men. Some unwanted persons were also nabbed.

Visit of Prominent Personalities

Several prominent dignitaries visited our contingent and the appreciations recorded by them are testimonial to our excellent performance. Shri S.K. Mathur, Ambassador of India to Federal Republic of Yugoslavia visited Contingent HQ on May 28, 2000 and remarked, “I am greatly impressed by the efficiency and effectiveness of RAF in Pristina (Kosovo)...” Mr. Jan Temmermans, SA to Police Commissioner visited Contingent HQ on May 29, 2000 and remarked.”... All aspects (operational, logistic, welfare) are perfectly organised ...”. Mr. Sven Frederikson, Police Commissioner visited the contingent on June 8, 2000 and appreciated in writing the hearty welcome, interesting and explanatory briefings, demonstrations and the cultural traditional dance performed by the Contingent personnel.

Besides achievements in sports and operations the RAF troops have won the hearts of the people through humanitarian services and on several occasions have entertained them with their cultural programmes specially Bhangra.

The very fact that we have once again received orders for despatch of fresh contingent to Kosovo proves that our well equipped and specially trained Indian contingent has risen to the occasion with full devotion, dedication and sincerity and endeavoring religiously achieve the goals set by the UN.

CRPF Anniversary

— D.C. Dey, Addl. DIGP, CRPF

When I had completed twenty two years of service in the force and had also been commanding a duty Bn for more than two years and still did not get an opportunity to even witness a CRPF Anniversary Parade, leave aside to be a part of it, I was forced to think negatively about my luck. Having joined the force as far back as 1971 not being blessed by the lady luck in this regard at that time was quite disheartening and particularly when a quite a few of my batchmates had the privilege to be a part of the CRPF Day Celebrations at a very early stage or their career.

As we all know, CRPF anniversary was being organised on 31st October each year till 1984. This date has a special significance for the force being the birthday of the Iron Man and the first Union Home Minister of free India Sardar Vallabhbhai Patel but for whose foresight CRPF would have ceased to be what it is today. Assassination of Smt Indira Gandhi the then Prime Minister on the fateful day 31st October 1984 deprived the force from celebrating its anniversary on the birthday *pi* the Sardar.

Because our basic training had started on 1st December 1971 at CTC-I we missed the Opportunity to witness the CRPF Anniversary celebrations 1971 then held at Neemuch, unlike the previous batches of DAGOs who were luckier in this regard. Being the emergency batch of DAGOs put through the rigours of basic training in seven months to complete the laid down syllabus of such training normally covering nine months those days, and also with no chance of being through Group Centre training, I missed the chances to witness the CRPF Anniversary 1972 too. Had we been through 9 months basic training and 8 weeks Group Centre training as was in vogue those days, I would have had the opportunity in 1972 as I was posted to 51 Bn which was then one of the four duty Bns attached to Group Centre, Neemuch but I was not lucky enough to have that privilege and that unlucky phase is my service life continued till 1994.

What was my impression of CRPF Anniversary till then? It was quite a simple affair and for the first 3 years of my career as a Company Commander that day was like any other day for me with a Bada Khana for the boys thrown in. It was only in 1975 when as a duty Bn Adjutant I witnessed some additional sports and cultural activities on that day, actively organising and participating in those activities.

The CRPF Anniversary 1984, apart from the sad incident of assassination of the then PM of India, has a special significance to me in

particular, because those days I, then a Dy. Commandant in Group Centre, Bhubaneshwar, had the full opportunity to shoulder the responsibility of organising the Anniversary Celebrations at a static institution of the force having large number of force personnel living within the campus with their families. But there again the lady luck played her trick and deprived me of the full pleasure of the day. As the Addl. DIGP was away to participate in the CRPF Anniversary and Senior Officers Conference 1984, I being the next senior most officer in the Group Centre, drew an elaborate programme along with other officers and SOs of the GC to make the day's celebrations a memorable one. As per practice, the day started with morning Pooja at the Mandir. From 10 O' clock onwards a fete was organised in which various stalls for eatables, games etc. were placed by various Coys/institutions the Group Centre as well as 76 Bn whose HQr was then located at GC Bhubaneshwar. In the fete ground other activities of games such as Musical chairs for ladies, Chocolate race, sack race etc. for the children were organised. Everything was going on very smoothly. But the bold from the blues struck the joyous atmosphere around 12 O'clock that day when information of fatal attack on Smt. Indira Gandhi by her own security personnel was received and the atmosphere suddenly became very gloomy and a feeling of distress immediately set in. With a heavy heart we called off the celebrations and everyone left the fete ground. I along with my officers and SOs took post at the main office and by about 1400 hrs information of rioting, targeting the Sikhs, started filtering in. My immediate concern was the safety of few Sikh personnel posted in the GC and their security arrangements were immediately ensured. Movement of our GC personnel outside the campus was restricted and 2 platoon strength was kept in battle readiness to deal with any untoward situation that might arise in the areas around our GC. Luckily for us the situation in Bhubaneswar did not take that grave turn and the state administration could control the situation quite promptly without any noticeable loss of life or. property.

I was hoping that on getting command of a Bn in the future I would be automatically attending the CRPF Anniversary Parade and Senior Officers conference in Delhi but that also did not happen. Though I physically took over command of a Bn in Oct. 1992,I did not get a chance to witness the CRPF Anniversary in Delhi till 1994. It was only when I was posted as Asstt. Director (Ops) in the Directorate General that the things changed for better and not only witnessing the CRPF Day Celebrations from 1995

onwards I got actively involved in organising the functions particularly as a member of the Invitation, Reception and Seating Arrangements Committee from 1995 to 1998 - 4 years in a row. When I first witnessed the CRPF Day Parade along with my family members on 28 December, 1995 it made me feel proud of the force which has made innumerable sacrifices in the field since its inception with the first martyr being Const. Sondaram belonging to the then 1st Bn of Crown Representative Police, killed in an encounter with dacoits at Kishangarh in 1946. The sacrifices of the 10 Jawans of the CRPF on 21 October 1959 in an encounter with Chinese Army at Hot Spring, Ladakh, is known to every one leading to observation of 21st October each year as Police Commemoration Day. I thanked my stars to have been blessed to get a chance to be the part of this great force.



Prime Minister Shri Atal Bihari Vajpayee being presented a memento by the then DG CRPF Shri M.N. Sabharwal

When we celebrate this Anniversary every year, I for one always feel proud to be one of the family of this great force which has a Saga of valour and sacrifice. On that day, memory of those CRPF martyrs particularly those whom I had known in person when they were alive, floods me and I whole heartedly pray to the Almighty to bestow peace on those departed souls

Sports and Adventure Activities in

CRPF



President Shri K.R. Narayanan presenting Arjuna Award to Athlete Paramjeet Singh

Games and Sports have been an integral part of Armed Forces. Organised sports helps in enhancing the team spirit and develops will to fight and win which is so essential for operational success. Over a decade now CRPF units have been actively involved in fighting insurgents, militants and anti-national elements in difficult, inhospitable, terrain and adverse climatic conditions of North East and J & K. The physical endurance so demanded for conduct of operations also necessitates high state of physical fitness and participation in games and sports. Inspite of our operational commitments, effort has been made to promote sports, organising Inter Battalion and Inter Sector competition in almost all disciplines to give chance to all ranks to display their talent.

Our central sports teams have been participating in All India Police

Games, National and International sports competitions regularly. A brief resume of their performance given in the succeeding paragraphs will indicate the standards achieved by our sports personnel.

The Athletic men and women team have done us proud by winning consecutively for the 2nd year All India Police Athletic Championship 2000 conducted at Jallandhar under the auspices of Punjab Police. While our men athlete won 11 gold, 5 silver and 4 bronze a total of 20 medals, the women team won 10 gold, 9 silver and 6 bronze (25) medals during the competition. The athletes of CRPF having participated in 40th Open National Championship as part of Police team also won 28 medals (Gold -18, Silver - 3 and Bronze - 7). It was a proud moment for the Country when on 23rd October, 2000 HC (Mahila) Seema Antil of the Force representing the Country won a Gold medal in Discuss Throw creating a history in the Junior World Athletic Championship, 2000. Inspector (Mahila) Rigzen Angmo who is the National Champipon and also won gold medal in SAF games, recently participated in Singapore International Marathon race where she won a medal securing 7th place for herself.

Not lagging behind, our Aquatics team both men and women also won the All India Police Swimming and Water Polo Championship this year and in recently concluded 55th Senior National Aquatic Championship-2000 at Calcutta, our men and women swimmers representing the Indian Police won a total of 42 medals (16 gold, 14 silver and 12 bronze) and the men team lifted the overall championship trophy. Inspector (Mahila) Richa Mishra of CRPF was declared the best women swimmer of the Country. She alongwtih Inspector Amar Murlidharan also represented the country in 14th Asia Pacific Age Group Swimming Championship held at Kaohsiung, Chinese Taipei.

Our Judokas (men & women) who participated in Senior National Judo Championship, 2000 at Chandigarh were able to win the team championship trophy by bagging 13 medals (6 gold, 5 silver and 2 bronze). They have also represented the Country in Asian Judo Championship, 2000 held at Hongkong in November, 2000 and have won one silver and one bronze medal for the country.



Seema Tolia Marching ahead to scale Mt. Shri Kailash

The performance of all other teams in All India Police Games and other National/International Championships have also been very encouraging which may be seen from the results tabulated below :-

Event	***Position in AII India Police Games***
Basket Ball	Silver
Volley Ball	4th place
Gymnastics	Bronze
Shooting	Bronze
Hockey	Silver
Wt. Lifting (women)	Gold
Hand Ball	Gold
Kabaddi	Bronze
Computer Awareness	Gold
Band	Gold
Lawn Tennis (Officers)	Silver

Events Position in National/ International Games

Gymnastics	13 Medals (Gold-8, Silver-2, Bronze-3)
Shooting	1 Gold, 1 Silver & 1 Bronze
Wt. Lifting	Insp. Sonamacha
Women	Chanu & Ms. N. Kunjarani Devi, AC won 1 Gold and 1 Silver medal respectively in Asian Wt. Lifting Championship
Hand Ball	5 players represented Country in SAF Games-2000
Kabaddi	SI A. Jayakumar represented India in Asian Kabaddi Championship-2000 and won Gold Medal

A word about our Olympians this year. After a lapse of many years, 5 sports personnel of the Force were selected to represent the Country in 27th Olympics held at Sydney in September/October, 2000. They are :-

(a) Shri Paramjit Singh, AC in Athletics

(b) Inspector (M) Jincy Philip, Athletics

(c) Inspector (M) Manjima Kuriakose, Athletics.

(d) Inspector (M) Sonamacha Chanu, Wt. Lifting - Secured Vlth place.

(e) HC (M) L. Brojeswari Devi, Judo-secured 9th position.



Kunja Rani Devi being awarded Rajiv Gandhi Khel Ratna Award

Adventure has been a normal instinct of human being and in the process men and women have attempted to achieve most difficult, arduous and ambitious goals. CRPF having successfully launched Ganga Sagar Boat Expedition in 1994, Mountaineering Expedition in JOGIN-I and III in May, 1995, Himalayan Car Rally in October/November, 1995, All Women White Water River Rafting Expedition in 1996, All Women Mountain Biking Expedition in 1997 and All India Motor Biking Expedition in 1999, undertook a Mountaineering Expedition to Mount Sri Kailash (6932 mtrs) during May-2000 in Garhwal Himalaya to mark the culmination of Diamond Jubilee Celebrations of the Force. The expedition was flagged off on 24th April, 2000 by the Home Secretary Shri Kamal Pande, 16 mountaineers including 4 ladies formed part of summit team assisted by a five member support team. The expedition carried the moto of **'Adventure and Professionalism'.** The CRPF expedition successfully summited the peak on 20th May, 2000 under the leadership of Shri Sunand Kumar, Dy. Commandant. This was the first police expedition which was able to put 15 mountaineers on the summit. It was also for the first time that 4 ladies participated in the expedition which included 2 Gazetted Officers and three of them were successful in reaching the summit. The expedition was honoured by the presence of the Home Minister Shri L.K. Advani during flagging in ceremony held at North Block on 5th June, 2000.



Prime Minister Shri Atal Bihari Vajpayee honouring CRPF Athlete Jincy Philip

Sports including adventure sports are an integral part of professional training in the Force. There have been sustained efforts to promote and encourage the sports and adventure activities. A very exhaustive incentive scheme has been drawn up for those who excelled in any field of sports. More and more young men and women have been striving hard to achieve excellence by securing positions in National and International meets thereby doing proud to the Force and country.

—Brig. (Retd.) Govindji Mishra VSM DIG (Trg.)

DG CRPF in Tripura

Visit of DG CRPF to any North East State is an important occasion. It was especially so when he visited Tripura from 1 to 6 September of this year. The fact that 15 Bns of CRPF are deployed in the State with an all pervading role in all the facets of life in the State further added to the excitement of the occasion. The vast experience and pragmatic ideas of Dr. Trinath Mishra, besides enlightening the senior officials of the State and

rank and file of CRPF, also captured the hearts and minds of the large crowds of simple people who flocked to attend his visits in the interior areas. The civic action programme presided over by him in remote localities, and his humanitarian gestures and sympathic words served as a great solace to the people of soil, in their never ending life cycle of insecurity and poverty.



School children welcoming the DG for a cultural and civic action programme at Gandachara



Dr. Trinath Mishra, DG CRPF addressing tribal children at Sikaribari, Dhalai district

Long hours spent by the DG in conversing with the men of CRPF in their remote out posts in all 4 districts of the State inspired and educated them. These face to face interactions enabled them to understand their dignity as human beings, and as soldiers of the Force besides exposing them to the glory of their mother country and valuable contributions made by the Force towards its cause. Officials, local leaders and intelligentsia keenly listened to him and his practical ideas addressed by him in the various places of the state.

Dr. Mishra's assessment of Tripura and future challenges were highly educative to the top brass of the State; who pointedly sought his views on these directions. The climax was the Press Conference held by him on the conclusion of his visit which was attended by almost all members of the print and electronic media based at Agartala. All of them, besides being informed of the effective role played by CRPF in ensuring smooth flow of life in the State, were equally impressed with the humane approach of the DG to the problems faced by the people of Tripura. All of them without exception came out with highly positive coverage of this visit and observations made by him during the Press Conference.

George C. Podipara IGP (Ops), Tripura



Dr. Trinath Mishra, DG CRPF addressing the personnel of SOC and CI Ops platoons of 2 Bn, CRPF during his visit to Gandachara



A widely attended Press Conference of the DG held at Agartala on 5.9.2000

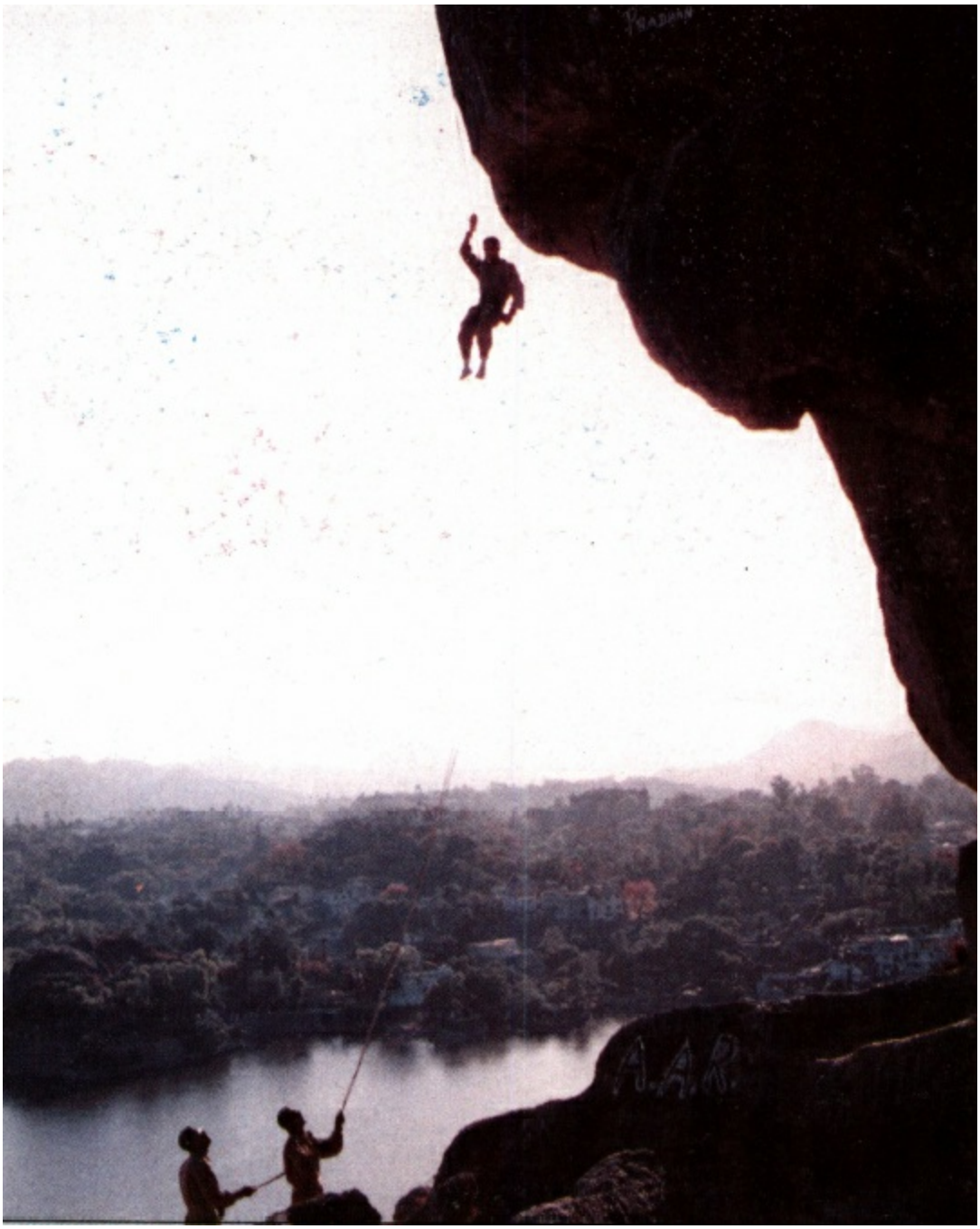


Presenting a gift to a Chakma tribal in Hazacherra Village in Dhalai Distt. of Tripura

Training for Excellence

—Bhudeb Chakrabarti, DIGP, CPRF (Retd)

I was in Punjab when I received my transfer to Internal Security Academy, Mount Abu, which made me happy as I had received my basic training in Central Police Training College, Mount Abu and always felt nostalgic about the place, Moreover I was so far not posted to any training institution and therefore I eagerly looked forward to the opportunity.



Befriending heights - a DAGO repelling from Toad Rock at Mount Abu.

Dr. Ram Chandra Jha was the Director of the Internal Security Academy when I joined the Academy in May 1988. He happened to be a distinguished Police Officer and at the same time an erudite scholar. The Academy had further a fine set of officers. The Subordinate Officers and Under Officers had also been selected with care.

Internal Security Academy inherited all its buildings from National Police Academy when it moved to Hyderabad. The buildings were already quite old when the erstwhile Central Police Training College started at Mount Abu. Over the years the conditions of the buildings deteriorated considerably.

The main campus of Internal Security Academy was located in Abu Lawrence School Complex. Its facade with the arches and pillars inspite of the ravages of the time was quite impressive. The main building contained the administrative block, the lecture hall, the class rooms and the library. The indoor classes of the Directly Appointed Gazetted Officers were held in the lecture hall in order to accommodate a large number of officers.

The basic training of DAGOs formed the most important part of the training activities of the Academy. The DAGOs were the heart and soul of the Academy. The trainers of DAGOs had an unenviable task in their hands. They were entrusted with the responsibility to produce professionally competent officers and fully capable leaders on whom the Force could depend to take it ahead in achieving its organisational goal. The first and foremost point which was kept in view was to make them fully physically fit and mentally alert.

The day-to-day life of the Academy revolved round the training of DAGOs. The first period of morning was PT which was conducted in the most vigorous manner so as to take the breath out of the trainees as well as the trainers. The open ground in front of the Main building was used for PT, parade and games. There was a high building at the end of the ground which was kept for use as a Gymnasium but was also put to use for PT and Parade during rains. After PT, the trainees changed to suitable wear for drill and then weapons training.

After the morning outdoor session, the trainees went back to their hostel housed in a complex called Rajputana Hotel Estate. The hostel premises were in a pretty dilapidated state but the saving grace was that it offered a fine view of the surrounding areas in general and of Nakki Lake in

particular. The trainees after a good bath went for their breakfast in the hostel dining room. After a wholesome breakfast, it was time for them to head for the indoor session. The vigorous workout in the morning and the sumptuous breakfast made them very sleepy in the class room.

The trainees had further indoor session after a full lunch and a good siesta. The concluding part of the day's programme, was earmarked for outdoor games.

The 20th Batch of DAGOs was under training when I joined the Academy. Besides CRPF officers who formed the majority, there were officers from CISF and SSB. And for the first time there were six lady officers of CRPF under training.

The mid-term test of DAGOs became due shortly. To the good luck of the trainees as well as the trainers, the mid-term test passed off well.

Besides the regular curriculum in the training syllabi, rock climbing training brought some welcome change though it was not without its hazards.

The DAGos has carried out their small arms firing in the Army firing range at Mount Abu. But the field firing exercises involved a trip to a place called Bhanja down Aravalli Hills to the Valley. The DAGOs fired from the area weapons like 2 inch mortar and GF Rifles. The most interesting part was however the hand grenade throwing practice. The prospect of grenades exploding in the hands haunted many. However all fared well and saved themselves and the trainers from any calamity.

When the jungle training camp time came, it was almost winter. It was not very comfortable to stay in tents outdoors when the temperature dipped down very much. Inspite of the harsh cold climate and spartan living conditions, the DAGOs seemed to like the camp life. The Camp was sited in the forest near Oriya village, Oriya village fell on Mount Abu - Dilwara - Gurushikhar Road just after the bifurcation of Achalgarh. There were fairly dense forests still available in these parts of Aravalli Range where jungle training exercises could be undertaken. The jungle training exercises passed off smoothly.

All DAGOs passed the final test and we felt quite proud when they passed out at a POP on Polo Ground of Mount Abu.

The 21st Batch of DAGOs came in 1989. There was only one lady

officer in this batch. The basic training of DAGOs started with foot drill. The correct foot drill was the foundation to build upon other drills like arms drill, platoon drill and company drill. The weapons training followed drill. All small arms and not so small arms were included in weapons training programme.

PT which had been started at the very beginning of the training continued all throughout and formed an indispensable and inseparable part of training. Once a week or so, normal PT was substituted by less road walk and more road run. A special feature of physical fitness programme was the 5 kilometers race test. The time a trainee took to cover the distance showed how far he or she was fit physically. ‘Yoga’ also supplemented the physical training programme. PT also conveniently included crossing the obstacles which were put up in the assault course on the parade ground itself.

The trainees came to like the ‘unarmed combat” very much. It was sheer fun and one further found it to be quite useful to deal with a stronger adversary.

When the POP time for 21 st Batch arrived it was the peak of monsoon. Therefore it was decided to hold it in GC Gandhinagar. On the previous day of the POP there were heavy rains and so the prospect of holding POP on the parade ground looked rather grim. We prepared a plan to conduct POP in the Men's Club auditorium. But fortunately on POP day we had exceptionally bright weather and POP passed off well.

The 22nd Batch of DAGOS came in the beginning of 1991 and it had like the 21st Batch only a lone lady officer. But I had to leave them when they were about to complete their training I received my transfer in December 1991.

During my tenure in the Academy I found considerable job satisfaction out of my training assignments in general and being of help in the grooming up of the young officers in particulars.

There was no doubt that the Academy was handicapped as far as its infrastructural base was concerned. It worked under many constraints. But all these shortcomings and constraints were made up by the commitment of the officers and men of the Academy.



Negotiating a fire obstacle during training

The aim of the Academy was to promote excellence. The faculty members and other staff of the Academy endeavoured their best to achieve this objective.

Retirement Blues

—R. Santhanam, DIG, CRPF (Retd)

There is a saying in leftist par lance: “once a communist, always a communist,” This can, perhaps, be extended to the CRPF like this: “Once a CRPF person, always a CRPF person.” In fact, he or she remains so till lifetime. As a retiree, I have been frequently haunted by the nostalgic memories of the CRPF by day and night, occasionally.

While working in Bombay, now Mumbai, in the Reserve Bank of India, I was called to join the CRP as a Company Commander in the early sixties. These days, the Force was called CRP only. The letter F was added to it later. Having darned the uniform in the NCC as an Under Officer during my college days, I was attracted to Khaki and hence was elated at the prospect

of joining the CRP. The Force was not well known those days. In fact, some of my Reserve Bank colleagues thought it was the Central Railway Police and urged me to join as I might continue in Bombay. While standing in the queue to buy my train ticket for NIMACH (it was spelt that way then and some people akinned it to self) - the place where I was asked to report for training, the booking clerk at the Bombay Central station took nearly twenty munutes much to the consternation of those standing behind me - to ferret out of a ticket. Perhaps very few people travelled to NIMACH (now Neemuch) those days.

NO LOOKING BACK

All the same, I was happy to arrive at Neemuch for training. Even though the living and other conditions were not so good those days at Neemuch, I, along with the others took a lot of interest in training. We developed a spirit of commaradeship and, after joining a new Unit after training, I started liking the Force so much that I felt as if I was one in a large family. There were no regrets. There was no looking back. I became a pucca CRPF person both in body and soul.



CRPF performs very tough and sensitive duties in operational areas

VERSATILE FORCE

The CRPF is now thrown all over India both for its good deeds and humanistic approach. Its offshoot, the RAF has crowned itself with glory

despite many trials and tribulations. I, along with the others grew with the Force and developed an immense liking for it. We, even after retirement, feel proud and privileged to have been members of this great Force which continues to be reputed for its valour and exceptionally courageous deeds. Many of the Force members have shed blood though I had only shed sweat - whenever and wherever called upon to do so. Many of us, in different ranks, understood the art of Man Management and became part and parcel of this Force.

SEVEREMENT OF LINKS

While no one is permanent in any service and one has to call it a day sometime or the other, the inevitable day of retirement came as a bolt from the blue. Suddenly, one found himself fallen, severed of the links, to be on his own. Even though the pain was anticipated, no one could gauge the immensity of its effect. One felt disappointed and dejected as an orphan. While every retirement carries with it its tragedy, it was all the more so when one left the CRPF. While in service, we were interdependent, helpful and sympathetic to the happenings of each other - both pleasant and unfortunate. Suddenly, this bond was severed at the time of retirement and my sorrow knew no bounds.

POST RETIREMENT PROBLEMS

The Force has many a welfare scheme for the serving personnel, but such schemes are few and far between for the retirees. Most of the CRPF personnel retire with a sound body and mind and with a lot of expertise, experience and wisdom in them. Unfortunately, the retirement also happens to be a stage where their children are still to be settled and married and their parents happen to be sufficiently old, facing a lot of health problems. The person, who was well looked after by the Force while in service, suddenly finds himself in a difficult state, where not only he has to look after himself, but his family and parents. Within a short time of his retirement, he feels rejected and dejected. This is the time when those at the helm of affairs of this great Force can embark upon a series of measures that will keep the Force’s motto “Service and Loyalty” shining for ever.

WHAT CAN BE DONE

Our country has now 31 States, besides many Union Territories. Since

we already have an established electronic data processing system, it may not be difficult to keep track of the retirees living in these areas, with their addresses. We can start off with a cut off date say 1980, for collecting and corrolating this information. At the time of retirement, everyone is given an identity card which can be replaced a new with a spick, laminated identity card with a stamp sized photo, giving details of retirement, date of birth, rank held, etc. This can be done, beginning with this year 2000.

NODAL OFFICER

The personnel in the three services viz. the Army, the Navy and the Air Force enjoy canteen, medical and other facilities, even after retirement. Besides, there are the Soldiers', Sailors' and Airmen's boards in every district to look after the needs of the retirees. The CRPF has none of these. We cannot be called ex-servicemen and, as such have no privileges after retirement. We retirees have to fend for ourselves and there is nobody to guide, advise and help. While the retiree officers manage to continue links with the Force somehow, the other officials have nowhere to go. In all the 31 States of the Union and the Union territories, it may not be difficult to find and locate two senior retired officers. The senior most could be designated as the Nodal Officer for coordinating the welfare and other connected activities of the retired personnel. It is better to have a standby who could take the place of the Nodal Officer when the turn comes. The name, address and telephone no. of the Nodal Officer should be communicated to all the retired personnel in the area of his jurisdiction. This can be done by the Nodal Officer himself. Similar information about the Nodal Officer could be communicated to the other States and Union Territories by the Force HQ. Thus, every Nodal Officer would have sufficient information about his counterparts in other areas, besides complete information of all the retired personnel in his jurisdiction. Even though this appears to be an elaborate exercise, it is worthwhile. The information can be supple-mented and updated from time to time.

The designated Nodal Officer could be attached to the nearest Group Centre we have almost one in every state and could be paid in retention fee of Rs. 2000/- p.m. by the respective GO The expenditure so incurred should be reimbursed to the GC from the CRPF Central Welfare Fund. This fee is necessary to ensure the accountability of the Nodal Officer, besides meeting the postal and other expenses incurred by him while communicating with

the retired personnel.



Lunch break during duty hours

NODAL OFFICER'S DUTIES

There are many areas where the Nodal Officer could be of use to the retired CRPF personnel in his jurisdictional terrain. These can be broadly stated as Health, Welfare, Career, educational guidance and others.

HEALTH

The main problem faced by the retired personnel and their families relates to health. They have no place to go for their health needs except the Govt. hospitals where they encounter immense difficulties. It would greatly facilitate matters if they are looked after by the nearest Group Centre Hospital. For this purpose, every patient can be charged a nominal consultation fee of Rs. 10/- besides a hospitalisation fee of Rs. 25/ - per day in case of admission for minor ailments. The expenses with regard to medicines, food and the transportation charges when referred to govt. hospitals for serious illnesses would be borne by the patient themselves. The money so collected could be credited to the CRPF Central Welfare Fund. Where the Group Centre Hospitals are situated far away, the nearest semi-permanently deployed Unit should be asked to undertake this humanitarian service. With the CRPF/RAF in great demand everywhere, this arrangement may not pose a serious problem.

WELFARE

Another important area deserving serious attention is the welfare of the retired CRPF/RAF personnel. For this purpose, the Nodal Officer may undertake visit to those areas with a concentration of retired personnel when, at an appointed date and time, he could listen to day to day problems of the retired personnel with a view to redressing them to the extent possible or rendering suitable advice. He may also liaise with the concerned local authorities for this purpose. The Nodal Officer could claim the actual minimum train or bus fare as the case may be, moderate stay in expenses, etc. from the Group Centre concerned and this expenditure could be reimbursed to the GC by the CRPF Central Welfare Fund.

CAREER AND EDUCATIONAL GUIDANCE

Most of the CRPF personnel retire at an age when they can still afford to be usefully employed to make both ends meet. A few of them join the Security Agencies which have mushroomed allover. Some of these Agencies pay badly with difficult working conditions. The Nodal Officer could properly advise and guide interested, retired personnel. He could interact with the Security Agencies for proper placement and adequate compensation. As already mentioned, all the CRPF personnel are well versed in Man management in practice but for want of proper training and accredition, their latent talents go unnoticed. The Force could do well to seriously think of and devise a system whereby interested retiring personnel get proper training with certification in Personnel Management which would help them securing proper placement with dignity after retirement.

Secondly, the retired personnel may face problems with regard to the education and career of their children. This aspect could be looked into by the Nodal Officer so that the personnel receive proper advise and guidance for the betterment of their children. The Nodal Officer can also act as a bridge between the CRPF recruiting officials and the employable children of the retired personnel.

OTHER ACTIVITIES

If invited, the Nodal Officer could participate in the family functions of the retired personnel, thus giving them a feeling of oneness and moral support. He can also utilise the occasion to meet the families of the

personnel who are no more. The nearest CRPF organisation - GC or Unit - could organise a reunion every year on CRPF Anniversay Day or on any convenient occasion when the retired personnel could be invited. Bara Khana followed by variety entertainment can be arranged on such occasions.



At last ! time for remembering beloved ones

An attempt has been made in the foregoing paragraphs to briefly outline a series of measures that can be thought of and implemented to keep the CRPPs motto “Service and Loyalty” glowing forever. Everyone has to retire sometime or the other but the spirit of continuity enshrined in these measures could motivate the serving personnel to perform better and thus the enhancement of the fair name and fame of this great Force could be ensured. The CRPF Directorate could delve on these random thoughts and devise a suitable workable arrangement after due consultation at all levels.

A Question of Rejuvenation

—T.G.L. Iyer, Ex-DG, CRPF

A person was given the opportunity to choose between Heaven and Hell. He was taken to Hell first. There he observed a large banquet Hall full of

delicious food but no one could eat because their arms were extended straight out in front and they could not bend them to put the food in their mouths. The visitor thought “No wonder it is Hell. You are served things you can’t have. You are immobilised because of your body structure”. He told the Guide that Hell is a wretched place and he would like to take a decision after seeing Heaven. He was escorted to Heaven. To his utter amazement he saw similar delicious food and the same type of unbending arms as he saw in Hell. But there was one vital difference. People were seated in two rows facing each other instead of the one row he saw in Hell. In Heaven, the people at the dining table had figured out a way to eat with their stiff rigid arms. They fed each other. Cooperation was the difference. Selfishness was nowhere.



Team valour has been the focus while going into action

You can observe team members in your family, your work place, your Social and Professional fields where people have common interests. Sports, Movies, Books, Hobbies etc. create common interests that link people together. I once had a peculiar experience. I saw two people quarelling because their children quarelled over some trivial matter. I had known that both of them were ardent Cricket fans. When I mentioned that Cricket is a game played by 22 fools watched by 22000 Bigger fools (George Bernard

Shaw said that), they combined and turned against me and pronounced that I was the Biggest fool. I accepted the verdict but I could see how the quarrel turned into an amiable friendship in one strategic bowling of a googly.

In Team work, the need to contribute is powerful. Once I paid a visit to a School and I was led into a classroom where all the children were out for Recess. One solitary Boy was sitting and he looked at me with Bright eyes and keen interest. The Lad asked me “Are you the one who has been helping the Teachers whenever, they were in trouble ?0” I said “Yes, that is true. But tell me how is it that you are alone here when the other Boys are out and playing ?”. He winked at me and with a twinkle in his Eyes said” I am the master of ceremonies this week. That is what the Teacher told me. Do you know the work I have to do? You see, when the kids run out for Recess and don’t push their chairs in, I am the one who does it !”. I learnt then and there what is meant by contribution; what is meant by Team work; and what is meant by service to others ?

In CRPF, team valour has been the focus while going into action. Whether it is law and order, crime, handling of disasters or security work, it is the combined strength that determines the outcome. There are only two choices before a member of the force; to be a team leader or a Team follower. If it is a Team leader his position in Team work in unassailable. He has to be a good communicator with context and content. He has to create a personal bond with members of his Team. He has to cultivate creative disagreement so that he can adopt the best of choices emerging out of the disagreement. In short, the leader is an expert in putting people together for achieving a common objective.

Since the CRPF gives auxiliary support to the Civil Police, its inherant powers are limited. The force operates on borrowed power and hence its impact and effectiveness is considerably reduced. As the men mostly operate in crisis situations, the force that has to be used to disperse mobs invariably is interpreted as excessive. Also the protection the force gets is mostly from the District and State authorities where the bureaucracy bend and wilt under Political Pressures. Its action mostly is questioned and challenged. The result is that the morale of the force which should be high is lowered to a subnormal level. The resultant mental make-up is either to delay action or take no action at all or purely perform a self-defensive exercise. The remedy lies in insulating the Force from frivolous

Prosecutions.

The Force is purely officer-oriented but the decision making ability at the lower level is very poor being ignorant about the local laws in operation. Therefore, before the force is inducted in Riot operations, familiarisation with local laws is imperative. What really happens is that the CRPF always lands up in acute emergency and there is absolutely no time to get any exposure to local conditions as they are required to go into action immediately on arrival. This happens because of faulty calculations and estimations made by the local police of a Developing situation. In fact, the CRPF is used as a fire-fighting instrument to put down tension without assessing what role should be assigned to the force in a given situation.

The Reserve Nature of the Force is never maintained at any time which means adequate training, Rest, build up of morale and resilience to absorb shocks. Instead of calling it the Central Reserve Police Force, an appropriate name would be Central Rapid Panacea Force considering the way the Force is rushed in emergency. This has to be checked. Another factor is that the Force is aging very fast. Man should be retired at 50 and officers at 55 giving them full pension benefits so that a younger force is maintained with more Vim and Vigour. Lastly, to allow the Jawans and officers to enjoy family life more static duties like Air Port Security, Industrial Security, Harbour Security etc. should be given so that the human touch of the individual is not lost degrading the members to a coarse and rough behaviour due to frustration and disillusion. The force has become Big, unwieldy and spread out all over the country. The force may be divided into separate suitable zones with independent chiefs to oversee its administrations training and deployment.



केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के पर्वतारोही गढ़वाल हिमालय के माउंट श्री कैलाश शिखर की ओर बढ़ते हुए। बल के पर्वतारोहियों ने 20-21 मई 2000 को माउंट श्री कैलाश शिखर पर राष्ट्रीय तथा केरिपु बल ध्वज फहराया

